ş ·	1>	-	1""	. 3.	, ,,		* . 11	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	41	4	7	
,	1	. 0	0-63-0	0	, O	0-0-0	04.0-0	٥ آ	1x , 50	<b>)</b> ;	0 4	0
ja 1	1 :	- 1	71	3.4	*\	. 1	- 4	1		1 33	0	-1,
***	} '	'\0	. 6	· - 6		. 6	מׁ	ે તે	ر سر ا	2/4	Ň.	3
3	1. 2-4	*	``~		, 🖫	78	. ĭ	-1	i	مي و	Υ`.	
. (	` ; `	, 11 × 👢	<b>*</b> " (			\".` <b>.</b>	٠,	٠. <u> </u>	1,00	1-0	Ĭ.,	
	1	, 'O		, % <b>O</b>	~_; <b>O</b>	. 0	0	13 Q	, , , 5	<i>"</i> < '	o ·	, O
3.1	( " /		0	1,15 1		ن آس	٠,٠		• '~		-	4 3
م ُ ج	,	ر 🕶		·		*) «	,	- 1		Ž.,		ίĸ.
<i>i</i> ,	, , , i	4 <i>1</i>	سأش	1	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	45.	, 4 v'	711	<b>~</b> `	r 2 "	`````	, ·
:4	·	*, .	, f		~ 1 <sup>4</sup> , 1		1 ي ځ	$\gamma_{i,j}$	ų.	ĩ~,	•	• •
3 4	- 1		٠, ٢,	. 7 3	. و		(3)	4 4	, ` <i>,</i>		۶.,	`
1 3	'a a .	٠, ٠	**		હે કેવ	ې د و ټ	, , , , ,	, č.		Z1**	٠. ٠	•
1.2	× 1		, ·		ند سر ز	1,	٠, ١			∧o ′	` <del>}</del> .	, , •
3	<sup>1</sup>	~ <u>.</u> ~	` •	. ~ ~ •	~, ~	7, 40	e e	23	<b>h</b> 15	. V		•
200	,	`	₹.	. 7	5.5		1		ا کہ ح	•		75
	ستر.	, `	الر	تا. <del>با</del> ن	e 1 3			-	4 7 7	سال و 🗖	• 100	
d	12	المهاسون	٠,٠	3		5 3 9	_نيار	17, 8,	٠, ٢	ું કે ફે	<u> </u>	
1		٠. ٠	_ ալ՝		فيهجه فراط	, J.	110		" " "	٠, ١	3.	
,		ુ≺ં ≛	31,44	्रम	L .	" ૧૮૬૫ ,	_ <b>t</b> r	) · · ·	3-6	A 44	* LS	
٠. ا		4	· 3 ·	1 1		خوم ،		· ' 😷	1 7		74 27	- 1
1	10	, ~	. *	~ (L"				~ , <b>5</b> 7		, • h	ס''	
٦ ـ ا	- 10	. ~.	7	70		· j=	1	· IF	- S-12		のかったがある。	1
-,	H		. ,			1 . Jag	سيالوا			- 4	٠,	μ
	11	ų,	3/ an		* PIQ		*ं स्ट	15	. (7.	£ إ	J	10
١-	*	', '07		- Jerse	160	، هنگ	- 57	. N	Ç (	₹ - Þ	∽ا خو	i e
2,1		יעי	æ	~		`ckr		147		- 41i	F 1	-
	<u> </u>	<u>. W</u>	1	. 100	: T		(1) J.S.	```		1/1	≘ດ :	57
.1	12	_		~-[P,	, , , , , ,	15	- 50	-	٠, ١,		7/3	=
Ċ		70	. 12	17	1	ুনু	O'C	1			- 10	7
. 4	1	45	180	王	S	<u> </u>		É	6			2
. 4	मा	इतीय	490	是	ति	र्गेश्व	14.3			6	7	Hat!
, (	थमा	द्वितीय	संस्कृत	वयोग	प्रतिक	वैराज्य	श्रीवात्र	AT DE	100	4	1 / L	H Mark
, ,	न्थमा	क्रितीय	संस्थात	त्योग	प्रसाक	वैर्गिय	Shir.	Para Para	अपवास्त्र अस्ति ।	4	1/2 1/2 1/2	t all it
	ग्रन्थमालाना प्रकार	हितीय	HEST	वयान	प्रतक संस्कृत	वैश्व	20 m	निया	The state of the s	T A T	2 12	गुजरम
1 1 1 1 1 1	मंत्रान्धमा	दिनीय	HEDE	and and a	प्रतक	वैश्वि	Ships.			100	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	Hart
	[नद्रान्यमा	क्रियोय	HEST	The state of the s	मुख्य	वैश्वार्य	Salar Salar				7.2	Tale of
, 4	1	7 1	HED	THE STATE OF THE S	SE DE	de l'anna	1. Shirt	THE TOTAL	のない。		200	Hale II
, 4	1	7 1	The state of the s	The state of the s	ر م مرسد م	वर्गास्य	**************************************		のない。		1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	
, 4	1	7 1	The state of the s	and a	ر م مرسد م	de la	W. William		TO THE REAL PROPERTY OF THE PARTY OF THE PAR		1	THE MENT
, 4	1	7 1			ر م مرسد م	D. D	The state of the s				7.7	THE PARTY
, 4	1	7 1			ر م مرسد م	RALL MANAGEMENT OF THE PROPERTY OF THE PROPERT					10 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	THE STATE OF THE S
, 4	1	7 1			ر م مرسد م	RATE OF THE PARTY			To be a second of the second o		2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	THE STATE OF THE S
1 ST	नियर जैन				ر م مرسد م	BALLA STATE			The state of the s		からいったが、	THE PARTY OF THE P
1 ST	नियर जैन				ر م مرسد م	RAIL BOOK STATE OF THE STATE OF						THE STATE OF THE S
1 ST	नियर जैन					BELLE BELLEVILLE						The state of the s
1 ST	नियर जैन					Telle and the second se					からなっているというだけできます。	The state of the s
1 ST	नियर जैन					The state of the s					から ない こうかん かんしゅう かんかん かんかん かんかん かんかん かんかん かんかん かんかん かん	THE PARTY OF THE P
1 ST	नियर जैन					TO THE WAY TO SEE THE TOTAL TO THE TOTAL TOT					から ない こうかん かんしゅう かんかん かんかん かんかん かんかん かんかん かんかん かんかん かん	The state of the s
1 ST	नियर जैन					The state of the s						The state of the s
1 ST	नियर जैन											The state of the s
1 ST	नियर जैन											The state of the s
1 ST	1					The state of the s						The state of the s
1 ST	नियर जैन							THE PARTY OF THE P				The state of the s
1 ST	नियर जैन											The state of the s
1 ST	नियर जैन							transfer of the second of the				The state of the s
1 ST	नियर जैन							THE STATE OF THE PARTY OF THE P				The state of the s
1 ST	नियर जैन					1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		प्रमुख्या किया है।				The state of the s

ं-स्वप्रसमयपार्त्वास्पेश्वेषे मारेसावैभौम-जैनररन-ब्याख्यानवाचरपति-कविकुलकिरीट-पूज्यपाद-आचायंदेवाधीत्रश्रीमद्विजयलन्धिसुरी-र्वरान्तेवासि–गासनप्रभावक्नेनिर्धक्रमभोमणि–पन्न्यासप्रवरश्रीप्रवीणविजयगणिवरशिष्य–भविकब्रुन्दबोधकवरविबुधमहितप्रतिभाग्रपक्रमूनिप्रवर्-क्यानगचरपति –*प्अमद्रि–भ्रोमछो्*ड्**धसूर्भश्चराणां** सुपष्टप्रभाकर−दक्षिणदेशगतनानाविघ−जीवद्याप्रचारक—शासनोद्योतक श्रीआत्म-क्रमल-क्रिधस्रीथरंभ्यो नमः रिप्रभुशिहेमहंसगणिसुविरिचितेन सुधीशुङ्गाराष्येन वारिकेन च सुसंस्कृता जयपुर्शिमद्वित्त्र्यग्रमीरस्रिवरोपदेशेन-श्री मद्रास जैन संघ-वितीणिकिञ्चिताहाय्येन प्रकाशिता च ंंे. अधिहिमाषिजयक्तिष्याणुना मुनिजितेन्द्रविजयेन परिविष्यतुक्रमादिभिः संयोज्य च सम्पादिता । ार्चार्चा मन्त्रीयस्त्रीवस्त्रपीलमीलिलिलिताङ्किमलयमल्भीमद्दर्यप्रभदेवसूरिविधुवता प्रकाशियी—अोलिंडियस्रीयर जैन प्रन्थमाला-छाणी (बडोद्रा) प्रकृष्टप्रभावप्रषक्षशीसङ्खेशस्पार्थनाथाय नमः अपरनाम-न्यवहारच्यो ॥ श्रीआरम्भांसोद्धः ॥ श्रीजिनाय नमः श्रीकिष्यस्रीयर-जैन-मन्यमाकायाः द्वीद्यो मणिः ॥ ENSTRANCE OF THE SEARING મુતિ ગુણમદ વિનય. 

आशापुरा रोड-जामनगर या. बालचंद होरालाल श्रीजैनमारकरोद्य प्रि. प्रेस —: मुद्रफ ::— (काठियावाड गा. चन्द्रलाल जमनादास श्रीलिंड्यस्रीश्वर जैन प्रन्थमाला अवैतिनिक कार्यकर्ता छाणी (बहोद्रा) ---:प्रापिस्थानः-るの行の方の **₹°** 169 ß 。但 de de H э H

**पर्**मतारक अने किकालमां करपवेल समा श्री पतित्तपावन जिनागम, आजना भारतवर्षीय जैनसमाज माटे एक अप्रतिम वारसो छे. श्रीजनेथर- || -: प्रास्ताविक निवेदन :-

निवेद्नम् करी. तेवा अनेकानेक प्रन्थाप्रणीय विशेषोमां ज्योतिज्ञांन-विषयक पण घणा प्रन्थो मळी आवे छे. आगम-प्रन्थोमां श्रीस्पंप्रज्ञाप्ति-श्रीचन्द्रप्रज्ञाप्ति-श्री-प्रमुए अर्थथी कथित बाणीने मंगलनामधेय श्रीमद् गणधर भगवंतोष् झीली, बेराष्ट्या नन्यपुष्पोने मालानी जेम, ते वाणीनो सूत्रोमां गुम्फन क्रिया करी. तेमज श्रुतनिधानस्थित् पुण्यपुरुषोए पण तद्नुमार प्रन्थगुफ्तक्तियाद्वारा भाविमां थनार पुण्यांसासाना केवळ उपकारनेज माटे अनेक समूल्य प्रन्थश्रेगीओनी रचना

नीरघवलना महामंत्रीखर सद्वपति बस्तुपाले बहु ठाठथी आचार्यपदारोपण तेओश्रीना प्रतिमावैभवने देखीने करान्युं हतुं. ज्यारे टीका **सं. १५१8मां** रचाइ सूरि—थी—क्रलिकालगौतमना विरुद्यर—थीहरिभद्रसूरि महाराजना पद्टोषोतक—श्रीविजयसेनसूरिजी महाराज थया. तेओश्रोना शिष्यरत्न—श्रीयम्माँम्युद्यमहाकाज्य | **च्योतिपक्राण्डक** आदि प्रन्थरत्नो अप्रत्थान घरावे छे. तदनुसार **श्रीलग्रग्राद्ध-श्रीदिनग्रद्धि-श्रीनारचन्द्र** विगेरे प्रंथो, अगाधज्ञानावगाहक प्राचीन आचा-थेपुद्गवोए रच्या छे. तेज शैलीने अनुक्सीने-श्रीनागेन्द्रगच्छगगनविभूषण श्रीमत् शीलगुणसूरि प्रवर्रनी परम्परागत श्रीदेवचन्द्रसूरि-श्रीमहेन्द्रसूरि-श्रीआनन्द-उपदेशमालाकणिंकाद्यति आदि प्रन्थोना रचिषता श्रीमान् **उद्यप्रभदेनस्रीश्वरे** आ प्रन्थनी सुरचना करी छे. तेओश्रीना शिष्य श्रीमान् मिक्षेपेणमूरि महाराज आक्ष्क मोधक अने सस्ळ पद्गतिथी–षडावस्यक वाळाववोघना कत्तां तथा व्याकरणविषयक—समप्रन्यायोना सङ्ग्रहिता तथा तेज न्यायसङ्ग्रहनी उपर बृह-थया, जेमणे द्रात्रिशिक्तानी स्याद्राद्रमञ्जरी नामक न्यायपूर्ण एक सुंदर शैलीवाळी टीका वनावी छे. आ प्रन्थना स्त्रीकोनी गहनतानो सुरूभ बाध कराववा माटे घणीज द्घत्ति तथा वृहन्यासना कर्ता-वाचकाप्रणीय **श्रीमदुहेमहंसग्गिषरे** आ पत्थनी महान टोका बनावी स्वज्योतिज्ञांनार्णेवने ठळज्यो छे. प्रत्थकार्तने राजा हती. ज्योतिविधाना अभिलापुक विपश्चिद्वन्तने ते सतीव उपयोगी होइने वर्तमानमां अलम्य होवाथी आ प्रन्थ सुज्ञ जनता समक्ष रजु कराय छे.

ितक मिण्य सरुरो छे, गणितज्ञान खरुरो छे, कर्मेन्यवस्था सप्रपञ्च जाणवी जरुरी छे, प्रसुना मिल्तरसमां तछीनता मेळववा सङ्गीतनुं छय अने मात्राओनुं ज्ञान ||者 | निवेदनम् स्वाध्याय-यज्ञ आदर्ता साधु या सार्धागणना उपकार माटे कर्ताष् आ प्रन्थ बनान्यों छे. तेमज श्रुत पारदृशीं बनवा माटे साधुसमाजने जेटछा प्रमाणमां सैद्धा- ॥४॥ सापेक्ष छे, तेटलीज आवश्यकता आ ज्योतिर्विद्यानी छे. जैनागमोमां ते विद्याना स्वतन्त्र मोटा प्रन्थो छे, जेमां सूर्यप्रज्ञपिना पु. २७१मे गा. २१ मीमां जणा- 🕌 🔢 🤻 🗎 🧳 ववामां आञ्चुं छे के—'मानवोने सुख दुःखना प्रकारो अने तेमां थता फेरफारो, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्रो अने महाप्रहोना चार विशेषथी थाय छे. ते सुख दु.ख जो के कर्मजनित छे, परंतु दीपकवत् आ ज्योतिप्रेन्थ तेनो घोतक छे. एटळे विकसित मानसवाळा साधुसमाजने आ विधानुं पठन पाठन उपयोगि छे. जेम बुद्धि-

शाळो साघुओने काब्यशक्ति लेखनशक्ति तथा वक्तुत्वशक्ति आदि खोळववानी जरुर छे, तेवीज रीते वस्तु–स्तोमना भाविभावने जाणवामां निमित्तभूत आ

ज्योतिविधा पण जाणवानी जरुर छे. ते प्राथमिकज्ञानना अभ्यासीवर्ग माटे प्रस्तुत संस्करणनी उपयोगिता विशेषे करी लामकारी निवडशे!! यद्यपि वारनी

मान्यतामां, नक्षत्रोनी तारा संख्यामां, यात्रादिमां जोवाना दिग्द्वारकनक्षत्रोमां तथा तेवी अनेक बाबतोमां सूर्यप्रज्ञप्ति–दिनञ्जद्धि तेम आ प्रन्थ विगेरेमां समानता

खास करीने प्रन्थकार एक वात उपर घणोज भार मूक्ते छे ते जणाववुं जहरी छे. ते एज छे के, सावधिकयावळम्बी पुरुषो आ प्रन्थना अनधिकारी देखवामां आवती नथी, जेनुं याथातघ्यतत्व केबळीगम्य छे, तोपण आ प्रन्थमांथी' ज्योतिविधानो घणोखरोमाग अभ्यासीवर्ग स्वायत करी शक्ते छे, ए निविद्याद छे!

छे-साधुवर्गमांथी पण निरवय लाभ माटेज आ प्रन्थनो के प्रन्थनी पिङ्क्तनो उपयोग करवो. योग्य अने लायक्रनेज ते भणाववा गुरुओने प्रन्थकार भला-

मण करे छे, भणनार माटे पण त्यां सुधी छखे छे, के तेश्रोए एकान्तमां भणवुं, के जे सांभळीने कोइ दुरुपयोग न करे. जैनमन्दिरादिना खात विगेरेना

मुह्ते पण, जेम विवाहादिना मुह्तों पोतानी मेळे संसारोओ कदावे छे, तेम कदावे ! ज्यारे निरववाचारी महावतथारी महानुभावो तो, तेमां गुणदोषविषयक ||ॐ|| ॥ २ ॥

करी, दोषो बताबी तेनी शुद्रता मात्रज बतावे ! ते बात आ पुस्तक भणनार वर्ग जरुर ध्यानमां राखे ! तेथीज ज्ञानानदना ज्योमबिहारी अने छ्या-

, निवेदनम् टीकाकार महर्षिए पण प्रन्थकारना अभिप्रायोने, घणा घणा प्रन्थोनुं प्यालोचन करी सारभूत मतान्तरोने दर्शांवी विशेष व्यक्त कर्या छे, अने ते गण-सातमा गुणठाणानी उंचेरी टेकरीओनी विमळ-वायु-लहरीओनी आबोहवानो आसोग इच्छनार जिज्ञासुओए सदुपयोगज करवो, एटले तेवो काबु धरावता विमशोंमां आवती विगतो अमो स्थलसङ्गोचना कारणे आपी शकता नथी, पण अनुक्रमणिका बहु सस्ळ होवाथी तेमांथो समजी राकाय तेवुं छे. | कगणना विविध प्रमाणदर्शक अभिप्रायोने प्रतिपादन करी सम्यूर्ण रीते प्रन्थनो पुष्टी करी छे. जे सविस्तर पाछळ परिशिष्ट व थो समजारो. अ। प्रन्थ भावनगरथी श्रीयुत् पुरुषोत्तमदास गीगाभाइ तरफथी प्रकाशित थयेला प्रन्थना आधारे घणाभागे पुनः मुद्रित करावाय छे. हीय, तेओज आमां प्रवेश करे! एवी म्हारी पण वांचको प्रत्ये विनम्र अभ्यर्थना छे.

वांचतां अभ्यासीवर्गे विचार करे! प्रस्तुत प्रन्थमाला पासे एवुं मोटुं कोइ फन्ड नथी, छतां उदार सखी—गृहस्थोना अने परमोपकारी मुनिमण्डलना सहा-अने नन्य अभ्यासी होवाथी ब्रिटियो जरुर रही हसे, अने पछीथी पण ते कार्य म्हारा जेवा अल्पमित माटे भगीरथ गणाय ए नि'राङ्ग छे. पण न माछुम एक सूचना करवी ठीक लागे छे, के नाना अक्षरो छखवामां के वांचवामां आंखोने आहतकर नीवडे छे, एटछे आ प्रन्थ पण एकीटसे, घणो टाइम राथी अनेक प्रकाशनो प्रस्तुत प्रन्थमालाए बहार पाड्या छे जेमां तेना अवैतनीक कार्यकता चन्दु**लाल जमनादास** पण सारो आसमोग आपे छे— प्रस्तुत प्रन्थनु संशोधन कार्थ म्हारा हस्तक बीजा विमर्श लगभगथी आन्धुं, तेमां पण थोडो बखत तो हुं आ सम्पादनकार्थमां तहन अजाण हती ए छपासिन्धु आचायेदेवेराना प्रमांशोथी चमकता जमणा हाथना हदयङ्गम आशीवोदनो सुप्रमाव के जेथी ए म्हारी कार्यनावा वेघडक अने निर्विन्न रीते जेथी संस्यानुं कार्य अविरत चाळे छे अने चाळरो !

॥ पारने नींबी शकी छे.

निवेदनम् र्र्स महारा**जा**नो सदानो हुं अस्सीम ऋणी छुं, के जेमना पुण्य नामे अनेक सेवासमाजो, स्नात्रमंहळो, अने प्रत्यक्ष आ संस्था प्राण टकाबी रह्या छे—तेओशीन् साथोसाथ एटछे कह्या विना रही शकतो नथी के ते भवोद्धारक सैसारनिस्तारक मारा अप्रतीम उपकारी सुगृहीतनामधेय कृपाम्बराभरण आचार्य

श्रीमती **आएम्भसिद्धि**द्यारा ज्योतिष जेवा—वहन अने सहन करवामां गहन एवा चार क्षेत्रमां पण सुरुभताथी म्हारी अल्पमतिने बीजोपि न्याये जे थोडी

म्हारी उरतछ उपर जे अमित अने अनिवैचनीय उपकारवहेण बहुं छे तथा सैद्धान्तिक, साहित्सविषयक अने कार्मप्रन्थिक क्षेत्रोमांना सञ्चार उपरान्त

पण गतिमान अने विक्तिसत करी छे, ते उपकारने, अने साचा तेमज मीठा ज्ञानलवना प्रसादने यावद्देह भूली शकुं तेम नथी....नथी.. . . . ने नथीज.

अने तेओश्रीना ते कृपाना सुचलथीज म्हारं आ विकट कार्य पण निकट थइ शक्युं छे.

**आ** उपरांत म्हारा आ कार्यनी सफळता प्राप्त करवामां जे उपकारिनधान पूजनीय मुनिराजोए—पूज्य **हेमेन्द्रविजय**जी महाराज पूज्य **विक्रमिय**ि

म्हारा छाबस्थ्य-के प्रामादिक कारणने अंगे, सामग्री अभावना कारणे, अथवा तो प्रेसना कारणे छुन्द्रपत्रकमां आप्या उपरांत पण रह्या होय, ते सुधारीने

वांचवा प्रकृतिकृपाछ विपश्चिद्दुन्द कृपा करे! एक मोटी भूल सुघारवा जेवी छे, जे पृ. २४४-८ मां नेयं छपायुं छे ते स्थाने नेह समजवुं.

हुने छेनटमां हुँ एटलीज वांचक्रगण पासे आशा राखीश, के आ प्रन्थमां सम्भवित अनेक भूलो, अशुद्रिओ, जुटिओ, रखलनाओ अने दोषो,

जयनी महाराज तथा पूज्य लिखाङ्गविजयनी महाराज विगेरेए सहायक साथ म्हने आप्यों छे, ते बदछ तेमनो तथा पूज्यपाद गुणरत्न निधि-शासन-

प्रभावक श्रीमद्भिजयक्षमाभद्रसूरिजी महाराजे च्लोको अर्पग कर्या ते बद्छ तेओश्रीनी पण उपकृति मानवापूर्वक आ कलमने विराम आपुं छुं.

> >> =

महर्द्धिक ऋषिपुद्धवोना सुप्रसादेच्छुक मूनि जितेन्द्रविजय.

	<b>.</b> 90					<b>9</b> C	
मारम्भ- सिद्धेः			दिवयात सम्	1 4 4 7		£3€	विषयातु- क्रमः ।
= * *	तिथिद्वारे १ इष्टदेवनतिः  प्रयोजनादिक दुष्ट-दग्धा-क्र्रतिथयः तिथिनियतकरणानि  भद्राया सुलाखद्वानि  । वारद्वारे २ वारहवरूपम्	1	२८ भानां प्रतिपादं वण्णां: २४-२५ अभिन्तारह्वरूपम् २६ मानामीकतारक-संज्ञाफळानि २६-२९ भानां मोह्यिकस्ञ्चाः आक्रतयः दिनिवनिश्चयश्च २९-३१ द्वित्वतारं द्वित्वतीतिकश्चभाऽश्चभता३२-३४ अमृतसिद्धी वर्ष्य-तिथयः ३४ प्रतिवारं द्वियौगिकथोगयन्त्रम्(पिरे०)३५ कुमार-राज-स्थिरयोगाः ३७-३८ व्यमळ-तियुव्-पञ्चक्योगाः ३७-३८ विश्व वर्ष-गण्डान्तानि ३६	२६ प्राणहरउपत्रहाऽऽद्वकादिवरुवंरादि- २६ प्राणहरउपत्रहाऽऽद्वकादिवरुवंरादि- २६-२९ स्थादिवारेषु उपयोगाः १३-१७ १९-२१ आनन्दादियोगानां यन्त्रकस् १६-१७ घुभाग्रुभयोगसाङ्ग्यें सुयोगपावल्य १८ विक्कस्मादि-दिनयोगाः १८ १८-३१ स्तिराकाकपञ्चराकाक्ष्वेधचक्रं ५२-५३ ३६ क्रतापातयोगौ ५४-५७ ३२ मिपादीनां पाद-वर्ण-रूपादीसि५८-५९	राह्मीनां दिख्क स्वामित्वं, चरस्थि- रक्ताऽकूर-पुंकीत्वादित्वक्व ६०  राष्ट्रीनां निशादिविक्तं शीपों- दिवित्वादिकं च ६१  अक्किदीनासुचनी चराशयोऽशाश्व६२  कुण्डिकायां द्वाद्य भावाः संज्ञाश्व ६४-६६  राह्मीनामीश-होरा-द्रेकाणाद्यः यन्त्रकञ्च ६७-७०  पङ्वगेलिसामानं दिगीशग्रह- यन्त्रं च ७१-७२  प्रह्मणां पुंकीनपुंसकन्यवस्था ७३  वर्णानुसारेण महस्वामित्वम् ७४	LANGE SANGE	== 5 ==
						%- <del>%-</del> %	

निष्यातु-	
CHACKACKACKACKACKACKACKACKACKACKACKACKACKA	%
यात्रायां चेष्टा-निमित्त-त्राञ्चन- विकोकनम् १५२-१५३ यात्रायां तृगार्थं रुप्तश्रुद्धिः, १५४ भौमादिपञ्चप्रहाणां त्रक्र-मार्गाः- ऽतिचारदिनसङ्ख्या १६३-१६७ चीर-विप्र-विण्ञां त्रकुन- भ-मुहुत्तैः सिद्धिः १६८ ग्राज्ञां प्रयाणे सिद्धिदाः सस्दत्य योगाः १६८ १५०-१७९ निमित्तेभ्योऽपि बल्जिनी चित्त-	IV वास्तुद्ध वास्तुश्चद्धौभायादिष भायच्ययविनिमयः⊸ यते च
जातरोगस्य नीरोगताज्ञानम् १२६ मृत्युज्ञाने श्रीण जिनाडिकन्वक्राणि १२७ भारोग्यार्थं भेषज्यसृहुर्तम् १२८ नवाज्ञ—राजावळोकनभानि - हळकुषी- वक्रांत्रीति च १२९-१३५ प्रस्थानविधिः प्राञ्जायां श्रेष्ठमध्यमनिन्द्यभाति १३७ यात्रायां श्रेष्ठमध्यमनिन्द्यभाति १३७ यात्रायां श्रेष्ठमध्यमनिन्द्यभाति १३७ यात्रामक्षत्रेष्ट्रमप्रवादे सवैदिक्का- दिक्जुद्धौ परिवापवादे सवैदिक्का- लीनमाति १३९	श्रुळ-दोषेऽपवादः योगिनीपात्र्काळराहुचारादीनि१४२-१४४ १ स्विचन्द्रचारी १ स्विचारे हंसचारवैशिष्ट्यम् १४६ १ श्रुक्र-वरस-शिवचाराः १४७-१५१
विवायस्थ्योगाः १०० मु०० मुळाऽस्क्रवयोः प्रमुक्षाकारौ शान्ति क्रमिष्ठित्रः १०,१-१० मु । १८,१-१० मु । १८,१० मु । १८,१० मु । १८,१० मु । १८,१० मुह नोमि । १९-१९ कणेवेधाऽऽद्यादनमूतनपात्रक्षीरः ।	A A A 5
प्रहाणां बड्विधं वरुंद्रधिमेदाश्र७५-७६ मुकाऽक्षेषयोः राह्तास्थ्रप्रद्वाणां मिथोवेषः ७९ मुकाऽक्षेषयोः राह्तास्थ्रप्रद्वाणां मिथोवेषः ७९ स्वान-व्याद्वाप्ताः मुक्तान-व्याद्वाप्ताः मिन्नान्ताः मिन्नान्ताः मिन्नान्ताः स्थान- यात्राद्विप्रहाणां कुण्डिकिकायां स्थान- यात्राद्विप्रहाणां कुण्डिकिकायां स्थान- यात्राद्विप्रहान्ते तारावकम् ८३ नामकरण-पद्धाः वाद्यवक्ष्टानौ तारावकम् ८३ नामकरण-पद्धाः द्वाद्यवनद्वावस्थाः ८७-८५ योति-गण्न्राश्च क्रान्तिकृत्येऽकादीनामष्ट्वगेशुद्धिः र०-९३ कणेवेधाऽऽद्याट	तिथा-नियमाळोचनातपोनन्यादीनां स्ट्रिंग मळंदः१-९५ विधा-नियमाळोचनातपोनन्यादीनां भार्यातामकंदीनां तृष्ट्ये शान्तिकम् विप्राधाप्रित्योपनयादिविचारः१२०-१३ विप्राधाप्रित्योपनयादिविचारः१२०-१३ विप्राधाप्रित्योपनयादिविचारः१२०-१३ विप्राधाप्रित्यापने भादीनि १६३-१६ विष्यवळं-अथोम्रुरवादिम-मेदाश्च ९८ नष्टवस्तुप्रापिज्ञानम् १२
# # = # # = # # =	

प्रसाद (१६) प्रसारप्रकार: १८५ प्रसाद क्षाति (१६) प्रसारप्रकार: १८५ प्रसाद क्षाति (१६) प्रमाद क्षाति (१६) प्रसाद क्षाते (१६) प्रसाद क्षाति (१६) प्	विषयोत्। ममः ।	== 9 ==
प्रमुवादि (१६) प्रखारमकारा: १८५ प्रकुक्कणो, वाल्येवार्त्वस्येवज्यंदिनाति २०० विवाहे महसंस्था २६०-२६२२ वास्त्रकव्यति १८६ मास-दिन-भञ्जदौ निर्मेदः २०१-२० प्रतिष्ठायां मन्द्रमादि पर्मात्वादः गुर्वमुख्य वनारम- प्रतिष्ठायां कर्यात्रक्षाता १८० मास-दिन-भञ्जदौ निर्मेद्धात्वात्रक्षाता १८० मास-दिन-भञ्जदौ निर्मेद्धात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्वात्वात्रमात्वात्वात्वात्रमात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्व	10 4 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 5 5 6 5 6 5 6	C+ 4C+
प्रमुवादि (१६) प्रखारमकारा: १८५ प्रकुक्कणो, वाल्येवार्त्वस्येवज्यंदिनाति २०० विवाहे महसंस्था २६०-२६२२ वास्त्रकव्यति १८६ मास-दिन-भञ्जदौ निर्मेदः २०१-२० प्रतिष्ठायां मन्द्रमादि पर्मात्वादः गुर्वमुख्य वनारम- प्रतिष्ठायां कर्यात्रक्षाता १८० मास-दिन-भञ्जदौ निर्मेद्धात्वात्रक्षाता १८० मास-दिन-भञ्जदौ निर्मेद्धात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्रक्षात्रमात्वात्वात्वात्रमात्वात्वात्वात्रमात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्व	ह्युष्ठश्रह्युच्छायातो काळानयनं२५७ ह्यादीनां सगतिकानां स्पष्टता, पन्नज्ञ २५८-२६१ स्वक्ता वक्तामिमुक्ता वा, मार्गामूता १६२-२६५ स्वक्ता वाह्युच्चित्ता वाह्युच्चित्ता व्यक्ताम् २६२-२६५ स्वाप्तिकात्ताम् १६५ प्रविक्ताम् १६५ -२६६ सम्प्रतिष्ठादिस्थरकम्भेष्ठ भ्रवस्थान् १६९ सम्प्रतिष्ठादिस्थरकम्भेष्ठ भ्रवस्थान् १६९ सम्प्रतिवात्ताः ग्रह्मस्था च२६७ -२६९ सम्बन्धित्यात्ताः ग्रह्मस्थान्यं २७० स्वस्युवेसंज्ञकनादीविचारः २७१ सम्बन्धित्यात्ता व्यक्तात्त्रात्ताः २७१ सम्बन्धित्यात्ता त्रवमानयन्त्रम् २७३ सादिल्ग्नाता त्रवमानयन्त्रम् २७३ सादिल्ग्नाता त्रवमानयन्त्रम् २७३ स्वत्यञ्जयात्त्रात्त्रम् २७३ स्वत्यञ्जयम् २०३ स्वत्यञ्जयम् २०३ स्वत्यञ्जयम् स्वत्यञ्जयम् २०३ स्वत्यञ्जयम् स्वत्यञ्जयम् २०३ स्वत्यञ्जयम् स्वयतात्त्रेष्ट्रम् व्यव्यञ्जयम् २०३ स्वत्यञ्जयम् स्वयतात्त्रेष्ट्रम् व्यव्यञ्जयम् २०३ स्वत्यञ्जयम्	२७५–२७८    १ १षिष्टानि स-ब-क-इ २७९–२९२    १    समप्ति विषयानुक्तमः
प्रमादि (१६) प्रसारप्रकारा: १८५ प्रह्युक्कयो. बाच्येवार्डक्ये वर्ज्यदिना सक्ष्यचन्द्रताराक्काति १८६ मास्युक्कादे: गुर्ह्युक्कयो. बाच्येवार्डक्ये वर्ज्यदिना प्रमास्त्राप्ता १८० मास्युक्कादे: गुर्ह्युक्क्यो. बास्तुन्धिः गुर्ह्युक्क्यो. बास्तुन्धिः गुर्ह्युक्क्योत्ता १८० मास्युक्क्यम् १९० मास्युक्क्यम् १९८ मास्युक्क्यम्या	२३०-२३२ निक्स्मीदि- योगाः २३३-२३७ स्थापना च२३५-२३७ भग्रहाणां शक्ति- तेले च २३८-२३९ १९ च २३८-२३९ मुर्तिस्थगुरोः, सिक्तः २४१-२४७ द्याऽस्तशुद्धी २४३-२४७ होराभादीना- लमान २९५-२४७ द्यासङ्क्षान्तीना-	ह्यस्मयस्पष्टीकृतणम् २५०–२५२ क्रमास्काकाऽऽनयनकृष्णिष्ठभञ्च २५ <b>३.२५</b>
CHECKER GERECKER CHECKER CHECK	गुरुशुक्रथो, बाल्येवार्ध्वक्ये वर्ज्योद्देनाति २००  V मिश्रद्वारे । ११  मास-दिन-भश्रद्धो विशेषः २०१-१०४  प्रतिष्ठादीक्षोद्दाहेषु भाति यन्त्र च २०५  मण्डपारम्भादिषु तिषिद्धदिनाति २०६  प्रवानके देगभाति शुध्युपायश्च  प्रवानके देगभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिनर्जभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिनर्जभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिनर्जभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिनर्जभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिन्द्रभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिनर्जभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिन्द्रभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिन्द्रभाति शुध्युपायश्च  प्रवानकादिन्द्रभाति सुध्युपायश्च  प्रवानकादीक्षयोश्चान्द्रस्य भौमादितिस्थे- तिद्धा नवा १ २२२-२२३	्रा स्थान
######################################	धुनादि (१६) प्रसारमकाराः १८५ नक्षत्रचन्द्रताराबछाति १८६ मासश्चिद्धः गृहंमुखं च , १८७ वास्तुति नार्गचार्या सननारम- दिक्-भुद्धिः १८८ विद्यु भेपचार्यापना १८९ विप्राद्धीतः १६० मुहारम् कप्रवात-विकान्यासभाति १९० मुहारम् कप्रवात १६०। भुद्धाः भुद्धः १६०। भुद्धाः निर्मात्रभाति १६०। विरुद्धाः १६३-१६४। भुद्धाः तत्र भुभमाताः १६५ विरुद्धाः तत्र भुभमाताः १६५ विरुद्धाः निर्मात्रभाताः १६०। विरुद्धाः तत्र भुभमाताः १६५ विरुद्धाः निर्मात्रभाताः १६०। विरुद्धाः समायान्यः तत्र भुभमाताः १६०। विरुद्धाः समायान्यः ।	v
स्तिस् सिद्धेः = 6 =	GY-5GY-5GY-5GY-5GY-5GY-5GY-5GY-5GY-5GY-5	4290-A59
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	年 注 : : : : : : : : : : : : : : : : : :	····

प्रातःसारणीय पूर्यपाद परम शासनप्रभावक सूरिसावभौमजैनरत ज्याख्यानवाचस्पति कविक्रलिकिरीट

महाराजने अभिआरमभिनिद्ध प्रन्थकी प्रकाशित करवानेमें भरसक प्रयत्न किया है, और उन्हींका कठिन

परिश्रम है कि आज यह ग्रन्थ हमारे हाथमें है, इसिलिये में उनका खास आभार मानता है.

आचार्षेत्रीमद्विजयल्डिघसूरीव्यरजी माहाराजके सुपट्टप्रमावक जैनाचार्षे श्रीमद्विजयगंभीरसूरीव्यरजी

= v =

साथही न्या० वा० पूज्यपाद जैनाचार्य श्रीमद्भिजयलिधसूरीश्वरजी माहाराजके शिष्य पन्यासप्रवर

चिज्य जी महाराजने अपना अमूल्य समय देकर इस ग्रन्थके संशोधनमें मारी परिश्रम किया है, उसके लिये

भी में उक्त मुनिश्रीका आभार मानता हुं. साथही साथ उक्त मुनिश्रीक कार्यमें मुनिराज श्रीहेमेन्द्रविजयजी,

श्रीविक्रमविजयजी, मुनिराज श्रीलिलिनाङ्गविजयजी महाराज आदिनेमी अच्छा सहयोग प्रदान किया

अत एव इसके लिये उनकाभी में आभार मानता है.

मुनिराज अ

श्रीप्रवीणविजयनी महाराजके शिष्य मुनिप्रमर् श्रीमहिमाविजयनी महाराजके शिष्य मुनि श्रीजिनेन्द्र-

अमिरिद्यान





い =

छाणी

जमनादास, सु.

चदुलाल

J	अ छित्र पन												-		2	<u>.</u>	
	9	3/z	%	XF.	<b>%</b>	<b>₹</b> 6	<b>(</b> 2)	6	G₹\	96	X	<u> </u>	الحراد المراد	<del>,</del> C3	6	<del>رکار</del>	جيو
		श्रुद्ध श	दिवा	क्रिक	यादाः	थ दिवा	ोंटीओ 	यन्त्रती नीचे जोइये	जम्रो	क्यमं	वारक्षं	सेत	बारे-बारं	कृतिका	थोत्तरा	टबिभ	
		मशुद्ध	दिया	कलिक	माह्य.	थदि	२२-१८-१९ मा लॉटीमो	यन्त्रनी	जओ	कुक्रम	वारक्ष	सेन	२४–११–२वारं–वारं	२४–१७ कृतिका	२५- ६ थोतरा	<b>रव</b> न्यभि	
		प्. पं. अशुद्ध	29-28	8 - K	44-44	२२–१८ थड़ि	22-96	· · .	23-16	48-96	23-29	38-8	-88-98-	4%-10	25 1-5-4 00	28-99	
		શુદ્ધ	= 48 =	नेयम् ।	द्या मितिः	तद्भ	स्रोकोऽयम्	শক্তী	पधा-गुरो	¥.	स्रो-पद्य	वारेषु	ju'	डीतमीस करो	दो काल	म्हाना	
		पृ. पं अगुद्ध	11 6 11 82-86	भूयः	एषामिति:	<b>1</b> 49  C	पंका	शन्नो		- क्रहं	स्रो-पधे	वारेषु	२१-१थी८ डचक छपाइ छे		दौका	मष्टा ना	
शुद्धि-सूचन ॥	नुसारण)	मृ		9 a- 8	26-36		18-18	16-11	96-28	१८-१६	16-23	86-58			29-8	29-12	
॥ शुद्धि-	(बुकाकारानुसारण)	શુદ્ધ	श्चयम्यत्र	म्भूत:	तस युंसः	>	जृतिः १।	श्च	यदा	= ~	ዲ	त्वाह्रजीना	कण्ठ यत्रक	<del>ا</del> ا	घटोका	डिब ४ द्ये	
		पृ पं, अधुद्ध	१- ६ शन्यतर	१–१२ कराः	१–१४ तस्यपुंस:	१–२१ १४	०-१० यृत्तिः	०-२१ जुप	११-१० वदा	1-19 49 11	۲- ۶ ۶۹	१- ३ स्वाह्न की	3-१२ कठ यत्रक	K- २ वे	४-१६ चटीका	૧૪–૨૩ દિઘદ્	
		Þ	•	0	0^	<b>6</b> ″	۳	ڄ	~	5	3	6,	۳	~	~	~ —	
		त्य <u>ा</u> इ	र्नीव	योऽपरापर	त्विकिय	वो छः	शम्भुस	परमद्यहा	द्विश्वा	रहेय	वत्रास्तु	वन्धवात	शस्त्रादि	माह्यंब	योगे च	द्विती	
		पु पं. अग्रुद्ध	१- ७ मींब	२- १ योऽपर	२-१४ प्यक्ति	३- ५ वो हुः	३- ६ शसुत	३-८ परमस	४-१ दिया	४- ८ रद्धयं	४-१९ नवा	४-२१ वन्धात	४-२१ शास्त्रादि	६- ५ याहाब	७- ९ योमेच	७-२१ दिनी	
₹ <u>~</u> %~₹	- 6	<u> </u>	- GC	₹ <u>`</u>	<u></u>	<b>₩</b> -9	<u>ه</u>	- 64	<u></u>	SC.	<del>-</del> -2/2-4	<b>∂</b> 6-	<u></u> う	ক্য	- 64	<del>一</del>	مي
	프 느	<u></u>	<u></u>	<u>:``</u> =		<u></u>	<u>`</u>		- 1								
	मारम	सिद्धे:	0 =	/ =													

c 96775	<u>ત્રું</u> શુક્લવન	<u> </u>	<del>, ~</del>	· <b>%</b>	<del>X</del>	<b>%</b> -	<b>€</b>	C	<u>-9</u> (	<b>.</b> ?₹	<u>•</u>	<del>*</del>	<u> </u>	-X-	- S	
थुन	: द्वितीय-	स्थापनोपरि झेया	. द्वितीय-	स्थापनाऽनन्तरं झेया	विजयाए	सुइस्थाने	न च अभिद्	<b>पु</b> स्सस्सिणि	पइहाप	चोराड—	नि-मुहक्केल	मं इति—		er e-	फग्तु अ क	ष सुहो
प. अशुद्ध	- १ एषा पर्हिकः	स्यापन	- ४ एषा पहित्तः द्वितीय-	स्थापनाऽ	- ९ बिजभाए	89- ९ दिनगुद्धी त	सन्ता दश्यते, न न अभिष्ट	४१- ९ पुरसितिण	81-१२ पहपद्धा	8१-१२ दिनशुद्धी तु चीराड	इत्यादि स्थानेसुहक्रके	वजाए महमं	हर्यते ॥	8 36-68	81-रश्च फस्तु अक	- इस सुहो
<b>1</b>	त्यपि ४१- १		-68		थतः 89-		<del></del>	<u></u>	<u></u>	<del>ه</del> ۳		<del></del>	দ্র			- 63-
প্র	'जेसि'इसपि	स्नेह	<sup>9</sup> जीवा	क्र	१ जीवस्थाने रवि. कथितः	नारचन्द्रे	त्रिभा	घट्यो	मेव	मं	मरङ्	संपद्धा	<b>द्य</b> ्युभय	गतप्रथम-स्थापना	भन्न होया ।	। मासछिग
पं. मशुद्ध	७ जरसय	९ स्नेह	३ जीवा	૩૭–૨૦ ર્થાંતૃ			४ जिभा	८ घट्यो	ተ የ	9 नरा	५ मध्य	५ रपका	६ ध्वत्य	ру 8		४०-२५ मास छित
<b>b</b> v	9 (1)	9	m 61	36-2	36-96	<u> </u>	36-28	39-6	28-36	108	508	56-08 H	80-98	80-29		80-5
शुक्	पुणन्बसु	रव्या	याबद्रा	ध्योवा	可影	क्रस्थ	वुष्य	वाषा	शब्देन	१ शतभिषा	विषासुके		43 43 43 43 43 43 43 43 43 43 43 43 43 4		कक्षणं	योगः ।
ं. अशुद्ध	२ पुणबसु	७ रच्या	१ शहर	१ ध्योवाँ	, चाक	४ कस्थं	1 पुच्य	। बासा	र शहून	३ १ पूर्वा	ं विष्णसुके	। प्रक्रि वया	उद्ग-१२ किक	। हिमे	र स्क्षणं	४ योगः
<u>.</u> q.	31-22	33-1-6	38-18	10 to	32-94	3 - 2 2	2-00	1 ev ev	23-2	33-2	0 - 5 m	2-5	38-2	64 19 84	1 9 00	20 1 9 av
ন ক্	भिमसिर	कमिति	चरे सुहा	मिस्से संधि		मिश्र घ्रवे:			मामनन्ति	पौ-स्वण्ड	200	बर्कम्	जिञ्चय	काति ८	वौष्ण	भस्तिणि
ए. पं. अशुद्ध	२८-१४-१५मिमीसैर	कमति	चरेसु भा	मिलेस्तमं	जै.	मिश्र ध्रवः	رم م	तिक्ष्ण	मानिन्त	पे-स्वण्ड	» »	पश्चम	जित्रय	लाम	पुरवा	भसिणि
 	36-98-					36-18					#9 − 9.				31-18	25-136
<b>6</b> %-6	आरम्भ- ध्र	A SA	\$ = \$ 2	= > > =	70	· %-	A.C.	क्र	<b>5</b>	<u>ন্</u>	10	R	2	A.	<b>%</b>	He!

	X.	-									3	
1	<u>ې</u> و	पृ. प. मशुद	जीहन	पृ. पं अशुःघ	गुस्य	पु. पं. अशुष्ट्य	गुप्त शुप्त्य	<u> </u>	पृ. पं. अशुष्य	शुःध	پوه	d
	(P)	४२-१२ मिति	मिति	५४-१२ ये"। विते। ये विकोक्यते"	ते। ये विलोक्यते"	६१- ६ पुस	ğğ	9	७४-२० हिंगु-सित्रां हिंगु-मित्रां	ां हिड-मित्रां	<u>(</u> ~)	अंद्रियन
ė E	<u>ئ</u>	83-३१ बर् उ	4 43	५५-१२ ताद्ध	माद्ध	६३ – ४ मृह	गृहमो गृह मो	9	હપ− <b>૨</b> ૬ ત્રુલ્ય	तुल्यं	<u> </u>	
=	·*	४५- १ न्होस	न्दोभ	५५-१४ हाद्यां	द्वादर्श	\$3- C PE		9	७५-२८ सिग्धो	सिग्धो	<b>,</b> ?;	
	બ્દ	४५-५ सह	त्यहं	५६− ९ भस	बलस	६३-११ नीचानि	वालि नीवांबाः		७६- ८ द्वि वकाः	द्धि बलाः	બુ	
	<b>₹</b>	%<- 소 보좌	धुम	५६-११ रेटने	भ खे	६३-१२ लिसो	क्षाँ जिसा	9	७६-१८ स्वाभा	स्वाभा	决	
	YG-	४८- ३ लंबको	लुस्पको	१९७-१९ मशा	मश्री	६३-१६ ।त्रश		<b>9</b>	७६-२४-२५ विशो	. विद्यो विद्यो	K.	
	وي	४८- ७ यदिति श्लोक	यदिति श्लीकमारभ्य प्र. ५७	५९- १ प्रथम विमर्श द्वितीयो विमर्शः	कि द्वितीयो विमर्शः	६४- ७ धंच झी	म ऋी धै चक्री		विशो	सिंशो विशो	۴	
	<b>ર્ન</b>	पर्यन्तं क्लि	पर्यन्तं किस्तिता श्रोकसंख्या	पृ. ७५ यावदेनं	गावदेवं पठनीयस्	६ ४ - ८ हचे			৬৩–१६ যার	भाग	Q.X	
	<u>%</u>	सैकाधिका	सैकाधिका दृष्टन्या. इति	५९-१८ मृशिः	न्रसिंधः	हाए। अ हा	द्वाद्या द्वाद्या	<b>9</b> 	७८- ६ मं-गू	मंद्र	6	
	*	योगद्वारे श्र	योगद्वारे श्रोकाः समग्रेण८शा	५९-२२ शेस्तु	शेषस्तु	६७-१० श्रेस्पा		9	७८-१७ स्वीस्ट्	स्बीन्द्र	<b>,</b>	
	%	४८-२३ वध	ত্ত্ব আ	५९-२५ वनपे	वनपे	६७-२५ कर		<b>9</b>	6९- ४ कमे	, tr	હ્યુ	
	₩.	५०- ४ मेनस्या	मेब स्या	६०- ६ विनेध	विरोध	६८-११ तमा		<u>න</u>	&−->	20 0	<b>₹</b>	
	क्र <del>य</del>	५१- १ सु संबसु	स्यः सम्म	६०-२२ वि	एवं	६९- ४ थानफ्रं	नफ्रकं स्थानफ्रकं	<del></del>	८०- १ धर्मात नुनि धर्म तज्ञी	ने धर्म तनुति	<i>9</i> G-	
	Ý.	५२- ३ वेद्य		६०-२५ याध	याध	७२-१३ स.	पु. ७३ गतनवांशयन्त्र १३		80-33 6, 90, 92 6, 90, 59	2 6,90, 29	<b>₹</b> 6	
	₹	भर्न ७ मंस्र च सप्त	प्त यंक् च सप्त	६१-२ करा	ऋराऽ		पक्ति-अनन्तरं अस्तु ।		८१- २ इन् यन्त्रकं प्र. ८२-२१	ह यु. ८२-२१	G	11 88 11
	96-	भ3-१५ क्रिस्त	म्	६१-४ कवेः	क्रमः	७३- १ राह्यः	यः राश्यः	_	•	पक्ती अस्तु	يم	,
	X-54										<b>₹</b> 6	
	*										<u></u>	

्र १८५ १८५ ध्याद्धिस्य चन	F6C-F6C4-F6C4F6CA	= e e e e e e
पु. पं अशुष्ट्य ह्युष्ट्य . १३५-११-२३ साम-श्रव सोम-श्रव. १३६-१९ क्षतमाला क्षमाका	१३७- ८ तिष्ठा ह-नीय निष्ठाह-नीय १३७-२६ तहास नि तहा सि अत्र समुग्धायं अस्तु १३७-२६-२७ अयं श्लोकः सम्पूर्णः लज्ज्याद्धिकारस्य भष्टित्र- ह्यप्रकाशस्य, चिन्स-	मेतत् । १३८- ९ साधयन्नि साभयेन्नि १३८-१० तेरसिपंचमिपंचमितेरसि १३८-१४ सह्नुरू-द्विंहा सङ्घ रू । द्विङा
्र. पं. अशुध्य शुध्य १२५- अन्त्रे लामविमागे मृत्तान्त भूतान्त	१२६-२६ धरे बिसुअं धरे बि सु १२७- ७ शुभाशु शुभाशु १२८-१२ मंगला मांझच्य १३१- २ प्च्छ पुच्छ १३१-८-६ इर। रसेव प्व। रसे ६ १३१-२१ पून पुन १३२- २ प्छल पक्लं १३२- ५ क्लाबिया कूर विद्या	१३२-११ त्रायाः या १३२-१३ शुक्र शुक्ते १३२-२५ स्थाने स्थापने १३२-३३ १ पञ्चमित्राशे प्रथमस्कोके १३५-३-५ सद्द सद्द सद्द
पू. प. अशुक्ष शुक्ष्य १०६-२३ न मे लोक्षे न मेलो वि १०७- ८ रक्षसो समसोः	११२-२४ सदेह: संदेह: ११३-२६ नाहि नाडी ११४-१८ सी दूर स्वीदूर ११५-२२-३ रिक्षे रिक्ष रिक्ष ११६-१५ षक षक् ११६-१७ थिनीऽसु श्विनी वित्राऽसु ११६-२७ बल बहुळ ११७-१३ सुख्ख सुक्ष	पड़ें डातग धुक स्थेपना स्क
प. सशुष्ट्य शुष्ट्य - ९ नवमप्कि-अनन्तरं तारा- सन्त सेयम	-	त स्य ज जा मूला ट्रका पहिका पृष्ट गुव्हें पृष्टि जि क्रमेणे
i is Reference III III	#56#56#56#56#56#56#56#56#	· • • • • • • • • • • • • • • • • • • •

शुद्धियन			= %
くかのかのか	-56-46C1-9C-1	F: -6-57-59-7x	50 45 4 5 4 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5
पु गै. अशुद्ध शुद्ध १९९– ६ कूत कूर २०१–१३ मबलाः सबलाः	२०३ – ४ लाग-तिड्यो लग-तिड्यो २०३-२२ विज्ञाति विज्ञाता तह २०३-३० पाति छि पातिछि २०४- ६ दशद्शम दशमा २०४-२२ मभ समं	२०८ यन्त्र २१० पद्धमपङ्क्तयन- न्तर अस्तु. ११०- ३ गहो जस्म उ गच्छह् जस्त गहो बच्च ह्	२१५-२६ तिथिः तिथैः २२४-१ धरा धरो २२५- ३ कुम काय कुम्मे-कार्यै । २२५-२९ तास्य ताभ्य
द शुद्ध ह्यथा नै च स्वक्षोंच	L 12	१७२-२९ चतुण चतुणां १७८-१० पृथ्मी कता पृथ्मी कृता १७९-१४-१५ वेलीम -क्रोनेब्लीम:-क्रूने १८०- ७ योगाश्व योगाश्च १८५-१४ पक्ती पङ्की	
पु. प अद्युद्ध १६०-१२ ध्यष्टा १६२-१३ स्वक्षे	१६३- ३ रूव १६६- ७ वारेसि १६८-१० मेतेग १६८-३२ विलभे १७०-२३ अ व्यास	102-20 चतुण 102-10 पृथ्नी कता 100-18-14 चेनीय - प्र 120- ७ योगाश्व 124-18 पक्ती	1८५- ८ तोऽय १८७- ८ अध १८८-२८ चन्नि १९२- ४ यलि
पु प अशुद्ध शुद्ध न दर्यतेन॥ भा स्त्रोक्ती तुरतज्ञ पू १४४ सु काक-	यन्त्र जो वर्ष -यर्थ पृष्ट पर सस्सुहो स	१४५-१३ मतिश भपिश १४६-१२ दिखे दिस्ये १४६-३१ पत्रद्र पद्रत १४८- ४ नाग्चद्रे नारचन्द्र	१४९– २ त्याडय त्याज्य १५६–२६ विमुक्ता विमुक्ता १५७–१४ स्था स्या १५९–३० वापिनित वावि हमित
पु पं अशुद्ध शुद्ध १३८-१५ रखेण भार क्खेणं आरो १३८-१५ सुरुख	ह कृत्तिकादि ह कृत्तिका ग प्रशिक्षा । दिक्की	द्भ्या वे(-विह्न-१क्षो, तरागिनने । शुक्कपक्षे वतु तिथिचतु	१४२-२२ ५-१५ ५-३० १४३- ५ चड व पुर चडघ-पर १४३-१८ दाऽघः दाऽध १४३-२८-३० अय स्तोहः दिनगुद्धौ ।
\$-6-5-5-8-	SCASON IN	56-65 F	マデングイナマルーナッグ
आरम्भ सिद्धेः	= & =		,

<b>~</b>	*								<b>~</b>	
% <b>~</b> ₹	े पु. प. मधुद्ध शुध्ध	पृ. पं अग्रुध्य	श्रुध्य	पू पं अह	मग्रुध्य	શુપ્લ	पु पं. अञ्चाध्य		શુપ્લ ્રે	•
Here de la	् २२६- ४ चेऽझ-तिथोशो चेडेसो	२२९-२९ लग्ने शु.	कमश्	२४३ कुण्डल्यां अंश १ शुक्र ६।१शु अं६	। अंश ३ शुत्र	ह ६।३ शु अंद	२६२-१-२ आ मे	न्धीस	यन्त्र (	शुद्धानम
भूक इ.स.	, तिथोऽ शो	२३०-१० योमङ्गः	योभेङ्गः	२४३-२५ शेपः		शेष:		पड़ी मुको	Hait L	~
= 88 =	, २२६१३ दा लग्न दा तादशं लग्न	ग २३०-२१ शुक्रजनी	सूर्यशनी	2-6-885	छ स्वा-शंषो	२४४-१-२ ख स्वा-शंदी स्वस्वा. शेवा	र ६२-२८ भवन		S.	
₹ <u></u>	<i>~</i>	२३३ कुण्डितिकाया १० मु शु.	े से धुर	H 2 -382	मयं नेय	मय नेह	र६५-२८ स्वता	ग खगा	77	<u></u>
% <del>-</del>	र र इ यन्त्रे ५-४-भ१ ४-५ ११ स-मंड	१३३-१८ मात् ००	मात् १०	288-93 2	या मृतु	गम्ब	२६८-२७ क्षिग्नजे	नजे क्षितिजे	. کو	
<b>&amp;</b>	२२६-१९ दृष्यमाणं स्था भूष्यमाणं स्था	१३४- ५ सहस्यं	सङ्ख्य	२८४२१ स	सङ्ख्य	सङ्ख्यं	२७)- ९ मार्धवदी मार्ध घटी	र्वदी मार्ध ह	गदी	7
<b>ઇન્</b> વેં	) २२६-२८ वादिक: वाधिकः	२३५-४-६ योयाः-गवितु योगाः-गविरु	र योगाः-रविरु	FT 6 -288	•नतुं •	ু থ	२८२-१५ सुख	म् सिंख	<b>%</b> -	•
<b>X</b> 1	२२७-२० नारच-उदासी नारच-उदासी	। २४१-३-१७ सद्भ-प्रती सद्भ-प्रति	ती सद्ग्र-ग्रति	386- B SA	ऽकंख	ऽकेस्य	२८४-१-१विवाहे	गहे विवाह	, IIC	
S.	२२७ २९ त्यधैः स स्यधैः । स	२४१-२६ स्वरव	स्वस्य	\$ 20-05E	अ मून सम्बद्ध	कम्मू	२८५-२-११ य सुल यसुर्व	। सुल यसुल	·E	o). 4
<b>→</b>	226-1-21 4-6 5-6	२४१-११ कास्यु	કર્યું જો	३४०-६५६	तदसकै	तद्शक,	४-७१६ ७०-४१२ १४-०७४	क्ष-७६ २१६	7€ 82'  -	~
<b>%</b>	556-26 10 10-6-10	२४३- ८ धुनक्वां	धुनकको	२५४-१७ द्वित्र		हिन्न	२९२-९-१५ दृष्टः-रेवता दृष्टः	द्षः-रेबता		
<b>₹</b> £	२२९-४-१९ दिएस दिएल दिन्स दिन्सं	-01-585	के स्तशु-राशि	२५५-२७-८ १० फले षान्नंपले-मूनं पले	। ० फले धन्	नंपले-मूनं पले		Av	रेवती.	$\sim$
<b>*</b>									. B.	9
<b>₹</b>		to.	इति समाप्तं शु	शुद्धि-सचन						8   8   1
<del>ن</del>										
Ý									<u>ን</u>	

॥ श्रीउद्यप्रभदेवस्र्रिविरिचता ॥ श्री आत्म-कमळ-लिंघसूरीश्वरेभ्यो श्रीगौतमस्वामिने नमो नयः

# आरम्भांसिद्धः-सटीका

= % =

॥ अथ प्रथमो विमर्शः

ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ।

रस्य मंगळम् गन्थरच-नाधारव-णैनञ्ज

क्षीलायेते यर्थतौ सततमवियुतौ सत्फलाब्यौ स दत्तां, वस्तुं नः सिद्धिसोधे सुसमयमुषभस्वामिद्देवज्ञराजः॥१॥

ध्रीधर्मन्यायसभ्यस्यवहतियुवतेर्जावलोक्तेन भत्री, श्रष्ठे तादङ्मुहूते परिणयनमिहाञ्चीकरद्यो युगाद्रौ

आर्शेषु पुराऽपि सन्ति कतिचिद्रयाख्याळ्याः केऽपि च, प्राप्ताः श्रीचरसोमसुन्दरगुरोः पादप्रसादान्ननाः

उक्तानुक्तदुरुक्तमर्थमथ तैरारम्मसिद्धेरहः, ब्याकतुं स्वपरोपकारविभये तद्वातिकं प्रस्तुवे ॥ २ ॥

भपि च श्रीजिनशासनप्रमावनादिविशेषफ्रकलाभापेक्षया कचिद्पवाद्पदेन सावद्यकमंप्ररूपणाया अप्यागमेऽनुज्ञातत्वात्समयविशेषे सात्र-ननु कि ताह तेषां ग्रन्थे ग्रथनस्य फलं १ हति चेदुच्यते-ज्ञप्तिरेव । ननु ज्ञाप्तिः क्रिययैव फलवती, तद्वन्ध्या तु सा धनध्याजुनीव नाजेनीया । सत्यं, परं न केवळं क्रिययेव झप्तिः फळवती किंत्वक्रत्येत्वक्रिययाऽपि, अन्यथा चौर्थपरनार्थादिपातकवेदितुर्वियेकिनः स्वज्ञपिसफलीकरणार्थ राय सदोपयोगिसद्र्षेक्कत्रिकापणकरणिमेतं प्रन्थमप्रन्थयन् । तैश्र मेतन्पाठिनां खंडखंडं पाण्डित्यं सूदिति सर्वकमोलङ्कभीणतां स्वकृतेराधातु कानिचित्सा-दोषनिर्णं स्फुटीकर्तुं बहुबहुज्योतिषाभिप्रायोपादानपूर्वमेतद्वार्तिकं कुर्वक्तिः सिन्नः पूर्वोकहेतोरेव तान्यपि ज्याख्यास्यन्ते, परं सदसद्विवेकप्रवेकेक्केक्तेत्तानि इह किल सकलिवर्गयथाकामाजैनगजैच्छ्रोगौजैरजनपदमहीमहेन्द्रश्रीचीरघवलनरेन्द्रपदत्तसर्वेच्यापाराधिकारेण श्रीशञ्जक्षयोज्जयन्तार्बुदादि-महातीर्थेष्वबुदाम्बुज्जबर्गिसङ्ख्यस्ववित्तविनियोगतः खर्वकितकलियुगाहङ्कारेण नानादेत्रीयकविजननिबद्धस्तुतिभारसहिष्णुतत्ताद्दग्धीरोद्दात्तककितगुणपरंप-भूरयः श्रीमन्त उद्यप्रभदेवसूरयोऽपरग्रन्थेष्वतिविप्रकीर्णया लौकिकलोकोत्तरकमीगोचरज्येतिर्वक्तज्यतयाऽत्यन्तमायास्यमानं गणकगणमालोक्य तदुपका-वद्यान्यपि कर्माण्यशेषनिबद्धानि अस्मासिरपि च धम्प्रेषु कर्मेसु एकान्ताभ्युद्यमेव केवलमिच्छुभिस्तन्मुहूतेषु तछन्नेषु च बहुज्योतिर्विद्विवादापत्रगुण-•ोपाजिंतजगद्वयापकयशःशरीरसंपदाऽप्यविनश्ररेण संघपतिश्रीवस्तुपाळमंत्रीश्वरेण निर्मापिताचार्यपद्मतिष्ठाः श्रीनागेन्द्रगच्छगरिष्ठाः सज्ज्ञानिक्रयागुण-थे सुविहिताः पद्स्थाः मौहाः सावद्यवचनतो विरताः । तेषामेव मन्थः सदाऽयमुपयोगितः लभताम् ॥ १ ॥ इति " यदेव साधकं धमें तद्यक्तव्यं वचस्विता । न त्वीषद्पि बाधाकुदेषेव हि वचस्विता " ॥ १ ॥ त्तरिक्रयास्विप प्रवृत्तिः प्रसज्येत, ततोऽत्रापि सावद्यप्रवर्तनापरिद्वरिणैव तज्ज्ञरीः फलवत्वसुपक्रत्पनीयं । अत एवोच्यते— निरूपणीयान्येव न युनः सावधप्रवृत्तेभ्यः प्ररूपणीयानि । यदुक्तम्---

प्रन्थस्य सर्वपापैदत्वायं क्षिष्टशब्दप्रयोगोऽयं । शंभवे किभूताय १ ॐ अवतीत्यौणादिके मप्रत्यये ऊटि गुणे स्वरादित्वादब्ययत्वे च सिद्धिः तस्मै पर्ज-सरूपायेत्यर्थः । अत्र धुर्प मातृकायामिव ''ॐ नमः '' इति पठितसिद्धमंत्रोपन्यास. । प्रयोजन चास्य निर्धिघ्नाधिसिद्धः । तथा सक्छानां अर्थाः च्छुभारम्भाणां सिद्धो निविघ्नस विघामावस्य वेघसे सप्टे , ध्यातृणामिति शेषः । अत्र युक्सा ' आरम्भसिद्धिः ' इति प्रन्थनामसूचा । तथाऽहेणां च्याष्या—यं सुखाय भवतीत्वेवंशीलः " श स्वयंविप्राव्भुवो द्धः " इत्यनेन द्ध प्रस्ये शंभुतस्मै गंभवे जिनाय नमोऽस्तु । प्जामहेते ' अहाँणामहेते ' इति पाठे तु प्रयानां प्रयाय । साक्षादुपलम्भो ज्ञानं यस्य यस्माद्वा तस्मै ॥१॥ अथाभिधेयसम्बन्धप्रयोजनात्याऱ्— ॐ नमः सकलारम्भसिद्धिनिविघ्नवेधसे । अहैणामहैते साक्षादुपलम्भाय शंभवे ॥ १ ॥ तत्र शाखस्यादौ मङ्गलाभिषेयसंबन्धप्रयोजनानि वक्तन्यानीत्युक्तिप्रामाण्यादादौ मङ्गलभ्थं समुचितेष्टदेवतानमस्कारमाह— तत्वार्थमेच वस्ये कचन विशेष च सोपयोगमिष्ट । तत्तद्जुसारतोऽक्षरघटना सूत्रे स्वयं कार्या ॥ १ ॥ दैवज्ञदीपकलिकां व्यवहारचयौमारम्भसिद्धिसुदयप्रभदेव एताम्। पकमेमुहूनोदिश्रिरप्युपयोग इखलं विस्तरेण । अध प्रकृतं प्रस्त्यते-

करणादिरूपस्तस चर्या इतिकर्तन्य गरूपाऽमिधेयतया यस्यां सा तां । एवं च न्यवहारचयां इत्यनेनामिधेयोक्तिः, तदुनस्या चेतद्ग्रन्थस न्यवहारचयां-

ट्याख्या—डेबज्ञानां गणकानां दीपकछिकामित्र स्पष्टार्थप्रकाशितत्वात् । ब्यचहारः शिष्टजनसमाचारः ग्रुभतिथिवारमादिषु ग्रुभकार्गे-

शासित क्रमेण तिथिश बारर भर योग४ राशिष गोचर्ये कार्ये७ गम८ बास्तु९ विलग्न१० मिश्रेः११ ॥२॥

म्भासिद्धमन्थस्य प्रयोजनं श्रोतृणां ब्यवहारकीशंकसिद्धिः परंपरं तु यथावद्वयवहारप्रवृत्या धर्मार्थकामरूपाणां पुरुषार्थानां सिद्धिः, क्रमान्मोक्षपुरुषार्थस्या-पीति । अथ पूर्वोक्तमेवामिधेयं द्वारेविशिनष्टि-" तिथिवारमेखादि " तिथिः प्रतिपदादिः १ । वारो रज्यादिः २ । ममश्विन्यादिः ३ । योगः सिद्धि-ं बाध वाध्यवासकभावसंबन्धोऽपि स्चितो भ्रेयः, ब्यवहारस्येति चास प्रन्थस्य नामान्तरं । प्रयोजनं च द्विधा-अनन्तरं परंपरं च । तन्नानन्तरमार-

सम्बन्धः ॥ कार्य विद्यारम्भादि ७ । गुमो यात्रा ८ । वास्तु गृहाद्द्रग्रसादादि, तत्संबन्धात्तत्प्रविशोऽप्यत्र ९ । इदं च गमवास्तुरूपं द्वारद्वयं बहुवक्तब्यतया योगादिः ४ । राशिमेषादिः ५ । गोरिव चरणं ' चरे राडस्त्वगुरौ ' इति यप्रत्यये गोचर्यं, पूर्वपूर्वराक्षित उत्तरोत्तरराक्षिसंचरणं प्रहाणामित्यर्थः ६ । कार्येद्वारात् प्रथगुपन्यस्तं । विलग्नं लग्नाख्यस्तत्कालोद्याद्वाशिः १० । मिश्रमुक्तानुक्तबहुद्वारवाच्यसङ्ग्रहरूपं ११ । प्रतेद्वारैः शास्तीति तत्रादी तिथिमाह—

= % =

नन्दा भद्रा जया ऐक्ता पूर्णा चेति त्रिरन्विता। हीना मध्योत्तमा शुक्का कृष्णा तु व्यत्ययात्तिथिः॥३॥

जनसित्याशक्कायामाह्र-'' अन्वितेति '' सान्वया नामानुरूपं फलमासांसित्यर्थः । अत प्वाह श्रीपतिः-'' चित्रोत्सनवास्तुसेत्रनृत्यादि आनन्दमयं कमै समीद्वाद्श्यो भद्राः । तृतीयाष्टमीत्रयोद्श्यो जयाः । चतुर्थीनवमीचतुर्द्श्यो रिक्ताः । पञ्चमीद्शमीपञ्चद्श्यः पूर्णो इति सिद्धं । पूर्षा नाम्ना कि प्रयो-व्याख्या—" त्रिसित " नन्दा भद्रेखाद्यावृत्तिः पञ्चद्यतिथिषु त्रीन् वारान् कार्यो । एवं च प्रतिपत्षष्ठथेकादश्यो नन्दाः द्वितीयास-

सर्वासु हाभं कमे कुर्यात् । दशे च तत्तिथिनिबद्धादवश्यकतेन्यादन्यकर्म न कार्य " । रुछस्वाह-" स्युर्यन्त्रमन्त्ररक्षादीक्षाछ्कदेषु कर्मसु साने रिक्ता-

शकादि रिक्तकमें व रिक्तासु नान्यत् किमपि ४ । विवाहदीक्षायात्रादि माङ्गच्यं कमै पूर्णासु ५ कृतं सिच्यति । सामान्येन तु दर्शरिकादिवजै प्रायः

नन्दासु १ । विवाहभूषात्रकटाध्वयानत्रान्तिकपौष्टिकाढि भद्रमयं कमे भद्रासु २ । संप्रामसैन्याभियोगाद्यं जयकमे जयासु ३ । वधबन्धातविषारिन-

दर्शाष्टम्यः शस्ता इति "। " हीना मध्योत्तमा शुक्लेलादि " शुक्लपक्षे आधाषञ्चतयी हीना, द्वितीया मण्या, तृतीया उत्तमा । कृष्णपक्षे तु एपां देवानां प्रतिष्ठादौ च तत्तत्तिथीनामुपयोगः । एवमेव वस्यमाणनक्षत्रकारणक्षणेशानामपीति रत्नमालाभाष्ये । जिनस्य तु प्रतिष्ठात्री पधीद्वादश्यी यात्रायां विविष्याश्चमे, ' धुचे तु कर्मणि शुमे " इति लछः । " स्वीक्षयांदिलादि " रिक्तापि नवमी गुणान्तरमाहुत्ये रिक्ता ४-९-१४ षष्ट्यष्टमीद्रादर्यमावास्याः शुभे लजेत्। स्वीकुपन्तिवमीं कापि न प्रवेशप्रवास्योः॥ ४ ॥ ट्याख्या—'शुभे इति'' सौम्ये कार्ये । उप्रकार्यं स्बशुभतिष्यादिषु विक्षिष्य तिष्यति । ''त्यजेदिति'' आमां सर्गासापि पक्षन्छिद्रसंज्ञत्यात् । व्यत्ययः. कथ १ आद्यापञ्चतयी उत्तमा ट्वितीया मध्या, तृतीया हीनेति । तिथिरिति सर्वत्र विशेष्य योज्य । तिथीशाश्चेषं रत्नमालोक्ता.— वसु ८ नाग ९ धर्म १० शिव ११ तिग्मरइमयो १२, मद्नः १३ कल्डि १४ स्तद्नुविश्व १५ इत्यपि ॥ १ यदाहुः—'' पट्यप्रमीचतुर्थीचतुरंशीद्वार्शीकुहूनवभीः । पक्षिच्छिद्राण्याहुर्लभते नैतेषु सिसिद्धिम् ॥ १ ॥ हुगा ९ नतको १० विश्व ११ हिर १२ समराश्च १३, शर्व १४ शशी १५ चेति पुराणहधाः ॥ ३ ॥ " तिथिपाश्चतुभुंख १ विघात २ विष्णंबो ३, यम ४ शीतदीषिति ५ विशाख ६ विज्ञापः ७ । तिथे हि द्रास्त्रक पितृनुशन्त्यधीश्वरान् , त्रयोद्शीत्तीययोः स्मृतम्तु चित्तपोऽपरैः ॥ २ ॥ विह १ विंरञ्जो २ गिरिजा ३ गणेशः ४, फणी ५ विशास्त्रो ६ दिनक ७ न्महेशः ८ सर्वेऽपि तिथिनभ्रत्रक्तरणभ्रणा. शुद्धःचे सत्युपयोगिन एव, तस्य सर्वेदेवाधिदेवत्वात् ॥ अथ क़तिथीराह—

तिथिक्षय-व्याच्या--यत्र तिथेबुंद्धिस्तत्रैका तिथिवौरत्रयं स्पृशतीति सा त्रिदिनस्पर्शिनी । तस्याः फल्गुरिति नाम हर्षप्रकाशप्रनथे । यत्र तु तिथि-त्रीम् वाराम् स्पृशती लाज्या त्रिदिनस्पर्शिनी. तिथिः । वारे तिथित्रयस्पर्शिन्यवमं मध्यमा च या ॥५॥ " दिनक्षये भवेत् कार्यक्षयस्तेन शुभं न तत् । प्रकृत्यन्यत्वमुत्पातस्त्र्यहःस्षक् तद्तोऽशुभम् " ॥ १ ॥ पातस्तत्रेको वारस्तिस्तिस्तिशीः स्पृत्राति । तासु या मध्यमा तिथिः साऽवममित्युच्यते । एते हे अपि स्याज्ये । यदुक्तम्-सिति किचित्कार्ये प्राह्मा, गमागमयोस्तु न प्राह्मैन । '' चतुर्दश्यिप गमागमयोने प्राह्मैन '' इति श्रीपतिः ॥ दग्धतिथिमाह—

दग्धामक्षण संकान्तौ रार्योरोजयुन्नोस्त्यजेत्। भूत ५ इग् २ युन्तयोः रोषां शोधिते भगणे १२ तिथिम् ॥ ६॥ ट्या्ल्या--संक्रान्ती सत्यामोनयुको राक्योभूतद्ययुक्योः सतोभैगणे क्योधिते सति होषां तिथिमकेण दग्धां त्यजेदित्यन्वयः। भावना चैवं-

१२, अत्र द्वाद्य ग्रुध्यन्ति परं शेषं न तिष्ठति, ततस्तुळास्थेऽके द्वाद्रथेव द्ग्धा । धनूराशिनंवमः ९, पञ्चयोगे चतुदंश १४, एभ्यो द्वाद्यशोधने

प्रश्नेपे जाताः षट् ६. एम्यो द्वादश न शुष्यंतीति स्थिताः षडेन, ततो मैषस्थेऽकें सति षष्ट्येन दग्धा । तुळाराशिः सप्तमः ७, पञ्चयोगे द्वादश

तदा संक्रान्तिराश्यङ्कमध्ये "द्योति" द्वयं क्षेप्यं, शेषं प्राग्वत् । उदाहरणं यथा-मेषराशिः प्रथम हत्येकाङ्को न्यस्यते १, एवमग्रेऽपि, ततस्तत्र पञ्च-

प्रक्षेपे यज्जातं तत्सङ्क्षयेव तिथिरकेदग्धा । तथा युजि समरात्री बुष २ कक्षे ४ कन्या ६ चुश्रिक ८ मकर १० मीन १२ रूपे यद्यकैसंक्रान्तिरस्ति,

विषमराशी मेष १ मिथुन ३ सिंह ५ तुला ७ धनुः ९ कुंभ ११ रूपे यद्यकेंसंकान्तिरस्ति, तदा तदात्रयक्कमध्ये '' भूतेति '' पञ्च क्षिप्त्वा भगणं राशिद्वाद्रशकरूपमिति कृत्वा द्वाद्रश शोध्यन्ते कृष्यन्ते । तत: शैषाङ्केनाकेद्ग्धतिथिज्ञंया । यदि तु द्वाद्रश न ग्रुध्यन्ति, शेषं वा न तिष्ठेत्तदा पञ्च-

्री     प्रथमविम्ये   दुग्यतिथि	निषेय:   6 =	201 601		
ためずたがずたり	6-45-76-43	~% <del>~</del> %~	% <del>**</del>	367E364E3
स्थितौ द्वाविति धनुःस्ये द्वितीया दग्या । तथा द्यपाक्षिद्वितीयः २, द्वियोगे चत्वारः ४ एभ्यो द्वाद्वा न कुध्यन्तीति  चुगस्येऽके चतुध्येत दग्या । मकरराशिटंशमः १०, द्वियोगे  द्वाद्श १२, एभ्यो  द्वाद्श कुध्यन्ति, परं शैपामावान्मकरस्येऽके द्वाद्श्येत दग्या । मीनराक्षिद्वदिशः १२, द्वियोगे चतुद्देश, एभ्यो द्वाद्शशोधने स्थितौ द्वाविति मीनस्येऽके द्वितीया दग्या । एवं शेपेप्विप मान्यं । सा च तिथिस्तं संक्रान्तिमासं यावर्ष्याङेया ।	इन्ह्रकन्ये ८ सगेन्द्रालौ १० तुलैगे १२ झ्यादियुक्ततिथिः॥७॥	ब्याख्या—द्वन्द्रं मिथुनं । अलिब्बैश्विक. । एणो मकर: । द्वयादीलादि द्वितीयातः प्रभृति द्वादर्शी यावत्समा तिथि: । विशेषस्तु—''कुंभधणे २ अज्ञमिहुणे ४ तुलसीहै ६ मयरमीण ८ विसकके १० । विज्ञियकतासु १२ कमा वीआई समितदी उ सिसिद्इदा॥२॥ " अत्र सिसद्हें ति " यदा कुमे धनुषि वा चन्द्रस्तदा द्वितीया चन्द्रदग्धेलाधर्थः । इद् हर्षप्रकाशे । स्थापनां—	तिथि:	0 f 6
योगे चत्वारः ४ एभ्यो द्वादश न परं शेपाभावान्मकरस्येऽकें द्वादक्षेत्र । एवं होपेत्वाि भार्यं । सा च	द्रकन्ये ८ स्रोन्द्रालौ १० ह	द्वयादीत्यादि द्वितीयातः प्रभ्रति द्वादः १० । विञ्छियकत्रासु १२ कमा द्वितीया चन्द्रदग्षेत्याद्यथैः । इद् ह	चन्द्रदग्धा कंभधतुषि मेपमिथुने एलासिहे मकरमीने	<b>गुपकके</b> मुश्रिककन्ये
ंतीयः २, द्वि श क्यध्यन्ति, द्वेतीया दग्धा		ो मकर: । ह विसकक्ते चन्द्रस्तदा	(記 (記 (記 (記 (記 (記 (記 (記 (記 (記 (記 (記 (記 (	o & &
स्थितौ द्वाविति धनुःस्थे द्वितीया दग्या । तथा द्युपाक्षिद्वितीयः २, द्वियौगे चत्वारः ४ एभ्यो द्वादश न कुध्यन्तीति  चुगस्थेऽके चतुध्येत द मकरराशिटंशमः १०, द्वियोगे  द्वादश १२, एभ्यो  द्वादश कुध्यन्ति, परं शेपामावान्मकरस्येऽके द्वादर्थेत्र दग्या । मीनराशिद्वदिशः १२, ि चतुर्देश, एभ्यो द्वाद्शशोधने स्थितौ द्वाविति मीनस्थेऽके द्वितीया दग्या । एवं शेपेप्विप मार्घ्य । सा च तिथिस्तं संक्रानितमासं यावस्याउँया	इदमेव सुखार्थं व्यक्तमाह— दग्घाऽक्रेण घनुमीने २ बृषकुंभे ४ ऽजकाक्रीणि ६ ।	ट्याख्या—द्वन्द्रं मिथुनं । अलिब्रैश्विक. । एणो मकर: । द्वयादीत्यादि द्वितीयातः प्रभुति द्वादर्शी यावत्समा तिथि: । विशेषस्तु—' १ अजमिहुणे ४ तुलसीहे ६ मयरमीण ८ विसकक्के १० । विच्छियकत्रासु १२ कमा वीआई समतिही उ ससिद्इता " अत्र ससिद्हें ति " यदा कुमे धतुषि वा चन्दस्तदा द्वितीया चन्द्ररम्बेलाद्यभैः । इद हर्पप्रकाशे । स्थापना—	अकेद्रधा धनुमीने इपकुंमे मेपकके मिषकके	सिंहचुश्चिके तुलामकरे दग्धतिथिजोऽभै: प्रायः स्वल्पनरायु: स्थात् ।
स्थितौ ह्याविति मकरराशिङ्गमः चतुर्देश, एभ्यो	इदमेव सुखार्थ दग्धाऽर्रुण घ	न्या ''कुंभघणे २ थ " र		ř.
1257125724	A-96-A-	9C74-9C74	9C+9C1+9	->F-PC-XF-PC-
आरम्भ- सिद्धः	= 9 =			

```
"कुछ स्नोरेऽम्बरे दी.स्थ्यं गृहवेशे तु शून्यता । आयुधे मरणं यात्राकृष्युद्वाहा निरर्थकाः ॥ १ ॥"
```

झ्ति दग्धतिथिफलं यतिव्छिमे ।

त्रिराश्वतुर्णामिषि मेषसिंहधन्वादिकानां क्रमतश्चतसः। पूर्णाश्चतुष्कित्रियश्च तिस्तरत्याज्या तिथिः कूरयुतस्य राशेः॥

एवं सिहादिचतुष्कस्य षष्ट्यादिचतुष्कं, धनुरादिचतुष्कस्यैकादर्यादि चतुष्कं च । यास्तु पूर्णास्तिकास्तिथयः सनित तासामेकेका त्रिष्वपि चतुष्केषु

ब्याख्या—अत्र तुर्येपादस्यादौ एवमिति पदाध्याहारेऽथैसंटंकः । तथाहि-मेषादिचतुष्कस्य क्रमात् प्रतिपदादितिथिचतुष्कं संबन्धि

प्रसेकं संबन्धिनी स्यात् । कोऽथैः १. मेपादिचतुर्धे प्रत्येकं पञ्चमी संबन्धिनी, सिहादिचतुर्धे प्रत्येकं दशमी संबन्धिनी, धनुरादिचतुर्धे

पञ्चद्यी. संबन्धिनी । स्थापना---

ज्ञमी च कूरतिथित्वास्याज्या । एवं द्यपे द्वितीया पज्ञमी च, मिथुने हतीया पज्ञमी च, कके चतुर्थी पज्ञमी च, सिंहे पधी दरामी च, कन्यायां

एवं क्र्रयुतस्य राशेस्तिथिः साल्येति । ततोऽत्र मेपे प्रतिपत्पञ्चमी चेति । को भावः ! मेपे रविमौमशन्यतर(म)क्र्राक्रान्ते सित प्रतिपत्प-

93-94 18-94

\$5-88 39-68

Hept

0118

08-2 8-90

5

ं मिथुन कके

9-90

कन्या

5	,
7	1
呆	
æ	1
F	

- क्रराकान्त तिथि वर्णनम् ॥ ८ ॥

दिस्ति के न सामय इ ज्ञानमग्रह पञ्चदशी च मीने चतुर्शी पञ्चदशी च त्याज्याः । ऋ्युतस्येत्यत्र' सावधारणं च्याख्येय ततः केवलेन क्रूरेणाक्राम्ता मेषाद्या राशयश्रेत् तदैव तेषु यथोक्तास्तिथयः कूराः, सौम्ययुतेन तु कूरेण द्यमा प्रवेत्यर्थः । यस्य नामराशिः कूरेणाक्रान्तोऽस्ति तस्यधुंमः क्षभकार्ये तद्राशिसंबन्धिनी सा सा तिथि-स्याज्येत्येके । अन्ये त्वाहु.-मेपे १-५ इति कोऽर्थः ? मेपे कूराक्रान्ते सति प्रतिपत्पञ्चम्योराद्याः पञ्चद्या घट्यस्याज्याः। जुपे २-५ द्वितीयापञ्चम्योद्धि तीयाः पन्नद्श घट्यः । मिथुने ३-५ तृतीयापज्ञम्योस्तृतीयाः पञ्चद्श घट्यः । कर्के ४-५ चतुर्थापञ्चम्योस्तुर्याः पज्जद्श घट्यः । एवं सिंहादिचतु-ट्याएया--चराणीति प्रतिमासमृष्टकृत्व आष्टुनेः । तथाहि-शुक्षप्रतिपद्रात्रौ बवं, द्वितीयायां दिवा वालव, रात्रौ कीलव, तृतीयायां दिवा सप्तमी दशमी च, तुलायामष्टमी टशमी च, युश्चिके नयमी दशमी च, धनुष्येकादशी पञ्चदशी च, मकरे द्वादशी पञ्चदशी च, कुंमे त्रयोदशी कृष्णचतुर्दशीरात्री शक्रिनिः, ट्यास्या—यदा यावष्प्रमाणा तिथिस्तदा तदर्धमानानि सर्वकरणानि, तिष्यधेष्विति वचनात् । असितेत्यादि अथ बच १ बालव २ कौलब ३ तैतिल ४ गर् ५ बिणज ६ विष्ट्यः ७ स्पत्त । करणान्यथ शक्कनि १ चतुष्पद २ नागानि ३ कमाच किस्तुन्नम् १४। अमावास्यायां दिवा चतुष्पदः, रात्रौ नागं, शुक्षप्रतिपदि दिवा किस्तुःनं । ध्रुवाणीति नियतस्थानस्थत्वात् । असित चतुर्दर्यधौतिरुयधँषु ध्रुवाणि चत्वारि ॥ ९ ॥ मासेऽष्टश्रश्रमाणि स्युरुज्बलप्रांतेपदन्त्याधौत्॥ १०॥ तिथिनियतानि करणान्याह— **८**क्रधन्वादिचतुष्कयोरपि ॥

प्रथमविमर्भ भद्राखरूपम् धुनद्दांदर्यां दिवा बवं, यावदाकायां दिवा विष्टिः ४ । पुनस्तद्रात्री ववं, झुष्णप्रतिपदि दिवा बालवं, यावत्कुष्णतृतीयायां रात्री विष्टिः ५ । पुनश्र-तैतिलं सीविलोचनापराख्यं, रात्री गरं, चतुथ्यां दिना वणिजं, तद्रात्री विष्टिभद्रा इति आदासुनिः। एवं द्वितीयाद्यासुनयो विष्टयन्ता सेवाः। यथा-तुथ्यौ दिवा बवं, यावस्ससम्यां दिवा विष्टिः ६ । पुनस्तदात्री बवं, यावत्कुरणद्राम्यां रात्रौ विष्टिः ७ पुनरेकाद्र्यां दिवा पञ्चम्यां दिवा ववं, रात्री बालवं, यावत् ग्रुक्काप्टम्यां दिवा विष्टिः २ । पुनसाद्रात्री ववं, नवम्यां दिवा बालवं, यावच्छुक्केकादस्यां रात्री विष्टिः ३ । द्शामूनि विविधीनि दिष्टान्यित्विलकर्मेस् । रात्यहर्व्यंत्ययाद्गद्राऽप्यदुष्टेवेति तद्रिदः ॥ ११ ॥ " यहि भद्राक्षतं कार्यं प्रमाहेनापि सिध्स्तिति । प्राप्ते तु षोडशे मासे समूलं तद्विनश्यिति ॥ १ ॥ विष्टि ८ रिलष्ट्युनी धुनैश्रताभीः करणैः सह मासपूतिः । इह च तादारिवकतिथिमांनस्य पूर्वोत्तराधे एव दिनरात्री शेषे । " इन्हों १ विधि २ मित्रा ३ यैम ४ भूप ५ श्री ६ शमना ७ आलेषु करणेषु कलि १ सुप २ फणि ३ मस्तः ४ पुनरीशाः क्रमशः स्थिरेषु स्युः ॥ १ ॥ ॥ ॥ च्याख्या--विविधीनीति कोऽर्थः ? एप्वेकादशसु करणेषु मद्रा दुष्टा । यतः---अंत्र शमनो यमः स भद्रायाः स्वामी ॥ क्रचित्साऽप्यधिकृता, यदुक्तं नारचन्द्रटिप्पनके---एषामीशा एवं —

" हाने चानराने चैच यातंपाताहिंकमीण । खंराश्यमसबे श्रेष्ठा भद्राऽन्यत्र नं शस्यते ॥ १ ॥

राज्यहर्क्संस्याद्वित राज्यंशसत्का दिने भीगता दिनांशसत्का वा निशीत्येवंरूपा अदुष्टेवेति । आंहुश्य-ं-

" राजिमद्रो धदाहि स्यादहमेद्रा धदी निधि । न तंत्रं भंदादीषः स्यात् सवैकायाणि साधयैत् प १ ॥ "

तथा या विद्यिषममप्राप्ता स्यात्, कोऽथैः 🖞 अन्यदिनसत्काऽन्येदिने आगता, अन्यनिशासत्का वाऽन्यनिशीति साप्यदुष्टैवेतापि केऽप्याहुः, ध्यानअष्टत्वेन निर्वेल्त्वादिति च तेषामसिप्रायः । परमैतद्वाक्यद्वयं म बहुसम्मतं, स्थीनॅान्तरप्राप्तस्यापि विषादेमरिणाहर्मक्र्याद्यनपगमादिति त्रित्रिक्रम: सुरमे वत्स या भद्रा सोमे सीम्यै सिते गुरौ । क्स्याणी नाम सा प्रोक्ता सवंकायांणि साधवेत् "॥ १॥

मद्राद्रोप-बारणम्

" स्वगैंऽजोक्षेणकर्तेष्वधः स्रीयुग्मभन्नस्तुलै । क्षेमैमीनीलिसिहेषु विष्टिमैत्येषु खेलिते ॥ १ ॥ अत्र सुरमे इति देवगणनक्षत्रे । तथां--

राजी चतुर्येकादर्योरप्रमीराक्योदिंवा। भहा शुक्ले तिथी कृष्णे त्वेक्नेकीने यथाक्रमात् ॥ ११॥ अत्र अजोसेति चन्द्रे यथोक्तराशिस्यै सतीति भानः! अंध इति पीतालैं। मत्येपिनति मनुष्यलोके। इन मारचन्द्राटिप्पण्यां मेंद्राकाल व्यक्ता प्राह—

च्याख्या—शुक्के इति शुक्कपक्षे कृष्णपेक्षे खेकैकोने तिथौ । तथाहि-गृतीयादक्षम्यो रात्रौ, सप्तमीचतुर्देश्योरिया चेलर्थ. । मझ दुष्टत्वाद्द-ांनाथं निष्टिरंच्यंतां, शेपकरणानां वजना रिवयं क्वीप्युरंयते ? उच्यते-संभान्तादिषु । यदाहुः--

" राकुनिचतुष्पद्नागे किस्तुष्ने कोलंबे वाणिन्ये च । ऊर्ध्वं सङ्क्रमणं गरतैतिलविधिषु पुनः सुप्तम् ॥ १ ॥ यययालवे निविष्ट सुभिन्नं वोष्वंसिङ्भमे । उपविष्टो रोगकरः सुप्तो दुर्मिन्नकारकः ॥ २ ॥

ग्द्राङ्गावय च्या स्था---त्रिकेति अत्र बाणद्विदिग्जलिषद्त्रिशब्दानां द्वन्दं कृत्वा ततः स्वाधिके के नाडिकाशब्देन सह कर्मधारयः । त्रिधिवति पाठ-स्वयुक्तः तिलादेशप्राप्तेः । कट इति कटी । कार्येलादि वक्त्रे कार्यहानिः, गले सृत्युः, हद्ये दृष्यनाशः, नाभौ बुद्धिनाशः, कट्यां प्रीतिनाशः, तथा शीतौष्णवर्षेतुषु सूर्यसद्कमाः क्रमेण सुस्रोध्वैतिवेशिनः ग्रुभाः । तथा पूर्वोत्तरकरणद्वयतिध्या संकान्तिरतु सुस्रोरिथतेत्यात्या सबै॰ बाण५ द्विर दिग्१० जलधिष्ठ षट्६ त्रिकः नाडिकास, वक्तं१ गलो२ हृदयरे नाभिष्ठ कटीश्व५ पुच्छम्६ तृतीयायां रामासु च गतसिंचजैक २१ घटिके, धुवं विष्टे: पुच्छं शिवतिषि १४ चतुष्योंश्र विगलत् "॥ १ " गुभागुभानि कार्याणि यान्यसाध्यानि भूतले । नाडीनयमिते पुच्छे भंद्रायास्तानि साधयेत् " ॥ १ ॥ चेछेचिंदच्युरिह कार्य १ वपुः २ स्व ३ बुद्धि ४ प्रेम ५ द्विषां ६ क्षयमिमेऽवयवाः क्रमेण ॥ १३॥ " द्शम्यामध्म्यां प्रथमघटिकापञ्चकपरं, हरिद्यी ११ सप्तम्यां त्रिद्य १२ घटिकान्ते त्रिघटिक । वेष्टेमुखाद्याङ्गान्याह— निध्यिच्छे तु ध्रवं जयः अत एवाह लहाः--दाध्यशुमेति पूर्णमदः ॥

अस्य भावनार्थं विष्टोमिलितमुखपुच्छक्कंडलाकारसपै-वत्स्थापना यथा--

गुच्छाद खरूपम् 118311 म्यो हैऱ्यान्सघटीत्रयासारंभः, तृतीयाराक्योः कंठब्रितीयघटीतः प्रारंभः, चतुर्देशीचतुष्योंस्तु मुखे पुच्छं समेति, तद्तु मुखादिशेपाद्वानि यावत्कट्याः प्रथमघटी । एवमग्रेऽपि भाव्यं । एकाद्शीसप्त-निरुद्वा एव यहुक्तास्तद्वयवहारत. पष्टि ६० घटिके तिथौ त्रिशद् ३० घटीमेव तिथ्यधै स्पादिति तद्पेश्रयेव, अन्यथा तु न्यूनाधिकतिथिवशान्न्यूनाधिके तिष्यधं पञ्चादिघट्यो न्यूनाधिका अपि स्युः ततौऽयं भाषः--द्राम्यष्टम्योविष्टेः कटोसत्कद्वितीय घटीतः प्रारम्भरततो घटीपञ्चकादनु इत्येके । ग्रुक्ले पक्षे सार्पणा, कृष्णे घृथ्रिकीलन्ये । इह च विधेर्मुखाद्य न्यादिघट्यो तथाहि-जवन्ये चतु.पञ्चाशद् ५४ घटिके तिथौ तद्धैमानत्वाज्ञघन्या सप्तविंशति २७ घटीका भद्रा । उत्कृष्टे पर्याष्टि ६६ घटीके तिथौ तु त्रयस्थितद् ३३ वटीका उत्कृष्टा। एव मध्यमे तिथिमाने भद्रामानमपि मध्य । घटी च पष्टि ६० परुमाना मदि प्रिशता ३० भज्यते तदा परुद्वम रुभ्यते. ततो यथोक्ते प्रिशद् घटीके भद्रामाने यावत्यो यावत्यो घाट्यो यस्मिन् यस्मिन्नके सन्ति तावनित तावन्ति पलद्वयानि घरीं घरीं प्रति तिस्मँस्तिस्मिन्नके हीयन्ते वधन्ते वा । कथ ? यदा जिशन्मध्यादेका घरी न्यूना एकोनित्रियद्घरीका भद्रेत्यथै तदा पञ्चवटीमिते भद्रावक्त्रे पञ्चपरुद्वयानि, कोथै. १ दस पङ्गानि न्यूनीभूतानि, दसपङ्गेन्यूनाः पञ्च घट्यो निष्टेवेक्त्रमिति भावः । एव द्विघटीमाने भद्रागाङे सर्पिण्या बद्न स्याज्यं बुश्चिक्याः पुच्छमेव च ॥ १ ॥ " " सर्पिणी बृश्चिकी भद्रा दिवाराज्योः स्मृता कमात् । प्रारंभ: । विगळविति प्रान्ते च पुच्छमिति । रेश्क मद्रायंत्रकम्

प्रथमविम्भ अत्र घु इति कोथै: १ घस्तुर्यन्यक्षनं उः पद्ममस्वरः, ततश्चतुध्याँ तिथौ पद्ममयामे पद्ममादेशि प्रतीच्या यातां भद्रा संमुखी स्यात् । एवं सथा एकघट्या न्यूनया वक्त्रे पञ्च पऌद्वयाति न्यूनानि तथा घटीत्रये न्यूने पञ्चद्ग १५ पछद्वयानि त्रिगत् ३० पछरूपाणि न्यूनानीह्यादि । एवं हानिमानं द्विगुणी कार्यं, कथं १ यथा एकघट्या न्यूनया वक्त्रे पञ्च पङद्वयानि द्रा पङरूपाणि न्यूनीभूतानि तथा घटीद्वयन्यूनतया भद्रावक्त्रे द्रा है परुद्वये न्यूने जाते परुचतुरमेण अनं घटीद्वयं विष्टेगैलमिति भावः। एवं हृदये दम घट्यो दग्रामिः परुद्वयेधिशति २० परुरूपैन्यूनाः। एवं नाभौ महार्भः पलद्वयैरष्टपलरूपैन्धैनं घटीचतुष्कं । एवं कव्यां षड् घट्यः यड्सिः पलद्वयद्वादिशपलरूपैन्धैनाः । एवं पुच्छे घटीत्रयं त्रिसिः पलद्वयैः षट्पल-रूपैन्धैनमिति । इदं त्रियनमध्यादेकघट्या न्यूनत्वे उक्तं । यद्गं तु त्रियनमध्यात् हे घट्यौ न्यूने अष्टाविद्यतिघटीका भद्रा स्यादित्यर्थः तदा एतदेव पछद्वयानि विद्यतिपछरूपाणि न्यूनीभूतानीत्यादि । यदा हु त्रिद्यनमध्याद्घटीत्रयं न्यूनं सप्तविद्यातिघटीका भदेत्यभैः तदा तदेव हानिमानं त्रिगुणीकार्यं । ब्याख्या—इन्द्राश्वतुदैश चतुदैश्यादितिथ्यष्टके पूर्वाषष्टदिश्च यातां प्रथमादियामाष्टके यथासंख्यं भद्रा संमुखी स्यात् । स्थापना " घु जा इ जी सिते पक्षे मृ छि ज् ह सितेतरे। न्यक्षनैस्तिथयो झेयाः स्वरैश्च प्रहरा दिशः॥ १॥ त्रिंशहुपरि एकद्विषिद्यिद्याविष वाच्यं, नवरं थथा प्राम् न्यूनीभूतानीत्युक्त तथाऽत्राधिभूतानीति वाच्य । इदं प्रसद्वाद्यितम् ॥ भद्रेन्द्रा १४ छा ८ भ्व ७ तिथ्य १५ जियदशे १० शा ११ छि ३ मित्रे तिथी। दिग् ८ यामाटष्टकयोनेष्टा संमुखी पृष्ठतः ग्रुभा॥ १ ॥ मद्राया मुखमेकान्ततस्याज्यमिसतो यात्रादी यथा सा संमुखी स्यात् तथाह—

र्रे अ प्रथमविमेशे १ भद्रास्थानं १० प्रवावासादि १९ प्रश्निः	<u> </u>	-%-%-%-%-%-%-%%%
जा इति जस्याष्टमभ्यक्षनत्वादाकारस्य च द्वितीयस्वरत्यादृष्टम्यां तिथौ द्वितीययामे द्वितीयदिशि आग्नेरयां यातां भद्रा संमुखीत्यादि तिष्ठने तथामे तिष्ठिक्ष प्रयाणादिसर्वकार्यमवस्यं त्याज्यं। पृष्ठत. भ्रुमेति यदा च यदिशि संमुखी तदा तिद्देशः पञ्चस्या पञ्चस्यां दिशि यातां भद्रा पृष्ठतः स्यात्, सा दिक् भ्रुमा ॥ इति तिथिद्वारम् ॥	प्रथमं वारः क्टा छगतीसाह—	वारादिरुद्गादूध्वै पलैमेषादिगे ग्वौ । तुलादिगे त्वधिस्त्रात्त्वुमानान्त्राधिकै । । १५ ॥  व्याख्या—मेपाविपक्रूस्वेऽके सत्यकोद्ग्यंस्मिमत इत्यर्भः । वारादिति वारो लगति । गुलादिपक्रूस्ये त्द्रयाद्भोऽनींग् रान्निरोपे सतीत्यर्भः । क्रियत्मलेन्याह निवादित्याद्दे स चाली चौदिनस्तर मानं तद्युमानं व त्रयोत्तरं विक्षेत्रमतलाये वातै. पलैः । क्षेत्रम मान निवाद मान्तरं व संख्याप्य यद्यस्मान्द्युष्यति तत्तसमान्त्रोध्यते ततः शेरेऽधिक्षेते यस्तानाद्वः पलेः । तथाहि—श्रीगौजंरपत्तने उत्कृष्टं कर्मादित्यमानं वटी ३ पल ४८, अस्मिन्नादित्य पले १४, अस्मिन्नादित्य प्रति । तथा तमेन पलेक्सणायं वर्षोस्य पष्टि ६० गुणने ५४ क्षेपे च जानं पल ११४ मितैः कर्मावदित स्योदयमनानन्तर वारो लगति । तथा तमेन पलेक्सणायं वर्षोस्य पि १६ पल १२, त्रिशनमध्यात व्यवक्त्य गोवने स्यतं वटी ३ पल ४८, मायदाधित प्लोक्त च ११४ पलैक्समावन
י ב מיחיז הם א	r 9 V	ारादिकद्यादृष्ट्वं पलैभे व्याख्या—मेपादिपद्धस्थेऽके परमालेनेलाह-विद्यादिसादि स नस्य मान त्रिंदातं च संस्थाच्य नस्य मान त्रिंदातं च संस्थाच्य नमानं घटी ३३ पल ४८, भ व्येषस्य पष्टि ६० गुणने ५४
क्षिक अभि व्यक्षित नेश्रस्य पश्चिम	उत्तर हैशान	वारादिक स्याख्या सतीत्यर्थः । कियत्काक्षेते कोऽथः १ इष्टदिनस्य मा उत्कृष्टं कर्कादिदिनमानं ध पछीकरणार्थं घट्यंकस्य तघन्य मकराषदिनमान
部 まっちゃら	~ m	सतीत्यर्थः । कोऽर्थः १ ह उत्कृष्टं ककी पलीकर्ष्णार्थं जदन्य मक्त
よりかんとうかんと	94H2	93:159:159:159:159:159:159:159:159:159:159
आरम्भ- सिद्धः ॥१५॥		

अत्रापिचितिहांनिः । पळाद्येति अनेनैकाकेत्यादी आद्यः पळाङ्को द्वितीयस्वक्षराङ्क इति भावः । अहर्बेध्ध्या च नियो हानिस्तद्धान्या दिने सूर्योद्यभवनांद्वांग् वारो छगति । एवं मध्यमदिनमानेष्वष्यानैयं अयौजनं चात्र वारप्रवृत्ति एवारभ्य वध्यमाणानां काछहोराणामधेयामादीनां एकाकै १–१२ पक्षद्विशरा २–५२ खिदन्ताः ३ ३२, त्रिदन्त ३–३२ पक्षद्विशराः २–५२ कुसूर्याः १–१२ । मृगादिषट्केऽहनि बृद्धिरेयं, कक्षे त्रिरामा बसुबेद्युक्ता ३३-४८, पषामितिः संक्रमबासराणाम् ॥ २ ॥ तदृध्वं च--" रसिद्वि २६ नाड्योऽर्क १२ पला मुगे स्युः, सचापकुंमेऽयुक्रतेः पलैस्ताः २६-४८ '' बहुइ जसु मयराइसु पलाण छत्तीस ३६ छलसि ८६ छाहिअसयं १०६ अछौ च मीनेऽप्रयमाः सराका २८-१४, मेषे तुलायामपि त्रिंशदेव ३० ॥ १ ॥ कन्याचुषे भूशिखिनो३१ऽद्रवेदैः ४६. साकांस्त्रिरामा मिथुने च सिंहे ३३-१२ । कमउक्रमओ हायइ तहेव कक्राइरासीसु ॥ १ ॥ चेतरद्वाद्धः स्वयमूह्या । एवं च बृद्धिहानिपलसर्वांत्रमिदम्--च गणना कार्येति । दिनमानानयने च स्थूलोपायोऽयं---ककोदिषर्केऽपचितिः पलाद्या ॥ ३ ॥"

118811

पश्यो	त्रपत निमञ्ज	क्रिय विस्ति	हानिमानम्										,.		119,611	ne n
£963x	%-	X o	Q-5	æ?	و	ନ	بح	<u>₹</u>	%	¥	مر	¥ <sub>€</sub>	96	ۍ د	<del>بر</del> عز	<u>~</u>
विशेषस्तु—	मिच्छ अकुमाइतिए निम्सिहोह निस्धणुहककातुछि मच्झे ।	मिगामहणकत्रसाहि निस्थिते संकमइ वारो'॥ १ ॥	इति दिनशुद्धियन्थे । " राम ३० रस ६० तस्त ९० तामा ७० तेस ७०	So les et liste et le les estats et les esta	ייים ייים ייים ייים אינה ייים אינה ייים אינה ייים אינה ייים ייים ייים ייים ייים ייים ייים י	मं प्राची विषयः सम्बन्धा मानस्य मान्यः स्तुः १ ॥ ४ ॥	अत एव च शनिः सुस्रो भन्यः, जिंशाद्घटीकृपस्य शनेभा-	गस्य शनिदिन दिनेन समाप्तरनेन शने रात्री रिनभोगस्येन समागम-	नात् इसम्ये ॥	वाराणां नामाद्याह—		(一) イン・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・	गुरुशुक्रशन्यस्य दिनवासः।	रावकुनमामः क्राः,	सौम्याश्वान्ये पदोनप्तलाः ॥ १६ ॥	
गच				:;	lb-	μţ	ાર્જીશ	رغو	र्धीश	:5	le-	.jrj.	લાક	ρĺi	£	
	सङ्कान्त्याद्य	दिनेवारप्रास्भ	पक	1	بر سر	m'	20	m'	m'	1	m 5	W, M,	20	W,	<b>5</b> ,	
  -		4	অ	-	0	٠-	<u> </u>	~	٥	1	0	~	-	~	•	
	मासेन गृहिहानि- पलसन्नीप्रम्	पलसन्त्रीप्रम्	1	वृद्धिः	ন্দ্ৰ কি	य ज्	हानि.	हानि:	हानि:	हाति.	हाति:	हानि.	ख्य की	নু ক্ল	चृद्धिः	
मासेन इ	पलानि	808	<b>&amp;</b> >	w w	W mi	, M.	& 0 &	800	8	en'	80	w V	308	į		
	प्रतिदिन ानी	गनी	1	झिंडे.	व्यक्तिः	<u>श</u> िद्धः	हामिः	हानि:	हाति:	हानिः	हानिः	हातिः	व विदे	व <u>्</u> यि:	य द्	
मासावधि प्रतिदिन दृद्धिहानी	प-अश्वर	3-33	85-8	2	3-13	55-6	200	67 67 67	8-4	26-6	1-12	8-88	3-23			
		पल	0	So FO	<u>بر</u>	200	2	m,	۰	20	28	5.5	ンカ	200		
स्थापना— द्वाद्यसद्यानितकाद्य दिनानां मानम् एवं	घडी	o,	er er	en,	W.	U.S.	ट तर्र	w 0	22	ري ري	w	w	36			
	स्यः	मेदे०	ध्यु दे	मिथु॰	<b>क</b>	सिहे॰	क्रम्या०	तुला०	ব্যুষ্টি	धने०	सरु०	सम्भ	मीने०			
%-96-¥-	¢Ç-	<u>ي</u> د	G	€ €	-9/	<u> </u>	-6(	<b>₩</b>	. o.C.	%-°	<u>ر</u>	¥}9	<del>ه</del> که	- 6,		من
			= <u></u> -	·*	<u></u>					<u>. :~</u>				<u>~</u> _		,

प्रतिवार-राज्याभिषे म्सेवामन्त्रशक्षोपधिवधासङ्ग्रामयानसुवर्णताङ्गोणिकाऽलङ्करणिक्षिष्पुण्यकमाँरिसवादि र्घौ सिद्ध्यति १। रजतगेयभोज्यकृषिवाणि-इस्यासुकतेः, कूरत्व चैषां याद्यं दिवा गण्यते न ताद्यं रात्री, '' न वारद्रोषाः प्रभवन्ति रात्रो '' इत्युक्तेः । पदोनेति पदः पादस्तुर्याश इति यावत, तत एपां तीम्यकूत्वाराणां श्रुभाश्चभफलं विंगतिविंशीपकापेक्षया पादोनमेन स्वात् पञ्चद्रशैन विशोपका इत्यथः । वारेपूर्नितकमिष्येव---" रिजमन्दारवारेषु यस्मिन् सङ्कमते रिवः । तिसिन्मासि भयं विद्याद्दुमिश्चाचुष्टितस्करैः " ॥ १ ॥

|| || ||

ड्यादि सोमे २ । सर्व क्र्रकमेरकताबहेमप्रवालाऽऽकरघातुसेनानिवेशादि कुले ३ । अक्षरिकाकणंवेधकाब्यब्यायामतकेवादकळापठनादि झुघे ४ । सर्व ग्रुममाङ्गरममेदीयाविद्यायात्रीपथादि च गुरी ५ । सर्व बुधगुरूक् दीक्षावर्ज शुक्रे ६ । दीक्षागृहप्रवेशनिवेशादि स्थितं क्रूरं च कर्म शनी ७ '' सन्बीर्थसाधका बारा गुरुशुक्रबुधेन्द्वः । प्रोक्तमेव छतं कर्म भौमाकांकिषु सिध्यति '' ॥ १ ॥ " लाक्षाकुसुम्ममिष्ठिप्रारामे काञ्चनभूषणे । शक्ता भीमरबी लोहोपलत्रपुविधौ शतिः ॥ १ ॥ इदं देवज्ञवात्रमे । तथा--

द्रव्यादिद्गमग्रहणे निधाने, वाणिज्यसेवागुरुराजयोगे । कलार्ङाषंखीग्रुभक्तमीवित्तन्यासौपधेष्वारशनी न शस्तौ "॥ २

" उपचयकारस्य कुर्याद्महस्य वारे स्ववार्गविहितं यत्। अपचयकारमहदिने कृतमिप सिर्झि न याति पुनः"॥ १॥

इति यतिबछ्नमे । विशेषस्तु—

कार्थम् । यस्तु तदानीं गोचरादिना प्रतिकूळः सोऽपचयकरः तस्य ग्रहस्य वारे क्षतं कथमपि न सिष्यतीति । प्वमभेऽप्युपचयकरापचयकरशब्दौ भावनीयौ इति छछुः । अस्पार्थः-चक्ष्यमाणगोचरादिविधिना यो प्रहो यदा यस्यानुकूलः स तदा तस्योपचयका इत्युच्यते, तस्य प्रहस्य वारे यथोक्तं कार्य

' यस प्रहस्य वारे यिनिञ्चत्कमे प्रकीर्तितम्। तत्तस्य कालहोरायां पूर्णं स्यानूणेमेन हि''॥१॥ र्शनिजीवभूमिपुत्राणां'' इति । अर्कात् किङ सितः षष्ट., सिताच ज्ञ. पष्टः, ज्ञाच चन्द्र. पष्ट इत्यादि । एवं चार्कवारेऽकेश्वज्ञव्यादीनां होराः पुनः न्यार्त्या – स्वनारत इति, यदिने यो नारस्तसाऽऽद्या होरा, द्वितीया षष्ठस्य, तृतीया ततोऽपि पष्ठस्येसादि। अत प्नाह-''अर्फस्तितज्ञचन्द्र-पुनस्तावस्त्युर्यावद्होरात्रे पष्टिनदीमिश्रनुर्वतातिहोराः स्युः । सोमवारे खाषा चन्द्रहोराऽभ्येति पुनस्तथेव चतुर्विशातियांवद्गोमवारे आद्या मोमहोराऽभ्ये-भग्ने च राइपर्धस्य होरासंज्ञा वस्यते इत्यत आसां काल्होरिति नाम सेयं। स्ववारत इत्यस्य च वण्टाळोळान्यायेनोमयतोऽभिसम्बन्धनात्, '' स्वचारतस्तास्तु पूर्णफळा इति '' ग्रुभाग्रुभस्य तह्निनारस्य सम्बन्धिम्यां होरायां कार्यकतुः पूर्णं विंशतिविंशोपकं शुभाशुमं फल सात् , पञ्चद्रशविंशोपके वारफले होराः पुनरक्षेसितज्ञचन्द्रज्ञानिजीयसूमिपुत्राणाम् । सार्षेघटीद्रयमानाः स्ववारतस्तास्तु पूर्णफलाः ॥ १७ ॥ " होराफळवारफले निन्धे हे अपि न जातु ग्रहीत । ग्रकास्मिन् ग्रुभफलदे तयोश्च कार्य ग्रुभं क्रयांत् " ॥ १ ' बारफलं होरायामितिं '' पञ्चविद्योपकस होराफलस मिलनादिसयाः। भत एवाह लहाः-इति यतिबछ्नमे । तथा— होराप्रयोजनं स्विदं — इति व्यवहारप्रकाशे । वारेषु कुवेला प्राह— बुध | २॥ वारेषु काल्होराः गाह— (रविघरी) कालहोगाचक तीत्याहि । स्थापना— 112 AL

						80	١
-5	स्याज्योऽ	ग्रेयामो वेद	ति हिं ।	द्धर पञ्चाप	खाड्योऽध्यामो वेदाध द्वि७ द्वि२ पञ्चा५ छ८ जि३ षिमता६ । सूयितौ कालवेलाऽधैयामाङ्कात्सैकपञ्चमी ॥१८॥	G-X-0	प्रथम
आरम्भ	10	याख्या—यद	ापि प्रमाणेनार्ध	वामत्वे वस्याः	ब्याख्यायद्यापि प्रमाणेनाधैयामत्वं बक्ष्यमाणकाळवेळादिष्वप्यस्ति तथाऽप्यनाधैयाम इति रूडसंझेन श्रेया । तथा चार्धयाम इति पद्स्याऽऽ-	×C3(	विमञ
सिद्धेः	मुस्या ज्या	स्या सिद्धा ।	कथं १ सूर्यादि	ध्वारेषु वेदाहि	मुस्या ज्याख्या सिद्धा । कथं १ सूर्यादिवारेषु वेदाद्रिद्विषञ्चादिमितोऽर्धयामः सामान्येन घटीचतुष्करूपो नाम्नाऽप्यर्धयामस्याज्यः । विशेषस्तु—	ريح	acutan-
\$ C.		•	' सोल १६	ड ८ दसण	" सोल १६ ड ८ दसण ३२ दु २ इग १ चउ ४ चउसट्टी ६४ अद्धपद्दरमज्झपला।	<u></u>	यामाह्यः
<b>美</b>			जताइसु ३	<b>ब</b> ह अहमा पु	जताहमु अह अहमा पुन्वाई छठ छठ दिसि "॥१॥	96	
<del>9</del>	इति	इति दिनशुद्धी।	अत्र ''मज्ज्ञप	कि ति" पूर्वा	अत्र 'भग्रमणक सि" प्रशिद्धिः षष्ठपष्ठदिशि यात्रादौ कियमाणे क्रमादेते प्तेऽधंयाममध्यपत्ना अत्यन्तं त्याज्या इत्यर्थः ।	¥-⊁	
শ্ৰহ	बार्याः	भधंयामाः	अद्ध्यामगत- मध्यपङानि	भासु दिक्क	भस्य व्यक्त्यर्थं स्थापना यथा	•€3	
1- <b>-</b> -	सम	ဘ	w	पूर्व	स्यादावित्यधंद्रयेऽपि योज्यं । सैकपञ्चमीति भावप्रधानत्वािकदेशस्य सेकत्वे सति	S.	
Fit	in Fr	9	٧	वायक्य	पञ्चमा सक्षयञ्चमा । अय भावः-अधयामाञ्चान् सवान् पद्कला न्यस्य तद्भ एककः स्थाप्यतः त्त्रशाहि-४-७-२-५-८-३-६-१ इति. ततः क्रमेणार्धयामाङ्गाद्रणने पञ्चमः पञ्चमोऽङ्कः काल-	<b>E</b> 96	
<b>76</b> 2	मंगळ	æ	6Y 6T	दक्षिण	वेलाऽकांदिवारेषु, यथाऽक्षेवारे चतुष्कशोऽधंयामाङ्कः, चतुष्क मात् क्रमेणाप्रतो गणने पञ्चमोऽष्टकः	AL.	
<b>-</b> 64	द्रा श्रि	5	'n	इंशान	समागतः, ततो जातमक्षारेऽप्रमे चतुर्धिरके काळवेळा । एव सोमवारे सप्तकोऽर्धयामाष्ट्रः	<b>%</b>	
₹.	( <u>3</u>	v	مین	पश्चिम		<b>&gt;</b> %	
94€	<u> </u>	m'	ဘ	आप्नेय	भाब्यं, नवरं गुक्वारेऽष्टकोऽघंयामाद्रः, अष्टकाद्गुणने च पञ्चमः पश्चाद्वलने चतुष्कत एवं । 	, Re	2000
%-	यानि	w	დ, გა	डत्तर	·	<b>∕Ç</b> ₹	= 0 } =
*35						9C-X	

अत्रायमाम्नाय.-कालवेलाद्वा एव चतुर्युता अर्घप्रहाञ्का. स्यु , यत्र चाष्टभ्योऽधिकोऽङ्क. स्यातत्राष्टाभभांगो देयो दिवा चतुर्विटिकानामष्टा-" स्यांदी कालमेलाऽष्ट ८ त्रि ३ षट् ६ क्ष्मा १ ब्य्य ४ श्य ७ दृ २ मिता "

प्रथमविस्ध

न्यायाद्मन्यक्नतोऽपि सम्मतमिदं । एवमग्रेऽपि परमतोक्तौ वाच्य । दिनाष्टाशशब्द्भयोगाच दिनाष्टमांशमाना एते सबैऽपि, स च चतुर्वदिकादूनाधिकोऽपि

स्यात् तथाहि-जवन्ये दिनमानेऽष्टाशे घटी ३ पल १६ अक्षर ३०। उत्कृष्टे तु घटी ४ पल १३ अक्षर ३० एव मध्यमानेऽपि भाष्यम् ॥ कुलिकमाह-

कुलिको द्विमशन्यन्तमिते लाज्यः स्ववारतः । मुहूतेऽहि निशि ब्येके भागः पञ्चदशस्तु सः ॥२०॥

कटकसंज्ञाः युक्ष्मस्यययाविति प्राग्यद्वयारयेय, तथा चार्कादिवारेषु पञ्चचतुच्चिद्वयेकसस्पष्ठादेनांशा उपकुष्टिकसंज्ञाः । परेरिति अप्रतिपिद्धमनुमतमिति ''

कंटकोऽपि दिनाष्टांशे स्ववारान्मङ्गलावधौ । बृहस्पत्यवधौ चोपकुलिकस्खङ्यते परे: ॥१९॥

नामेव सझावात् ॥

ट्यार्या—द्विप्रशन्यन्तेति तद्दिनवाराच्छनिर्यन्संख्यस्तद्द्वे द्विगुणिते यत् स्यात् तत्संख्ये मुहूने दिवा ङ्खिकः, निशि तु स एवाद्व एकोनः

द्वादरी मुहुनै टिया कुलिकः, रात्री त्येनाटरो इत्यादि । भाग इति यद्यपि मुहुनैशब्दो द्विघटिकवाची तथाप्यत्र तादारिबकडिनरात्रिमानयो. पञ्चद्यो-

कायं: । यथाऽकोंच्छतिः सप्तमः, द्विगुणने चतुर्देग, रविवारे चतुर्देशे मुह्ते दिवा कुलिकः, रात्री तु त्रयोदशे । तथा चन्द्राच्छतिः पष्ट , द्विगुणने

ऽत्तो द्विचटिकादूनाधिकोऽपि कुलिकस्य माने झेय. । तथाहि जवन्ययोहिनरात्रिमानयो पञ्चद्रशाँऽशाँ घटी १ पल ४३ अश्रर ४८ । उत्कृष्टयोस्तु

घटी २ पल १५ अग्नर १२ । एवं मध्यमानेऽप्यूहा । विशेषस्तु-कलिकममये किमपि कर्म न कार्य यहुक्त--

ट्याख्या—तहिनवारात् यत्संख्यो मज्ञरुस्तरसंत्यो दिनाष्टाय कंटकसंज्ञः । तथा चाकोदिनारेषु कमान्निद्वयेकसप्तपट्पञ्चचतुर्थदिनाया.

प्रथमविमर् <u>शे</u>	्राप्त	188						>t1		5			-()
¥.5% ≥	- 20 - 1	% ₹	£ &€	<u> </u>	6-4×	)  -  -	~ }a	<u> </u>	<i>y</i> o →		42	<b>1</b>	<b>297</b>
नारामुपयाति नियत जात कर्मान्यद्पि तत्र "॥ १॥	ब्राह्म. शनी रौद्रो मुहूनाः कुलिकोपमाः "॥ २ ॥	अत्र बाह्म इति ब्रह्महैनतः, एव पैत्रादिष्विप वाच्यं। ब्रह्मत्वादिषिभागस्तु मुहून्तिमामे श्रीराधिकारे वस्यते । अय च मुहून्छिकोऽहोरात्रे	स्युः, न तु रात्रों । नारचन्द्रं तु—स्ववारात् शन्यवाधाद्नाष्टाशः कुालकरतनाकाः । सत्रेषां चैषां क्रमात स्थापना——		अथ दिवा दिनष्टिशमानम्ब कुछिक नारचन्द्राक प्रमाणयप्		भानाभूर नयन र तवःव सितक्चः शाताशुर	पञ्चाप छमाट, भामस्याव्धि ४ नगाण्डमाइट	शांशतनूजस्य जि र तका ६ छमाः ८।	जीवस्य द्विर शरा ५ द्यो ७ भूषुसुबश्चन्द्रा १	न्धिश्वष्टाह्यमाः८,शारेखारेषुर्नगाण्डमाथ्र८	दिवसेष्वेतेऽटमांशाः ग्रुभाः ॥ २१ ॥	
_	शुक्ते ब्राह्मः शनौ रं	교			0	अध्याम	कालवेला	कटक	डपकुलिक	क्रिक	सहत्त	ক্লিক	
पन्नगादिभिद्ध्य	क्षिस	ापि बा	साहच	الموليا هي ا	श्रानि	w	œ	20	w	<i>C</i>	ď	می	
	<b>न</b> वां	त्राद्धि	दिनपरि . ऋधि	, 69	शुक्र	U	9	5"	9	N	20	UX	1
हिल्लेय	ाचायँ	प्य प	यस्तु	<u>א</u>	स्थ	V	20	w	04	m	w	5	
ન તું.	(ii	देवत ,	वामाद -	<u>s</u>	र्घ ख	5°	~	9	ሉ	20	V	9	
'' छिन्न भिन्नं नष्टं यहजुष्ट	वेदमापे- होते पुर	ति श्रह्म	। अध	द्रयकस्य	मंगल	'n	w	س	UV	5	0	٥,	
छित्र	과 - 라. 데래: 명	यास इ	रात्री च	वित्राक्ष	व	9	UV	N	သ	w	<u>۾</u>	5	
9,	व्यवहारप्रकाशे । तथेदमिष '' सोमे ब्राह्मः कुले पैत्र. सुराचार्षे च राक्षस शुक्ते	अय	दिवा	सपट्पङ	संबे	20	٧	m	۶	9	32	er er	
	इति व्यवह		द्विः स्यात् दिवा रात्रो च । अर्धयामाद्यस्तु	तिमार्तु सप्तपट्पद्यचत्राखद्यकस्थ्या ।द्गाधाराः क्षाध्यरत्यः राजाः	वाराः	दिवा	दिवा	दिया	दिवा	दिवा	दिवा	संत्रे	
967.2%	आरम्भ- सिद्धाः	।। स्ट्रा	35%	<del>-</del> ¥≿	<b>-</b> %₹	<b>-9</b>	<b>⊣</b> ⊬.	% <del>?</del> )	<del>9</del>	<b>₹</b>	ક¥ા	<del>-</del> 96-	

विचार सिद्धच्छाया ममादकादिषु सिद्धिपदा पदैः। रह ११ सार्घोष्ट ८॥ नन्दा९ ष्ट ८ सप्तमि ७ अन्द्रवद्डयोः॥२२॥ व्यार्थ्या—भूरेका, नयने द्वे, ऋतवः षट् , शीतांश्चरेक., अञ्घषश्चाताः नगाः सप्त, तर्काः षट् , शरा. पञ्च, शेषं स्पष्टं । भानो-रिति रिववारे आद्यद्वितीयपष्टचतुर्वदिकानि ह्युमानि, रोपाणा ३-४-५-७-८ अर्धयामाधैप्रेस्तत्वात्। एवमग्रेऽपि सीमे आद्यपञ्चमाष्टमानि ह्युमानि। भीमे तुर्येससमाष्टमानि । बुधे तृतीयपष्टाष्टमानि । गुरौ द्वितीयपञ्चमसप्तमानि शुक्रे आद्यतुर्यपष्टाष्टमानि । रानौ तृतीयपञ्चमसप्तमाष्टमानीति । दिनसेपिनति एते इति नरपतिजयचर्याया पर तथापि वर्षमासदिनग्रुद्धिसझावे विष्ट्याटिबृहदोपाभावे तथा प्राद्या, उक्त च−''नक्षत्रमथवाप्यनिवारितमिति '' त्रियद्गुरवर्णमात्रमिति युद्धाः । तद्वेलासायनोपायश्राय-यदा इष्टच्छायापदवेला पञ्चदशिमवेणैरूना स्वात्तदा कार्यं कर्तुमारभ्यते, यावश्चेष्टच्छायापदभवना-गतिव्हाभयचमादुक्ते भिषिद्वे वा वक्ष्यमाणवेघळत्ताहिटोषरहिते नक्षत्रे चन्द्रवछे सति सिब्च्छायालग्ने प्रतिष्ठादिकं कार्यभिति समंजसं । तद्वेला च ब्याएया—स्वावेकाद्य पटानि, चन्द्रे सार्थान्यद्दी, भौमे नव, बुघेऽद्दी, गुरौ सप्त ७, ह्रयो. ग्रुक्शन्योश्रन्द्रवत् सार्थान्यद्दी पदानि । एअ वुहेहि कहिस छायालमा धुवं सुहे कन्से। सुहसउणनिभित्तवलं जोइसु परं सुलम्मेशि ॥ २ ॥ " सहगहलगामाने विरुद्धदिवसेऽनि तुरिअक्जिमि । गमणपवेसपइहादिख्खाई कुणसु इत्य ज्ञंगे ॥ १ नभत्राणि तिथिवारास्ताराश्चन्द्रवळ ग्रहाः । दुष्टान्यपि शुभं भाव भजते सिद्धछायया " ॥ १ ॥ रात्रिषु न ब्यवह्यिन्त इति भाव: । अष्टमाश्राब्द्रिभिमन्धिः प्राप्वत् ॥ वारेषु च्छायालग्रमाह — इति हर्पप्रकारो । तथा 'तिथिवारक्षेशीताश्चविष्याद्यसां न चिन्तयेदिति' नारचन्द्रे । इयमचर्य सिद्धिद्ध्यारिसद्बन्छाया । यदुक्तम्-

दनु पञ्चद्रगवर्णोचारवेलाऽतिक्रामित तावता काळेन कार्यं संपूर्णीकार्यं, एवं करणे सिद्धच्छाया साधिता स्थात्। वहुकालसमाप्ये तु कार्ये त्रिशद्वर्णमध्ये तत्कायै प्रारम्भणीयमिति भावः । हये च च्छाया पदेरिनि भवनात् धुंसः पदरूषां । सप्ताङ्गुलशकोस्त्वङ्गुलरूषा ज्ञेया । द्वाद्रशाङ्गुलशङ्कोस्बेवम्— वींसं १ सोलस २ पनरस ३ चउदस ४ तेरसय ५ वार ६ वारेव ७ । रिमाइस वारगुलमकुच्छायंगुला सिद्धा " ॥ १ ॥ गोसासीतः शतभिषक् प्राक् सेसोददि भद्रपात् । दुशंझथोत्तराभद्रा देदोचाची तु रेवती ॥ २९॥ मेमोजाज्युत्तराषाहा जुजेजोलाऽभिजिन्मता। अवणे स्युः लिख्लेषो घनिष्ठांयां गनीगुमे॥ २८॥ = % = = % = = 3e = अनुराधा ननीनूने स्याज्ज्येष्ठा नोययीयुभिः। स्याचेयोभाभिभिभूले प्र्वाषादा सुघाफ्हैः॥ २७। चुचेचोलाऽभ्विनी झेया लीळ्लेलो भरण्यथ । आईजए कृतिका तु ओवावीचू च रोहिणी ॥ २३ पुनर्वस्वोहिहेहोडा तु पुष्पमे डीडूडेडोभिराश्रेषा मामिमुमे मघा मता। मोटाटीटू फल्गुनी प्राक् टेटोपाप हरतः पुषणाठेवेणिश्रवा पेपोरिः पुनः। करेरोताः स्मताः स्वातौ तीतूतेतो । ॥ इति बारद्वारम् ॥ २ विकाकी मुगशिर आहाँ कुघङ्धाः पुनः। केकोहाहि । अथ भम् ॥ तत्रादावष्टाविशतेभौनां प्रत्येकं पाद्चतुष्कस्य वर्णानाह---

जारमभ् सिक्रेः = २४ =

कि एक्स लाप्रहणेन लः, एनमग्रेऽपि । यया भरण्या आधे पादे लिली द्वितीये लुल्द, तृतीये लेलै, तुर्वे लोलै। इत्यादि, एनं सर्वमेषु । नवरमाङ्गीहस्तपूर्वापा-वीनरभद्रपदासु ये क्रमेण घटछाः पणठाः घफढाः शक्षयाश्चति द्वाद्या वणां उक्तारतत्रेकेकोऽसी वणों द्वास्वरयुतो प्राह्मः, कथं १ घ घा घि घी घु घ् ट्याख्या—एपां भावना—मामान्येन पष्टिबटीमाने चन्द्रस्य नक्षत्रभोगे पञ्चदगपञ्चद्गघटीभिरेकैकः पादः, तत्र यस्य नामिन आदी चुः तस्य जन्माश्विन्या आखपादे, एवं सर्वत्र । द्वितीये पादे चे, तृतीये चो, तुर्ये ला। इह चुत्रहणेन चूरिए प्राद्या: स्वजातीयस्वरत्वात्, एवं चेचीप्रहणेन चैची; में में में में में में मनं कवर्गीयपञ्चमाक्षरङकारादिग्वपि । पणठा इस्तत्र च पकारो मूर्धन्यो देशस्वरयुतो प्राद्यः, न तु कवर्गीयसकारः, तस्याभिक्षि-विमर्गिविन्द्वादिक तु नाक्षरस्य विकारकृत् । वकारस्तु वकारवज्झेयो बन्योरेक्यात् । जस्तु चनर्गीयपद्ममवणे: कन्नीयपद्ममऊकारवद्गय. । ननु टकारजकारणकारा. कापि नाम्न्यादी न स्युरित्यतः किमथैमुक्ताः ? उच्यते-पूर्वाचार्यानुरोधात् । न च नास्त्येवेषां फलमिति चिन्त्यं, पृकायोतिपदे च्ट्रवणयी: कथनात् । ऋ ऋ छ छ इत्येते तु प्रायो नाम्न्यादौ न स्युः, ऋषिदत्तक्षपमाद्यमिषामु चेत् स्युस्तदा स्वरचक्रप्रनामिप्रायेण केवला उत्तरापाडमन्त्यांहि चतस्त्रश्च श्रुतेघंदीः। बदन्त्यामिजितो भोगं वेषलताचवेक्षणे॥ ३०॥ " यदि नाम्नि भवेद्रणै. संयोगाक्षरलक्षणः । त्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्त ब्रह्मयामले " ॥ १ ॥ " विध्यन्ते घङ्छा रीद्रे पणदा हस्तमे व्यघेः । फदयाः प्रागपादायामाहिवुस्ने तु शाझ्याः " ॥ १ ॥ रिरीलिलीवत् ब्यञ्जनगतास्तु अकारान्ततह्रयक्षनवद्रण्यन्ते ब्रह्मदनश्रीघरध्रुवाद्यमिषासु व–शी–धुरूपमेवाद्याक्षरं गण्य । यतः— मर्रिनोभद्रचक्रै एतद्वर्णाना प्रत्नविद्वत्ये सित तत्तत्पाद्जानां पीडेति साफल्यसङ्गावात् । उक्त च तद्यक्रविवरणे— प्रामिति पूर्वोपादा ॥ अभिजित, स्वरूपमाह-

प्रथमिनिम्ध ट्याख्या--यदा टिप्पनके यावान् भोग उत्तराषाबाया लिखितः स्यांतदा तस्यान्तः पादस्तदनुमानेन प्राधाः, सामान्येन तु पञ्चद्ग घट्यः, भोगमिति, एवं सर्वा एकोनविंशतिर्घेद्यः । छत्ताद्रीति आदिशब्दादुत्पानाद्विचतुष्टयोपयोगैकागैळादिष्वब्यभिजिद्वण्यते, परं तद्रोत्तराषादाश्रवणयोः पञ्चदेश

चतसक्ष घटीबैहिच्क्रत्वेच पादचतुष्कं कत्पनीयं । वेघलत्ताद्यवेक्षणाद्न्यत्राभिजिषोपयुज्यते इति च सामध्योद्धम्यते ॥

र्ममस्य-

मेशास्त्विश यमार प्रयः कमलसूष्ठ श्रन्द्रो५ऽथ रुद्रो६ऽदिति७

जींबो८ऽहिः९ पितरो१० भगो११ऽर्यम१२ रबी१३ त्वष्टा१४ समीर १५ स्तथा।

शक्ताग्री १६ अथ मित्र१७ इन्द्र१८ निक्रंती१९ वारीणि २० विधेर१ विधिर२

वैक्रोर३ वसवोर४म्बुपोर५ऽजचरणोर६ऽहिबुध्न२७ पूषाभिषोर८ ॥ ३१ ॥

ट्याख्या--अभिनी दल्लाख्यदेवी । कमलभूबंह्या । अदितिदेवमाता । जीवो गुरु. । अहिः सपैः । भगो योतिः । अर्थमा सूर्यमेदः । त्वष्टा

विश्वकमां । समीरो बायुः । शक्राग्नी इति विशाखाया आधेऽधे इन्द्रोऽपराधेऽभिनदेवता, अत एवास्या द्विदेवतसंज्ञा मिश्रसंज्ञा च। अत एवोक्तं दैवज्ञ-

ब्ह्रमे-" पूर्वांघे मृदुकमें चास्य सकलं तीक्ष्णं द्वितीये दले " इति । मित्रः सूर्यमेदः । निक्रितिः स्थतां माता, तज्जत्वाद्राक्षता अप्यत्र त्रक्ष्याः, तेन मूले रक्षोनक्षत्रमित्युच्यते। वारीणि जलं। विश्व इति विश्वाख्याखयीद्य देवाः, सर्वादित्याज्ञास इः। नन्वत्र संज्ञावाचिनो विश्वशब्दस्य कथं सर्वादित्वं

असंज्ञायां सर्वादिरितिवचनात् ! उच्यते-छान्द्सोऽयं प्रयोगस्तेन संज्ञायामपि सर्वादित्वं । विधिष्रीक्षा । वैक्केठो विष्णुः । वसवोऽष्टो, यदुर्कं---

" धरो धुच्छ रोमञ्च आयञ्चेच बलोऽनिलः । प्रत्यूषञ्च प्रदोषञ्च वसचोऽष्टो प्रकीतिताः "

चित्र ज्यर झर सूत्र जगदिर न्दुर कृत्यथ चित्र तकेंदिष्वप कित्र वित्र पंचप कुर कुर केर युगाथ सिर कहें: ११। इन्येकाटक रहनामानि । पूपा रविमेदः । यदाहुः-"धातृ १ अर्थमत् २ मित्र ३ वर्णाः ४ अछु ५ भग ६ इन्द्र ७ विवस्वत् ८ पूषत् ९ पट्ट । जगन्ति श्रीणि । क्रतेति चत्वारः, कृतयुगस्य तुर्यत्वात् । अक्षिणी नेत्रे द्व । कुर्भूरेका । युगानि चत्वारि । रहा एकाद्श । रामाखयः । गुणाः च्यास्या—अभिन्या त्रयस्तारकाः, भरण्यां त्रय इत्यादि । अद्गानि सिक्षा ९ कल्प २ व्याकरण ३ च्छन्दो ४ ज्योति ५ निरुक्ता ६ स्यानि तारकसङ्ख्योक्तः प्रयोजनमाह-तत्समेत्याहे प्रमियंथीक्तमेतारेभंस्य समा तिथिनं ग्रुमेति श्रेयं। कोऽथै: ! सर्वेषु मेषु तत्तारासंख्यया तिथि-स्साज्या, यथा तृतीयाऽश्विनीयुक्ता साज्येसाहि। नवरं शतमिपनि शतं ताराः शतस्य तिथिमिः पञ्चद्यभिमांने शेषा दशेति दशमी शतमिष-ग्युता साज्या। एवं रेवत्यां द्वात्रिशत्ताराः पञ्चदश्यमागे शेपं हे द्वितीया े रेनतीयुता त्याज्या । यहाहाः-''दग्धा तिष्मिनस्रत्रतारातुल्या तिथिभैनेत्'' पर्जन्य १० स्वष्ट्र ११ विष्णु १२ सेंज्ञा द्वाद्य सूर्या " इति । जेषा वयोक्तसंज्ञा देवमेदा: । प्रयोजनं चैषा तहेवतानाम्ना नक्षत्रब्यबहाराहि ॥ वेदाध निघ४ राम३ गुण३ वेदध ज्ञात१०० द्विक् दिश्दन्तैअव३२ तत्त्तमनिथिनै शुभा भतारै:॥ ३२ ॥ " अजपादोऽथाहिबुद्धनः पिनाकिहररैवताः । यंभुः शवौं मुगव्याघः कपाली ज्यम्वको भवः " ॥ १ ॥ अम्बुपो वरणः वास्तुसास्त्रप्रसिद्धो हदयकोष्ठस्थो देवः । रुद्धाणामन्यतमोऽजपादः । अहिन्छैभो रुद्धमेदः यदाहुः— विभाद्रपद् २ रवीफाल्युनी२ उत्तराकाल्गुनी२ | No. |

प्रथमिम्भ ||क्रयरिययाणं लंधुभिश्वरेश्व, मृदुधुबैः शान्तिकमाजिमुगैः।व्याधिप्रतीकारमुशन्तितीक्ष्णैमिश्रेश्व मिश्रं विधिमामनन्ति अवणत्रयं अवणधनिष्ठाशतमिषजः । वेरञ्च रोहिणी उत्तरात्रयमुत्तरफल्गुन्युत्तराषाढोत्तरभाद्रपदाः । महेन्द्रमं उयेष्ठा । तित्तः पूर्वाः पूर्वेफाल्गुनीपूर्वाषा-व्याख्या—प्रयाणीमति पण्यभूषणकलारतीषधज्ञानविज्ञानवाहनीद्यानिकाष्ट्रपलक्ष्यं, एवमग्रेऽपि, शान्तिकमति बीजगृहनगराभिषेकारामभूषणव-ढापूर्वभाद्रपदाः । साधारणमितिः न स्थिरं न चलं न तीक्ष्णं न सृदु इत्यर्थः । नाम्नां प्रयोजनमाह-ईद्गित्यादि ईद्योन चरादिताम्ना कर्मुणोऽनुरूपे ट्याख्या—चरं चलमिति नामद्वयं, एवमग्रेऽपि, अन्यान्यपि चञ्चलचटुलचपलादिनामान्यत्र च्यवहर्तेच्यानि, एवं सर्वत्र । आदेत्य पुनर्वसु । `खगीतमङ्गलमित्रकायोदि स्थिरकर्म च । आजिमिति. वञ्चनाविष्घातबन्धनोच्छेदनशस्त्राग्निकर्माद्यपि । च्याधीति ्भूतयक्षमंत्रनिधिसाधनमेदकर्माद्यपि चरमाहुअले स्वातिरादित्यं अवणत्रयम्। लघु क्षिप्रं च हस्तोऽभ्विन्यभिजित् पुष्य एव च ॥ ३३ ॥ मिश्रं साधारणं च द्रे विशाखाक्रतिकाभिषे। ईद्याम्नोचिते धिष्ण्ये निर्मितं कमे शमी ॥ ३६॥ दारूणं तीक्ष्णमश्चेषा मूलमाद्रीमहेन्द्रभम् । कूरमुग्रं च भरणी तिस्नः पूर्वा मघान्विताः ॥ ३५ ॥ मुद्रं मैत्रं सगश्चित्राञ्चराधा चैव रेवती। ध्रुचं स्थिरं च वैरञ्चमुत्तरात्रितयान्वितम् ॥ ३४ ॥ उरानित वान्छनित । मिश्रमिति साधारणं । स्वर्णरजतताम्रलोहाद्यप्रिकमै सर्वं तथा यूषोरसगांग्निपरिश्रहादि च विशेषास्तु---इति । विशेषस्तु-''तारासमैरहोभिमस्तिरब्देश्व धिष्ण्यफलपाकः इति " ठछः ॥ भानां संज्ञाविशेषानाह--में । कोडथै: ? यादशं मस्य नाम तादशं कमें तत्र में कार्यम् ॥ एतदेवाह-

" कई चरेसु आरंभो उम्मरिब्ले तवं चरे। धुने पुरपवेसाई मिसेस्ससंधिक्षियं करे " ॥ १ ॥ इति हिनग्रिद्धग्रन्थे । तथा---

मेषु क्षणात् पश्चद्रौन्द्रौद्रवायव्यसपौन्तकवारणेषु । त्रिघ्नात् विशाखादितिभध्रवेषु रोषेषु तु त्रिशतमानिता। " स्थिर २ अर १ स्तथोत्रअ ३ मित्रो ४ लघु ५ स्थो मृदुः ६ । तिङ्णअ ७ कथिता बाराः प्राच्यैः सूर्याद्रयः क्रमात् ॥१॥ " तीक्षोत्रमोक चिक्धीत मिथ्र, म्रोदितं दारुणमेषु कुर्यात् । तीक्षोत्रमिश्रेयंदिहोदितं तम्मुदुधुवैः क्षिप्रचरैनं कुर्यात् ॥१॥ प्रायः शान्ते कार्ये न योजयेत्क्रिक्तिकाल्जिष्विध्य । वारणरींद्रे च तथा द्विदैवतं याम्यमन्धेषाम् " ॥ २ ॥ अस्य प्रयोजनं तु चरादित्वेन मदशानां बाराणां भानां च योगः प्रयाणाद्रौ विशिष्य प्रयोजक इति ॥ मसिविशतेर्भानां चन्द्रेण भोगे मुहूर्तसङ्ख्यामाह--

ड्यास्या—क्षणा सुहुत्ताः । ऐन्द्र ज्वेष्ठा । रीद्रमाद्द्रो । वायन्यं स्वातिः । सार्पमश्लेपा । अन्तकं भरणी । वारणं शतमिपक् । ज्तानि पङ्-मानि पद्मदशमुह्तान्यिधेदिनभोगानीत्यर्थ. । त्रिघ्नानिति एवं पद्मद्य त्रिगुणाः पद्मचत्वारिंगत् , अदितिमं पुनर्वमु. पट्भानि पद्मचत्वारिंशन्मुहूर्तानि

माधंद्विनमोगानि । शेषाण्यश्विनी १ कृतिका २ मृगक्षिरः ३ पुष्य ४ मघा ५ पूर्वफाल्गुनी ६ हस्त ७ चित्रा ८ उनुराधा ९ मूङ १० पूर्वापादा ११ भुक्तिरामीज नु यथाऽधुना सर्वाण्यप्येकदिनभोगानीति श्रीमदावश्यकबृहद्बृत्तिटिप्पनके, एपा नन्योदितचन्द्रनर्शनादाबुपयोग । तथाहि—

"बृहत्सुए" धान्य कुरुते समर्थ, जबन्य१५ धिज्येऽभ्युदिते महार्थम्। समेपुर० घिज्येषु सम हिमांथुः शुक्कद्वितीयाभ्युद्यी विलोक्यः॥

ड्रीत रत्नमालाया । अत्राभ्युटिन इति यन्नश्रत्रम्थन्त्रो हग्गोचरीस्यानन्नश्रत्र बृत्दादि विचार्यमिति तन्नाव्ये । विशेषास्तु---

" युज्यन्ते पड् द्वाद्य नच चेति निशाकरेण घिष्ण्यानि । प्राङ्मध्यपश्चिमाधैः पौष्णेशास्वण्डलादीनि " ॥ १ ॥

```
नक्षत्रसक्ष
                                                                                                                                                                        विचारः
                                                                                                                                                                                                                                                  1301
                                                                            समेनेन्दुना मोगः स्यात् । आखण्डलेति ज्येष्ठादिनवमानि पश्चिमाधयोगीनि चन्द्रस्य घुष्ठतो योगीनि चन्द्र एतान्यभिक्रम्य अड्के घृष्ठं दत्वा अङ्के
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      अन्यत्रापि सेवाभैज्यादाविद योज्यं कथ ? पूर्वभागयोगिषु सेवाभैज्याद्यारंभे यो मुख्यः स गीणस्य भृजं प्रियः स्यात्, पश्चार्थयोगिषु तु
अत्र पौरणेति रेवत्यादिषड्मानि पूर्वमागयोगीनि चन्द्र एतान्यप्राप्तो भुड्क इत्यर्थः । ऐशेति आद्रोदिद्वांदशभानि मध्यभागयोगीनि एषां
                                                                                                                                                                                                                                       " पूर्वाधयोगिषुदस्त्रीणामतिबद्धमो भनेद्भतो । पश्चाधयोगिषु स्त्रीप्रेम मिथो मध्ययोगिषु " ॥ २ ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              ह्यवद्न १ भग २ श्चर ३ शकट ४ मृगशिरो ५ मणि ६ गृहे ७ षु ८ चक्राणाम् ९।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          तोरण १६ मणि १७ कुंडल १८ सिंहविक्रम १९ स्वपन २० गजविळासानाम् २१ ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                प्राकार १० रायन ११ पर्यंक्ष १२ हस्त १३ मुक्ता १४ प्रचाळानाम् १५ ॥ १ ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               गीणः, मध्ययोगिषु मिथः प्रीतिरिति । तथा--
                                                                                                                                                                     इत्यर्थः । प्रयोजनं तु--
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        मुख्यस्य
                                                                                                                                                                                                         1301
```

तथा चित्रास्वात्योरुद्यान्तरे किल प्राची, तथोरस्तान्तरे च प्रतीची, उदीची तु धुवेण सिद्धा, दक्षिणाऽपि तासंमुखत्वेन, ततो यानि यानि

श्रहाटक २२ त्रिविक्रम २३ मृद्ङ २४ वृत्त २५ डियमलानाम् २६ ॥ २ ॥

पयंद्व २७ मुरज ५८ सदशानि भानि कथितानि चाश्विनादीनि "।

" दक्षिणमांगैंऽन्क्रेपा १ ब्राह्मत्रय ४ कर्युगे ६ द्विपतिपङ्कम् १२ । उत्तरतः पुनरभिजित्रय ३ मध्यित्रय ६ यौनयुगलानि ॥ १ ॥

मानि दक्षिणोत्तरमध्यमार्गचारीणि सन्ति तान्युच्यन्ते, तथाहि--

''बे फग्गुणिर मह्वयाष्ट्र सवणः थिणड्रा६ य रेबहु७ भरणी८ । असिणि९ सयभिसा० साई११ अभिजु१२ त्तर जोइणो चसे?) ॥१॥ आजपाद्द्वय १० स्वात्या ११ दित्ये १२ चेति अमन्ति खे । मध्यमांगें शतभिषक् १ पुष्य २ पौष्ण ३ मघा इति " ॥ २ ॥ मयमिद्र ब्ययहार्यकां । तथा--

" पुणवसुः रोक्षिणिर चित्तारे मह्छ जिट्ट५ गुराह् कित्रअ विसाहा ८ । चद्स्स उभयजोगा अह द्श्खिणजोईणो च से " ॥ २ ॥

113611

पुनर्वन्यायष्टभान्युभययोगीनि चन्द्रो दक्षिणेनोत्तरेण च युज्यन्ते, कथञ्चिचन्द्रेण भेटमप्युपयान्ति, शेपाण्यष्टभानीन्दोदेक्षिणेन युज्यन्ते, तानि

" निथिधिंग्ण्य च पूर्वाधे वलवद्दुर्वेल ततः । नभ्रतं वलवद्रात्रो दिने वलवती तिथिः " ॥ १ ॥ इति व्यवद्यास्मारे चापादाद्वय र हम्त मूलाध क्षेत्रा मुगाइ है जुप्या । इति पा(को) फशोग्रन्ये । तथा-॥ इति भद्वारम् ॥ ३ ॥

॥ अथ योगः ॥ ४

भानौ सूत्यै करादिलपौष्णव्राह्ममुगोत्तराः । पुष्यमूलाश्विवासन्यश्वेकाष्टनवमी तिथिः ॥ ३९ ॥ तत्राटी रज्यादिमप्तरारेषु प्रत्येकं ग्रुभाग्रुभयोगवाचकाश्रतुदंग श्लोका इमे-

स्याख्या--भुत्ये शुभयोगायेत्ययं । मरो हस्तः, पैष्म रेवती, बाह्मं रोहिणी, उत्तरास्त्तिः, बामबी धनिष्ठा । नवभीति गुमाष्टनवशद्दानां

ऽयाख्यां−आहिबुंध्नमुत्तरभद्रपदा, राघा.विशाखा, अर्थमणमुत्तरफल्गुनी, अग्निमं क्रत्तिका । जया तिथिः ३−८−१२ रूपा, एवमग्रेऽपि तिथिसंज्ञांथाम्॥ द्रन्हं कृत्वा ततः पूरणे मट्प्रत्ययः, एवंमन्यज्ञापि यथायोग्यं च्युत्पाधं । इह वारमयोत्रांतिष्योवी हिक्जुमयोगः, वारमतिथीनां तु त्रिक्जुमयोगः व्याख्या—याम्यं भरणी । विशाखात्रितयमिति विशाखादित्रयेण क्रमादुत्पातमृत्युकाणाः कुयोगाः स्युः एवमप्रेऽपि कुयोगश्लोकंस्थंत्रयशब्देपूक्ष न चार्के वारुणं याम्यं विशाखात्रितयं मघा। तिथिः षद्सपरुदा११ कं१२ मनु१४ संख्या तथेष्यते॥४०॥ सोमे सिद्धयै मगन्नाह्ममैत्राण्यार्थमणं करः। श्रुतिः शतिभषक् पुष्यस्तिथिस्तु द्विनवाभिष्या ॥ ४१ ॥ व्याख्या-मैत्रमनुराधा, न तु सृदुसंज्ञमानि पृथम्सुगशीषोक्तः एवमग्रेऽपि यथासभव विचाय । आयेमणं उत्तरफल्गुनी । श्रुतिः अवणः (णं) ॥ भौमेऽश्विपौष्णाहिंबुध्नमूलराधार्यमाग्निभम् । मृगः पुष्यस्तथाऽश्लेषा जया षृष्ठी च सिद्धये ॥ ४३ ॥ न चन्हे बासवासाढात्रयाद्रीत्विद्विदैवतम्। सिद्धै चित्रा च सप्रम्येकादर्यादित्रयं तथा॥ ४२॥ ं बुधे मैंत्रे श्रुतिज्येष्टा पुष्यहस्तारिनभत्रयम् । पूर्वाषाहार्यमक्षे च तिथिभंद्रा च भूतये ॥ ४५॥ न भौमे चोत्तराषांदामघाद्रौबासबज्ञयम् । प्रतिपद्शमिष्द्रप्रमिता च मता तिथिः ॥ ४४ ॥ च्यास्या,—अषाहात्रयं पूर्वाषाहोत्तराषाहासिजितः, द्विदैवतं विशाखाः॥ ब्याख्या--अत्रापि मैत्रमनुराधेव त्रयश्हेन पृथरमुग उक्तः ॥ मनवश्चतुर्देश नैष्यते इति कुर्योगोष्पनेरिति शेषः ।

ग्ररो पुष्यात्विनादित्यपूर्वाऽ ३ श्रेषाश्च वासवम् । पौष्णं स्वातित्रयं सिद्धयै पूर्णा ५–१०–१५ श्चेकादशी तथा ॥४७॥ न बुधे वासवास्केषारेवतीत्रयवारुणम् । चित्रा मुलं तिथि-श्रेष्टा जये ३-८-१३के१न्द्र१४नवा९िङ्कता॥४६॥ व्यास्या - पूर्वास्तित्त्रोऽपि । एवमग्रेऽपि ॥ •यास्या-इन्द्राद्विता तिथिश्रतुद्द्यी ॥

शुक्रे पौष्णाश्विनाषाढा मैत्रं मार्गं श्रुतिद्वयम् । यौनादित्ये करो नन्दा १-६-११ त्रयोदरुयौ च सिद्धया। ४९॥ च्याख्या---आयेयं क्वतिका तचतुरकं तत्र रोहिण्यादित्रयेणोत्पातादित्रय क्वतिकया तु यमचंटः, ''गुरो शतमिषजा यमचंटः'' इति तु हपंप्रकारो॥ न गुर्रे वारंणात्रेयचतुष्कार्यमणद्वयम्। ज्येष्ठा भूत्यै तथा भद्रा २-७-१२ तुर्या षच्ट्यष्टमी तिथिः॥४८॥

न शुक्रे भूतये त्राक्षपुष्यं सापं मघाऽभिजित्। ज्येष्ठा च द्वित्रिसप्तम्यो रिक्तारूया ४-९-१४ स्तिथयस्तथा ॥५०॥ जानो बाह्यश्रुतिद्रन्द्राश्चिमरुद्गुरुमित्रभम् । मघा शताभिषक् सिद्धयै रिक्ता ४-९-१४ छम्यौ तिथी तथा ॥५१॥ व्याख्या--अपादाशब्देन पूर्वोत्तरापाढे, मार्ग सृगिराः, यौनं पूर्वेपत्त्युनी ॥ स्यास्या—पुष्याधिष्विभिः कमेणोत्पाताद्वेत्रयम् ॥

न यानौ रेवती सिद्धै वैश्वमार्थमणत्रयम्। युविश्मिगञ्च पूर्णांक्या ५-१०-१५ तिथिः षष्ठी च सप्तमी॥ ५२॥ •यास्या--मरुदं स्वातिः, गुरुमं पुष्यः, मित्रममनुराधा ॥

%%%**%%**%%%

```
प्रथमितमञ्ज
                                                                                                                           " हस्त १ सीम्या २ भिन्नी ३ मैत्र ४ पुन्य ५ पौष्ण ६ निरंत्तितैः ७ । भनन्यमृतसिद्ध्याष्मो गोगः सुर्घादिवारगैः" ॥ १ ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             " मद्रासंवर्तकांधैश्चेत् सर्वेदुष्टेऽपि वासरे । योगोऽस्त्यमृतसिद्ध्याल्यः सर्वेदोषक्षयस्तदा ॥ १ ॥ "
                                                                                                                                                                                                                                          अत्रामृतसिद्ध्याल्य इति न मृता सिद्धरमृतसिद्धः । पुष्ववक्षं कार्यसिद्धिरिति रत्नमाळाभाष्ये
                                              ब्याख्या--वैश्वमुत्तरापादा । पृषु विशेषः-मुयोगश्लोकेष्वादी न्यस्तैः--
```

113811

ड्रति हर्षेप्रकाशे । '' शुक्रस्य रेवला सह शत्रुयोग उत्तरभद्रपद्गीमः साधै त्वमूतसिद्ध्योगः '' इति लोकश्रीयन्ये । केऽप्याहुः-'' बार ५ तिथितः 'सप्ततिथिष्वेते 'सप्तापि' मृत्युद्। क्रमशः "। तत्स्थापना—

एततिधिष्वेतेऽमृतसिद्वियोगा मृत्युदा: । तथा—

उत्पातमृत्युकाणाश्च सिन्दियोगाश्च कीर्त्तिताः ॥ १ ॥"

विशाखादिचतुष्के च रिववारादिसप्तके ।

अत्र भरणीस्थानेऽश्विनीति कोकश्रियां । जम्मरिख्ल ति प्तान्यकदिनां जन्मभामि, प्मिरकोदिवारेषु क्रमाह्रञ्जमुसल्योगः स्यात् लोकन्नीप्रन्थे

" भर १ चित्तु २ त्तरसादा ३ घणि ४ उत्तरफग्गु ५ जिङ्ठ ६ रेवइआ ७ । सूराइजम्मरिख्वा पपर्हि वज्ज मुसळ पुणो ॥ १ ॥

पाकश्रीकृत् करस्थाने आषाढाद्रयमाह । तथा--

" मघा १ विशाखा २ हा ३ मूल ४ कृत्तिका ५ रोहिणी ६ करै: । रव्यादिवारसंयुक्तैर्यमधंटो भुशोऽशुभः ॥ १ ॥ "

उत्पातादित्रयाणां प्रवास १ मरण २ व्याधि ३ संज्ञेति पूर्णभद्रः । तथा—

त्व

अनुराधा

मृगद्गिर अश्विनी

हस्त

त्त् १व

मगल

" भर १ पुरसु २ चरसादा ३ अह् ४ विसाहा ५ य रेवई ६ समिस ७ । अक्षाइआण पहि अरिजोगा गुरुविणिहिड्डा ॥ १ ॥ " इत्मेतावदेव तु हर्षप्रकाशादौ । अथैवं भानी भूत्यै इत्यादि चतुर्दशस्त्रीकीकतिधिभानां रन्यादिवारैः सह भ्रुभा अभ्रमाश्र योगा यद्यद्विशेष-नाम कभन्ते तसेषां प्रकाशितं । येषां तु न प्रकाशितं तेषां तिथिभानां रब्याहिवारैः सह ये ग्रुभा योगास्ते सुयोगा इत्युच्यन्ते, ये त्वञ्जभास्ते मह १ मूछ २ चरसादा ३ अइ ४ विसाहा ५ य रोहिणी ६ समिसा ७ । सुकाइआण कमसो जहाकमं अस्थिरो जोगो ॥ २ ॥ " यत्र संख्यायुती वारतिथ्योर्जातास्रयीद्रा । ज्ञेयः कत्त्वयोगोऽयं हेयश्च ग्रुमकर्मेसु " ॥ १ ॥ तथा— " पडिनयतिज्ञबुद्देणं छठ्टी जीनेण निज्ञसुकेण । सत्तमी सणिस्रेसं पर्पांस नया जोगा ॥ १ ॥ अकाश्स कक्षी वारसी उ पच्छक्षमेण जा छड्डी । कक्ष्यनामा, यदुक्तम्--पडिनयबुहेण सत्तमी रिवणा संवद्यओ हवइ जोगो।" इत्युक्तमस्ति । तेन प्रीतिकार्येत्वरियोगाः स्थिरकार्येषु चरयोगाश्र साज्याः । तथा--सामान्ययोगा इति । सर्वेपामेषां क्रमात्स्थापना-||Ye||

	-36-4	4~	~						`						
	<b>2</b> 9	#	भम्रति	उत्पातयोग	म्हत्युयोग	काणयोग	सिद्धियोग	यमघंटयोग	यमघंटयोग वज्रमुशलयोग	शञ्जयोग	चरयोग	कर्कयोग	संवर्तकयोग	<u>ह</u> ि.	श्यम्विमंत्र
1	*2	45		विशास्त	अनुराधा	भ्येष्टा	हि. स	मबा	भरणी	भरणी	उत्तराषाढा	तिथि १२	तिथि ७	स्र	योगविचार
1361	6¥	वस्य	स्याविर	पूर्वाषादा	उत्तराषादा	अमिजित्	श्रवण	विशासा	िनुत्रा	तेदन	भाद्री	<i>6</i> *	0	<u> </u>	।।३६॥
= + + =	<u> </u>	मंगक	अधिनी	धनिष्ठा	शतमिषक	पूर्वभाद्रपद	उत्तरभाद्रपद	आद्रो	उत्तराषाढा	उत्तराषादा	विशास्त्रा	°,	•	.60	
	جر ا	প্রধ		रेवती	अखिनी	भरणी	कृतिका	थ	धनिद्या	भाद्री	रोहिणी	6*	e.	<b>≯</b>	
	96	्स स	तिह्य	महिन	मृगशिर	आझ्रं	पुनवसु	कृतिका	उत्तराफाल्युनी	विशास्त्रा	श्चासिषा	v	w	<u>~</u>	
	₹⊱	12	रेवती	तंदन	भक्ष्या	मधा	पूर्वकाल्युनी	सेहिजी	ज्येष्ठा	रेवती	मद्या	9	r	<b>₹</b>	
	%≥	श्रीपु	रोहिनी	उत्तराफाल्मुनी		चित्रा	स्वाति	हत्त	रेवती	शतमिषा	े म के म	w	9	<del>%</del> ~	
_	£%	वासः	वारतिध्योः स	वाराः वारतिथ्योः सुयौगाः वारति सामा०	5 सामा०			वारभयोः	वारमयोः सुयोगाः		[ भनिष्ठा रेवती.		नारभयो: सामां०यो	- %-	
	<b>₹</b>	ब्र	3-6-8	, at		अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर,		धुनवैसु, पुष्ट	युनवैसु, युष्य, उत्तराकाल्युनी, उत्तराषाढा, उत्तरभाद्रपद,	ानी, उत्तराषा	हा, उत्तरभाद्र	पद, शतिमषक्	वक	* 9	
	<u>ن</u> ک	सम्द	2 2	- 5°	2 - 23	सेहिंगी, उत्तरा	उत्तराफाल्युनी, हर्स	त्त्र, मनुराधा, शतमिषा.	शतमिषा.			अखिनी	अखिनी,आद्रों,धनिष्ठा	<u> </u>	
	9	मंगल	3-6-2-63		5 - 3 - 3	कृतिका, मृगशि	मृगशिर, पुष्य, अझ	लेषा उत्तराफ	अश्लेषा उत्तराफाल्गुनी, मूळ, रेवती.	रेवती.		मवा		- %	
	<b>6</b> → <b>0</b>	त ख	2-6-32		86-26-2	रोहिणी, मृगवि	ति, पुष्य उत्त	ाराफल्युनी, ह	मृगशिर, पुष्य उत्तराफल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, पूर्वाषादा, अवण.	स्वोषादा, अव	<b>Ē</b>	अश्लेष.		<b>.</b> ₹	
	<b>%</b>	લુક	4-86-88-8	_	~	आश्वनी, अश्लेष	गा, पूर्वामांच्यु	नि, प्वांषाह	अंश्लेषा, प्रवर्गकाती, प्रवांषाढा, प्रवंभाद्रपद, स्वाती, धनिष्ठा, रेवती.	, स्वाती, धां	नेष्ठा, रैवती.	शतभिष	शतमिषक्,हस्त,ज्येष्ठा	ريو.	
	*	14 FE	3-6-33-6		8688	अधिनी, मृगहि	मृगशिर, पुनवैद्य,		हस्त, अनुराधा, पूर्वाषादा, उत्तराषादा.	, उत्तराषाढा.		अभिजित्	मि	<b>₹</b>	
	%*	शाम	26-2-2-8		2-108-2	अधिनी, पुष्य, मघा,	मघा, अनुरा	अनुराघा, अवण, धनिष्ठा.	घनिष्ठा.	·	ı	मृगशिर शतिभव्	मुगशिर,पूर्वाफाल्युने, . शतमिक्,उत्तराषादा	<del>%_</del> 3	
	94				.									· %(	

एवमेते विरुद्धनामानः १ सामान्ययोग २ सुयोग ३ सिद्ध्य ४ मृतमिद्ध्या′ ५ स्याश्चेति पञ्चतिधयोगा उक्ताः आत्यन्तिकासिद्धि १ यौदन्धि-क्रीसिद्ध २ विलक्ष्मितसिद्ध ३ थ्रिन्तितसिद्ध ४ श्रिन्तिताधिकसिद्धि ५ श्रेति क्रमाट्रेपां फलानीति त्रिविक्रम. ॥ युनयोगानाह---

डयार्या-कुजासम्यतमयारे अरुच्यायेद्दर्यन्तिरिति अश्विनी १ रोहिणी २ पुनर्वेसु ३ मघा ४ हस्त ५ विद्यात्वा ६ मूल ७ श्रवण

८ पूर्वभद्रपद्रा ९ न्यतममेन नन्दाद्यन्यतमतिथी कुमारयोगः । अयं विशिष्य स्थिरकमीण मैत्रीटीसाम्रतविद्याशिल्पम्रहणादी गृहप्रवेशे च झुभः ।

अय च बिरुद्रयोगोरपत्ति वर्षयता प्राद्यः। तेन भौमे द्यामी पूर्वभद्रपटा च, सोमे एकाटशी विशाखा च, बुधे प्रतिपन्मूलमिथनी वा, शुक्रे रोहिणी,

| स्थिरयोगः गुमो रोगोच्छेदादौ शनिजीवयोः । ज्योदश्य १३ घ८ रिकास ४-९-१४ ह्यन्तरैः क्रितिकादिभैः॥५५॥|

अयमपि विरुद्धयोगोग्पत्ति वजंयता प्राद्य इति संभाज्यते । तेन रवी सप्तमी द्वाद्ताी वा भरणी च, मीमे धनिष्ठा, बुधे भरणी धनिष्ठा वा, शुक्रे

दितीया सप्तमी या पुष्यक्ष, एते राजयोगा अपि नेष्टाः, यथायंभयं संवर्तकर्वज्ञमुसलोत्पातकाणादियोगोत्पत्तेः ॥

भड्गन्यतमतिथी कुजायन्यतमवारे राजयोगः । अयं छबुक्षित्रमङ्ग्यथर्मपैष्टिकसूपणक्षेत्रारंभादिपु विशिष्य श्रेष्ठ , तरुणयोगनामाप्ययमिति पूर्णभटः ।

च्यात्या—अष्टेलष्टम्या उपलक्षणं, यानौ जीचे या त्रयोद्श्यायन्यतमतिषौ द्रयन्तरेरिति कृतिका१ऽऽद्गीरऽङ्लेषो ३ त्रपत्त्गुनी ४ रगाति ५ ज्येष्टो ६

ब्यास्या--द्रयन्तरेसित भरणी १ मूगक्षिरः २ पुष्य ३ पूर्वांक्ल्युनी ४ चित्रा ७ तुराधा ६ पूर्वापाठा ७ धनिष्ठो ८ त्तरभद्रपद्ग ९ न्यतममे

राजयोगो भरण्याचे ह्यन्तरैभैः ग्रुभावहः। भद्रावृतीयाराकासु कुजज्ञभुगुभानुषु॥ ५४॥

ण्ते कुमारयोगा अपि नेष्टा. यथासंभवं कक्तंब्वतंककाणयमघटयोगोष्पत्तेरिति श्रीहरिभद्रसूरिकृते लग्नशुद्धिपकरणे ॥

योगः क्रमारनामा ग्रुभः कुजज़ेन्दुग्रुक्तवारेषु । अञ्ज्याचैह्रयैन्तरितैनैन्दाद्यपश्चमीतिथिषु ॥ ५३ ॥

मृतकार्यमिति मृतक्रिया काऽपि न कार्या यदि कश्चिदकस्मात् पञ्चके मृतस्तदा छेदनसहितं करचरणवन्धनं तस्य कुर्यादिति लछः । तद्दन-अस्यायं भावः-स्थिरयोगे दत्तानशनो नोतिष्ठते, खिलं क्षेत्रं शोध्यं, न्याधिन्तणरिपव उच्छेधाः, युद्धदिन्याधमुपळस्रणत्वान्मित्रच्छेदस्नेहच्छेदादि च ब्याख्या--येषां द्वी हो पादी पूर्वोत्तरराशिस्थी तानि मृगशीर्ष १ चित्रा २ धनिष्ठा ३ स्थानि त्रीणि भानि द्विपादानि। येषां तु त्रथः पादाः पूर्वेस्मिन्गुत्तरस्मिन् वा रात्रौ स्थिताः तानि क्रत्तिका १ पुनर्वेसू २ त्तरफल्गुनी ३ विशाखो ४ त्तराषाढा ५ पूर्वभद्रपदा ६ ख्यानि षड् भानि त्रिपा॰ ड्यास्यां—घनिष्ठायाश्रन्द्रमोगो यदा यावान् टिप्पनके लिखितः स्यात्तदा तत्पश्रार्थादारभ्य पञ्चभा−वधि पञ्चकयोगः।तत्र तृणकाष्ठादि न संप्राधे<sub>।</sub> अणसण-खिल-बाह्व-रिण रिउ-रण-दिन्वं जलासप बंघो । कायन्त्रो थिरजोगे जस्स य करणं पुणो निश्य " ॥१॥ पश्चके वासवान्लाघौतुणकाष्टगृहोद्यमात् । याम्यदिग्गमंन दार्यां मृतकार्यं च वर्जयेत् ॥ ५७॥ यमलाख्यो द्विपादक्षे त्रिपादक्षे त्रिपुष्करः। जीवारशतिवारेषु योगो भद्रातियौ स्मृतः॥ ५६॥ ङ्गमि । जीवाद्यन्यतमवारे भद्रातिथौ चेव्द्विपाइं भं तदा यमलनामा योगः । तेष्वेव वारतिथिषु चेत्त्रिपाइं भं तदा त्रिपुष्करयोगः ॥ कार्यमिति । अयं च स्थविरयोगनामापि । तथाऽयं योगोऽतिदुर्बलोऽनारंभित्वात्, स्वभावाद्निवर्तकश्रोक्तकार्येष्वेच प्राद्यो नान्येषु ॥ मुहं नारंमणीयं न चाच्छादनीयं, दक्षिणस्यों यात्रीं ने कार्यां, खर्द्वादिशस्या न कार्यां न च ब्यापायाँ । यदुक्तं ब्यवहारसारे— " भ्रतिष्ठा धननाशाय प्राणघ्नी शततारका । प्रवीयां दंडयेद्राजा उत्तरा मरण ध्रवम् ॥ १ ॥ त्तरापादा ७ शततारा ८ रेवत्य ९ न्यतममेन स्थिरयोगः रोगोच्छेदादाविति, उक्तं च पाकश्रियां-अग्निदाहश्च रेनत्यान्त्यितत्पञ्चके फलम् " इति

गन्डान्त विचार ॥३९॥ तनोऽयमर्थः-नग्नानि द्वादस,तेपां त्रिभागे वत्यारि,ततो लग्नानां चतुरकस्यान्तरेऽधैषटी,कथं? तुर्वं लग्नं कर्कस्तस्यान्ति पञ्चद्रा पकानि,पञ्चम-व्याल्या—त्यजोदीत जन्माषानयात्रोद्दाह्मतगुरुनिवेशप्रवेशक्षीरादिसर्वकार्येष्वभुमो गडान्त इति भावः। त्रेषेति लप्नगंद्दान्तः १, तिथिगंद्धान्तः २, निधिस्त्रयं गरुदुराणे—'' दभेमयाश्चरवारः पुत्तलकाः क्रत्वा शवपाश्च स्थाप्याः, तेन सहैव च दहनीयाः, अन्यथा पुत्रगोत्रादीनां प्रत्यवायः स्थात् ॥ क्षित्रगंदान्त ३ श्रेति। कथमित्याह्-त्रित्रिमागन्तिति तृतीयस्तृतीयो भागिक्षिमागः, मयुर्ज्यसकादित्वातीयप्रत्यलोपः तत्सिक्षयोगजनुभादेनानिक्रतिश्च, हानिवृध्ध्यादिकं सर्वं योगे स्याचमले द्विशः । त्रिशास्त्रिपुष्कराख्ये तु पञ्चशः पञ्चकेऽपि च ॥ ५९ ॥ पञ्चमं अवणादीनि पञ्च ऋक्षाणि निर्दिशेत्। केचित्युनधैनिष्ठादिपञ्चमं पञ्चमं चिद्धः॥ ५८॥ गंडान्तं च त्यजेत्त्रेया लग्न ४-८-१२ तिथ्यु ५-१०-१५ इषु ९-१८-२७ चिषु । " सर्वदिग्गमने हस्तः श्रवणं रेवतीड्यम् । मृगः पुष्यश्च सिध्यै स्युः कालेपु निखिलेप्वपि "॥ १॥ ब्यात्या--नारचन्द्रे तु श्रवण्रेवत्योः सर्वदिगामनमनुमन्यमानेन दक्षिणदिग्यात्राऽप्यनुमेने । तथाहि---प्रत्येकं त्रित्रिभागान्तरधे १ कर द्विघटी ३ मितम् ॥ ६० ॥ व्याख्या--प्रिवष्टमेव कार्यं कार्यं न त्वतिष्टमित्यादायः ॥ यमलादीनां मंज्ञाः मान्यथां इत्याह—

निषयः प्राद्य, तेषां त्रिभागे पञ्च पञ्च ततः प्रजम्या अन्यार्थवटी पष्ट्या आधार्धवटी चेत्येका घटी तिथिगंढान्तः, एव दशम्येकादस्योः पञ्चद्शीप्रति-

ल्यनस्य च सिङ्खासानि पज्ञद्म पर्लानीस्युभयमीष्टनेऽर्धवटी ह्यनगंडान्तः। ए्नमष्टमनवमयोबुध्रिकघनुपोद्दांद्याययोमीनमेषयोक्रान्तराह्येऽपि भाक्यं।

Ho&II

द्विघटिक ३ माना वेला सन्धिद्रोषनाम्नी मङ्गच्यकार्येषु साज्या । त्रिविक्रमस्त्वेवमप्याह्य---

प्रथमविम <b>र्भे</b> कालमूखी- स्थापना ॥४१॥			
ᢓᠻᠯᢣᠫᠻᠯᢣᠫᠻᠯᢣᠫᠻᠯᠸ	<del>964564</del>	96-36-96	**************************************
(भूक्षेत्रवराह्यो रिम्तिसमें स्युरविक् परत्रापि रसेन्द्र १६ नाड्यः । एका घटी पट्पलसंयुतेन्दोर्नाङ्यक्षतस्यः सप्रलाः कुजस्य ॥१॥  ह्युपस्य तिस्रो मनवः १४ पत्रापि, सार्घोश्चतस्य पळसप्त जीवे । इयशीतिनाङ्यः पळसप्त शौरेः, शुक्तस्य हेयाः सप्रलाश्चनः''॥२॥  प्रता प्रहाणां नक्षत्रराह्यन्तरसंक्रमेप्वय्युभयपाक्षेयोः प्रत्येकमन्तरनाङ्यो माङ्गस्यकार्षेयु साल्याः ॥  दस्प्रपातं त्यजेद्द्वित्रिपञ्चषट्सप्तमे तिथौ । मैत्रेरेऽथ त्र्युत्तरे ३ पैत्र्ये ५ ब्राह्मे ६ मूत्रुक्तरे ७ क्रमात् ॥ ६१ ॥  स्राप्ता—द्वित्याद्वराद्देशः सह क्रमान्मेत्रे त्र्युत्तरे इस्यादेपदानां योगस्त्या । बञ्जपतस्यापना-बञ्जपतस्य फळं पण्माद्धेः कार्यकर्त्वभृतिति ।  हप्प्रकाहे । त्रयोदस्या मद्द चित्रास्त्रातिवोगेऽपि वञ्चपतो नारचन्द्रटिप्पनके उक्तविशेपास्तु—''मप्तनवद्गमतिथिषु स्रजेत्कमान्नरिणियुप्यसापिति । तथा—	्रे   स्टुर्स अनुराधा उत्तरात्रिक मधा सेहिणी सुरू-हस्त कालमुखीस्थापना—	भू भ ५ ९ ३ ८ इदं नारचन्द्रटिप्पनके। तथा— भू उत्तरा ३ मदा कृतिका अनुराधा रोहिणी '' मूलह साइचित्ता अस्सेस सयभिसय कित्त रेवह्या।	त्राच्या भव्यया मिगसुइ अभिइ पुस्सस्मिण भरणिजिङ ३ रिचाय । आसाढडुग विसाहा अणुराह पुणव्यसुमहा य ४ ॥ २ ॥ ४० ४० ४० १० १० १० १० १० १० १०
भारम्म सिद्धेः ॥४१॥			

प्रथमविमञ्ज	11
	N TON TO
ं ग्विमि बिइ एगारिसि बारिसि अवला सुद्दे कर्जा. "। ।था ऋतुमेदाच्छुभाग्रुभयोगा एवम्—	'' कांत्त उ मग्गोसेरंगंमें अ पंचांमें गुरुवार पुणव्वस्तु चव । सुहयाउ हुति सरप अहा दसमी कुजे असुद्धा ॥ १ ॥ पोसे माहे छड़ी मिगुत्तराफगु अकज्जकरा । असुह इगारसि गुरुणा फग्गुणि पुत्वाय हेमंते ॥ २ ॥
स स्रवार	of the or
, III	आद्रौ सवि १
इति दिनशुद्धौ । तथा—	सुगशिर चम्द्र
इति दिनशुद्धौ । तथा— कन्तिअपभिष्टै चउरो स अबळयोगस्थापना—	रोहिणी बुध २
इति १ <sup>०</sup> कन्ति अबल	क़त्तिका श्रामि उ

भ्रास्म सिद्धेः ॥४२॥

ड्रति पाकश्रियां । आसु गाथासु ऋतुमासानां नामसु विपर्यासोऽस्ति । कथं ? नाममालादावाश्विनकार्भिकादिरूपमासद्वयानां शरदादि नाम||

आसाहमानणांच्या उत्तरभद्दवय वद् दिण सुहउ । पाउसि उ सुहो उ बुहो चउद्सि पुन्वा य भद्दव्या ॥ ५॥

बइसाहजिङ सूरो पडिचय मूलो अ उत्तराफग्गु । सुहगिम्हिअसुह तेरिस सणिवारे सवणनब्खनं ॥ ४ ।

फग्गुण चित्ते मासे तेर्रास सफला विसाइबुहवारो । बार्रास सुक्ने साई वसंतकाले विविज्जिजा ॥ ३

12 A

भड्वय आसो मासे सन्तीम सणिवार रोहिणी सफला। वासारने असुहा रिव कन्तिअ पुत्रमासी अ '' ॥ ६॥

प्रसिद्धं, इह तु कार्तिकमार्गश्रीप्रीष्टिष्टपमासद्वयानामुक्त । तथा शिक्षिरतुरत्र मूलतोऽपि नोक्तः, वर्षेतारिव पाद्यङ्गिष्टामारोप्य ऋतुषद्कं प्ररित-

मिति शौच्यं विषयोत्तरतद्ग्रनथङ्गन्मतेनेति झेयम् ॥ रिवयोगमाह---

ब्यास्या—रवेरित्युभयतोऽपि योज्य । कथ्रु रवेभीदिति कोऽथं.१ रविभुज्यमानमात्तहिनम चेतुर्यं तटा तुर्यो रवेयांगेः, पष्टं चेत्तदा पष्टो आधिन्दियेत्यादि यधकंभमेव तहिनमं तटा आद्यो रिवयोग इत्यादि । द्विपा अष्टो । सायों चूतोपयोगिन्य. पञ्चद् । राजान: पोडश । रिव-योगेष्निभिज्ञिय गण्यते, सप्तविंशतेरेव तेषां प्रन्थान्तरे फलक्ष्यमात् । तत्र ट्रितीयहतीयद्वाद्रससर्वश्वपद्विंशामामिषिद्धानुक्तत्वादेव मध्यमत्व-" प्रआण फलं कमसो विडल सुरख ४ जय च सत्तृण ६ । लामं च ९ कर्ज्ञासद्दी १० पुत्तृष्पत्तीअ १३ रज्ज्ञ च २०" ॥१॥ आंचे १ निद्रया ५ थ्व ७ द्विप ८ क्द्र ११ सारी १५ राजो १६ इपु प्राणहरस्तु हेयः ॥ ६२॥ " इक़स्स भए पचाणणस्स भज्जति गयघडसहस्सा । तह रिवजोगपणहा गयणंभि गद्दा न दीसीते ॥ १ ॥ योगो रवेभति क्रुत ४ तक ६ नन्द ९ हिग् १० विश्व १२ विंशो २० इषु सर्वसिद्धे रविजोगराजजोगे कुमारजोगे अ सुद्धदिअहेऽचि । ज सुहकुं कीरइ तं सन्य यहुफुळं होइ " ॥ २ ॥ अत्र पुतुष्पत्ती अ ति पुत्रोग्पत्ति. । यादश शुद्रलग्नानां वलं तादशमेपां रवियोगानां वलमिति यतिवल्लमे । उक्त च--रविभात्ययैक्तविशादिषु पञ्चसु २१-२२-२३-२४-२५ चरति भेष्टिबन्दौ ॥ ६३ ॥ नोपग्रहास्तु भूत्यै भूपा ५ द्रि ७ फणी ८ न्द्र १४ तिथि १५ धृति १८ युगले १९। मूसं । शैपाणां तु शुभाशुभत्वमत्रापि साक्षादेव केपाब्रिदुक्त केपाब्रिद्दस्यते चोपप्रहतयेति ॥ वय सप्तविंयती रवियोगेषु येपामुष्यदसज्ञा नास्ति तानाह---रवेगाँग इत्यादि । मर्वसिन्द्ये इति । यदुक्त हर्पप्रकाशे-

ब्याख्या--धितियुगळं धत्यतिष्टती अष्टादशैकोनविश्योहळन्दोजाती । चरतीति '्रविभादेतावत्तियेषु दिनमेषु सत्सु क्रमादेते द्वादशोपप्रद्याः स्थुरि-" विद्यम्मुख १ यूला २ यानि ३ केतू ४ ल्का ५ वज्र ६ कम्प ७ निर्याताः ८। त्यथैः एष्वद्यानां संज्ञा उद्वाहादी फलं चैवं नारचन्द्रे उक्तमू---

फलमङ्गज १ पतिमरणे २ द्यमिदिनान्तस्तथाऽश्चािनिपातः ३ । सानुजपति ४ धननायौ ५ दोःशोल्यं ६ स्थान ७ कुलघातौ८" ॥२॥ ङ ५ ज ८ ढ १४ द १८ घ १९ फ २२ वर ३ भ २४ संख्ये रिवपुरत उपग्रहा धिष्ण्ये ॥ १ ॥

र्षेषास्तु चत्वार उपप्रहाः सामान्येनानिष्टफळदाः एकात्रीतिषदाल्यवेघचक्रादावप्येतदन्जसारेणोपप्रहफलं झेयं । विशेषस्तु आडळ्योगविचारणेऽमि-

जिद्मि गण्यते

उपग्रहमाह

है	は
भूक्ष्यापना यह स्थापना यह स्थित स्थित स्थापना यह स्थित स्थि	
* 3 2 3 2 3 2 3 3 3 4 3 3 4 3 5 4 3 3 3 4 3 5 4 3 5 4 3 5 4 3 5 4 3 5 4 3 5 4 3 5 4 3 5 4 3 5 4 3 5 4 3 5 6 4 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5	"हिर् स्वंभा वात् वात् उपयो
**************************************	න ව
*-8-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-	×
#	2 2
\$-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-	»—————————————————————————————————————
\$-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-	जीऽयं
\$-25-5-25-35-35-35-35-35-35-35-35-35-35-35-35-35	
\$-25-5-25-75-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25	
\$-25-5-25-75-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25	m — — — — — — — — — — — — — — — — — — —
*255-56-56-56-56-56-56-56-56-56-56-56-56-5	° ' _ ' _ ' _ ' _ ' _ ' _ ' _ ' _ ' _
	2 0 0 0 0
	\$_5\$_\$_5\$_\$\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\
	सम्म-

प्रवासो१६ मरणं१७ व्याधिः१८ सिद्धिः१९ बूला२०सतौ२१ तथा ॥ ६६ ॥ भौमवारेऽश्केषात झत्यादि । अत्रामिजिद्गण्यते । एवं च गणने इष्टदिनभं यावतिथं स्यात्तावतिथस्तदिने उपयोगः ॥ तन्नामान्याह— सौम्यो५ ध्वांक्षो६ ध्वजश्चेव७ श्रीवत्सो८ वज्र९ मुद्धरौ१० ॥ ६६ ॥ मुसलोरर गजरर मानङ्गौर४ राक्षसोर५ऽथ चरःर६ स्थिरः२७। वर्धमान२८ श्रेति नाम्ना स्युरष्टाविद्यातिः क्रमात् ॥ ६७ ॥ छत्रं११ मित्रं१२ मनोज्ञ १३ कंपो१४ छंपक१५ एव च आनन्दः१ कालदंडश्र२ प्राजापत्यः३ सुरोत्तमः४।

118811

प्रथमविम्य

आनन्दा-योगानाह

118811

	;	प्रथमविम्	आनन्दााद्-		= 9 8= =								1	`
0 <del>-40</del> 56	₹56	₹.°	% <b>~</b> ₹	<b>%</b>	¥£°	<b>%</b> ~	<u>ئ</u>	₹.	<u>۶</u> ۹۲	96	₹.	<b>%</b> ~	2%	₹%
	यानि	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपङ्	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अभिनी	भरणी	क्रितिका	रोहिणी	मृगशिर	भाद्रो	पुनवैसु	त्रदय	अस्टेपा
	जीक	डत्तरापादा	अभिजित्	श्रवण	धनिष्टा	शतमिया	प्रवाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद्	रेचती	अश्विनी	भरणी	क्रतिका	सिक्ष	मृगविर
	सुर	भनुराधा	ज्येष्टा	म	पूर्वापाडा	डरात्तवाहा	आभितित्	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	प्रनाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद्	रेवती	भिधनी
	बीस	क्रस्य	चित्रा	स्वाति	विशासा	अनुराधा	ज्येहा	ू म	पूर्वापादा	उत्तरायादा	भिमिजित्	श्रचण	धनिद्या	शतभिपा
	मंगङ	अश्वेया	मद्या	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी	हस्य	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येहा	म्	पृत्रोपादा	उत्तरापादा
थापना यथा—	सोम	मृगक्षिर	आद्रौ	पुनवैसु	पुरम	अश्वेषा	मवा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी	हस्य	चित्रा	स्याति	विशासा	भनुराधा
स्याख्याउपयोगानां कमात्स्थापना यथा	संब	अश्विनी	भरणी	कृतिका	सेहिंगी	मृगशिर	भाद्रो	पुनर्वसु	वुत्य	अक्षेत्रा	मदा	प्तर्ग फाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी	प्रस्त
श्याह्या		१ आनंद	२ कालदंड	३ प्राजापत्य	४ सुरोत्तम	५ सीम्य	६ ध्वांक्ष	७ ध्यस	८ श्रीचत्स	মূ ব	10 सुरा	११ सम	१२ भित्र	१३ मनोझ
				ساسينيس										
A 40	<b>₹</b> .બ	? <b>∀</b> _9	<b>,८-३</b>	-0Ç.	≥}~ 6	<b>%</b> -3¢	· 6¢.	<b>√</b> •	<b>1.</b> →}	· 6C-	头之	د عر	<b>76</b> -	<u> </u>
	मार्क्स-	部	1861											

आद्रो मधा	·		अश्वेषा हस्त	मधा चित्रा	पूर्वा फालाुनी स्वाति	उत्तराफाल्गुनी विशाखा	हस	चित्रा ज्येष्ठा	स्वाति	विशाखा		उचेहा भिभितित्	-
भरणी	कृतिका	सेहिणी	मृगशिर	आद्रौ	पुनवैसु	पुरस	अश्वेषा	मधा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाब्युनी	व्यस्त	चित्रा	
पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	सेहिणी	मृगशिर	आद्रौ	पुनर्वसु	तैस्त	अश्वेषा	मवा	_
अभिजित्	अवण	धानेष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	क्रतिका	सेहिणी	मृगशिर	भाद्रो	
ड्येष्टा	भूख	पूर्वाषाडा	उत्तराषादा	अमिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वीभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	-
चित्रा	स्वाति	विशाखा	भनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाहा	अमितित्	अचण	धनिष्टा	शतभिषक्	पूर्वाभाद्रपद	
१४. कंप	१५ छुंपक	१६ प्रवास	१७ मरण	१८ ब्याधि	१९ सिद्धि	২০ মূল	२१ असृत	२२ सुसळ	२३ गज	२४ मातंग	२५ राक्षस	रह वर	(

विद्यंसार प्रीतिर रायुष्मान् मौभाग्याथ गोभन् साथा। अतिगंडा६ सुकम्षि च धृतिा८ भूलं९ तथैब चाषिरा प्रतापतिर मानस३ पग्नथ स्त्रकृष्टि साण८ क्रुम९ गड१० सहा<sup>।</sup> पाहु । उपयोगसज्ञा चान्त्रथा अमीषा विरुक्षमाषह्योगसमीष प् पपां फल नामभिरेन ज्यक्तिमिति न प्रयम् प्रतन्यते । केचित् प्राजापत्य १ सुरोत्तम २ मनोज्ञादिपर्कट शुरु९ गजाना१० क्रमेण भूष्र१ ट्यात्या-तिथिसभव यथा मवतंककर्त्रवोगाटी । नक्षत्रमभव यथा उत्पातमृत्युकाणीपवीगादी । हुणाबा देशविशेपाः । केचनेति अय भाषः-सिद्धियोगः क्रयोगअ जायेतां युगपदादि । क्रयोगं तत्र निर्जित्य सिद्धियोगो विजुम्भते ॥ ६८॥ यत्प्रातिकूल्यं वाराणां तिथिनक्षत्रसंभवम् । ह्रणवंगाबसेष्वेव तन्यजेदिति केचन ॥ ६७ ॥ गंडो१० वृद्धि११ ध्रुंच१२ श्रेंच न्याघातो१३ हर्षेण१४ स्तथा। वज्लं१५ सिद्धि१६ न्येतीपातो१७ वरीयात्१८ परिवः१९ शिवा२० ॥ ७० ॥ सिद्धाः १ साध्याः २ शुभाः १३ शुक्को २४ ज्ञासार भ चैन्द्रो २६०य वधुना २७। इति सान्वयनामानो योगाः स्युः समर्भियातिः ॥ ७१ ॥ •याख्या—योगिकनामाश्रयणात्छुभयोग. सबांऽपि सिद्धियोगशब्देनात्र प्राण्ण. ॥ अथ दिनयोगानाह-एकान्तिककार्यं विना शेषेत्वपि देशेष्वेते साज्या ॥ ग्रुभाग्रुभयोगसकरे ग्रुभयोगयलमाह-नदाभावात् ॥ कुयोगीऽनपवादमाह---

1881

व्यतिपातवैधृताक्यौ सकलौ परिघस्य युर्वमर्ध च । प्रथमः पादोऽन्येष्विष विरुद्धसंज्ञेषु हातव्यः ॥ ७२ ॥ "विक्लभ१ स्लर गंडेर अद्गंडे४ वज्ञाप तह य वाघाष् । वद्भिरु७ स्राह्कमा अद्दुष्टा मूळजोगा ओ" ॥ १ ॥ इति नारचन्द्रटिप्पनके ॥ पृषु दुष्टयोगानां दुष्टबदीराह-ज्याख्या—स्पष्टाः । विशेपस्त

लजेद्वा पश्च विष्कंभे षट् तु गंडानिगंडयोः। घटिकाः सप्त शूले तु नव न्याघातवज्ञयोः॥ ७३॥ दुष्टाथैमिलितेत्वर्थः, तादशी सज्ञा येषा ते विष्कंभगंडातिगडज्ञूळच्याघातवज्ञपातेषु ॥ प्रथमः पाद् इति यदुक्तं तत्र प्रकारान्तरमाह—

व्याख्या--स्पष्टः । विष्कभाद्दुष्टयोगेष्वेकार्गलवेधयोगस्योत्पत्तिमाह--

ब्याख्या — पूर्वार्धं पादश्र टिप्पनकलिखिततादाहिबकतस्प्रमाणापेक्षया निणेयः । विरुद्धसंझिष्विति विशिष्टं कमे जायमानं रुणद्धीति विरुद्धा

एकार्गेलः कुयोगेषु चन्द्रेऽकें च परस्परात्। गते साभिजिदोजक्षे त्याज्यः पादान्तरो न चेत् ॥ ७४॥

ब्याख्या—एकार्गेलस्साज्य इति संटकः । कुयोगोधिवति अनेन प्रीसायुष्मदादिमुयोगोष्वेकार्गलो न स्यादेविति मूचितं । कुयोगोषु सस्वपि कदाऽस्य सभव इत्याह-चन्द्रेऽभे चेत्यादि, सामिजिदित्यत्र सहशब्दो विद्यमानार्थे, तेनामिजिद्त्र गण्यत इत्यस्मिपायः । एवं ळत्ताश्चोकेऽपि क्याब्येयं ।

स्थितौ स्यातां तदा पुकागेल: स्यात् स स्याज्यः, यस्मिन्नक्षत्रे एकागेलः पतति तन्नक्षत्रं ग्रुभकार्येषु स्याज्यमित्यथः। पादान्तरो न चेदिति, पादयो ततोऽभिजिता सहाष्टाविश**तिनक्षत्रेषु** वस्यमाणरीत्या एकागैङचके कमान्न्यस्तेषु चन्द्रादकोऽकांच चन्द्रो यद्यन्योन्यस्माद्विषमे नक्षत्रे एकस्मिन्नगैले र्नेक्षत्रसबन्धिनोश्रन्दार्काभ्यामाक्रान्तर्योरन्तरं प्रक्रमान्मिथो सांमुख्यरूपो विशेषो यत्र स पादान्तर एकार्गळ:, अयमनन्तरितपाद एकान्तेन साज्यः ।

**₹0** 

एकामुक्ते योगपुरि स्कोटः ।१९॥ तडाकारवात् । शीपैभादिति खर्कुरकस्य शीपै वस्यमाणरीसा भ स्थाग्यं शेप-सप्तविंदातिमानि प्राटक्षिण्येन कमाद्रेल:न्तेषु च, ततश्चेकरेलारूपागैलप्रान्तद्वय-न्याख्या--तिर्थक् त्रयोट्य रेखाः स्थाप्या जध्दां चेका, खर्जुरकोऽय, स्थयोनंक्षत्रयोरंकेन्ट यदि स्यातां तटा एकागंछः स्यात् । तत्त्यापना यथा--क्रयोगे शिषमादकैचन्द्रावेकार्गलक्षेगौ ॥ ७५॥ तत्रापि मिथः सम्बसुलयोरेव भपाडयो-र्येटि ता स्याता तडानन्तर एकाराँछः संपूर्ध रतीयेन द्वितीयस्तु तुर्येण प्रथमस्तथा''।१। 'आयेन विष्यते तुर्यो द्वितीयेन तृतीयकः तियंक् चयोदशोध्वँकरेखे खर्जूरके त्यजेत्। इत्यर्थ. । यथा (स्थापना)— पादान्तरितस तु त्यागे कामचार इति भावः ॥ वक्त च गुतमेवस्थापनाद्रिविधिना विशिष्याह— ~ 2 20 1 -उत्तराफाल्युना स्य —पूर्वोफाल्गुनी मृगक्तिर H क्रिंसका — भरणी---उत्तराभाद्रपद्—--अधिनी — रेवती--प्यामाद्रपद्---शतमिषक् – <u>य</u> अमिजित्—

अन्यथा त्वक्रेन्दोरवस्थाने पादान्तरितोऽसौ न दोपाय । अयं भावः--यथा घानुष्कस्य लक्ष्य विष्यतः स्वरूपमपि लक्ष्याप्रादम्चलने कार्यसिद्धिनै " बाणात्रद्दष्टिपाताचद्रह्वक्ष्य भिनति धानुष्कः । तद्रत्समद्दष्टिगतो वेघो घिष्ण्य प्रदूषयति " ॥ १ ॥ स्यादेव तथा वेघोऽपि पादाग्राद्विश्रष्टो नार्थभाष्मवेत् । उक्तं च यतिब्छमे—

खर्जुरकस्य शिषेक्षेमानमेकागेले मतम् । योगाङ्क सेक ओजोऽन्यः साष्टार्विशतिरधिताः ॥ ७६ ॥ एवं वस्यमाणवेधेत्वप्यूद्यम् ॥ शीषेभस्यानयनमाह—

ब्याख्या--शिष्क्षेमानमिति एतावतिथ भे शीषे देयमिति कथ्यमानत्वान्मानशब्दोऽत्र प्रयुक्तः। योगाङ्क इति इष्टादेने यो विष्कंभादियोगस्त-इंटेडिंड ग्रूलयोगो नवमः, सैकत्वे दश्व, आधिते पञ्च, तत. पञ्चम मं सगशीषै तिह्ने मूर्धिन हीयते । तथा इंटेडिंह गंडयोगो दशमः, अष्टाविंशति-साक्ष्मेद्विषमस्तदा सेकः कार्यः, समश्रेत्तदाऽष्टाचिशतियुतः कार्यः, पश्चादुभावप्यर्धीकार्यौ, ततो योऽङ्गः स्याचातायं भ खर्जुरकस्य शीषे देयं। यथा गंडे मुलमथाश्विनी प्रथमके मैत्रोऽतिगडे तथा, सार्पेश्च व्यतिपात इन्दुतपनावेकार्गेलस्थी यदा 🗥 ॥ १ ॥ " शूले मूर्धिन मुगो मघा च परिघे चित्रा पुनवैधृते, व्याघाते च पुनवैस् निगदितौ पुष्यश्च बज्जे स्मृतः । योगेऽष्टाञ्चिंशत्, आधिते एकोनविशतिः, तत एकोनविशत मूर्लं तिह्ने मूर्ष्टिन देयं, एवमन्यकुयोगेष्विप भाव्यं । तथा च लछ.--

च्याख्या-सप्त रेखाः समहता. सप्तरेखं, तत्र पूर्वस्थामादौ न्यस्ताद्गिभादारभ्य यथास्थान लिखितस्येष्टभस्य रेखाऽश्रगे खेटे सित तेन वेषः स्थादि-स्वर्थसंटंकः। अयं भाव.-ऊर्ध्वं तिर्यंक् च सप्त रेखाः क्रत्या तासामन्तेषु पूर्वादिचतुद्धि कृतिकादिसप्तसभान्यमितिखुतानि न्यस्यन्ते। तथाहि (स्थापना)-वेघ ऊर्धितर:मप्ररेखे पूर्वोदितोऽग्निमात्। भस्य रेखाग्रगे खेटे हेगश्रेन्न पदान्तारम्॥ ७७॥

अत्र प्रथमके इति विकामे । सप्तरालाकचन्नेण वेषयोगमाह---

よがながらかながながながらなるようななるとうなるとうなる 日本日日 日本日日 日本日日 日本日日 日本日日 日本日日 日本日日 日本	
46 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/- 16 3/-	:
नतो यो यो बहे यन्न यन में स्थात् म म तत्र तन्न स्थात्यः। ततो यहेन्वायाः प्रान्ते तिहनभं नमागत नस्य द्वितीयप्रान्तस्यमे यद्दि कश्चिद्प्रहः स्यात्तवा तेन प्रहेगष्टभस्य वेधः स्थात् म हेयः। यतः कृत्वेषे मृस्युरेव, नैम्यवेषे नु मव्या सुन्यनातः अन्राप्यात्तानाह-चेत्रसादि यदि म वेषः पूर्वोः करीत्या पात्रान्तितः स्यात्तवा स्थात् नम्य प्राप्तः अय भावः-इष्टमस्य यिसम् पाटे कार्य विकाम् निकाम् निकाम न	
क     क       क </td <td></td>	
ومريجي آل نزو در نزد در عزد در عزد در عزوجه عايد بر غزو در عزد مدع و م	-
स्तित्रः सिद्धेः	•

विश्वा अज्ञापि पादान्तरितत्वादिग्ररूपणा प्राग्वज्ज्ञेया। अनन्तरिते ग्रहवेधे च फलमेवस्-कित्तिअमार ठिवेज हु चक्कं जो अह सासिणा तो गहवेहं ॥१॥ च विवाहबुन्द्ावने-'' अन्यतः परिणयाद्यं वेधः सप्तरेखवलये ''। विलोक्यते तत्रापीति अन्ययानामनेकार्थत्वाद्पिशब्दोऽत्रावधारणे, तेन पूर्वोक्तः सप्त-रेखनैधः प्रतिष्ठादिसनैकायेषु वीक्ष्यः, विवाहे स्वयमेव पञ्चरेखनक्रवेधः । उक्त "रिव विह्वा कुजि कुलक्षय बुद्दि बंझा मिगु अपुत्त सिण दासी इत्यथः गुरवेहेण तर्वास्मिण विलासिणी राहुकेऊहिं " ॥ १ ॥ विवाहे पूर्ववत्पञ्च रेखा हे हे तु कोणके। लिखित्वाग्निभतो भानि वेधं तत्रापि चिन्तयेत्॥ ७८॥ ब्याख्या--पूर्वविदिति तिर्यगूर्ध्वं च पञ्च पञ्च रेखाः कोणेषु हे हे च क्रत्वा तासु क्रमाझानि, तेषु च यथासंभवं प्रहाः स्थाप्या अयं वेधो दीक्षायामपि वीक्ष्यः इति फुर्णभद्रः । आह च-''. सूरिपगाइस सत्तसलाय वयगहणाइस पंचसलायं अत्र सासिणो ति चन्द्राधिष्ठितनक्षत्रस्येत्यर्थः कत्तायोगमाह---विवाहे विचार्यमपरं वेधयोगं पञ्चशळाक्तचक्रणाह--浬 विवाहे वेधचक्रस्य पञ्चरेखनाम्नः स्थापनेयस्---

लता बर्घेटमादकदिनां साभिजिदीयुषाम् । धृत्या१८कृत्यु२२ड्ड२७सप्ता७हेत्२४पञ्चा५कृत्य२२ङ्क९संक्यभा७९॥

ग्याक्या−–आकृतिद्वायिक्जन्दोजानिः । उद्दुनि सप्तविद्यतिः । अहेन्तश्रतुर्विक्षतिः अङ्गा नव । अयमथंः–इष्टभादष्टादरो मे स्थितः सक्षकै इष्टमं ठत्त्रया हन्ति, चन्द्रस्तु द्वार्चिसे मे स्थितः सन्नित्यादि । ठत्ता किळ पाद्महारः स चाश्वादीनामित्र प्राय: प्रष्ठतः स्यात्ततस्त्रथोक्तः ॥

🆄 ठत्तयन्ति भमकाियाः स्वक्षेतः साभिजित्कमात् । अकरिश् घा८ ग्रिश् विकृत्वश्हे ङ्गर्ह तत्त्वार्ष्छ८ प्रकृतिश्रुप्रमं॥८०||५| अय ज्योतिविदा नक्षत्रगणनसीक्यांथै यथा पुरतः स्यात्तथा पाठान्तरेणाह---

ब्यारया—स्वक्षेत इति यधेन प्रहेण तदा आक्रान्त स्यातस्य तत् स्वक्षै, ततो येषु येषु मेप्वकांघा राह्नन्ताः स्थिताः स्युस्तेभ्योऽप्रे क्रमाद्-

द्वाद्यादीनि भानि उत्तया प्रन्ति । विकृतिप्रकृती त्रयोविक्यैकविक्यौ छन्दोजाती । तत्वानि सांख्यमते पञ्चविक्षतिः । उत्तराधे सुखायै पाठान्तरं-

'ः सूर्या १२ षट ब्रिश् त्रयोविंदा२३ पट्६ तत्ता २५ ष्टेट कविंतक.२१ । अस्मिश्र लत्ताद्वेविष्येऽपि नार्थमेदः । तथाहि–इष्टभमक्षिनी ततोऽष्टाद्शे

मे ज्वेषायां स्थितोऽक्षेऽिमिनीं ग्रुषतो लत्तयति । तथाकैस्य स्वक्षै ज्येष्ठा तत्रस्थोऽकैः पुरतो द्वादयं भमिष्मनीं लत्तयति । एवं सर्वत्र भाष्यं । ननु

पदिष्टिनस्यभ तदेयेन्द्रोमै, तत्रस्यश्चेन्दुयेदि द्वाविंशमष्टमं वा मं कत्तयति तदेष्टभस्य किमागत ? ततश्रष्टभस्येन्दुरुत्ताविचारणं व्यथमेवापद्यते । सत्य,

परमिन्दुः परिष्णं एय मत्र् भं ङत्तयति, नान्यथा, यदाह श्रीपतिः⊸" द्वाचित्रं परिष्णंमूतिंरहुपः सतापयेकेतरः " । ततो गतराका यत्र मे समाप्ता

स्यागदेगेन्रोभे कत्पियित्या ततो विचायं । उक्तं च यतिबछ्ये--

" चकार यत्र नक्षत्रे राकान्त रजनीकरः। ततत्र्याष्टमनक्षत्रं म पुरो इन्ति लत्तया " ॥ १ ॥

विचारः ब्याख्या---नवमे इति, त्रिविक्रमस्तु विशे मे राहोलैत्तामाह, तथाहि-'' नख२० संख्यं तमोहन्तीति "। कत्ताफलं च पौर्णमद्रज्योतिषे अग्रतो नवमे राहोः सप्तविंशे भूगोस्तु मे । केचिङ्योतिविंदः गाहुरुंतां तामिष बर्जयेत् ॥ ८१॥ ए वसुक्तम्--

'अणुजिनिणासो १ नालो २ मजाभावो ३ भयं ४ निह्वक्रेऊ ५ । गुरु १ बुह २ सिथ ३ सि ४ रवि ५ हयरिमबेसु मरणमन्नेसु''॥१ इह च बुद्धाः प्राहुः—' सौम्यलत्ताः क्रिल स्वल्पदोषाः, भस्य हि दौर्यल्यमेव ताः कुर्युः, फ्राल्तास्तु मरणटारिद्यादिनाऽनर्थदाः उहनि निर्हेलिते ग्रुमळत्तया, म फलमस्ति भस्य गळत्तया । अधुमळत्ति भमत्ति तदुढयोधनसुतानसुतापकरं परम् " ॥ १ ॥ केशवाकोंऽप्याह~-

" सीम्यलताहतं पातोपत्रहाचैश्च दूषितम् । भपादं वजेयेदेव भञ्च केन्द्रे न चेच्छुमाः" ॥ १ ॥ ग्रन्थान्तर्त्वेष मूचे---

असायं भावः-यदि तात्कालिककार्ये लग्ने केन्देषु श्चभग्नहाः स्युस्तदा सीम्यग्रहलता पादान्तारेता न दुप्पति । केन्देषु शुभग्रहाभावे तु सीम्य-ब्याख्या--इष्टदिने यत्र भेऽकैः स्यानस्मादश्लेषाद्युक्तकङ्गानि यत्र सङ्ख्यायां स्युः, कोऽर्थः ! यावतिथानि स्युः, अश्विनीतो गणनया ताव-पातः सूर्यक्षेतोऽङ्छेषा मघा चित्रानुराधिका। श्रुतिः पौष्णं च यत्र स्युस्त्याज्यस्तरसंक्यभेऽश्विभात् ॥ ८२॥ ळ त्ताहतमपि भं संपूर्णमपि खाज्यं, प्वमुषग्रहपातादिहतेऽपि मे वाच्यम् ॥ पातयोगमाह---

तियेषु षड्मेषु पातः स्यात् । अस्य त्रिग्नूकपात इति नामान्तरं । भावना यथा--यदा सूर्यभं ज्येष्ठा ततोऽइलेषा एकोमिवशी, मघा, विश्री, चिन्ना चतु-

पातस्वक = 5 = = विंशी, अनुराधा मसर्विंशी, श्रुतिः पञ्चमी, पौष्णं दशमं चेलतस्तिहिनेऽश्विनीत एकोनविंश १ विंश २ चतुविंश ३ सप्तविंश ४ पञ्चम ५ दशमीषु ६ " पयन १ पायक २ श्रेष कालः ३ किंकर ४ पव च । मृत्युकत् ५ क्षयक् ६ चेति पाता नामसदक्ष्पताः " ॥ १ ॥ पांतं गुलस्य गंडस्य हर्षणव्यतिपातयोः। साध्यवैधृतयोखान्ते थिष्ण्यं यसत्र वर्जयेत् ॥ ८३॥ मृल १ प्रांपाडा २ शतमिपम् ३ रेवती ४ मुगक्षिरो ५ मघासु ६ पातः स्थात् । एवमन्यद्पि भाव्यं । पातेऽभिजिन्न गण्यते ॥ तिच्छत्याश्रवदेमहंसरितस्यारंभितिष्येः सुधी त्रङ्गाराभिधवार्तिकस्य समभूदायो विमशाँऽर्थतः ॥ १ ॥ इति श्रीमति आरंभिमिद्धिवार्तिके तिथि १ वार २ भ ३ योग ४ परीक्षात्मकः प्रथमो विमर्शः ॥ १ श्रोस्ररीश्वरसोमसुन्दरगुरोनिःशेषशिष्यात्रणीर्गच्छेन्द्रप्रभुरत्नशेखरगुरुद्देदीष्यते साम्प्रतम् । व्यात्या-ज्ञावा एते पड् योगा येषु मेषु समाव्यन्ते तेषु तेष्वेते वहपि पाताः क्रमात् स्युः-॥ इति योगद्वारम् ॥ ४ ज्ताः मंज्ञा नरपतिजयचर्यायाम् ॥ भत्र सुषार्थमान्नायमाह—

```
॥ द्वितीयो विमर्शः ॥ ५
                                                           ॥ अथ राशिद्वारम् ॥ ५
```

तौली चित्रान्त्यार्थं स्वातिः पादत्रयं विद्याखायाः। स्यादृष्ट्रिश्रको विद्याखाचतुर्थपादोऽनुराधिका ज्येष्ठा ॥४॥

धन्बी मूल पूर्वाषाहाऽपि च पाद उत्तराषाहः। स्यान्मकर उत्तराषाहांहि जितयं श्रुति धैनिष्ठार्धम्॥ ५॥

ब्याख्या—एषां भावना–राशिकल्पनेऽभिज्ञित् पृथग्न गण्यते, ततः सप्त विंशती भेषु प्रत्येकं पादचतुष्कभावाधेऽष्टोत्तरं शतं नक्षत्रपादा वर्णनैय-

कुंभोऽन्त्यधनिष्ठार्धं शततारा पूर्वभाद्रपात्रिपदी। मीनो भाद्रपदांहिस्तथोन्तरा रेवती चेति ॥ ६॥

स्यकथनेन प्राक् सूचितास्तेषु नवभिनंवभिः पादेरेकेको राशिरिति द्वादक्ष राज्ञपः स्युः, अत एव पुरुषादिनामसु राज्ञिकरूपनानक्षत्रपादनियमितवर्णान्

ज्ञात्वा नामाधवणाैः कार्योः । अभिजितस्तु पादत्रयस्य वर्णो उत्तराषाढाया अन्त्यपादे तदन्त्यपादस्य वर्णेः अवणसाद्यपादे चान्तर्भोज्याः ॥

मेषादीनां वर्णानाह--

मिथुनो मृगार्थमाद्री पुनर्वसोश्चांहयस्त्रयः प्रथमे । कर्की च पुनर्वस्वोः पादः पुष्यस्तथाऽक्षेषा ॥ २ ॥ सिंहस्तु मघाः पूर्वाफल्गुन्यः पाद उत्तराणां च । कन्योत्तरात्रिपादी हस्तश्चित्रार्धमार्च च ॥ ३॥

राशिरथ तत्र मेषोऽश्विनी च भरणी च कृत्तिकापादः । बुषभस्तु कृत्तिकांहित्रयान्विता रोहिणी समागिधी ॥१॥

मेषाच्छोणाञ्जेनहरिद्रक्तश्वेतैतमेचकाः। पिंगापेंगलकत्माषकडारमलिना रुचः ॥ ७॥

ब्यारया —मेपादिति मेपायप्रमिते रात्रीनां नर्वात्राविचारणाया तु नवांत्राानामपीति शेषः । अर्जुनो धवकः । हरित् पीतनीलः शुक्रवर्णस्यात् ।

उग्रद्घोषवतीगदं द्यमिथुनं नौस्थाग्रिसस्यान्विता, कन्या ना च तुलाधरो धृतधनुर्धन्व्यश्वपश्चार्धेकः।

तत्रश्च तस्य थातुमूकादेर्वस्तुनो इतनष्टादिप्रश्नेऽनेन वर्णज्ञानं स्थात् ॥ राशीनां रूपाण्याह—

एतः कर्तुरः विचित्रवर्णस्वात् । मेचक कृत्णः । पिंगः पिंगडश्र पीतरक्त । कहमापः कर्तुरः शुक्छकपिलस्वान्मिश्रवर्णे इसर्थः । कदारः कपिलवर्णेः । मिलिनो मासवर्णा. । प्रयोजन चास्य विशिष्य नवारीषु, तत्त्वैवं-धातुमूलजीवरूपं द्रन्य किळ नवाशाण्ज्ञायते । उक्त च-" अंशकाज्ज्ञायते दृष्यं " ।

एणास्यो मकरः कुटांकिनशिराः क्रंभो विलोमाननं, मीनो मीनयुगं च नामसद्याः प्रोक्ताः परे राशयः ॥८॥ 🖔 •याख्या—घोषवती बीणा बीणापाणिः स्ती, गदापाणिनैरः, इंदक् संमुखनिविष्टं सीपुंसयुग्मं मिथुनराशिः । नौस्याप्नीत्यादि वामे इस्तेऽप्ति | दक्षिणे च पान्यं घरन्ती नौस्यिता कन्या कन्याराशिः । ना चेति तुकाहस्त. पुमाँस्तुकाराशिः । धतधनुरिति कट्यधोदेहपश्चार्धमश्चरयेव चतुष्पद् इत्यर्थः, उपरितनं तु देहपूर्वार्थं नरस्येव, तब्बस्ते च भनु. इंद्यथनूराशिः । एणास्य इति मुगतुल्य मुखो मकरो मकरराशिः । शिरःस्यकुमो नरः

र्जमराशिः, "स्कम्पासक्तरिक्षदः" इति तु बृह्जातके । विलोमेति अन्योऽन्य पुच्छामिमुलमुलै यमलस्यौ मीनौ मीनराशिः, अत प्यास्य शीर्ष-प्रषोद्रियतं । परे उक्तरीपाः पत्र रात्रायी मेपग्रुपकर्नेसिंहग्रुश्चिकास्याः स्वस्वनामानुरूपरूपा. । विशेषस्तु सर्वेषां किळ रात्रीतां चेष्टास्थानाष्रापि स्तस्य-

" मेगो देन्यमुपैति गर्वति चुपो नानामतिमैन्मयः, शूरः कर्कटको धृतिश्च वनपे कन्या च मायाविनी ।

नामानुरूपमिति संप्रदायः । तथा च मारग्नः-

मक्रस्याद्योऽम आरण्योऽन्यो जलचर हत्यादि । प्रयोजनं चास्य हतनष्टादौ चौरचेष्टा- स्थानादिज्ञानं । पुषु च क्रोधूचितकमीण्येवं देवज्ञवछमे---'राज्या-तथा मेपबुपी दिवा आरण्यी, निक्षि माम्यी । मिथुनो माम्यः । कर्कमीनी जले । सिहोऽरण्ये । बुश्रिकः मवासी । धनुःकुंभी माम्यी । सत्यं रज्जुतुलास्वले मिलनता चापश्च पापाशयो, मौखर्य मकरे घटे चतुरता मीने च धीरा मितः" ॥ १ ॥

मिषेकविरोधसाहसक्टकमीदि धात्वाकराधं च मेपे छप्ने सिष्यति १ । विवाहवेश्मप्रवेशकन्यावरणादिधुवं कमे क्षेत्रारंभपशुकमैणी च बुपे २ । बुषोक्तं यात्रायुद्धत्रतसत्कमांणि धनुषि ९ । क्षेत्राश्रयमम्बुयात्रा चरकमे नीचित्रिया च मकरे १० । अम्बुया- त्रानीसज्ञीकरणबीजोप्तिदंभमेदत्रतादि नीचकमे च विद्यातिल्पभूपणादि च मिथुने ३। सेवाभोगी मृदुश्चमकमै पौष्टिकं वापीकूपादिजङकमै च कके ४। मेपोक्तं वाणिज्यनुपसेवारिपुमिङनादि च सिंहे ५। क्षिल्पैषधसूषणवाणिज्यादिचरस्थिरं कन्यायां ६ । क्रपिसेवायात्रादि कन्योक्तं च तुळायां ७ । ध्रुवकर्मं नृपसेवाचौर्यादिदारुणोग्रादिकर्मं च वृश्चिके ८ । " यतान्युक्तानि संसिध्धि यान्ति शुध्येष्वजादिषु । क्र्राणि क्र्युकेषु शुभानि सधुमेषु तु " ॥ १ ॥ कुंमे ११। विद्याङङ्कतिशिल्पपश्चकर्मनीयात्रामिषेकादि मङ्ग्यकर्म च सबै भीने सिध्यति १२।" राशिश्रीकान्याह—

ब्याख्या-पुनः पुनिरिति प्रतिविशेषणं योज्यं। ततस्रायमर्थः-मेषाद्याश्चत्वारः कमात् पूर्वोद्चित्तामीताः । पुर्वं सिंहाखाश्चत्वारो अनुरा-पूर्वादिदिश्च मेषाद्याः पत्तयः स्युः पुनः पुनः । चरस्थिरद्विस्वभावाः कूराकूरा नरक्तियः ॥ ९॥

द्याश्वत्वारो वाच्याः । प्रयोजनं चास्य वस्यमाणं " यातच्यं दिग्मुखे कप्ने " इत्यादिकं हतनष्टादी चौरादेगीमनदिग्ज्ञा नादि च । चरस्थिरेति मेषश्ररः । बुषः स्थिरः । मिश्रनो द्विस्वभावः । कथं ? आद्यार्थं, स्थिरं द्वितीयाथ चरं, क्रमात् स्थिरचरयोर्बेषककैयोः सामीप्यादिति जातकबुत्ती ।

**अ||गात्रेत्र**कादि सीम्बेशत्वान्सीम्या. " इति तु रत्नमाळायां। अपि च कूरोऽपि राशिः तीम्यप्रहयुतिदष्या सीम्यः स्वात्, तीम्योऽपि च कूरप्रहयुतिदष्या कूरः स्वात्। नगन्निय इति मेपः क्रो नगत्र, द्यपः सीम्यः खी च। पुन.पुनिस्यस्यात्रापि विशेषणद्वयेऽपि प्रत्येकं संबन्धनात् मिथुनः क्रो नगत्र, कर्कः सीम्यः सी चेलाराग्रेऽप्वैकान्तर वार्च। एवं च मेपमिथुनाचाः पट् ओजराशयः कूरा नराश्च, वृषककांद्याः पट् समराशयः सीम्या॰ खियश्च प्रयोजनं तु कूरेषु धुंसु च जाता: क्रास्तेजस्विनश्च स्युः । सौम्येषु स्त्रीषु च सौम्या सृद्वश्रेत्याहि '' मैषसिंहग्रश्रिकमकरकुभाः पञ्च राशयः क्रूराः क्र्रस्वामिकत्वात्, शेपाः सप्त दियानिजन इति सामर्थ्यातुम्यते । पूर्या प्रयोजनं तु इतनष्टादौ दिनसत्रिरूपसमयज्ञानं । उक्तं च-" सत्रिभ्यः काकदिग्देशा " इत्यादि । तथा दिन-पुनःपुनरिस्यस मंत्रन्थनादेवमेव कर्कादेत्रये तुळादित्रये मकराटित्रयेऽपि च चरादित्यं वाच्यं। प्रयोजनं तु चरादिपु जातास्तच्छीला. स्युरित्यादि कूराकूरा ब्याल्या—अजो मेपः । उक्षा ग्रुपः । युग्मं मिथुनं । नियाविक्षिन इति होपास्तु पट् सिंह १ कन्या २ तुळा ३ गृश्रिक ४ कुंभ ५ मीना ६ यिलिति उमे दिवा यात्रादि ग्रुभ, रात्रिवालिति तु रात्रौ, विपर्यवस्तु न श्रेष्ठ इत्याचिति । पृष्ठेनोद्यन्त्ययुगमा इति निवाविष्यद्के मिथुनवर्जाः, पन्न पृष्ठोदियिनः उदयतामेगां प्रयम ग्रष्ट प्रादुर्भवतीत्वर्यः । शीपेंगेति अन्ये मिथुन १ सिंह २ कन्या ३ तुला ४ मुश्रिक ५ कुमाः ६ पट् शीपेदियिन उद्यतामेगां पङ् निशायलिनोऽजोक्षयुग्मकर्त्रधनुर्मृगाः । ष्ट्रेनोद्यन्त्ययुग्मास्ते शीर्षेणान्ये द्विघा झषः ॥ १०॥ " प्रहयोगेक्षणाभ्यां स्याद्रारोभींबो प्रहोद्भवः । राशिः स्वभावमाघते प्रहयोगेक्षणोज्ज्ञितः " ॥ १ ॥ उक्त च द्वजनब्हमे—

अर्कावुचान्यज १ वृष २ सुग २ कन्या ४ कर्क ५ मीन ६ विणिजो ७ इंदोः

प्रयमं तिरःपादुमाँनात् । झपो मीन उमयोदयी युगपच्छिरःग्रुधाभ्यामुदेतीत्वर्थः । प्रयोजनं तु यात्राहो शीपोंदये लग्ने जयः, पृष्टोदये वेफत्यिति-

दिस् १० दहना ३ घाचित्राति २८ तिथी १५ षु ५ नक्षत्र २७ विद्यातिभिः २० ॥ ११ ॥

ब्याख्या—अजेति मेपबृपमकराद्याः फ्रमास्मूयदिगिमुचस्थानानि । वणिगिति उपलक्षणत्वानुका । केः क्रत्वाऽजादयोऽकांधुचानीत्याह—

दिग्दहनादिमितेरंशैरिति, कोऽर्थः १ दिगिमतेरंशेमेषो रब्युच मेषस्याचा दश त्रिशांशा रब्युचमित्यर्थः । एवमप्रेऽपि यथा वृषस्याद्यास्वयस्थितांशा इन्दूचं,

स्वोचतः सप्तमं नीचं त्रिकोणान्यथ भानुतः सिंहो ५ क्ष २ मेष १ प्रमदा ६ घनु ९ धेट ७ घटाः ११ कमात्॥१२॥

वाच्यः । तथाहि-मेषात्सप्तमे त्रकायामाद्या दश श्रिंशांशा स्वेनींचं, वृषात्सप्तमस्य वृश्चिकस्याद्यास्त्रयास्त्रांशा इन्दोनींचं । अत्रापि संप्रदायस्वयम्—

तुळायां रविनींचस्तत्रापि दशांशाम् यावत् परमनीचः पश्रानु नीचः, पुवं चन्द्राहिष्वपि वाच्यं । पाकश्र्यादिप्रन्थेः सह संवादी चाय संप्रदाय: ।

जातकनारचन्द्राधिभेप्रायस्त्वयम्–'तुङायामको नीचस्तन्नापि दशमे त्रिशांको परमनीचः, एवं चन्द्रादिष्वपि बाच्यं" । ताजिके तु नास्ति परमनीचसंज्ञा,

किंतु तुकायामाधदशांशान् यावदकों नीच इत्युक्तं, एवं चन्द्रादिष्वपि वाच्यं । विशेषस्तु—

" कन्या राहुगृहप्रोक्तं राहूचं मिथुनः स्मृतः । राहुनीचं घनुवेणांदिकं शनिवद्स्य च " ॥ १ ॥

ब्याख्या—यस्य यस्य यद्यदुचं तस्माद्यदासप्तमं तत्तत्तस्य नीच दिग्दहनाष्टाविशतीसादिरंशसंख्याऽत्रापि योख्या । ततश्रायमर्थः उच्चवन्नीचेऽपि

''मेपेऽर्क उचस्तस्येव दशमे त्रिशारो तु परमोचः । शशी वृपे उचस्तस्येव तृतीयांशे तु परमोचः । मौमो मकरे उचः तस्येवाष्टाविशेंऽशे परमोचः''

इत्यादि । ताजिके तु नास्ति परमोचसंज्ञा, किंतु मेपे आद्यक्षभागान् यावत्स्यै उच्चः, पश्चातु तेजःपतित इत्युक्तं। पुनं द्यपादिपु चन्द्रादीनामपि वाच्यम्॥

मकरस्याष्टाविंशतिरंशा भौमोचमित्यादि । अत्र संप्रदायस्त्वयम्–मेपेऽकै उचत्त्रत्रापि द्रांशान् यावप्परमोच्चः पश्चान्त्वः । शर्या घुपे ठचस्तन्नापि

त्रीनंत्रान् यावत् परमोचः पश्चात्त्व इत्यादि " । लोकश्यादिग्रन्थैः सह संवादी चायं संप्रदायः । लघुबृहज्जातकनारचन्द्रादीनामसिप्रायस्त्वयं —

	हितीय विमेशे ग्रहाणांस- शिक्षिति- मानं ॥	= E
よりのよう	ころうしょうしょう	%
उचनीचस्थापना— परमोचता परमनीचता च पष्टिछिक्षेष्रमागञ्ज तत्तदंशस्य मध्यभागे,	क्रिक्ट   क्रिक   क्रिक्ट   क्रिक	<ul> <li>१६ पावकुंत्रहाणां से विशेष्ठ निर्मा स्वाकृति । इन्हों । इन्हों । इन्हों साधिद्नि मासमेकं श्रोत्रार ।। इति तात्र मेपलंकानी नवदिनेश्योऽत दिनमेकं परमोचोऽके. १ । वृपे नववटीस्योऽत मार्थ वटीचतुरुं चन्द्रः परमोचः १ । मक्रे सार्थनदााः कि नामि ग्रुः परमोचः १ । मक्रे सार्थनदातः । कि नामि ग्रुः परमोचः १ । स्वाकृतिस्योऽत । स्वाकृतिस्योऽत । स्वाकृतिस्योऽत । दिनमेकं श्रुकः परमोचः ६ । तुळावामेकोनविक्षतिमासेस्योऽत मात्रमेकं सामान्येनोकः विक्रिः । यतो मौमाद्याः प्रायो चिक्रिता आंत्रचिता वा स्तुः । न च तदानीमयं परमोचनिकः विक्रिता विक्रिता वा स्तुः । न च तदानीमयं परमोचनिकः । कि समयदुरायोत । दयमीव्ययोतां विक्रितः विक्रितः विक्रितः अतिविक्षितः व सहात्रोमां तु सांप्रतोकः । कि समयदुरायोत । दयमीव्ययोतां विक्रितः विक्रितः विक्षितः व परमोचनिवले विक्षितः । व व तदानीमयं परमोचः । । कि स्वर्थाकः व व तदानीमयं परमोचः । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।</li></ul>
	बार्स्स- सिद्धेः ग्रह्णे	

" इस्रो जइ उचत्थो हवह गहो उन्नई परं कुणह । कि पुण वि तिन्नि गहा कुणंति को इत्थ संदेहो"॥ १ ॥ त्रिभिनींचैभेवेद्यासिक्षिमिरुचैनेराधिपः । त्रिभिः स्वस्थानगैमेत्री त्रिभिरस्तिमितेजेडः ॥ १ ॥ " ज्युचेन्पः पञ्चिमरधेचन्नी चन्नी पहुचैमुनिमि ७ स्तथाहेन् ॥ जन्मिन तरफल यथा—

अन्धं दिगम्बरं मूर्खं परपिंडोपजीविनम् । कुर्यातामतिनीचस्यौ पुरुषं चन्द्रसास्करौ " ॥ २ ॥

इत्यादि । त्रिकोणान्यथीति पुतानि मूलत्रिकोणान्यप्युच्यन्ते । प्रमदा कन्या । घटस्तुला । घटः कुंभः । प्रयोजनं तु त्रिकोणग्रहा उचसमं

किञ्चिद्रनं वा फलं द्युऐति पाकश्रियां । प्रश्रशतकवृती च त्रिकोणादीनि त्रिंशांशब्यक्सा एवमूचिरे, तथाहि—'' सिंहे विंशतिस्त्रिशांशास्त्रिकोणं शेपा

उचाः पञ्चदगः परमोचः ततः पञ्चांशास्त्रिकोणं शेषा दश गृहं बुघस्य ४ । घनुषि दशांशास्त्रिकोणं शेषा गृहं गुरोः ५ । तुलायां पञ्च दशांशास्त्रिकोणं दग गृहं रवे: १ । धुषे द्वावंशाद्यचौ तृतीयः परमोचः शेषाश्चिकोणमिन्दोः २ । मेषे द्वाद्शांशाश्चिकोणं शेषा गृहं कुजस्य ३ । कन्यायां चतुर्दशांशा शैषा गृहं शुक्रस्य ६ । कुंमे विद्यातिरंद्याखिकोण शेषा दश गृहं शनेरिति ७ ॥ राशिसंबद्धान् हादश भावानाह—

लग्नाङ्गाबास्तनुरै द्रव्यरे आतृरे बन्धुध सुता५ रयः६

स्त्री७ सत्युट घमेर कमारि॰ चर्श ज्ययारिस्अ द्वाद्या स्मृताः॥ १३॥

अयाख्या—भाष्यन्ते विचार्यन्ते इति भावाः । प्रच्छायां जन्मनि यात्रादी वा यः कश्चित्तकाले उदयन् राशिः स लग्नाख्यो द्वाद्गारचक्राक्नाति

न्यस्य संमुखारविवररूपे मुख्यस्थाने देयः, शेषा एकादश राशयोऽप्रदक्षिणमेकादशस्थानेषु च, एत्रं कुंडछिका स्यात । तत्स्थापना---

5 2	10	s/ \"
नन	औ	9
°/6	30	2 (00

नतोऽप्रदक्षिणमैकाद्यस्थानेषु द्वितीयाद्दिग्यानस्थराद्यीनां क्रमाद् द्रब्यभाव २ आतृभाव ३ वन्धुभावाशिद्रमंजाः इष्टस्य युमो द्रन्यआत्राद्रिकमेपामनुन्यारेण अग्र लग्नम्य तनुभावमंजा इष्टनरादेस्तनुरेतद्नुमारेण विचार्येत्ययंः। विचायं तथाहि-

पापैरेचं तस्य तस्यारिन हानिनिंद्ध्य्या पुच्छतां जन्मतो वा " ॥१॥ "गो यो भावः स्वामिद्यो युतो वा, सोम्येवां स्यातस्य तस्यास्ति युद्धिः।

नमा कूस अपि गुण्णस्येम, न नु ब्रन्ति । अन प्योक्त-"मीस्या. प्छेऽरिब्राः मर्थे नेष्टा स्पयाष्टममा" इति । ययनेषरमते तु-"अष्टमे मीस्या आयु-नार गप्टेऽरिभाने यथा क्रा अरिभान ब्रन्ति तथा मीम्या अपि ब्नन्येन, न तु पुष्णन्ति । ब्ययाष्टमयोश्र यथा सीम्या ब्ययसृत्यू पुष्णन्ति र्रेन्द्रिक्ता उति । आसुभाने च भागिन्योऽपि लक्ष्याः । बन्धवः राजना बन्धुभाने माताऽपि । सुतभावे जिप्या अपि । मीति भाषा । भन्न मानामाः

लाभाद्यमि । क्ष्ये मन्मनूनवादि च दिवावाणि (वै) द्वाद्योति यवा लग्नाद्मम्य द्वाद्य भामा उक्ताम्पण चन्नाद्षि श्रेयाः, लग्नचन्न्योमेष्ये यस्तदाती

यन्त्राम् स्पानसमात्रुहाडम भाता विचायैन्त यूत्यास्माय. ॥ भातानां नामान्त्राण्याड---

णि । अष्टमे रोगाणि । भर्मभारे फ्रमागनतिषाऽचिरिनतिषाऽचिरितत्यनलाभायपि । द्यमेक्सेट्यापारः, अत्र पिनाभाग्यमाद्येश्वयांषपि च । हामे नष्ट-

ग्याम्था-मृक्षःमिन्निरोति मित्रभामं मृक्षभयमं समातन्त्रीस्थात्यां अष्यत्र स्याङ्गत्याः । प्रामग्रेऽपि मनैत्र पूर्गाक्तास्यादिसमामामा मुह्यमिद्रिर्पाताल हिन्नुकाम्नुसुखाभिषम् । चतुर्थमधमं छिद्रं चतुरसे उमे पुनः ॥ १४॥

लग्नभाव विचारगा। ॥६५॥

ब्याख्या---उपान्समेमाद्यं सर्वतोमद्रमिति तत्रस्थप्रहस्य सर्वथाऽपि ग्रुभत्वात् । अन्त्यं द्वाद्य रिष्पशब्दः पकारोपान्सः । उपचयेसादिल-प्राचन्द्राच त्रिपडादिस्थानान्युपचयसंज्ञानि, यत एपु स्थितः पापप्रहोऽपि ग्रुमफलपदः स्यात्, शेषाणि त्वपचयाह्नानीसर्थोछभ्यते। प्रयोजनं रिवदं— प्रदक्षिण असन्मध्याङ्गे द्शमधामति व्योममध्यमागत्य सायं सप्तमेऽस्तमेति, तथैव च रात्रावपि अमनमध्यरात्रे तुर्थधामिन पाताले भूत्वा पुनः प्रातः ब्याख्या—इह किळ तुर्यस्य पाताळाम्बुसंझे द्यमस्य मध्यब्योमसंझे च भूगोलकत्पनयेत्यूद्धं, भूगोलमते द्यके: प्रातः प्राच्यामुदीय ब्याख्या—कामेत्यादि कामो मदनः, जामित्रशब्दो विवाहपर्याय. जामि मगिनी त्रायति त्यब्यतीति कृत्वा । तथा सर्वोऽपि ग्रहो यस्मित् " उपान्त्यं ११ सर्वतोभद्रमन्त्यं १२ रिष्पमुदीरितम् । बदन्त्युपचयाह्नांस्त्रिषद्दशैकादशान् पुनः ॥ १७ ॥ " कार्यं यदुक्तं तदुपेति सिद्धि वारे यहे चोपचयक्षेमाजि । नीचक्षेसंस्थेऽपचयस्थिते च यत्ने छते चापि भवत्यसाध्यम् ॥१॥ त्रिश्यिकोणं च नवमं त्रिकोणे नव पंचमे । सप्तमं कामजामित्रयुनयुनयूनास्तसंज्ञकम् ॥ १५॥ स्यातां तृतीये दुश्चिक्यविक्रमे पश्चमे तु धीः। मध्यमेषूरणव्योमान्याहुदेशमधामि ॥ १६॥ म्मपि च वाच्यं । चतुर्थमिति स्थानमिति शेपः । छिद्रमिति छिद्रशब्दः क्षतपापपयीयः । अष्टमं मृत्युस्थानमनायुःसंज्ञमपि ॥ केन्द्रचतुष्ट्यकंटकनामानि वपुः १ सुखा ४ स्त ७ दशमानि १०। प्राच्यामुदेतीस्याहु: । पातालं च स्वभावादम्बुस्थानमिति प्रतीतमेव— रात्राबुद्वितस्तसात्मन्तमेऽद्शैनं याति ततोऽस्तसंज्ञा ॥

स्युः पणफराणि परत ३-५-८-११स्तेभ्योऽप्यापोक्किमानीति ३-६-९-१२ ॥ १८ ॥

द्वितीय विमर्शे एशीनां षड्वमे बिचारः थवनाचार्थोद्दमते रूढत्वादुक्ता.। विक्रम १ सुख २ वेश्म ३ धी ४ जामित्र५छिद्रादि ६ संज्ञास्तु सान्वर्था. । तेनेष्टपुसो विक्रम सुख गृहं बुद्धिर्षिवाहो विशेषस्तु, संज्ञा किल द्विया–सान्वर्था याद्यच्छकी च। तत्र दुश्चिक्य १ हिबुक २ त्रिकोण ३ सुन ४ घू ५ त्रित्रिकोण ६ चतुरस्त ७ मेषूरण ८ रिष्प ९ केन्द्र १० चतुष्टय ११ कंटक १२ पणफरा १३ पोक्लिम १४ संज्ञा बङ्यमाणहोरा १५ द्रेष्काण १६ संभे चान्वर्थरहितत्वाधाद्यन्छिक्यो ब्याख्या—प्रथमतुर्येसप्तमद्शमानां प्रस्येकं केन्द्रादिसंज्ञात्रयंप्रस्येक तेभ्योऽप्रेतनाना द्वितीयपञ्चमाष्टमैकादशानां पणफरसंज्ञा, तेभ्योऽप्यप्रेतनानां तृतीयषष्ठनवमद्वादशानामापोक्तिसस्या । केन्द्रेषु किल सर्वे यहा. पूर्णवीयां. स्यु., पणफरेष्वर्धवीयां. आपोक्लिमेषु तु पादवीयां इति त्रैलोक्यप्रकात्रो ।

| मेषादीशाः कुजः१शुक्रोरेबुघःअन्द्रोधरिबेष्बुघः६शुक्रःशुकुजो८गुरु९मैन्दोर्०मन्दो११जीव१२ इति कमात् ॥१९॥ हानिश्रेत्यादीनि तत्तद्गृहेभ्गेऽपि विचार्थाणि । एवमेव रुग्नात्प्रभृति स्थिताना प्रथमादिस्थानानां तन्वादिसंज्ञाः प्रतिनियता उक्ताः । एतद्जुसारेणै-अथ राशीनां गृह १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवाश ४ द्वादशाश ५ त्रिशांश ६ रूपं षड्वर्गमाह— वाप्रतोऽपि सर्वत्र प्रथमादिस्थानाथे तन्वादिशब्दब्यवहारोऽभ्यूद्धाः ॥

ज्याख्या--राशेरधं होरा । तेन राशिषु प्रत्येक हे हे होरे । तत ओजे राशावाद्या होरा रवे: तत इन्दोः, समे राशावाद्या होरा इन्दोः

ततो खेः। प्रयोजनं तु-सूर्येन्दुहोराजाता. क्रमात्तेजस्त्रिनो सृदवश्च स्युरित्यादि । एव द्रेष्काणादिष्वपि कृरतीम्यस्वामिवशाद्ध्यं । मे इति रात्रौ रात्रौ रात्रि-

त्रिमागरूपा द्रेष्काणास्रयस्त्रयः स्युः ।त्रित्रिकोणपा इति पातीति दगत्यये पः स्वामी । ततश्रोष्ट्रमुखादित्वाद्वहुमीहिसमासे एकस्य पशब्दस्य र्होपः । ततो

च्याख्या--पर्ट्डेगांधिकारे राशीनां गृहमिति नाम, तेनैते गृहेशा उच्यन्ते । प्रयोजनं त्वेषां-'थो यो भावः स्वाभिद्धो युतो वेत्यादि''॥ होरा रार्यधमोजक्षेऽकेन्द्रोरिन्डकीयोः समे, द्रेष्काणा मे त्रयस्तु स्व१ पञ्चम५ त्रित्रिकोण९ पाः ग़रेगा ऽयमर्थः-यस्तद्राशेरीशः स भाषद्रेष्काणस्यापि, यस्तस्मात्पञ्चमराशेरीशः स द्वितीयस्य, यो नवमराशेः स तृतीयस्य । उक्तं च हारिभऱ्दां रुप्तग्रुद्धी---" दिक्काणो उ तिभागो सो पढमो निभयरासिभिहियहणो । बीभो पंचमपहुणो तहओ पुण नवमिषह्वहणो " ॥ १ ॥ "

गुहजातकेऽप्युक्तं-'' द्रेष्काणाः स्यु: स्वभवनसुतत्रित्रिकोणाधिषानां '' इति । तेन '' द्रेष्काणा भे त्रयस्त्वाद्यपञ्चमान्त्यनवांशपाः '' इति

द्गण्यास्तरज्ञै: सप्तमांशाः क्रमेग "॥

ब्याख्या---राशिषु प्रत्येकं नच नव नवांशास्ततस्तद्गणनक्रममाह-अजैणेति अञ्चादित्वान्मत्वर्थीयेऽप्रत्यये तुलस्तुलावान्, मेषस्य नवांशा मेपमादौ नवांशाः स्पुरजादीनामजैणतुलककितः । वर्गोतमाश्चरादौ ते प्रथमः पञ्चमोऽन्तिमः ॥ २१ ॥

यरकेऽपि पेठुस्ताचिन्त्यं । विशेषस्तु केचिद्राशीनां सप्तांशकानपि ब्यबहरन्ति, तेषां च नाथा एवं होगमकरन्दे उक्ताः-'' स्वक्षोदोजे युग्ममे धूनमेहा-

दस्वा नव गुण्या., शुपस्य तु मकरं, मिश्रुनस्य तुर्लां, कर्कस्य च कर्कं । एवमेव सिहादिचतुष्के धन्वादिचतुष्के च वाच्यं । एवां चेशा ये मेषादीशास्त

एव । प्रयोजनं स्थानबले वस्पमाणमित्रस्तगृहोच्चनवाशाग इत्सादि । विशेषस्तु--

राशे: स्वस्वसमाननामा नवांशो वर्गोत्तम इति भावः । प्रयोजनं तु '' वर्गोत्तमनवांशजाः स्वकुले सुख्याः स्युरिलाहि " । वर्गोत्तमत्ववद्याद्न्त्योऽपि इति पूर्णभद्रः। वर्गोत्तमा इति वर्गे समूहे उत्तमाः कोऽर्थः? चरराशिष्वाद्यो नवांशो वर्गोत्तमः, स्थिरेषु पञ्चमः, द्विस्वभावेषु नवमः। सवित्य ति चड पण सत्त नवमा रासीण नवं सया सुहा जम्मे । पढम दु अट्टम अहमा छन्ने पुण मिष्झिमो नेओ" ॥ १ ॥

नवांत्रो लग्नेष्वाद्रियते, अन्यथा त्वप्राद्योऽसौ । यत्पूर्णभदः -कप्तस्याद्यन्तमध्येषु बलं पूर्णाल्पमध्यमं'' इति । हर्षप्रकारोऽप्युक्तं-''वंम्गुत्तमं विणा दिज्ञा नेव

चरमं नवंसगं । कह मित्तिः । वर्गोत्तमनवांशस्थो प्रहोऽपि वर्गोत्तम उत्यते, स च भूशं बळवान् । उक्तं हि देवभ्रवछमे-

द्वादशाश**म्** दिगणन-विषयाः पञ्च शब्दाद्याः । ओजे राज्ञी क्रमः, समराज्ञी त्मयत्राप्युरकमः । अयं भावः-जिंशांशपंक्तियीकतदीशपंक्तिश्च यदा प्रवित्तुष्यां गण्यते तदा ब्याख्या—राशिषु प्रत्येकं द्वादश द्वादशांशा. स्वगुहादिति अयमर्थ∙-यो राशि∙ स एवाद्यों द्वादशांशः शेषास्वेकादश क्रमात्तदप्रेतनाः, तथाहि-मेंपे आद्यों मेष एवं, द्वितीयों द्यपः, यावदम्त्यों मीन इति । हुपे आद्यों वृष एव यावदन्त्यों मेषः । एव मिश्चने आद्यों मिश्चन एव यावदन्त्यों द्यप इंत्यादि । तेषामीशाश्र ये मेपादीशास्त एव । अयेशास्त्रिशाशकेष्टिवति राशी राशी त्रिंशस्त्रिशस्त्रिशां पर्वाशोस्त्राह-क्रमोकिसाक्षित अथो यतो य पन राशिः स्यात्त पन च ननांशकः । प्रोक्तं स्थानफलं शुद्धमतोऽस्मिन् सोपपत्तिकम् ॥ २ ॥ " वल्बानुदितांशस्थः शुद्धं स्थानफलं प्रदः । द्याद्वगौंतमांशे च मित्रं शेषांशसंस्थितः ॥ १ ॥ " क्रमोत्कमाद्धे ५ शरा५ छ ८ शैले ७ न्द्रियेषु ५ मौमाकिगुक्जग्रुकाः ॥ २२ ॥ स्युद्गदिशांशाः स्वगृहादथेशास्त्रिशांशकैष्वोजयुजोस्तु राश्योः। कमः, तयोरेव पड्कसोः पश्चानुपृथ्यां गणने त्रुक्तमः सर्वेगशीना ष्वांनस्य त्रत्स्वामिना च क्रमास्थापना--1861

	ক্রি	. <u>म</u> .	ক্র	٠ <del>١</del>	পূর	मं.	र्श्व	H.	জু ১	भूः	<u>بخ</u> ي	•
ë	७व्य पश्च	.श <u>्</u>	ঞ	- <del>- 2</del>	ख्र	श्च	(g)	<u> </u>	102	kr S	টি গু	Ī
त्रिशांशेशाः		्री इं	स्	८गु ५श	्त्र इंड	रंग भ्य	८मु ७ख	त्रं	ू रम	भ	८स	Ī
Haii.	'पश्चा ८मु	Sal Sal	ধ্য	७७	<b>1</b>	खा	<b>2</b>	ख	전	ष्ठि श	<u>چ</u>	٦
ar	्रमं. - द	ু কু	मं: -	. <mark>৯</mark>	·#. -3.—	ূ <u>.</u> নুম	रमं -	- <b>[2]</b>	H	100 P	Ŧ.	_
<u>_</u>	<u>श्</u> एम	<u>र</u> म•	<u>ङ</u> इन्?	<u>5°</u> 107	य	<u>5</u>	109	<u>र</u> ू	<u>.ह.</u>	ेड इन्	<u>ァ</u>	
	정	(स	· #	নি	107	ন্		107	নি	<b>म</b> '	<b>17</b> ?	-
	- <del></del>	젊	<del>!</del> ?	#	নি	छि	<u>di.</u>	lv'	109	ित्र	<b>ਸ਼</b>	1
	(न		ie.	F7	<u>ःः</u>	্রি)	তি?	<u>ط</u> •	h>	छ?	নি	-
	<b>∓</b> •	? <del>,</del>	<u>্</u>	듛	(स	<u>.</u>	福	छि	<u> </u>	12'	णि	-
द्वादयांशेया:	নি	#	( <del>,</del>	젊	뒮	<del>(4</del>	<b>म</b>	নি	<b>ডি</b> ?	<u>च</u>	h/	_
शांक	छि	ক্লি	Ħ	(ज	₩	k	<b>₽</b> 9	. IL	নি	िणि	힉	1
ह्य	12	ाँण	क्ष	-⊭-		াল	<u>k</u>	१इ	<b>'</b> #'	নি	189	_
	र्ष•	h-	- to9	নি	- <b>≒</b>	<del>""</del>	নি	12	<b>F</b> 7	<b>म</b> •	নি	_
	107	<del>ال</del>	h⁄	ष्ठि	ন	<b>म</b> .	(4	<b>₹</b>	ক	<b>1.7</b>	- <del> </del>	
	क्ष	107	<b>'</b>	h⁄	189	নি	₩.	(न्स	₩.	<u>지</u>	(न	-
	#.	নি	िछ	<b>d</b> .	h	छि	ন্ধ	<b>∓</b> •	<del>[7</del> ]	~	ন	
	<b>F</b> ?	107	189	(न	<b>F</b> 7	<b>छ</b> ?	<b>টি</b> ?	१न	<b>F</b> 9	ष्ठि	107	_
	#:	h/	নি	₩	· ∓	h⁄	নি	কি	<b>'\</b>		নি	
	क्र	'দি	#	₩	নি	प	Ħ·	둒	নি	ৰ •	<b>∓</b> :	
Ë	109	107	(न	१इ	109	षिर	१न	(न	णि	<b>l</b> ø?	(न	
नवांशेशाः	100	নি	줆	Ħ·		-  ሕ)	1	<b>.</b> #.	 hv	নি	- 등	
म	वां	<b>#</b>	ন	নি	4	#:	示	নি	<u>पं</u>	<b>म</b>	<u>지</u>	
	107	<b>‡</b> ?	<b>1.</b> 7	109	তি	17	177	109	189	<del>  [7</del>	१इ	
	क्र	12	#:	<b>P</b>	নি	ক	<b>#</b>	h-/	_ 	k	Ħ	
	Ħ·	젃	নি	P	Ħ	₩.	নি	ব	#.	kr	নি	
<u> </u>	(न	둓	1	(न	·Ħ	ন	ভৈ	<del>p</del>		ভে	নি	_
भूग वि	12	रण	ित	·H·	<u>(</u>	ल	- <del></del>	( <del>,</del>	Ħ	নি	107	
द्रेष्काणेशाः	मः	নো	kr	네.	۱۷	107	নি	मः	( <del>-</del>	7	氝	_
होताः	प <u>।</u> ।	h	<u>पं•</u>	<b>₩</b>	덕.	h	<b>प</b>	h	पां'	h	디	
	150	<b>प</b> !•	h	पां	h	<b>प</b>	h	덱.	<b>b</b> ′	प्	lə/	•
गृहेशाः	मंगल	23.45	त ख	ধ্য ঘ	संक	द्य ख	গ্র	मंगल	(H	श्रामि	श्रान	
राशीनां गृहाणि	भेव	ब्य	३ मिथुन	कुक	सिंह	कन्या	तुला	टच्सिक	धन	मकर	कुम	•
सुर	-	n	m'	20	5°	w	9	(C)	0"	0	67 67	

षड्चगेंऽष्टादश्र१८०० नव१००षड्६००द्वे२००साधं१५०शतानि षष्टिआ६०। अथ महाणां लप्नस च स्पष्टीकरणे तद्भुक्त्युपयोगि सर्वषड्वर्गाणां साधारणं लिप्तामानमाह---

कमयो गृहहोरादौ लिप्ताः स्युः प्रसुरिह नवांद्याः॥ २३ ॥

गुणवर्ल, ततोऽपि होराद्या: सर्वे यथोत्तरं पञ्चपञ्चगुणवरू।'' इति बृढ्जातकवृत्ती । अथेषु नवांशस्यैव प्राधान्यमाह–प्रभुरिलादि इहास्मिन् गुहादिषद्भवर्ते-

ज्मास्या—मुहाणां मेषाद्दीनां सर्वेषां प्रत्येकं मानमष्टाद्शशती लिप्ताः होराणां नवशती मुहार्धरूपत्वात् , द्रेक्नणानां षट्शती मुहन्निभागारूप-त्वादिलादि स्वयं भाव्यं । लिसा तु षष्टिविलिसारिमकेति वक्ष्यते । विशेषस्तु—" चन्द्रवरूं किल तिथ्यादिवलेभ्यः शतगुणं, तत्तोऽपि लग्नं सहस्र

प्रहस्रापि द्यष्टिर्देष्टा, सौम्यांत्रास्थस्य च क्रूरस्रापि दक् शुभा । तथा प्रहगोचरशुद्धिविचारणावसरे प्रहो राक्षिरोचिरेणाशुभोऽपि नवांशगोचरेण यदि शुभः

स्यात्ताह शुभ एनेस्यादि छछश्रीपती ॥ अथ यथा प्रहः स्ववर्गगोऽन्यवर्गगो वा स्यात्तथाऽऽह—

षणणां ज्यादिषु वर्गेषु यो ग्रहः स्वैष्वविस्थितः। स स्ववर्गगतो ज्ञेय एवमेवान्यवर्गगः॥२४॥

इति दैवज्ञवस्तमे । तथा कूराशस्थः सौम्यत्रहोऽपि क्रुरः स्यात्, सौम्यांशस्थस्तु कूरोऽपि सौम्यः स्यादिति लझः । तथा कूरांशस्थस्य सौम्य-

" लेने थुमेऽपि यदांशः क्रूरः स्यानेधिसिद्धदः । लग्ने क्रूरेऽपि सौम्यांशः शुभद्रोऽशो बली यतः ॥ १ ॥

" स्वाधे नक्षत्रफलं तिथ्यधे तिथिफलं समादेश्यम् । होरायां बारफलं लग्नफलं त्वंशके स्पष्टम् ॥ १ ॥

ऽनतिस्थूकसूस्मत्वास्रतिष्ठाविवाहादिसर्वकार्येष्वधिकारी नवांश प्रवेत्यर्थः । यहुद्धः---

तथा भहो नवाशस प्राधान्यं ! तथाहि--

```
स्थस्तत मुच नियङक । विशेषस्तु यत्र नवांशे पण्णां पञ्चानां चतुणां वा गृहाद्यन्यतरेषां सौम्य पुत्र प्रहस्वामी छभ्यते स नवांशः षङ्घेनेस्य पन्नात-
                                                                                                          संभवति, अकेन्द्रोस्तिशांशस्य कुजादीनां द्वोरायाश्चामावात्, स स्ववगैस्थस्तत एव च सवलः । एवमेवेति यस्तु प्यादिषु परकीयेषु स्थितः सौऽन्यवर्ग-
ब्याख्या—पण्णामिति निर्धारणे पष्ठी । ज्यादिधित्रति अन्यतरेषु त्रिषु चतुर्पुरम्पैतः पञ्चमु वा स्वकीयेषु यः स्थितः, न तु कदापि पर्सु
```

ब्याख्या—अत्र चउपणत्रगात्ति एपु नवांशेषु चतुर्वर्गेशु दिस्तावदस्त्येव, पञ्चवर्गशुद्धिषड्वगंशुद्धी तु केपुचिन्नवांशेषु संपूर्णेषु स्त:, केपाञ्चित् " सत्तमनवमा मेसे १ पचमतइआ विसे २ मिहणि छहो ३ । पढमतइआ य कक्ने ४ सिंहे छहो ५ कणी तइओ ६ ॥ १ ॥ अडुमनवमा य तुले ७ विच्छियळग्गे च उत्थय नवंसो ८ । धणुल्जिंग छडुसत्तमनवमा ९ मयरिम्म पंचमओ १० ॥ २ ॥ छड्डहमा य कुंसे ११ पढमो तहओ अ मीणळग्गमिम १२ । चडपणवग्गछवग्गो षपसु नवंसषसु सुद्दो " ॥ ३ ॥

गैस चतुर्वगैस्य वा सीम्यत्वात् प्रतिष्ठादिल्भ्रेषुं विशेषतो प्राद्यः । स चैवं निर्धापितः, तथाहि-

**1201** 

कियलि भागे स्त, तद्रयक्तिश्र प्रन्थप्रान्तकाच्यवृत्ती लिखिताऽस्ति ततोऽभ्यूद्या । इह च केचित्रिवर्गश्चद्याऽप्यन्ये तु नवांशस्यैच प्रमुखात्तमेवैकं सीम्यसत्कमादाय शेषवर्गद्याद्व विनाऽपि लग्नमाद्वियन्ते, तद्त्रेदं तत्व-लग्ने ध्रवप्राह्यनवांशग्जद्धै सत्या यथा यथा शुभवहुवर्गलाभस्तथा तथा प्रतिष्ठादौ महाः स्युरैन्चाचधिपा दिनेश १ शुकाश्रर राहा ४ किं५ शिक्ष इ ज्ञ ७ जीवाः ८। मुभकार्ये तद्विशिष्य त्राद्यम् ॥ राशिप्रसङ्गाद्राशिभोक्तुप्रहाणां प्रमेदमाह—

पापाः क्रशेन्द्रकतमोऽसितारास्तैः संयुतो ज्ञञ्ज परे तु सौम्याः ॥ २५॥ ज्याख्या--पूर्वाद्यष्टिद्धां क्रमान्नाथा एते । स्थापना--

हिंदी १	व्यक्त साह केत्र   खान   निर्णयः।			
KARKET KAR	AF36AF36AF	100 P	***	とのようない
क मा - अ	तैरसंभवे असितः गुरुधुक्री	e - 62 #	d	# #
क स्था	अत्र प्रयोजनं तु केन्द्रस्थे यिछिनि ग्रहे चौरादेगैमनदिग्ज्ञान । उक्तं च—"' दिग्वान्या केन्द्रमतैरसंभवे प्रक्षोत् '' इत्यादि । क्रुगेन्द्रिसादि कृष्णचतुर्देत्र्यादिदिनत्रयेऽकळः क्रुयः गत्री क्रूरः, तमो राहुः, असितः . कृशेन्द्राधन्यतरेः संयुत एक्राशिस्थो बुघोऽपि कृरः । परे इति अन्ये पुष्टेन्दुरक्र्रस्थुतो वुघो गुरुश्चक्री प्रयोजन पापसौम्यग्रहबल्धिःयाज्ञातकादेस्ताच्छीद्यादि । विद्येपस्त—	भास्करो १ गौर इन्हु २ नाँखुचाङ्गो रक्तगौरश्च वन्नः ३ । बो ४ गुरुगौरगात्रो५ऽझ्यामः शुको६ भास्करिः कृष्णदेहः ७ ॥ १ ॥ "	- 26 - 26	ा ॥
म	-'' दिग्वाग शी क्रुरः, पुष्टेन्दु रक्र्	अ वन्नः रूषादेह	॥ १ नराः ।	ा अस शके ॥ १
ह - ह - ह	उक्तं च : क्रयः म इति अन्ये तः	भास्करो १ गौर इन्दु २ नाँत्युचाङ्गो रक्तगौरश्च वन्नः ३। बो ४ गुरुगौरगात्रो५ऽझ्यामः शुको६ भास्करिः कृष्णदेहः ७	यद्वा क्षेत्र तस्माल यो नवांशस्तरस्थामितुक्या तन्सूर्तिरिति ॥ दुः। ग्रुक्तेन्दू योषितौ मन्द्युयौ क्षीयौ परे नराः ॥ २६ ॥	नातक प्रहगाचर प्रातष्टादळसुषु च कतुन तथापयागालसूचि । सप्तमामात । उक्त च केतुर्यंत्र राशो भवेद्यम् । तस्मात्सप्तमके केत् राहुः स्याद्यज्ञवांशके ॥ १ तस्मादंशे सप्तमे स्यात् केतुरंशो नवांशकः '' । इति ।
(제 (전 (전 (전 (전 (전 (전 (전 (전 (전 (전 (전 (전 (전	द्रिग्झान । नत्रयेऽकल : । परे । । विद्यापर	त्युचाङ्गो धुकोह	मितुल्या त जियो स	ल्यस्य । इ. राहुः स् हः ? ।
तुला ८ - ९	ीरादेगीमन नुदेश्यादिदि घोऽपि क्रूप	न्दु २ नी ५ऽङ्यामः	गंबास्तरस्या तै मन्द	तथापथागा मके केट नवांशः
कन्या	नि श्रहे चं दे क्रप्णचा शस्थो अ गातकादेस्त	र मौर इ गीरमात्रो	ळ यो नब् योषित	च कतुन तस्मात्सप्त केतुरंशो
班 "	स्ये वलि क्वेशेन्द्रिया युत एक्सी	गस्करो गे ८ गुरु	ह्य तत्मा शुक्रान्द्र	्र प्रातष्टाादकप्रवु च कतुन तथापयागालसूचि । सप्तमा तो मचेद्यम् । तस्मात्सप्तमके केत् राहुः स्याद्याः सप्तमे स्यात् केतुरंशो नर्वाशकः '' । इति ।
ह । विकास	नं तु केन्ड हत्यादि । ः न्यतरेः सं ।पत्तेस्यञ्जव	'' रक्तश्यामो दुर्वाश्यामो	। यहा विद:	बर प्रात्त राद्यो भवे हो सप्तमे
मिधुन क्-	भन्न प्रयोज झक्षोत् '' कृक्षेन्द्राध प्रयोजन प	ूर्य स्था इं	तकादेमूँति सप्तम	क प्रहणाच केतुर्यंत्र राष्ट्र तस्मादंशे
57 I	अत्र प्रयोजनं तु केन्द्रस्थे विशिनि प्रहे चौरादेर्गमनदिग्ज्ञान । उक्त वा वदेद्विलप्रक्षोत् '' हत्यादि । क्रुरोन्द्रिसादि कृष्णचतुर्देश्यादिदिनत्रयेऽकलः क्रुय शनिः । तै. कुरोन्द्रायन्यतरेः संयुत एकराशिस्थो बुघोऽपि कृरः । परे इति च । अस्य प्रयोजन पापसौम्यग्रहबलिष्ठस्त्राज्ञातकादेस्ताच्छीत्यादि । विद्येपस्त—		सहयी ज तमसः	अनन जात समृत.
6 #3 6 - 8	सप्ति शुक्र व द्रिया इ	ने ऋत्य राहु	मं बल्जिनः परे केतुं	—फुच्छाख्रिया '' राहुच्छाया
सहय: शुभ- नवाँशा:	पूर्व रिवे सिंगीश यहने प्रहने	<u> </u>	अस्थापि प्रयोजनं विष्यः सद्यी जातकादेमूँतिः । यह पुरुद्धादिष्यपरे केतुं तमसः सप्तम चिद्धः	ब्याख्या—पृच्छाादाप्वति अनन जातक प्रहुगाचर प्रातष्ठाादुल्झपु च कतुन तथाप्यागालसूग्च । सप्तमामात । उक्त च सुवनदापक- " राहुच्छाया स्मृत. केतुर्थंच राशौ भवेद्यम् । तस्मात्सममके केत् राहुः स्याद्यज्ञवादाके ॥ १ ॥ तस्मादंशे सप्तमे स्यात् केतुरंशो नवांशकः '' । इति ।
	हेशान गुरू उत्तर	नायन्य चंद्र	<b>4 8</b>	<b>13</b>
				•
F6C1F363-013	たられてかれたが		56-166-	たろうためでたい

धारम्म-सिद्धेः । उ

चेदाहुस्तदा तुळाया नगमे मिथुनांशे केतुः, षजुपश्च गुणनया मिथुनांशः सप्तम इति । श्रुक्रेन्द् इति परे रविकुजगुरवः । अस्य प्रयोजमं जन्मनि तसम एव जायते । यथा मेपस्याधे मेपांशे राहुश्चेत्तदा तुलाया आधे तुलांशे केतुः, मेपाच गुणनया तुलांशः सप्तम इति । तथा मेषस्य नवमे धनुरंशे मस्यायं भावः-गरोर्थरसंख्ये नवांरो राहुः स्यात्तरसंख्ये एव तत्सप्तमरारोनीवांरो केतुरपि स्यात्, परं राह्वाक्रान्तनवांशाद् गुणने केत्वाक्रान्तनवांशः चिन्तायां हृतनष्टादी वा, बरुवन्त. स्ववर्गमेव ज्ञापयन्तीति । मन्द्बुधावपि स्थियावित्येके

संकरजानां तु शमिजींव १ सिता २ रेशन्दुजाश्र ४ वेदानाम्॥ २७॥ वणीनां जीवसितौ १ रविभौमार विन्दुरिरन्दुज४श्रेशाः

रान्ता निषंद्रकत्रयोद्शभेदा यथा तथा जातिद्वयजाताः । वेदा ऋशम्यजुः२ सामाञ्यवाणः ४ । प्रयोजनं तु जीवादीनामुद्यास्तादी तत्तज्ञातीनां तत्त-ब्याख्या—ते प्रहा मित्रस्वयोगृहाधैः प्रत्येकं योजना कार्यां, गृहस्योपलक्षणन्वानमूलत्रिकोणेऽपि । उक्त च त्रेलोक्यप्रकाशे-'भित्र ५ स्वक्षे १० न्यास्या--विप्रवर्णस्येको गुरुगुक्रो, क्षत्रियाणामकोरी, वैद्यानामिन्दुः, शूद्राणां तु बुध इत्यर्थः । संकरजा मिश्रजातयो मूर्धावित्तिकादिरथका-ते स्थानबलिनो मित्रस्वगृहोचनवांशगाः । स्त्रीराशिष्विन्दुभृगुजौ पुराशिषु पुनः परे ॥ २८ ॥ द्वेदवतां च सुखहुॱखादि ॥ अथ प्रहाणां स्थान १ दिक् २ कारू ३ चेष्टा ४ हग् ५ निसर्गवरू ६ मेदात् पोढा बरुमाह—

अयं भावः-कमं प्राची तत्र बुधगुरू बलिनौ । दशमं दक्षिणा तत्र रिवकुजौ । सप्तमं पश्चिमा तत्र शतिः । तुर्धमुत्तरा तत्र शुक्रेन्द्र च बलिन इति ।

ब्याख्या--लन्नादारभ्योरक्रमेण सप्टया केन्द्राणि प्रथम १ दशम २ सप्तम ३ तुर्थ ४ भवनानि तैराख्या कथनं यासां ताः पूर्वाद्यो दिशस्तासु।

लग्राचुत्कमकेन्द्राख्यदिश्च प्राच्यादिपूद्धलाः । जीवज्ञौ १ भास्करक्ष्माजौ २ शनिः ३ सित्तसित्तच्नती ४॥ २९ ॥

बलिनाविति योगः श्रुक्रेन्द्रो. स्वीत्वात् । राशीनां धुंखीत्वं प्रागेवोक्तं । परे पञ्च प्रहाः । इदं स्थानबरूस् १ ॥

त्रिकोणो१५ चेः २० फल दनेऽह्निद्यह्नितः " इति वक्ष्यमाणाधिर्मित्रांशे अग्नोहितांशे वर्गोत्तमाशे वा, ग्रहो बलिष्ठ इति तु स्फुटमेव । स्नीराशिष्विति

गहाणां वि-गुल क्रिण्घ दिनेशस्तिहिनवार एव। काळहोरेगास्तु प्रागुक्ता.। ततश्च "वर्षमासद्युरोरेशैकुद्धि. पञ्चोत्तरा फले" इति मुहूर्नसारे। अस्यार्थः-वर्षेशप्रह: किळ हीरेशस्तु स्वहोरायां स्ववारयोगात् पूर्णं विद्यातिविद्योपं फळ टदातीति। सितासितेति सुक्के पक्षे सौम्या त्रहा बलिन,, कुष्णे तु क्रूरा.। इदं काळबलम्, श च्याख्या—उदगयने उत्तरायणे मकरादिपट्के इत्यर्थः, न तु कर्कादिपट्के । विपुला बहुदिनोदिता निशालस्यूलविम्बाश्च, न तु बाला बृद्धा अन्तरालस्थितव्यया१२या११६िद्यद्वयह्यस्पमाप्नेय्यादिविदिक्चतुष्कं तु क्रमात् प्वंदिचतुदिक्समफलमेव विदिशा दिगनुगामित्वात् । इदं दिग्बलम् २ ॥ भस्तमिता वा। तत्र वालत्वमुद्याद्नु स्वात्, बृद्धत्व पुनरस्तमयाद्वाँक् । '' बाल्ये वार्षके च सर्वे प्रहाः सप्ताह निर्वेला '' इति सप्तर्षेय. प्राहु: । जिग्धा इति स्फुटकिरणाः खे रुक्ष्यमाणा इत्यर्थः, तथात्व चार्कोद्दत्तरस्थत्वे सति स्यात् । वक्ताा इति वक्तात्वे किल सर्वेग्रहाणां मूलिनकोणतूर्वं समजं स्ववर्ष यावत्पाद, कोऽथं.? पञ्च विशोपान् फल दत्ते । मासेशजह. समजस्वमासे दश विशोपान् । दिनेशासु स्वदिनावधि पञ्चदश विशोपान् । सिग्धो " इति । रिविचन्द्राबुदगयने विपुलक्तिग्याश्च वन्नगाश्वान्ये । बलिनो युधि चोत्तरगा व्यर्भेन्दुयुताश्च चेष्टाभिः ॥ ३१ ॥ " यस्य वारस्य मध्ये स्याच्छुक्कर्यातपद् मुखम् । तन्मासेराः स विज्ञेयश्चेत्रे वर्षाधिपः पुनः " ॥ १ ॥ ब्याख्या—सदेति दिवा रात्रौ चेत्यर्थः स्वदिनादिष्विति स्वदिनस्ववर्षमासस्वकालहोरासु तत्तद्धिपग्रहा बिलन, । ते चेव— वलं इति पाकश्रियां । अन्ये इति भौमाद्याः पञ्च प्रहाः रवीन्द्रोर्वेक्रगत्यभावात् । हर्षप्रकाशे त्तक-'' वक्की पावो बली सुभो " चैत्रादिमेपसंक्रान्तिककैसंक्रान्तिवासराः । प्रतिवर्षे क्रमाज्झेया राजानो मंत्रिसस्यपाः " ॥ १ ॥ विलेगेऽहि गुरुसिताकौः सदा बुधे। निशि तु चन्द्रकुलमन्दाः स्वदिनादिषु च सितासिनपक्षष्टितयेषु ग्रुभक्त्रराः ॥ ३० ॥ व्यवहारसारेऽप्युक्तम्— भौमादिग्रहाणा गतयश्चेवम्—

वृक्षाः पञ्चमपष्टेऽक तेऽतिवक्षा नगा ७ छ ८ गे । नवमे दशमे मागीः सरला लाभ ११ रिष्प १२ मे " ॥ २ ॥ " सूर्यमुक्ता उदीयन्ते शीघा अर्फे द्वितीयमे । समं हतीयमे यान्ति मन्दा भातौ चतुर्थमे ॥ १ ॥

अत्र पञ्चमपष्ठेऽके इति शनिकुजगुरूनपेक्ष्योक । बुधशुक्री स्वकैसासन्नस्थावेव वक्री सातां । एवं मागेऽपि वाच्यं । इदं प्रश्नशतकयुत्ती । युधि

चेति छे पुकस्मिन्नक्षत्रपादे मिथस्ताराम्रहाणां योगो युद्धमुच्यते । तत्रोत्तरगामिनो जिपत्वाद्धलिन., दक्षिणगामिनस्तु पराजियस्वाद्विवला: । वराहमते

, गुक्रो दक्षिणगामी सन् बळी । तथा चीकं वराहसंहितायां-'' सवें बिलन उदक्ष्ण दक्षिणदिक्ष्यो बळी गुक्रः '' इति । क्यकेंनिद्रति अकेनियुता:

मोम्येहेग्बलिनो हटा बले नैसर्गिके पुनः । मन्दारझेज्यश्चकेन्दुभास्कराः स्युबेलोत्तराः ॥ ३२ ॥

सन्त इन्दुना युता एकगितस्थाः । इदं चेष्टावलम् ४ ॥

|| | | |

ब्याख्या—सौम्यैहपलक्षणत्वानिमन्नेश्र पाटा ५ धं १० पादोन १५ पूर्णामि २० हैमिमहेष्टाः क्रमात्तावसावद्विशोपान् बल्जिनः । इदं हम्बलम् ५ ।

यदा प्रहयोप्रहाणा वाऽन्यबळसाम्यं स्थातदा स्वामाविकचछेनैव सबळाबलत्यं मान्यते इस्यतस्तदाह-बछे नैसर्गिके इति नैसर्गिकं सहजं बछं तस्मिन्

च्याख्या-विद्यातेः पादः पञ्च विद्योपाः, ततो बृद्धपेति अयमर्थः-स्वस्थानाद्द्यानात्तीये स्थाने प्रहाः पञ्चविद्योपया दुष्ट्या पर्श्यनित, नवपञ्चमे

चतुरसे ४-८ स्त्रियं ७ स्त्रीबन्मतेनाया ११ दिमा १ बिप ॥ ३३॥

परुयन्ति पादतो बृद्धया भातु ३ व्योम्नी १० त्रिकोणके ५-९।

विचायें इति श्रोपः राहुस्त्वकोद्पि बलिष्ठः । इदं स्वामाविकवलम् ६ ॥ सौम्यैदेष्टा इति यदुक्तं तत्र दिष्ठप्रकारमाह----

ऱ्ससिंसोपया, तुर्याष्टमे पञ्चद्शविस्रोपया, सप्तमं विशतिविशोपया पूर्णया । मतेनेति केषाञ्चिन्मतेनैकाद्शाधे अपि विशतिविशोपया दृष्या पर्यन्ति ।

शेषगृहाणि तु द्वितीयषष्ठद्वादशानि न पर्यन्तेवेत्यर्थाह्यभ्यते । यत्र च यावद्विशोपा दष्टित्तत्र तावद्विशोपं फलमूद्यम् ॥

ननु सवेपामि खियामेव पूर्णो द्यष्टिः किं वा केषाञ्चिद्न्यत्रापीसाशक्याह—

द्वध्याहाष्ट्र विचारः

गदोन १५ पूर्णा २० क्रमादन्यग्रहाणा हक्, तथा शनेरपीत्येतावता, शनेः पादहक् क्वापि नास्तीत्यागतं। तथा धर्मधियोर्न्यग्रहाणामधंदगस्ति, गुरोस्तु न्यास्या--अस्यायं भाव -आतृत्योन्नोस्तावदन्यग्रहाणां पाददगस्ति, गनेस्तु पूर्णां दक् । त्रिकोण ९-्५ चतुरस्त ४-८ स्नीपुष तु, यथार्थं १० पर्येत्पूर्ण रानिम्नोतृर न्योक्नी १० धर्मे धियौप ग्रुकः । चतुरसे कुजोऽर्नेन्दुचुषश्चकास्तु सप्तमम् ॥ ३४ ॥

三 変 変

मेव । क्योतिपसारे तु—" समैग्रहाणा द्विद्वादरायीने दक्, पदष्टमयीः पादहक्, ज्येकाद्ययोरधैहक्, नवपञ्चमयोः पाहोना हक्, केन्द्रेषु तु चतुर्षु पूर्णा ग्रहाणा पादोनद्दगस्ति कुनस्य तु पुर्गो दक्। आतुन्योमन्निकोणस्तीषु तु, यथा पादार्घपूर्णो दक् अन्यप्रहाणा तथा कुनस्यापीत्येतावता, कुनस्य पादोनदक् ग्रीप नास्तीत्यागतं । अकेन्दुबुधग्रुफ्नास्तु सप्तममेन पूर्णया दगा पर्यनित न त्वपर किञ्चिद्गुह १ आतृन्योमादीनि तु पादादिदशा पर्यन्तीति प्रागुक्त-द्दगित्युक्त " ताजिके तु द्विद्वादशपउष्टमेषु दग् मूरुतोऽपि नेष्टा ॥ स्थानब्होक्तिसमये मित्रस्वगृहेलाधुक्तमित्यतो गृहमैत्र्याधाह—

ज्ञसितौ मित्रे गुरुमंध्यः परेज्यः। तत्कालसृहदो द्विर त्रिरे सुख४ लाभा११न्स१२कमी१०गाः ॥३८॥

स्थापना यथा—

ब्याख्या --परेऽक्रेन्डिभीमाः । शत्रुमित्रमध्यस्थानां

मन्दर्य

न्याख्या--परी ज्ञाक्षी । उभी भीमगुरू ॥

न्याख्या—परेऽकेन्दुजीवा मित्राणि । रात्रुरिन्दुरिखत प्वेन्दुगृहे ज्ञो मित्रक्षेत्री, ज्ञगृहे न्विन्दुः रात्रुक्षेत्रीति । परे भौमगुरुमन्दाः ॥

जीवस्याक्षियों मित्राण्याक्षिमध्यः परावरी । क्षेरमित्रौ मित्रेन्दू मित्र ज्ञाकी समानुभौ ॥ ३७ ॥

क्रजस्य ज्ञो रिपुर्मध्यौ शनिशुकौ परेऽन्यथा। बुधस्य मित्रे शुक्राकोँ शञ्चरिन्दुः समाः परे॥ ३६॥

रवेः शुक्रश्मनी शत्र ज्ञः समः सह्दरः परे। चन्द्रयाकंबुधौ मित्रे क्रज्जस्विदियः समाः ॥ ३५॥

व्याख्या--समो मध्यस्यः, न रिपुने मित्रमुदासीन इत्यर्थः । परे चन्द्रकुजजीवा. । चन्द्रस्येति इन्दोन्सिरि: ॥

पूर्णा दक् । आतृब्योमचतुरस्रस्थीयु तु, यथा पादपादोनपूर्णा दगन्यग्रहाणां तथा गुरोरपीत्येतावता, गुरोरर्धहक् क्वापि नास्तीत्यागत । तथा चतुरसेऽन्य-

तत्कालेखादि जन्मान पुच्छादलभ्भ वा थश्र स्थाप सक्तिको सन्हेश्मित तसमात्र दितीयादिस्थाने योऽन्यो ग्रहः	काश्रदका अहाजारण, परमान् । ह्यानाप्तरामा ।	स्थात्स तत्काल हिन्दापुरमात्यात्मात्यात्र । स्था	मत्रा स्वार् । द्वा सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः स	ोदिताः कमात् । अधिमित्रसुहन्मध्यास्ते स्युस्तत्कालमैत्यताः ॥ ३९ ॥
ग्रुफ यान	र-चं र-च-मं	লু–যা লু–ফ্র	मं-गु	अधिमित्रसृहन
(च	्य १व	र-व-म	뒧	फमात् ।
बैह्म	वन्ष	<del>(</del> श्र	मं-धु-श	दिनाः इ
मंगल	গুর	र-व-गु	<u>શુ</u> –શ	नसग्णा
चन्द्र	ı	रव । भ	मं-गु -शु-श	त्रमध्यारयो येऽत्र निसर्गेणो
सि	ग्रुक-शति	चं-मं-स	la?	नध्यास्य
महाणां	श्रवः	मित्राणि	मध्यस्थाः	मित्र

```
'' येऽत्रारिमध्यमित्राणि निस्गेणोदिताः क्रमात् । अधिशृष्ठद्विषन्मध्यास्ते स्युस्तत्काळवैरतः '' ॥ १ ॥
भुवनदीपके द्व प्रहाणां मित्रत्रत्रुस्वरूप पक्षद्वयमेवोक्तं, तथाहि—
```

सुहद्गृहसुच च, बुधस्य कन्यागृहसुच चेलादि । अरिगृहाणि त्वान्यपि प्रमादायीनि स्युः परं नान्तःसुखदानि, यथा शुक्रस्य मीनः । नीचान्यपि च सुहद्गुहाणि किक्किप्रमादायीति थथेन्दोबुध्रिकः। रिपुगुहाणि तु नीचाति नानाऽनथांन् प्रमाहार्ति च कुर्युरिति भुवनदीपकवृत्ती ॥ अथ यवनाऽचायाँक

स्याद्गोचरेणात्र ग्रुभोऽपि विद्धः, खेटोऽन्यखेटैरग्रुभः क्रमेण

राशिस्थप्रहाणां मिथो वेषमाह—

राहुरन्योः परं वैरं गुरुभागेनयोरपि । हिमांशुकुघयोवैरं विवस्वन्मन्द्योरपि ॥ २ ॥

ब्याख्या—अधिक मित्रमधिमित्रं, अर्थादेव च मित्रस्थानेभ्योऽन्यानि प्रथमपञ्चमषष्ठसप्तमाष्टमनवमस्थानानि तत्काळवैरस्थानानि । तत्फळं चैवं---

अतिमैत्री राहुरान्योर्रेन्दुगुर्वोः कुजाकैयोः । सितज्ञयोः" इति । एवं च प्रहाणां मित्रात्मगृहाण्युचानि विशेषाद्धपैदीप्तिस्थानानि, यथा रवेमेषः

द्वितीय निमंत्रे तात्कालि-कीमेत्री शत्रुता॥

योज्यं गोचरेण दुषोऽपि च प्रहः, फ्रमेण वामवेधादिष्टः स्यात् । इह किल तृतीयादिस्थानस्थस्य रवेनंवमादिस्थानस्थप्रहेयों वक्ष्यते स वेधः । यस्तु ध्याल्या--गोचरेण झुभोऽपि महो वस्यमाणक्रमेणान्यमहैविदः सन्नामुभः सात् । दुष्टोऽपीत्यादि अपिचेत्यसंदमन्ययसमुदाय. क्रमेणेत्येतद्रन्नापि वमादिस्थानस्थाकेस्य तृतीयादिस्थानस्थप्रहैः सीत् स वामवेषः । कोऽर्थः १ तृतीयादिस्थानस्थोऽकैः शुभः चेन्नवमादिस्थानस्थैरन्यग्रहैनै विष्येत दुष्टोर्डाप चेष्टश्च म बामवेधान्मिथो न वेधः पितृपुत्रयोस्तु ॥ ४० ॥

" पभिंवधिविद्या विफला. स्युगौचरे श्रद्याः सर्वे । विपरीतवेघविद्धाः पापा अपि सीम्यतां यान्ति " ॥ १ ॥ वमादिस्थानस्थआशुभोऽप्यकं. शुभो यदि तृतीयादिस्थानस्यैः परैविष्मैत । एवमन्येऽपि भान्याः । उक्त च यतिवछ्नमे—

स्वरूपं।

'यत्र गोचरफळप्रमाणता, तत्र वेघफळिमिच्यते न वा । प्रायशो न बहुसंमतं त्विदं, स्यूळमार्गफळदो हि गोचरः''॥१॥यतिवछमेऽस्युक्त— '' स्रहात्वा वेघविधि प्रहगोचरपाकजातगुणदोषम् । ये निर्दिंशन्ति मूहास्तेषां विफलाः सदादेशाः '' ॥ १ ॥ 'यत्रस्थेन प्रहेणेष्टप्रहो विध्यते तत्रस्थस्येव स्वस्य फलं शुभमशुभ वा स ददातीति तस्वं'' इति रस्नभाष्ये। ये तु गोचरफलमेव प्रमाणयन्तो जिविधी माध्यस्थ्यमाद्रियन्ते, तन्मतं न बहुसंमतं। यदाह सारङ्गः---

वेधी च वामोऽवामश्र जन्मराशित एव गण्यो । मिथो न वेध इति रविश्वनी चन्द्रबुधो च पितापुत्री । अत्र पितृपुत्रयोरिति पाठश्रिन्त्यः,

क्त आवमवनात्, तेन " मिथो न पित्रक्षजयोस्तु वेधः " इति पाठोऽस्तु ॥ वेधप्रकारमेवाह---

चान्द्रेः सव-धुरिपुक्तयुखलाभगस्य २-४-६-८-१०-११, पुजिज्ञधर्मातत्तुतिर्च्धयनान्त्यगैश्च ५-३-९-१-८-१२ ॥ ४२ ॥ इन्दोस्तनौ ञिरिषुमन्मथखायगस्य१−३−६−७−१०-११, घीधमीरेष्पधनबन्धुमृतौ५−९−१२─र−8−८स्थितैऋ ॥४**१**॥ वैधक्तिषड्गगनलाभगतस्य ३-६-१०-११ भानोः, खेटेः फ्रमण नवमान्समुखात्मज ९-१२-४-५ स्थैः। स्यान्मङ्गलस्य सहजद्विषदायगस्य ३--६--११, सौरेस्तथा व्ययतपः सुखगैश्च १२-९-४ वेघः।

	9
45964	F.
ड्याख्या—निरुपंनं छिदमष्टममित्यथेः ॥	् बाचस्पतेः स्वतनयास्तनवायगस्य २-५-७-९-११, वेषस्तथान्त्यसुखांबक्तमन्बाष्टगेश्र १२-४-३-१०-८-।

नेधस्थापना यथा		=				सथ स्वाद्गाचरणत		10
महाणा <u>ं</u> '	न	5	m	0	<u>~</u>	V	52	]
	वुधस्य	_						5
अपः		8	20		7	0	<u>~</u>	H-
षष्ठदश्मसप्तमवर्जनवस्थानजुप:	भीमजन्योः	8	0,	<b>2</b> 0				शिद्धारम्
ને સ <b>ં</b>	佐	m	w	000	•			<b>=</b>
मिव		5	0	92	^	20	V	· 105
मिसह	चन्द्रस्य			*				सप्रसङ्
342	"	6	W,	w.		0	<u>~</u>	
-		0	3	20	5			इत्युक्तं
त्या	क्	m	100	0		-		=
द्व		3	9	-	6	0"	5	<u>~ w</u>
ग्याख्या—पर्वेत्यादि	गुकस	_			<u></u>		<del></del>	<i>6</i> -
क्ष	R41		n	~	~	5°	v	8 8
• न	-	92/9	<del>"</del>	est.	300	<u></u>	<u> </u>	
	恺	-	<u></u>	£1.0		<u> </u>		•

सत्र प्रागुपक्षिपं कमग्रापं च, प्रहगोचरद्वारमाह-

गरतोऽंद्यमानुपचये ३,६,१०,११,

अथ गांचरद्वारम् ॥ ६॥

ग्रुकस्य षट्लमद्नान्यजुषो१-२-३-४-५-८-१-१२१ -१२४म्साचाकाश्वभात्मयायत्त्रीयष्टेः८-७ १-१०-९-५-११-३-६॥

द्वितीय विमर्थे

बन्द्रस्तु साचनुने ३,६,१०,११,१,७,

जीवः स्त्रीधनधमेलाभस्रतगः ७,२,९,१५, ग्रुकोऽरिखास्तान्यगो १,२,३,४,५,८,९,११,११।

वक्तांकी जिषडायगा ३,६,११ वथ बुधस्त्वन्तान्ययुग्लाभगः २,४,६,८,१०,१२॥

जन्मेन्दोर्थहणे तसोऽप्युपचये ३,६,१०,११, ऽन्येषां त्वनायेन्द्वत् ३,६,७,१०,११ ॥ ४४॥

रे प्रहशुभभा-रे व्यद्शंन ॥

<u>~</u>	7
-	==
-	
ď	•
7	
-	

35	ब्यय	सरम् धन क्षयः	विविध दुःस	वित्त नाश	हैं हैं	काभ	্র তে
9.3	धन	ं	लाभ	अर्ध	लाम	भाय	紫
90	सिद्धः	सुखं	शुग्	सौख्य	श्रीदः अप्रीति	असुख	आँतः
۰	क्षाहित क्षय	भीतिः	अत्तिः	महा- पीडा	श्रीदः	<b>হা</b> তা	अय
v	अगा- निः	स	अस्त्र चात	धन	धना-	भक्ष	मीडा
<b>3</b>	पथः	सार्थ युविति:	क्ष	वपु- बाधा	हुप- मान	श्चर	रे हुई हुई
w	अरि- हाते	٠ <del>٣</del> ٠	धन	म्यान	中	भू शुक्र	छाम
5	्राष्ट्र इंद	अर्थ अंश	अर्थ सय	हति:	मि	म्	सिव
<u>~</u>	पारे- भव	आजि.	节	अध	ब्यय	MH:	黄鱼
m	<del>∯</del>	ह्म म	ह्य	वह	( <del>1</del> )	स्	अध्य
or	भव	आधिः	धन	अह	* <u>a</u>	क स	된 대한
~	स्थान अश	ं <u>स</u> ्य	電	वन्ह	哥	आरे नाश	अस्था-
ke H	महा:	ky IL IP	मंगल	द्यस	(T)	প্ৰ	श्राम

ग्यमसप्तमयोश्च । अन्सान्येति द्वाद्श वर्जेयित्वा सर्वेस-

मस्थानेषु । अरिखास्तेति षष्ठदृशमसप्तमनजैसर्वस्थानेषु

प्रहणे इति अकेन्द्रोग्रेहणदिने राहुर्जन्मराशित उपचयस्थः

निचरेणागतः श्रुकः शुभः। फूर्भभद्रेण त्वष्टममपि वर्जितं।

म्यदा राहुगोचरो न गण्यते इत्यसूचि । नक्षत्रगोचरमा-

श्रित्यान्यदाऽपि गण्यते इति ज्योतिषसारे । विशेषस्त

न्मिलप्राद्चेषु स्थानेष्वेव शुभा इति रत्नभाष्ये जन्मराशितस्तु झुभा एव । गोचरफ्लानि चैवम्—

उप्चयेषु स्मरे च शुभ इत्यर्थ.। प्रहणे इति कथनेना-

ग्रुभः । अन्येषामिति ते प्राहुः आधं विना चन्द्रवद्राहुः

द्वितीय विमर्के हिमोचर हुमाधुम फलस् ॥ ङक्षणया प्रहाणामिष चरणभूमिः गीचरः, तमाश्रित्य विहरम्बये श्रेष्ठः। उपबयादिकं कस्मादारभ्य गण्यते हृति गिचरो गण्यते इति भावः । साद्येति उपचयस्थानेषु ष्ट्रंसो जन्मसमये यत्र राशाविन्दुः स्थात्म राशिजैन्मे-न्दुरुच्यते, जन्मराशिरित्यर्थः, तस्मादारभ्य सर्वेग्रहाणां गङ्कायामाह--जन्मेन्दोशित, इद सर्वेश्रहेषु योज्यते।

ब्याख्या--गवां चरणभूमि. किल गोचरः, ततो

```
मुखदुःखादि
                                                                                                                                                  हम् १ धननारा २ धना ३ रिभ्य ४ थैक्षय ५ धन ६ शुग ७ खघाता ८ तीं ९ ।
                                                                      तुष्ट्या १ घि २ धना ३ ज्य ४ थेभ्रंश ५ थ्री ६ सार्थयुवति ७ मृति ८ भीती:
                             क्षान्तिक्षय ९ सिद्धि १० घन ११ व्ययाँ १२ अ जनमादिगो रविः कुरुते ॥ १ ॥
स्थानभंश १ भय २ औ ३ परिभव ४ दैन्या ५ रिहति ६ पथा ७ ङ्वातीः ८।
                                                                                                                                                                                       ग्रुम् १० लाम ११ विविघदुःखानि १२ दिशति जन्मादिगो वकः ॥ ३ ॥
                                                                                                                  सुख १० जय ११ सक्त्यनक्षय १२ मिन्दुर्जनमादिगो द्ते ॥ २ ॥
```

विचारः ॥

पीज्ञा ८ थेगमा ९ स्ति १० थ्री ११ दुःखानि १२ द्यानिस्तनोति जन्मादी " ॥ ७ ॥ इदमधैतो वराहसंहितायां ।

अस्थान १ धनगमा २ था ३ रिवृद्धि ४ सुतनाश ५ लाभ ६ दुःलभरान् ७ ।

असुखा १० य ११ लाभ १२ मुशना सनापि जन्मादिगस्ततुते ॥ ६ ॥

अरिनाशा १ थं २ सुख रे थ्री ४ सुता ५ रिवृद्धी (क्टि) ६ शुग ७ थं ८ विद्याणि ९।

रोगा १ थी २ क्लेश ३ व्यय ४ सुख ५ भी ६ नुपमान ७ धनागम ८ श्रीदः ९।

अप्रीति १० लाभ ११ हद्दुःखद्श्च १२ जन्मादिगो जीवः ॥ ५ ॥

सौख्या १० थे ११ वित्तनाशाः १२ स्युर्धे जन्मादिगे क्रमशः ॥ ४ ॥

वन्दा १ थे २ बघा ३ थे ४ हति ५ स्थान ६ वपुर्वाघ ७ घन ८ महापीडा ९।

" गहुणे तमरासीओ नियरासी ति चउ अड्डिगार सुद्दा। पण नव दहंत १२ मिन्झिम छ सत्त इग दुन्नि अइअहमा"॥ १॥

" यादशेन गशाक्षेनं सङ्क्रान्तिजायते रवेः । तन्मासि तादशं प्राहुः शुभाग्रुभफलं जुणाम् '' ॥ ९ ॥

इति ज्योतिषसारे । तथा—

द्वितीय विमर्भे चन्द्रस्य बलाब्छे॥ 1531 भावः, न तु कृष्णपक्षे, क्षीयमाणत्वात् । वली यदीति अनेन श्रुक्डपक्षेऽपि कृताः सन् शशी द्विपञ्चनवमो न प्राह्यः । कृष्णपक्षे च पृष्टोऽपि सन् एतेनाकों द्वादशाष्ट्रमाध्यामस्योऽपि गोचरेण ताराबलेन ग्रुभावस्थादिना च, ग्रुमे चन्द्रबले सति जातसङ्क्रम. ग्रुभ एवेति रत्नभाष्ये । तथा---गहा कुणति सुहमसुह " इति । द्विपच्चेत्यादि विशेपविष्यारीपणार्थत्वाच्च नात्र पुनरुक्तदोषः । एवमिति ग्रुभ इत्यर्थः । ग्रुक्कपक्षे धृति प्रवर्धमान इति इति नारचन्द्रटिप्पण्यां । नमु चन्द्रगोचरण्ये प्रागप्युक्ते पुनक्क्तमिदं, सत्यं, परमिन्दो. प्राथान्यमृत्यर्थत्वाद्द्रोषः । प्राधान्य कथिमिति चेत् उच्यते-" चन्द्रे च शुभे सित शेषत्रहाः शुभफलदा एव प्राथो, न त्वशुभफलहा " इति ब्यवहारप्रकाशे । हर्षप्रकाशेऽप्युक्तं-" चंदस्सेव बलाबकमासिष्क यया मनस उपयोगे सत्येव सर्वाण्यपीन्द्रियाणि स्वस्वविषयग्रहणक्षमाणि, नापरथा, तथा चन्द्रे शुभै सत्येच शेषग्रहाः शुभै फलं दद्ति, नापरथा । इति कछः अस्यार्थं –शुक्रपशस्य प्रतिपदि छगन्तां यदि चन्द्रः शुभस्तरा, तस्मिन् पक्षेऽपि चन्द्रः शुभ एव, यदि चाश्चभस्तदा भग्नुम: । कृष्णपक्षस्य तु प्रतिपदि छगन्त्या यदि चन्द्र. ग्रुभस्तदा तस्मिन् पक्षेऽपि चन्द्रोऽश्चभ एव, यदि विश्वभस्तदा चन्द्रस्रस्मिन् पक्षेऽपि श्चभ प्वेति । " यात्रा १ युद्ध २ विवाहेषु ३ जन्मेन्दै रोगसंभवे ४ । क्रमेण तस्करा १ भक्षे २ वैघन्यं ३ मरणं ४ भवेत् " ॥ १ ॥ " सितपक्षादौ चन्द्रे शुमे द्युमः पक्षकोऽशुमे त्वशुमः । बहुले गोचरशुमदे न शुमः पक्षेऽशुमे तु शुमः " ॥ १ ॥ चन्द्रो जन्मिष्ट्सप्तद्योकाद्यागः ग्रुभः । द्विपञ्चनवमोऽत्येवं ग्रुक्कपक्षे बली यदि ॥ ४५ ॥ " असत्फलोऽपि यः सौम्यैहंग्रो यः सत्फलोऽपि वा । कूरेण हघोऽरिणा वा स न किञ्चित्फलप्रदः ॥ १ ॥ " अशुमोऽपि शुभश्चन्द्र. सीग्यमित्रगृहांश्के । स्थितोऽथवाधिमित्रेण विल्केन विलोकितः " ॥ १ ॥ इति दैगज्ञवछमे । तथा—' नीचेऽस्तेऽरिगुहे वापि निष्फलो प्रहगोचरः "। इति लक्षः । तथा—" यादशेन प्रहेणेन्दोधुति: स्यात्तादशो हि सः " इति देवज्ञवछमे । तथा— .इति दैवज्ञवछमे । अथ सर्वप्रहसाधारणमुच्यते— ज्याख्या-जन्मेति । विशेषस्तु-

हितीय विम्ये विचारः॥ ताराबल ब्याख्या—कुक्केतरपक्षयोस्तिथिपञ्चत्रयीपु हीनमध्योत्तमता यथोत्ता तथेन्दोरिप हीनमध्योत्तमबङ्खं क्रमोस्क्रमाझाब्य । जातकघुत्ती त्वेव-'उदयादाधे दशाहे शशी मध्यवलः, द्वितीयेऽधिकवलः, तृतीयेऽब्पवलः, कृष्णचतुद्द्यादित्रितिनीं सर्वथाऽबलः । सीम्यग्रहेर्द्धस्तिवन्दुः सदापि बलवा-द्विप्रभानवमी न प्राधा इत्युक्तं, तद्यं भावः-याद्यं द्विपञ्चनवमी गुरुः सद्। गुभं (फलं) दसे, ताद्यं वर्धमानतनुः ग्रुक्कपक्षे पुष्टश्रन्द्रोऽपि द्विपज्ञनवमः ताराबले शशिबलं शशिबलसंयुतसंकमाद्बलं भानोः । सूर्यबले सति सवैऽप्यग्रुभा अपि खेचराः ग्रुभदाः " ॥ १ ॥ तारा एबाह-उदेति चायं प्रतिपत्समाप्तो क्रशोऽपि वर्षिष्णुतया प्रशस्त । द्वीपान्तरस्थो विफलस्तु तावद्यावन्न पृथ्वीनयनाध्वनीनः " ॥ १ विशेषस्तु शुक्कद्वितीयायां दिवा उदितोऽपीन्दुने प्राद्यः, प्रायो जगद्दम्गोचरीभावाभावेनासांच्यवहारिकत्वात् । उक्त च विवाहयुन्दावने---चन्द्राद्वलचती तारा कृष्णपक्षे तु भर्तिर । विकले प्रोषिते च स्त्री कार्यं कर्तुं यतोऽद्दीत " ॥ १ ॥ ततश्र— हीनमध्योचवलता तिथिवतु हिनयुतेः। बलहानाविदं त्वस्य ग्राह्मं ताराबलं बुधैः॥ ४६॥ उदिते च तथा चन्द्रे शुभयोगे शुमे तिथौ । कष्णस्य दशमीं यावत्सर्वकायांणि साधयेत् " ॥ १ ॥ " कृष्णसाप्रम्यधिद्नन्तरं तारकावलं योज्यं । प्रतिपत्प्रान्तोत्पन्नं सन्ध्याकालोद्यं यावत् " ॥ १ ॥ निति ''। अम्ये तु कृष्णाष्टम्प्रधीद्तु शुक्काष्टम्यर्थं यात्रचन्द्रः सीणः, शेपं पक्ष पुष्टश्रेत्येतमाहुः । नक्षत्रसमुचयप्रन्थे त्वेतम्— इदं रिवति वक्ष्यमाणं । अस्येति इन्दोः । प्राद्यमिति तदानीं ताराबछेनेव शक्षिवलभवनादिति भावः । उक्तं च--इति ब्यवहारप्रकाशे । न च ताराबळ गीणमिति चिन्तं, यतः स्फुटमेव ताराबळस्य प्रधान्यं । यहुद्धः---जिमिभान्नवेषेषु त्रिषु जिनि १ कर्मा १० धान १९ संज्ञिताः प्रथमाः। श्चमं दने इति रस्तमान्ये ॥ बली यदीत्युक्तस्वादिन्दांयंकाबलमाह---

ताभ्यक्ति ३,१२,२१ पंच ५,१४,२३ सप्तम ७,१६,२५ ताराः स्युने हि ग्रुभाः क्षचन ॥ ४७॥

द्विक्लेगः शेपासु तु तारासु व्याधिः सान्यो मृणां भवति जातः । न्याधिवद्वबोद्धन्याः सर्वारंभाश्च तारासु " ॥ २ ं शुक्ले पक्षे वली चन्द्रस्ताराबलमकारणम् । पत्यौ स्वस्थे गृहस्थे च न स्त्री स्वातंत्र्यमहिति " ॥ १ ॥ चन्द्रेयलं च तदानीं वर्तते तथापीत्यपेरथैः, आस्विति जन्माधानत्रिपञ्चसप्तमतारासु । दीर्घक्लेशोऽथवेति ग्रहान्तरप्रातिकूल्याभावे " यद्यपि स्याद्वली चन्द्रस्तारा तथाप्यनिष्टद्। जन्माधाने तृतीया च पञ्चमी सप्तमी तथा ॥ १ ॥ अत्र यात्रादिषु चन्द्रः श्चभावस्थो विलीक्यते, इति रत्नमाळाभाष्ये उक्तमित्यतश्चन्द्रावस्थाः प्राह्न-तसमाने तु मृत्युरित्यये: । यहाहाः —

चन्द्रावस्था मोषित १ हतर सतर जय ४ हास ५ हषे ६ रति ७ निद्राः८।

मुक्ति ९ जरा १० भय ११ मुखिता १२ राह्यंशा हाद्दा यथायाः ॥ ४९ ॥

हितीय विमेळे

चन्द्रस्य प्रोविता-

द्द्राद्भा-

मितस्येन्दो राशिभोगस्य द्वादशमिर्भागे एकादश घट्यः पञ्चदश पलानि च स्युः । इष्टसमये च पञ्चत्रिशदधिकशतमध्ये यावत्यो घट्यो भुक्ताः स्युत्तासां सपादेरेकादद्याभभोगे यछव्य ता भुक्ताः, शेषाङ्गेन भुज्यमानद्वाद्दांधा शेयाः। अत्र च सामान्योक्तेऽप्ययं भावः–राद्यौ रात्रौ द्वाद्द्यांद्रारात्या

1501

न्यास्याः—यदा यावद्घटीमानश्चन्द्रस्येष्टराशिभोगः स्यात्तदा तावात् टिप्पनकं विलोक्य निणेयः। यथा सामान्येन पञ्चत्रिकात्तिष्किकात १३५

सुखितात इति लोकव्यवहारोक्त रत्नमालाभाष्ये । यथार्था इति स्वस्वसंज्ञासद्दक्षळदा इति भावः । तेन प्रोषित १ इत २ मृत ३ निद्रा ४

असुद्दाओं चप जओ सुद्दो नि ससी। पआर्दि होइ असुद्दो, सुद्दार्दि असुद्दो नि होइ सुद्दो " ॥ १॥

जरा ५ मया ६ ख्याः षडवस्थास्साज्या इति नारचन्द्रटिप्पण्यां । अत एव दिनश्चद्धावप्युक्तम्---

" पइरासि बारसंसा

न्द्रहोदशावस्था अङ्के । उक्तं च यतिब्छमे--

ततोऽयमर्थ.—मेषे स्थितस्येन्दोः प्रोषितात आरम्य द्वाद्शावस्था गण्याः । बृषस्थस्य तु ह्वतातः, मिथुनस्थस्य मृतात इत्यादि यावन्मीनस्थस्य " राशो राशो द्वादशामुभुङ्केऽवस्थाश्च चन्द्रमाः । द्वाद्शांशक्रमात्सांद्विद्वचृहेनाख्यासदक्फलाः " ॥ १ ॥

द्वितीय विमर्जे शनिनर विचारः। ब्याख्या—मन्दक्षेत हति शन्याक्रान्तभात्त्वज्ञनमभं यावद्गण्यं । अभिभूतिः प्राभवः । अपमृतिरपमृत्युः । अत्र चानुक्तोऽपि श्रानिनैराकारी-रहयामछे तु नवप्रहाणामपि नराकारस्थापनया नक्षत्रगोचरफ्ठान्यूचिरे । तत्र रविनरं सूत्रकृदेव जातकाधिकारे १ विस्ति ५ पथ ११ वन्घन १५ घर्म २० लाभ २३ यूजा २५ विसूत्य २६ पस्ती: २७ फलसूचुक्चै: ॥५०॥ नवरमत्र द्वितयमिति यदा नराकारः पष्टमादौ कचिदालिख्यते, तदा गुदगुह्मयोरैक्यमेव दृश्यत हति क्रस्वाऽत्र गुद् एव द्वयं विवक्षितं, सूत्रकृता हण् ३ वाहुयुग्म ६ वक्त्रेपु २ मानां प्रत्येकतस्त्रिकम् १२। हिंद सम १९ तथा गुबे चतुष्कं २३ पबकं पदोः २८॥१॥ वक्त्रे पीडां भृगं चश्चहृदयेपु शुभं सुखम्। वाह्रोळीमं मुर्ति गुबे भमं देने पदोः शशी॥२॥ ॥ इति चन्द्रनरः॥ ॥॥॥ त्रय त्रयं त्रिमुंखदक्छिरस्सु ३-९, द्रयानि वामे २ तरवाहु २ कंठे २-१५। पञ्चोरिस स्यु २० खितयं च गुह्ये २३, चत्वारि चांढ्योः २७ कुजचक्रमेतत् ॥ १॥ मन्दर्शतः प्रथम १ वेद ४ षड ६ विघ ४ बाण ५ जि ३ द्वये २ क १ चन्द्र १ मितमेषु यथात्रमेण चत्वारि बामकरगाण्युद्रे च पञ्च, मूस्ति त्रयं नयनयोद्दितयं गुदे च '' ॥ १ ॥ यस्मिन् शमिश्चरति वकगतं तद्दंगं, चत्नारि दक्षिणकरेऽद्वियुगे च पद्कम्। पार्थक्यविवक्षया स्थानद्वयेऽप्येकेंक नभन्नमूचे । तत्त्थापना यथा--बह्यति । शेषग्रहनरास्त्वेबम्— अथ शनेद्रेष्टत्वान्नक्षत्रगोचरं प्रथगाह— ऽम्यूद्धः । यदुक्त यतिब्छमे-शनिनर: **वीडा** १ पादह्वये वामकरे उदरे

```
अंहयोः पञ्च सुखाय हत्स्थयुगलं शोकाय कंठे व्यथा । भीत्यै स्याच चतुष्टयं फलमिद केतौ तदाक्तान्तभात् ॥ १ ॥ इति केतुनरः ७
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     जानुमुष्ककपादेखु दुःखं वाह्रोनृपाईणाम् । हुच्छीपै सीम्यतां वक्त्रे मरणं कुष्ते सितः ॥ २ ॥ इति शुक्रनरः ॥ ५
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               ळब्से कंठगमेकमामयकरं शीपें त्रयं राज्यदं, सीभाग्यं युगलेऽक्षिमे मृतिरथो गुह्यद्वये राहुमात् ॥ १ ॥ इति राहुनरः ॥ ६
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              षड्सिः पीडांहियुग्मे जलधिपरिमिते वामहस्ते च सत्यु-हैग्युग्मे त्रीणि कुर्युनैपतिसमसुखं वाक्पतेश्वक्रमीतत् ॥१॥ इति गुरुनरः ॥ ४
                                                                                                                                                                                ॥ इति बुधनरः ॥ ३
॥ इति भीमनरः ॥ २
                                                                                  नेत्र५ गलो५ रस्सु५ पाद्योः५ पञ्च पञ्च च२५ । बाहु१ युग्मे१ तथा गुहो१ त्रीण्यमूनि भवन्ति च २८ ॥ १ ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          वक्त्रे त्रीणि जयाय दक्षिणकरे बत्वारि लक्ष्म्ये पदोः, षड् आन्त्रे न सुखाय वामककरे चत्वारि हच्छं त्रयम्।
                                                                                                                                                                                                                                                               शीप चत्वारि राज्यं युगपरिगणिता सन्यहस्ते च छक्ष्मीरेकं कंठे विभूति मद्नशरमिते वक्षांति प्रीतिलाभम् ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                युगं शोप द्वयं वक्त्रे चतुष्कं हृद्येऽपि च । द्य बाहोस्चयं गुह्य जान्वंहिषु द्वयं ह्यम् ॥ १ ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           वक्त्रे हे भयदे जयाय शिरसि स्यात् पत्रकं पत्रकं, भीत्ये तत्फणगं जयाय करयोर्धुभी चतुष्कं स्थितम् ।
कीति शिरसि हनेत्रे लामं चरणयोधीमम् । गुह्येऽन्यस्त्रीरति दने कुजः शेपेषु चाशुमम् ॥ २ ॥
                                                                                                                                                                             वक्त्रहृत इपि गुर्धापारेषु संक्षयम् । गले सुस्वरतां दने नेत्रे राज्यं बुधो प्रदः ॥ २ ॥
                                                                                                                    वक्त्रभ
```

नन्येवमन्यान्यअहपुरुपाणा शुभाशुभफलसंभेदे सति, कथं प्रह-	सवान्यता मंगाचरफल्ल तिया कहु शक्य.: उप्पत-इष्टरमय या अह. सर्वेपामधिकवळ: स तदानीं भ्रुभाभुमं फलं दने। सर्वानन्येताम् प्रहनराम् जन्मसमय एव केचिद्विचारयन्ति। ज्योतिषसारे हु गहोने- क्षत्रफल्मेवमूचे— " तमरिख्खुंमुद्दि १ तिफुद्धिअ ४ चउफल्लिअ ८ तिअह्छ ११ तिझडिअ १४ मुद्दिक्कं १५।	ातअरायस १८ ातअतामस २१ चउसुद्द २५ तिअ असुद्दं २८ तमचक्कं ॥ १ ॥ फुछ्रिअफिलिप छादं अपाणि छच्छी सुद्दं च सुद्दिर्ष्ट्ले । सुद्द अहळहाडिअरायसतामसअसुद्देअ असुद्दतमं ॥ २ ॥ " अथाग्रुमे प्रह्माग्नेर सित, तिष्टुफ्लीकारिणमष्टक्रगमाह— गोचरेण ग्रह्माणां चेदानुक्त्यं म दृश्यते । जनमलग्रग्रेट्टिचगेंणात्रोक्तयेत्तदा ॥ १५ ॥ व्याख्या—प्रहाणामित सामान्योक्तेऽपि स्वीन्दुजीवानामागुकूल्यामाव इति झेष । यदक्त नारचन्द्र—	
बुधपुरुपः ३	5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5	केतुपुरुप: ७ सिक्ते १ सय मस्तके १ सय महाभयं करतद्वे १ सवाः गादद्वे १ सिक्त पादद्वे १ सिक्त कंठे १ सीद्य	
(ਜ਼ੀ   			
भौमपुरुष २	מצמצול מי מי מי מי מי מי	। परक्षे   । परक्षे   साहतुरु महिले । ।   पाइयोः     पाइयोः     सामकेरे     कठे     मस्तके	i
是 一	साके म में अप म सत्ति म म स्ति कि हैं हिंद के	सुद्धाः प्रत्याः १० स्मीस्यत १० स्मीस्यत १० द्वाः	
वन्द्रपुरुषः १	स्म	्राम्स्य मस्तके । स्थाने । स्	-
4 F.	नेत्रवो. टाक्षणकरे वामकरे सुखे हत्त्रचे गुटा	मुक्पुक्पः ध मस्तके ध्राक्य करे हर्ये भ्रमित पान्द्वये ६ भ्रमुद्धः नन्नयोः ६ मृत्युः	
(- <del>)</del> _96-3;	-96-47-56-47-56-56		- <i>9</i> L-7(
	भारम सिद्धे: 110% !!		

डितीय विमयें अष्टवर्ग-स्वरूपं ॥ ॥८९॥

```
द्वितीय
विमेधे
चन्द्राष्ट्र
                                                        जन्मेति जन्मति यह्नग्रं चेति ये च ग्रहास्तेभ्यः । अष्टवगेणेति अयमर्थः-ग्रहस्य राग्नौ संचरतः पद्भ्योऽपरग्रहस्थानेभ्यः स्वस्थानाहिभाष
'' रविश्यशिजीवैः सबलैः शुभद्ः स्याद्गोचरोऽथ तदमावे । त्राह्याप्टवर्गश्चिद्धिजैननविलग्नप्रद्देभ्यस्तु ॥ १ ॥ "
                                                                                                                                                                  अर्कः स्वमन्द्भौमेभ्यो नबद्वयायाष्टकेन्द्रगः ९-२-११-८-१-४-७-१०।
                                                                                                                 विचारणयाऽष्टकवर्गे उच्यते ॥ तमेवाह—
```

चन्द्रादुपचयस्थो ३-६-१०-११ ज्ञाद्धीधमोपचयान्त्यमः ५-९-३-६-१०-११-१२। त्रिकोणायारिगो ९-५-११-६ जीवाच्छुकादन्त्यारिकामगः १२-६-७ ॥ ५२ ॥

118011

स्वात्सादिसप्तमे ३-६-१०-११-१-७ ष्वारा-त्सद्रच्यनवमात्मजे ३-६-१०-११-२-९-५॥ ५४॥ पातास्त्रोपचयान्त्येषु ४-३-६-१०-११-१२ लग्नाच तर्गाः ज्ञुभः॥ ५३॥ इति रब्यष्टवर्गः॥ चन्द्रश्रोपचये ३-६-१०-११ लग्ना-द्रानोः साष्टसारे स्थितः ३-६-१०-११-८-७।

शुभः शनेः षट्त्रिसुतायगः ६ ३ ५-११ श्राशी ॥ ५५ ॥ ॥ इति चन्द्राष्ट्रवर्गः ॥ २ कुज इन्दोरुपचयमे ३-६-१०-११ साचे ३-६-१०-११-१ लग्नात्मपश्चमे ३-६-१०-११-५ सूर्यात् । छिद्रज्ञिलाभात्मजकेन्द्रगो ८-३-११-५-१-४-५-१० बुधाद्-गुरोस्तु रिष्पाष्टमलाभकेन्द्रगः १२-८-११-१-४-७-१०। शुक्ताात्रपञ्चास्तनवायखांबुगः ३-५-७-९-११--१०-४,

द्वेषड्दगायाष्टसुखेषु २६–१०–११–८–४ चन्द्रा-ल्लग्नानु तेष्वाच्युतेषु २–६–१०–११–८–४–१ यासाः ॥ ५८ ॥ | कुजशनितो व्यन्त्यारिषु १-२ ३-४-५-७-८-९-१०-११, जीवादरिनिधनलाभरिष्पस्थः ६-८-११-१२ । मन्दाछाभनवाष्टमकेन्द्रस्थः ११ ९-८-१-४-७-१० शोभनो भौमः॥ ५७॥ ॥ इति भीमाष्ट्रकाः॥ इ द्वयायाष्ट्रकेन्द्रगः २-११-८-१-४-७-१० स्वात्सोम्यात्रिसुतारिकामस्यः ३ ५-६-११ ॥ ५६ ॥ बुघोऽकैतोऽन्त्यायनवारिघीषु १२–११–९-६-५, स्थितः स्वतः सन्निद्यादिमेषु १२-११-९-६-६-६-३-१०-१। जीवात्वान्त्यायारिषु १०-१२-११-६, ग्रुक्तांच्छद्रान्त्यलाभशत्रुगतः ८-१२-११-६ ।

शुक्रादाषुत्राष्टमनवमायस्यो १-२-३-५-५-८-०-११ बुघः शुभदः ॥ ५९ ॥

स्वादिखायसुखधीतपोऽरिषु २, १, १०, ११,४,५,९,६ ज्ञाद्गुरुः स्मर्युतेषु २,१,१०,११,४,५,९,६,७ लग्नतः। अक्तिसित्रिनवस्वि १, ४, ७, १०, १, ८, ११, ३. ९ न्होः स्वधीकामनवायगः २, ५, ७, ९, ११॥ ६०॥ गुरुः केन्द्रबरन्धाये १-४-७-१०-२-८-११ ज्वारात्स्वात्सित्रिष्तामः १-४-७-१०-२-८-११-३। ब्याख्या---ब्यस्ट्येति द्वाद्गषष्ठवर्जसर्वस्थानेषु । आपुत्रेति आद्यास्पुत्रं पञ्चमं यावत् पञ्च स्थानानीत्यथैः ॥ इति बुधाष्टवर्गः ॥ ४

वित्रिकोणरिपुखायगः २, ९, ९, ६, १०, ११ सितात्, ज्यन्ह्यधीरिपुषु ३, १२, ५, ६ मन्दतः ग्रुभः ॥ ६१ ॥

शुक्रों लप्रादासुतधर्मोयाष्टसु १, २, ३, ४, ५, ९, ११, ८ मतः स्वतः साम्रः १, २, ३, ४, ५, ९, ११, ८, १०।

॥ इति गुर्वेष्टवर्गः ॥ ५

शशिनः सान्यः १,२,३,४,५,९,११,०,११, वानितः जायतपन्त्रिसुषध्यंभिष्ठा १०, ११, ९, ३, ४. ५, ८, ॥ ६२॥ आयन्ययाष्ट्रगोऽकौ ११, १३, ८ द्. बुधाजिकोणायषद्जिमः ९, ५, ११, ६, ३, ग्रुभदः । स्यापोक्षिमाप्तिष्ठ ५, ३, ६, ९, १२, ११, कुजाद्,गुरोस्त्रिकोणाष्ट्रवायगंः ९, ५, ८, १०, ११ ग्रुकः ॥ ६क्रे ब्याख्या — भासुतीति प्राग्वत् ॥

व्याख्या---आपोक्किमानि तृतीयषड्नवमद्वादशानि । आसिलीभभवनम् ॥ इति शुक्राष्ट्रवर्गः ॥ ६ ॥

र्यानिः स्वात्त्र्यायपुत्रारि ३, ११, ५, ६ ध्वारात्सच्ययकर्मस्त ३, ११, ६, ६, १२, १०।

मुरोः सधीषु ११,१२,६,५, साम्राष्ट्यमेषु ११,१२,६,१०,८,९,ज्ञाच्छनिर्मतः॥ ६५॥ ॥ इति बन्यष्टवर्गः॥ ७

आचाम्ब्पचये लग्नात् १, ४, ३, ६, १०, ११, मबेरायच्ययारिषु ११, १२, ६।

स्वशब्देनेह जन्मकाछिकोऽको प्राद्याः । एवं मन्दभौमाहयोऽपि जन्मकालिका एव, ततस्तात्काछिकाकाँद्या जन्मसत्काकैमन्दादिभ्यश्रेजवद्र्यादीनामन्यतर् स्थाने स्युस्तदा ग्रुभाः । ते मर्वेऽपि रेखां ददतीति परिभाषा । ततश्च यावद्मयो लग्नग्रहेभ्य उक्तान्यतरस्थाने तात्कालिका अर्काधाः प्राप्यन्ते तावत्यो खि देयाः, यावस्रयश्च न प्राप्यन्ते तावन्ति शून्यानि देयानि, एनमेकैकप्रहस्याष्टाष्ट रेखाः संभवेयुः, तासा मध्ये यदि चतत्त्रो हीना अधिका वा

एषा चतुर्वेशचुत्तानां पिंडाथोंऽयं-आद्यचुत्तेऽकै इति, यदा यात्रादिकायैचिकीषाँऽस्ति तस्मिन काले यः स तास्कालिकोऽकैः । स्वमन्देसादि

रेखाः स्युद्धदा मध्या अधमाः श्रेष्टाश्च क्रमात् । एवं च यस्य ग्रहस्य रेखाबाहुल्यं स गोचरेणाशुभोऽपि भ्रुभः, ग्रून्यबाहुल्ये तु गोचरेण भुभोऽप्य-

ग्रुभः । केऽप्याहुः−कार्यकालेऽष्टकवर्गरेखा न मील्यन्ते, कितु यदा तदा वा जन्मकुंडलिकामेव सप्तश: सस्थाप्य, आद्यकुंडलिकायां यत्र स्थानेऽक्रोऽस्ति,

केन्द्राष्टायार्थेगः १, ४, ७, १०, ८, ११, २ सूयोचन्द्रात् षट्ज्यायगो ६, ३, ११ मतः ॥ ६४॥

शन्यष्ट वर्गः ॥

द्वितीय विमर्जे

तसान्नवमादित्वष्टस्थानेत्वष्टी रेखा देयाः । एवं मन्दमीमाभ्यामपि प्रत्येकमष्टाष्ट्र, गुरुतश्चतत्तः,शुक्रातित्तः, श्वधासप्त, लग्नात् पर्, एवं तत्यामकष्टिवर्गे॰ कुडिलिकायां सर्वेरेला खेरष्टचत्वारिंशत् । एवमेव द्वितीयादिषु चन्द्राधष्टवर्गकुंडिलिकासु क्रमात् सर्वेरेला., एवज्रन्द्रस्थैकोनपञ्जाशतु, भौमस्य चावारि-यथायोगमष्टी रेखाः संभवेयुः । ततः कार्यकाले यो प्रहो यत्र राशी स्थातत्त्थानं वीक्ष्यते, तत्र स्थाने रेखाधिक्ये संग्रहः शस्तः, श्रुन्याधिक्ये त्वग्रुम एकप्रहमाथ्रित्येद्मुक्तं । तात्कालिकीनां सर्वप्रहरेखाणां मीलने तु, पोडशमध्ये कदापि न सात्, सप्तद्शम्य आरम्योत्क्रष्टाः षट्पञ्चाशतं यावतु एवं चैकेम्प्रहाष्टवर्गकुडलिकाया द्वाटकारविप सिहास्थानेषु प्रत्येकं यावत्संभव रेखा देयाः, शेषाणि झून्यानि च । उत्कर्षतश्चेवमेकन्न स्थाने अत्र पट्पञ्चाशादिति रज्यादिसप्तकस्य प्रत्येकमष्टाष्टरेखासंभवे पट्पञ्चाशदेव तासां मेळनादिति भाव. । विशेषस्तु-" चतुरेसं मध्यफ्रुं " इति यद्यस्क, नथापि यस प्रहस्थाष्टकवर्गश्चिद्दत्तदानीं विलोक्यमानाऽस्ति, तस शुद्धिपतेप्रेहस्य स्वतः समुत्था रेखा यदि संपद्यते तदा चत्रेखमपि श्रेष्टं, यदि वामवेषेन शुभ. स्पात्तदाऽपि चत्रेलं शुभ । प्रकारत्रयस्याप्यभावे स्वधिकरेखोऽपि प्रहो न शुभ इति व्यवहारप्रकाशे । तथा षट्पञ्जाशदिति तदमाचे पड्विषादियलाङह्कृतस्य तिमत्रप्रहस्य स्वतः समुत्था रेखा यदि संपद्यते तदापि चत्रेलं प्रशस्यं । तस्या अप्यमावे स एव श्रुद्धिपतिप्रेही " वसुवेदौ १ नन्दवेदौ २ खवेदौ ३ वसुसायकौ ४ । पड्याणौ ५ क्रिशरौ ६ नन्दवह्री ७ रेखा इनादिजाः " ॥ १ ॥ " रेखाधिक्यं शस्तं शूल्याधिक्यं तथाऽधमं कथितम् । पतत्संयोगे स्युः पट्पञ्चाशन्न जातु अधिकास्ताः " ॥ १ ॥ स्युः । तत्र पद्विंशति यावद्युभा एव, सप्तविंशत्या समता, अष्टाविंशत्याद्यस्तु पट्पञ्चाशतं यावष्याबहुत्वं ग्रुभग्रुभतसग्नः । " चत्रेखे मध्यफळं हीने हीनं ततोऽधिके श्रेष्ठम् । विफळं गोचरगणितं त्वष्टकवर्गेण निर्दिष्टम् " ॥ १ ॥ नात्, बुभस्याष्टपञ्चानात्, गुरोः पट्पञ्चानात्, गुफस्य द्वापञ्चानात्, शनेरेकोनचन्वारिंशचेति । उत्तञ्च— इति द्विधाऽपि चैकमेव तत्वं । अथासामुपयोग एव---

"केन्द्राष्टवित्रिगः १-४-७-१०-८-२-३ सूर्याद्राह्न रेखाप्रदः स्मृतः । इन्दोस्तमुत्रिधीस्त्र्यष्ट्र धर्मकर्मन्यये १.३.५.७.८.९.१०-१२ स्थितः॥१॥

रेलासवांत्रं यदुक्तं, तदाहोः सर्वथा रेला न सन्तीति मतेन । केचित् राहोरिप रेलाः प्राहुः । तथाहि---

हितीय विमर्थे खास्म ह्यां ॥ १३॥

जीवात्सप्रथमे २-४-७-८-१२-१ ग्रुकार्वार्यक्तायरिष्पगः ६-७-११-१२॥ २॥ मौभात्तमुत्रिधीरिष्पे १-३-५--१२ स्वाम्बुस्त्यघान्तिमे २-४-७-८-१२ बुधात्

शनेखिधीवधूलामे ३-५-७-११ लग्नाद्राहुस्तु शोमन: । त्रिपञ्चसप्तनवमान्त्येषु ३-५-७-९-१२ रेखाऽस्य न स्वतः

त्रिचत्वारिंशदेवं स्यु रेखा राह्नप्रवर्गगाः । '' अथ कस्मिन् कार्ये को प्रहः सवलोऽन्वेष्यत इत्याह—

सवेंत्रेन्दुः कुजः संख्ये बोधे ज्ञः स्थापने गुरुः। याने ग्रुकः शानिमौण्डये बली भातुर्नेपेक्षणे ॥ ६६

हितीय विमेशे तिविश्व-

समयः । प्रहम्भ

संख्यं युद्ध । बोधो विद्या । स्थापनं पद्मतिष्ठाविवाहादि । यानं प्रस्थानं । मीण्ड्यं दीक्षा । मुपेक्षणे इति यो यस्य स्वामी स तस्य मुपः

'' लग्नं देहः षट्कवगाँऽङ्कानि, प्राणश्रन्त्रो घातवः खेचरेन्द्राः।प्राणे नष्टे देहघात्वङ्गनाशो, यत्नेनातश्चन्द्रवीयं प्रकल्यम् '' ॥ १ ।

तुरनुक्तलयोगिनि शुमेक्षिते शक्षिति वर्धमाने च । तारायोगेऽभीष्टे सर्वेऽथाः सिद्धिमुपयान्ति " ॥ १ ॥ तत्र चायं विभागः--

प्रामे नुपतिसेवायां संप्रामच्यवहारयोः । चतुषु नाममं योज्यं शेषं जन्मनि योजयेत् '' ॥ १ ॥

इदं नरपतिजयचयीयां । तास्कालिकलग्नेऽपि च सर्वकायेषु चम्द्रवर्लं नियमैन प्रकर्पयेत् । यत्सारंगः—

तिहि १ रिब्ल २ चार ३ करण ४ जोगो ५ तारा ६ ससंकवछं ७ "॥ १॥ अत एवोक्नं-

" पग १ चड २ अट्ट ३ सीलस ४ वत्तीसा ५ सिंह ६ सयगुण ७ फलाइ

ब्याख्या-सर्वकार्येषु कार्यकर्तुश्चन्द्रो गोचरादिबली विलोक्यत इति शेषः । यदुक्त--

तस्य दर्शने । अय भावः-यदैतानि कार्याणि रुग्नबलात् क्रियन्ते तदैषां ग्रहाणामुदिता्वेन वा रुग्नस्थात्वेन वा रुग्नाधिकृतषङ्घेगांधिपत्वेन वा केन्द्रीप-चयस्थत्वेन वा घड्विघादिबळाळड्कुत्वेन वा सवळत्वं लभ्ने कार्यं, कार्यंकतुंश्वेषां गोचरबलं प्राह्म । यदा तु सुहूर्तमात्रबलात् कियन्ते तदेषां गोचरबलं

ज्ञोऽखिले फलदो राशावादावादित्यमंगलौ । मध्ये सुरासुराचायौँ पान्ते त्विन्दुशनैश्वरौ ॥ ६७॥

नारहोरादि च प्राद्यम् ॥ अथ राशानागतः को प्रहः कदा फलद इत्याह---

आदाविति आद्यदेष्काणे । सध्ये हति द्वितीयदेष्काणे । प्रान्ते हति तृतीयद्रेष्काणे । इद च सहजगती वर्तमानानां ग्रहाणामुक्तं । यदा तु वक्रणाति-ब्याख्या.─फळद इति शुभगोचरस्थः शुर्भ फळ दत्ते, अशुभगोचरस्त्वशुभभिति भाव.। राशाविति यस्तेन स्वयमाझान्तोऽस्ति तस्मिन् " पक्षं १ दशाहं २ मासं ३ च दशाहं ४ मासपञ्चकम् ५ । वक्षेऽतिचारे भौमाद्या. पूर्वेराशिफलप्रदाः ॥ १ ॥ " इति कछः । " वक्रऽतिचारे भौमाद्याः पूर्वराशिफलप्रदाः । जीवः शनिश्च यत्रस्यौ तस्य राशे. फलप्रदो ॥ १ ॥ " विशेषस्तु— अत्र पूर्वराशीति वक्ने सत्यप्रेतनराशेः अतिचरितास्तु पाश्रात्यराशेः फल दद्तीत्यथेः। प्रश्नप्रकाशकरस्त्वाह— चारेण वा प्रहा राज्यन्तरं गता स्युस्तदेवम्-

सदा बहेद्रिहुम १ हेम २ सुन्ता ३ रूप्याणि ४ लोहं ५ च चिराटजं ६ च ॥ ६८ ॥ अक्रियो १ र्जस्य २ ग्रुरोः ३ सितेन्द्रो ४ मैन्स्य ५ राह्ररगयो ६ अ तुष्टये। सदापि चैव न निवेहतीत्यत- स्तच्छान्तिकमाह—.

भत्र रात्रयन्तोऽन्त्यत्रियाशरूप. ॥ विरुद्धे प्रहगोचरे पुता विशिष्य सत्कमैनिरतेन भाष्य, सुदूरयात्राहयवाहनविकाळचयौसाहसाद्धि च स्राष्यं,

" राश्यन्तगत. खेट. परभावफंड ददाति पुच्छासु । अन्त्यघटीं यावद्सावासीनफङं विचाहाद्रो ॥ १ ॥ "

हनं कियते ? उच्यते-तयोदिंनाधिपत्याद्यभावोऽस्तु, ग्रहत्व त्वस्येव, राह्यादिचारस्याञ्जुपपतेः । राहुगोचरश्च ग्रहणदिने विचार्यः इत्युक्तं, तत्तस्तदा सर्वेदा विचार्य गोचरफलमुक्त, दिनमासवर्षहोराधिपत्यमच्येपामेव, तत्कथं राहुक्तेत्वोग्रेहत्वं, कथ वा तयोः प्रतिकूलगोचरत्वं, यच्छान्त्यर्थं विराटजादिव-ब्याख्या—िनिद्धमादीनां पण्णां पूर्वार्धस्थेरकारियोदियादिषदें योग. । उरग केतुः । निराटजो राजावर्तमणिः । नमु सप्तानां महाणां तस्प्रतिकूकत्वे तच्छान्तिकसुपयुज्यते । केतुरिं यद्रीदित. स्थातद्रा तदुरथारिष्टशान्तये तच्छान्तिकस्योपयोगः ॥ तथा— पूषादिनोषाय च पद्मराग १ मुक्ता २ प्रवालानि ३ सगाहडानि ४।

सपुष्परागं ५ कुलियं ६ च नील ७ गोमेद ८ वैद्भये ९ मणीम् बहेत ॥ ६९ ॥ एलाञिलापद्मक्यष्ट्युश्रीरसुराह्नक्स्मिरजशोणपुष्पैः ब्याख्या—स्पष्टा ॥ तद्धमेव स्नानान्याह—

अर्से विधौ कैरवपञ्चगड्यैः, सर्शावश्चारिकस्तियदानैः । ७०॥

ब्याख्याः—शिला मनःशिला । यष्टिर्यष्टीमधुराह्वो देवदारुः । शोणेति रक्तकणवीरपुष्पैरिति । स्नायादितिपदेन न्निसप्ततितमघुत्तस्येन सह योज-

नीयमिदं। भात्रश्रायं–एतानि जलमध्ये प्रक्षिप्य मंत्रपूर्व स्नानं कार्यं रविवारे। एवमग्रेऽपि तत्तद्ग्रहस्य वारोऽसुक्यः। पञ्चगव्यं चेतं पराशरोक्तम्– कृष्णाया गोमयं मूत्रं नीलायाः कपिलाघुतम् । सुरमेदंघि शुक्कायास्ताम्नायाः क्षीरमाहरेत् '' ॥ १ ॥इभानां दानंः मदवारि ।

भौमे बलाहिंगुलबिल्बकेसरैमस्या फलिन्याऽक्षणपुष्पचन्द्नैः।

ज्याख्या—बलेति बरुधान्यं । बिल्वेति बिल्वफुरं । केसरो बकुल्द्वः । मांसी सुरमांसिनाम्नी । फेलिनी प्रियंगुः । अस्णपुष्पं । जपकुसुमं जीवे सजातिकुसुमैः सितसंषंपयष्टिमछिकापत्रैः। मूलफलकुकुमैलामनःशिलाभिस्तु देखगुरौ ॥ ७२ ॥ क्रिष्णितिलाञ्जनलाजैः शतपुष्पीरोधमुस्तकबलाभिः। तर्गणितनये च गोचरविरुद्धराशिक्षिते स्नायात् ॥ ७३ ॥

ब्याख्या—मछिकेति विचक्तिकपत्रै:। मूलफलेति बीजपूर्या इति वसिष्ठः॥

चन्द्रमं रक्तचन्द्रमं । मूकफलेरिति नारंगस्येति बसिष्ट: ॥

व्याख्या—अञ्जनं सौवीराञ्जनं । लाजा ब्रीहिधानाः । शतपुष्पीति सोअ। नाम । भास्करस्तिवद्मप्याह्य—

सुवर्णमुक्तामधुगोमयाक्षतेः, सरोचनामूलफलेबुधे पुनः॥ ७१॥

श्रतिक्रुं

ग्रह्मल-

" सप्रयंगुरजनीद्रयमांसीकुष्टळाजसितसर्षेपचन्द्रेः । वारिभिः सह वचैः सह रोप्टेः, स्नानमन्ति निखिळत्रहपीडाम् " ॥ २ ॥

"रनं १ सेयं २ रनं ३ नीलं ४ पीअं ५ सिअं ६ तिसु अ किन्हं ९ । पूअं वर्लि च कुजा स्राईणं विरुद्धाणं"॥१॥ इति हर्षप्रकाशे॥ ॥ इति गोचरद्वारम् ॥ ६ स्नान च मुपाद्रीनामेबोचितं । अन्यो जनस्तु---

|| || ||

तिच्छप्याथ्यचहेमहंसरचितस्यारंभिसद्धःसुधी-श्रङ्गाराभिघवातिकस्य किछ दक् २ संख्यो विमशौऽभवत् ॥ १ ॥ हाि अमिति आरंभसिद्धिवातिके राशि १ गोवर २ परीक्षात्मको श्रीसुरीश्वरसोमसुन्द्रगुरोनिं शेषशिष्यात्रणी गच्छेन्द्रः प्रमुरत्नशेखर्गुरुद्देंदीप्यते साम्प्रतम् द्वितीयो विमर्शः संपूर्णः ।

डितीब विमयें ग्रहपील-हरता-नम् ॥

## ॥ तृतीयो विमर्शः ॥ ३

॥ अथ कायेद्वारम् ॥ ७

कार्य वितारेन्द्रबलेऽपि युष्ये, दीक्षां विवाहं च विमा विदध्यात्। अथ कार्यद्वारमाह—

पुष्यः परेषां हि बलं हिनस्ति, बलं तु पुष्यस्य न हन्युरन्ये ॥ १॥

ब्याख्या—कार्यं प्रसावास्तौम्य । वितारेन्दुबलेऽपीति गोचरेणाष्टकवरोण वा विरुद्धे चन्द्रे, जन्मप्रसरानेधनादितारासु चेत्यर्थः । सतारेन्दुबले तु विशेष्येति भावः । अपिशब्दात पुष्यः, पञ्चरेखे सप्तरेखे वा चक्रे दुष्टप्रहेण विद्धो यदि स्वात्, पापप्रहेणाक्रान्तो वा भुक्तो वा भोग्यो वा, पश्चिमायां प्राज्ञानोपन्यनविद्यारंभश्वेतवस्त्रपरिपानादि सर्वं ग्रुभकार्यं कुर्योदिति रत्नमालामान्ये । दीक्षां च विवाहं च विनेति उपरुक्षणत्वात्क्रम्यावरणाद्यपि पुष्ये न कार्थं। पुरा किळ प्रजापितः पुष्पनक्षत्रे प्रेयसीमुद्दवनान्, नक्षत्रानुभावादतीव कामास्यो पीडितह्यां सोद्धमशक्नुवन् ''आ: पापाऽतः परं विवाहकार्येष्व-

दक्षिणसां वा गमनेऽन्तरा परिवदंदपातेन त्तिविषपरीतो वा तदापि, पुष्ये चन्द्रयुक्ते सति पुष्यस्योद्धयसमये, पुष्यसक्के सुहूर्ते वा, प्रतिष्ठायात्राक्षीराज्ञ-

षकत्वादेव दीक्षायामप्यनधिकारी पुष्य इत्यूधं । परेषामिति कुतिथिकुवारकुयोगादीनां । अन्ये इति वारितध्यादयः । ते किल यथा पुष्यस्य बलं न नधिकारी भूया" इति पुष्यं शस्त्राम् इति श्रुतिः । उक्तञ्च विवाहवृन्दावने—"पुष्यः स पुष्यत्यतिकाममेव, प्रजापतेः प्राप स शापमसात् " कामपो हिन्युक्तथा प्रहवेधविरुद्धतारत्वादिरूप पुष्यस्य दोषमपि न हम्युः । पुष्यस्तु स्वयमेव स्वदोषं हम्तीति भावः । अत प्रवाहुः---" सिंहो यथा सर्वेचतुष्पदानां तथेन पुष्यो वक्तवानुह्नाम् " ॥ अथ कार्यमेदान्नभन्नाणां भेदमाह—

पुष्यबल गणनम् ॥ तुनीय विम्जे

ब्याख्या—कमेस्बित बहुवचनाद् दुर्गप्राकारतोरणोच्छ्यारामतिधिषद्दाभिषेकादिष्वपि ॥ सामान्येन कार्यमुक्तवाऽथ स्वस्वस्थाने नामप्रकाझनपू-ऋत्वाद्यद्यनतुष्टयवर्जी विषमासु रात्रिषु न योषाम् । सेवेत युजकामः पौष्णमघामूलभेष्यपि च ॥ ५॥ चतुथ्यों जायते पुत्रः स्वल्पायुर्गुणवर्जितः । विद्याचारपरिभ्रघो दरिद्रः क्लेशभाजनम् ॥ २ ॥ " विषमास्विति । यतः— " निशाः पोडश नारीणामृतुः स्यात्तासु चादिमाः । तिस्नः सर्वरिष त्याज्याः प्रोक्ता तुर्यापि केनचित् ॥ १ ॥ " यतः— तियेङ्मुलानि चादित्यं मैत्रं ज्येष्ठा करत्रयम् । अभ्विनीचान्द्रपौष्णानि कुषियात्रादिसिद्धये ॥ ३ ॥ अधोम्जलानि पूर्वाः स्थुभूलाश्लेषामघास्तथा । भरणीकुत्तिकाराधाः सिद्धयै खातादिकर्मणाम् ॥ २ ॥ कध्वस्यान्युत्तनाः पुष्यो रोहिणी अवणत्रयम् । आद्रो च स्युध्वेजच्छत्राभिषेकतक्षमम् ॥ ४॥ ब्याख्या — आदिपदाद्वापीक्रुपतटाकपरिखादिखनननिधानोद्धारक्षेपछूतविचरप्रवेशधातुकर्मेनुपविप्रह्याणितार भादृीनि न योषामिति निषेधमुखेनोक्तिवनगुप्तिसत्यापनार्थं । एवमग्रेऽपि निषेधमुखोक्ती विचार्यं पौष्णेति, उक्तञ्च— " समायां निश्चि पुत्रः स्याद्विषमायां च पुत्रिका।" ज्याख्या---आदेरस्रगजगवादितियेग्द्मनवाणिज्यनुपसन्धिप्रबहुणनीकमेशव टरथयत्रप्रवाहाडीति ॥ व्याख्या ─वर्जीति । उक्तञ्च विवेकविकासे — र्वेमुपयोगिनः कियतोऽपि कार्यविशेषानाह—

" रत्नानीच प्रशस्तेऽहि जाताः स्युः सूनवः शुभाः । अतो मूलमिप त्याज्यं गभाधाने शुभार्थिभः ॥ २ ॥

'' गमोधाने मघा वज्यी रेवत्यिप यतोऽनयो । पुत्रजन्मिदिने मूलान्केषे स्तस्ते च दुःखदे ॥ १ ॥ ग

अत्र मूळाक्षेपे स्त इति '' आधानाइशमे जन्मेति " वचनात् ।

मूल विचारः॥

" अविग्वियाद्दकालाम्च पित्वन्द्रवर्ले सदा । सीणां सीमन्त उद्घाहे प्राह्यमन्यत्र तत्पतेः ॥ १ ॥ '' इति ब्यबहारप्रकाशे विषकौमारजन्म स्याद् द्वितीयाद्यानिसापैभैः। सप्तम्यारद्यातक्षेश्च द्वादद्यकाभिभैस्तथा॥ ७॥

Hees!

" विषकन्याख्या प्रथमं पित्रोवैशक्षयंकरी । हन्ति पश्चात् पति श्वश्चं श्वशुरं देवरं तथा ॥ १ ॥ " व्याख्या—प्रमिथयोक्ततिथिवारभयोगेजांतं विषापत्यं स्थात् ।

विशेषस्तु—अभिजिति क्रत सर्वै कार्यै द्यमं स्थात्, जातमपत्य तु प्रायो न जीवतीति व्यवहारप्रकाशे ॥ मूळजाताद्याश्रिसाह— मूलस्यांहिचतुष्मे पित् १ मात् २ द्रव्यनाश ३ सौंख्यानि । बालस्य जन्मिन स्युः कमतः सार्पस्य तूरकमतः ॥ ८ ॥ ब्याख्या—सौख्यानीति, वराहस्तु मूलतुषेपादफलमेवमाह—

इदं तात्कालिकजन्मलमे विचार्य । अत्र क्षेत्राधिपेति तदानी यत्र राशी चन्द्रोऽस्ति, तद्राशीशो यदीन्दुं पश्येत्ता मुलतुर्यपादजो नुपः स्यात्, " क्षेत्राधिपसंद छे राशिनि नुपस्तत्मुहस्त्रिरथैपतिः । द्रेष्काणांशकपैवी प्रायः सौम्यैः शुभं नान्यैः " ॥ १ ॥

तद्राशीशस्य सुहदः पश्येषुस्तदाऽर्थपतिः स्यात् ; चन्द्राज्ञान्तस्य देष्काणस्य नवांशस्य वा स्वामी यदि सौम्यश्रन्द्रं पश्येत्तदा शुभं कृरेण स्वश्चभ-

" मुलस्यांहिचतुक्के क्रमेण पशुनाशिनी १ सुखकरी २ च ापितृपक्षमध क्षपयित ३ मातुलपक्षं च ४ जाता स्त्री ॥ १

मिति । बारुस्येति, केऽप्याहुः—

"सापींशे प्रथमे राजा, द्वितीयांशे धनक्षयः । तृतीये जननीं हन्ति चतुर्थे पितृघातकः" ॥ १ ॥ मूब्युरुषमाह— मूधों ५ स्य ५ स्कन्ध ८ वाहा ८ कर २ हृदय ८ कटी २ गुह्य १० जानु ६ ऋमेषु ६,

मुलजात

बालक्छत्री १ पितृघो २ डंसलद्दब्बलबान् ३ राक्षमो ४ ब्रह्मघाती ५, स्युर्धेट्यः पञ्च पञ्चोरगकरिकराष्ट्रद्विद्मकतनकाः।

1180811

ब्यास्या—स्कन्धेति द्वयोः स्कन्धयोः प्रत्येकं चतस्रश्रतस इति बव्यष्टकं द्वेधीक्रत्य स्थाप्य, एवं करजानुपादेखापे। अन्यन्नापि यथायोगमूद्यं। राजा ६ नाशी ७ स्वसीक्यावह ८ इह चपले ९ नभ्वर १० आसु जातः ॥ ९॥ अंसलद्ददयलवानित्यखद । आसु मूर्धोदिन्यस्तपञ्चादिषदीपु । केऽप्याहुः—

राज्यधर. २ अल्पायु: १० सुखी

मूल-पुरुष कट्यां

स्थापना

पितृहन्ता स्क्रम्थिलः |हेस.

गुराजातो धनं हत्याद् वृद्धत्वे च सुली भवेत् ॥ १ "ब्रह्महत्याकरः पाणौ यद्वा मातुलघातकः ।

न जीवेद्वामजंघायां पान्यो वा जायते नरः

दक्षिणस्यां तु जंघायां जातकः स्यान्महाधनी ॥ २ ॥ ''पात् १ स्तम्ब २ च्छछि ३ शाखा ४ दळ ५ कुसुम ६ फले ७ स्युः शिखार्या ८ च घट्यो, क्रच्यांजीवति वामेऽही दक्षिणे धनपुण्यवात् । " इति, अन्ये मूर्छ बुक्षरूपमेवमाहुः--अल्पायु:

**||}0}|** 

<u> </u>	र्जी वतीय	海海
<del></del>	<u> </u>	110, 5
	٠	
-		
मूलद्रोवर्धि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवे ९ प्त ५ क ६ रुद्र ११ प्रमाणाः ।	महा १ थे २ आह ३ मातृम् ४ क्षपयित पतिति ५ प्रोडमजी ६ जुपन्न ७,	स्यादेनासु प्रस्तः श्रयति कृशतरं चायुरेतिच्छिखायाम् ८॥ १॥

AL

मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ द्यक १० नवं ९ प्य ९ % ६ ६ ५ ५ ५ ५ ५ भारा १ थे १ आतु ३ मातृन् ४ क्षपयिति पतिति ९ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रस्तः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ मूळ्युक्षस्थापना— किचिच्छलायां परमायुराहुः । शालान्तरे तु मूळनराद्विपरीतोऽश्वेषानरोऽप्येवमूचे, तथाहि— केचिच्छलायां परमायुराहुः । शालान्तरे तु मूळनराद्विपरीतोऽश्वेषानरोऽप्येवमूचे, तथाहि— केचिच्छलायां परमायुराहुः । शालान्तरे तु मूळनराद्विपरीतोऽश्वेषानरोऽप्येवमूचे, तथाहि— केचिन्छल्वायां परमायुराहुः । शालान्तरे तु मूळनराद्विपरीतोऽश्वेषानरोऽप्येवमूचे, पञ्च जान्दोः पञ्च गुदेऽष्ट च ॥ १ ॥ ''अश्वेहातिः । अर्थहोताः । आदी पाद्द्वये पञ्च जान्दोः पञ्च गुदेऽष्ट च ॥ १ ॥	1-96-429	<b>;</b> ;	-36-7	K
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 				
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 				:
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 	*		=	1
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 			∾′	:
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 			=	
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 			वा	
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 			S	(
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 		ا	CEP CEP	(
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 		थाहि	197	5
मूळद्रोवाधि ४ सप्ता ७ एक ८ दशक १० नवं ९ प्व ९ ५ ६ ६५ १६ अपाता मूळा १ थे २ आहा ३ मातृन् ४ क्षपयित पतित ५ प्रौढमंत्री ६ सुपश्च ७, स्यादेनासु प्रसूतः श्रयित कृशतरं चायुरेतिच्छलायाम् ८ ॥ १ ॥ 	•	عا	4	•
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 		但	可少	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	6	Zal		
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	オ シ ・ by	7	ļ tre	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	> <del>E</del>	1	4	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 		XX G	द्भ	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	من سد ال	4	<u>'</u>	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	= 13.	4		
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	ال قال مو	4	न् क	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	म यं व	1	<b>8 8</b>	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	त प्रमुख्य भाषा	Ė	F .:	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	व नी	f	12 CE	,
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	मी च म	1	F 1	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	や市内		<u> </u>	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	न देव अ	I	हु क	
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	10 m 14	•	- :: 큐	•
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	Ela K			,
मूलद्रोवाधि ४ सप्ता ७ घ मूला १ थे २ आद ३ मा स्यादेनासु प्रसूतः श्रयति 	स्त्री मु			,
में भूखें स्यादेः स्यादेः	과 타 교		प्र वि	,
में भूखें स्यादेः स्यादेः	Z w Z	•	या	; 1
में भूखें स्यादेः स्यादेः	अस गत्		ङ्खा द्या	
में भूखें स्यादेः स्यादेः	3 . 10	(	<u>य</u> व	:
में भूखें स्यादेः स्यादेः	T OF IT	6	H VX	
में भूखें स्यादेः स्यादेः	E SO E		, w	,
+ + + H   E (E	四十二			_
मूल्ड्सस्यापना-   ४ मूलपात   ७ मूलपात	मूल मूल	۱ ,	20 Å	:
मूलकृक्षस्यापः		#	नात इ.स	֭֡֡֜֜֜
े के किया के कि		44	हुँ भ <u>ु</u>	5
E du		मुस्	20 9	
		ें भ	. A	- ,

	74	
•	=	
:	巨	
5	<u> </u>	
0		_
<b>,</b>	10	9
7	4	٥
''अश्लेषाघटिकाषष्टितं स्थाप्या नराक्षांतः । आद्। पाद्द्यं पञ्च आप्याः पञ्च अर्जं ः ः	भुते। स्नन्धयोदेशकं वक्त्रे षट् शीषे षडितिक्रमात्॥	
=	RA V	) (C
J	D.	16
5	150	U.
Ħ	( <del>b</del>	ħ
7	•1c	k
3	हें दे	٥
19	200	٠ţ
7	व	
पु	8	2
ক	₩	٨
_	栖	
힏	(H)	
60	पः	•
4	hos	٠
Ħ	4D	
7	X	1
R W	5	
io.		U
ارا. العاً.	বা	1
विग	A Too	(
6	नाभावधी हिद हो च पाण्योपधी हयं भुने।	
Ŧ	he	
4	721	
Æ	<u>व</u>	
ति	<u>ਜ</u>	
<i>-</i>	16	

आतृनाशः

शाखायां

राज्याप्तिः

स्वल्पायुः

शिखायां

द्वयं भुज । स्कन्धयादशक वनत्र पट् साप पडारागार	_	
7	9	
, 	मति १ भ्रमः २ ससं ३ ज्याघी ४ गज्यं ५ हत्या ६ च देखता ७।	۳ ۳
10	þ	=
<b>5</b> •	س	HH
6	हत्या	श्याक
श्र	حو	برا. برا
2	द्धः	10
भवन	4	. 1
8	30	٥
-	ह्य	٥
Ę,	इ	Į
দ	W	"'' ر
tus	<u>.</u>	, <u>t</u>
P	n.	
ख	ï	Li.
5	C T	;
힉	~	٠
हिद्यों च पाण्योर्धो	45	. 4
你		

		_
	स्कान्यकः ८ 1५८६। २ १५॥ १ । । । । । । । नवरं घटीक्रमस्तन्नापि मूक्युक्षवदेव । एवमेच मकवृक्षाद्विपरीतोऽश्क्रपाबुक्षोऽपि शास्त्रान्तारोक्तोऽभ्यूद्धाः । नवरं घटीक्रमस्तन्नापि मूकवृक्षवदेव ।	शासाया  ६   मातृनाशः
	to	0
	सुव	
	यन	बाद
-	# 6	1
) -	中	-
<u> </u>	स्रभ	Ì
n w	<b>5</b> H	
p =	<u>स्</u> रि	İ
田田	- 10 - 10	-
원	ग्व	द्व
हित	_	100
ي. حو	E.	शिखाया । ४   स्वरूपायुः
की द्व	Sta	20
3. F	便	_
30 E	न्तर	खाउ
घ		Ų.
जी हो	<b>a</b>	ــــا ۱۰
W A	Sवि	
ু আ	(R)	-
तं त्यं	रहे पानु	-
30 (		
· 其	に	į
	5 H	
J= 4	क्षा है	
मृति १ भ्रेमः २ सुखं ३ व्याधी ४ गज्य ५ हत्या ६ च दलता ७ ।	त्य भ लब्	
	H -	
	मुब	
	5	,

•		o ≥
ථ	<b>6</b>	<b>29</b>
आतृनाशः	अर्थहानि:	मूळनाशः
51	w	2
अश्ववानुस विशि	स्थुड़े	स्थापन। मूछे
ग्रह्माप्रि:	मंत्री स्वात	मृत्युः
, ,	) \ <u>`</u>	, °
	e (†	पूत्र है

हत्याकृत् देव

पितृप्तः राजा

स्कन्धयोः

स्थापना

राज्य

त्यु नाम्मे ब्रुक्

अमणं मुखं ब्याधि:

अश्चेपानर-

पादयो: जान्वो:

<u> </u>	
~	
12-96	

फलमूचे, तथाहि--

विवेकविकासादी तु मूकाक्षेषयांमेहाँ नैः

" आदाः षष्ठस्त्रयोचित्रो दितीयो नवमोऽष्टमः । अष्टाद्शश्च मूलस्य मुहूर्ता दुःखदा जनौ ॥ १

त्रयोविद्यपञ्चविद्यो द्वाविद्योऽष्टत्रयोद्यो । पकोनत्रिद्यात्रिद्यों न सार्वे स्युरधुभाः क्षणाः ॥ २ ॥" कुत इदमेवमिति चेदुच्यते-एषां सुहुत्तोना कृरस्वामिकत्वोक्ते., तथाहि---

राक्षसो१ यातुषानश्चर सोम.३ राज्ञः४ फणीश्वरः५ । पितृ६ मातु७ यमाः८ कालो९ वैश्वदेवो१० महेश्वरः११ ॥ १

इंश्वरो२० विष्णु२१ रिन्दाणा२२ पवनो२३ मुनय२४ स्तथा । षण्मुखो२५ भूगिर्राटा२६ च गौरा२७ मात्त२८ सरस्वती२९ ॥३॥

प्रज्ञापतिश्च३० मूलस्य जिशामुह्ननेनायकाः । विपरीताः पुनर्षेया अश्वेषाज्ञातवालके ॥ ४ ॥ त्यजेन बीक्षेत समाष्टक वा, बाल पिता मूलांबकारशान्त्य।

शतोषधीमूलमुदम्बुरत्नेः, स्नायाच हुत्वा सांश्राश्चप्रसूकः॥ १०॥

सास्यदेवः१२ कुवेरश्र१३ शुक्रो१४ मेघो१५ दिवाकरः१६ । गन्धर्गो१७ यमदेवश्र१८ ब्रह्मविष्णुमयस्ततः१९ ॥ २ ॥

'विष्कंमादिकुयोगेषु कुलिके सत्रिपुष्करे । संकान्तौ दुदिने निष्टो मुळाश्लेपाजयालके॥१॥ गणकेनैच कर्तन्य पेष्टिकं मूळसाप्योः"इति॥ तज्ञनन्या च सह सायात् । अश्लेषाजातेऽप्येवमेव, नवर तत्र सोवर्णसर्वेष्ण सहोत सेय । एतच म्लाश्लेषाविधान सिनस्तर गृहस्थधमेसमुचयादि-ब्याख्या—त्यजोदिति स्वमुहादिति शेषः । समा वर्षाणि । शतीपथीति मुरुशतमृत्तिकासप्तकयुततीयोदकपञ्चरत्ने: साहचयाैत् पञ्चगन्यदृन्तिमद्-सथीसकपायपञ्चकसभैपिधियुर्तः सोचर्णमूळनक्षत्रेण राक्षसरूपेण सह शतच्छिद्रकुम्ममध्यक्षितेरतज्ज्ञोक्तविधिन। हवनपूर । सशिद्यप्रसूक इति मूळजातिशिद्याना प्रन्येपुक्तमपि बहुमावदात्रोह प्रतन्यते । बहुसावद्यारंभपातकभीरुणा तु मूलाभ्छेपाचाते बाङके सांत, सर्वनक्षत्रभोकनुनवग्रहसततसेब्यमानपादपीठस्य श्रीमदृहंतो विशिष्य च, मूलनक्षत्रज्ञातस्य श्रीसुविधिजिनस्याष्टोत्तरश्तियिविधिना शास्त्रोक्तेन समहोस्तत्र स्नात्र कार्यं। एवमि सकळझुद्रोपद्रवोपशमस्य

सर्वेत्र साक्षाद्दर्गनात् । अत्र कंऽप्याद्वः--

जन्मादो नक्षत्रमेदानाह—

= R0 2 | कुलभान्यभिनो पुष्पो मघा मूलोत्तरात्रयम्। दिदेवत स्गश्चित्राक्रांतिकावासवानि च ॥ ११ ॥ उपक्रत्यानि भरणी ब्राह्मं ध्वित्रियं करः। ऐन्द्रमादित्यमञ्छेषा वायन्यं पौडणवैष्णवे ॥ १२ ॥ न्यास्या-नैरणनं अनणम् ॥

पूपकुल्वेषु जाता अन्यसेवकाः स्युः, युद्धे च याथिनां जयः, नागराणां पराजयः, येन प्रथमं यात्रोधमः कृतः स यायी, येन पश्चात् स नागरः ॥

कुलोपकुलभान्याद्रिभिनिन्मैत्राणि वारूणम् । फलन्त्येतानि पूर्वोक्तद्वयसाघारणं फलम् ॥ १४ ॥

गुवैक्तिकिन्दवः कुत्या उपकुत्यः कुजः सितः। तमश्राथ बुधे मिश्रस्तत्र नक्षत्रवन्फलम् ॥ १५॥

वाराणां कुल्यादित्वमाह---

ड्याख्या—स्यायिनामिति गुपु मेषु यदि युद्धं स्यातदा स्वस्थानस्य राज्ञो जयः स्यात, चटित्वाऽऽयातस्य तु राज्ञः पराजयः स्यात् । अन्ये-

पूर्वेषु जाता दातारः संप्रामे स्थापिनां जयः। अन्येषु त्वन्यसेवाती यायिनां च सदा जयः ॥ १२॥

विचारः ॥

ब्याख्या--तमो राहुः । अयं वारत्वाभावेऽपि ग्रहग्रमङादूचे । मिश्रः कुलोपकुलः । केचित्तिथिवारवेलाराशियोगेन कुत्यत्वमाहुः, तथाहि---" सूर्यास्ते शनिवारे तु पूर्णा स्यान्नक्रमीनयोः ५। कुळजास्तिथयो वारे वेळायां रात्रिषु क्रमात् ॥ ३॥"

"चापसिंहघटानां च मध्याहे वाक्पतो जया३। विषिग्वृपभयो रिक्ता त्रियामान्ते भुगोदिंने४ ॥ २ ॥''

अत्र यामे इति प्रहादिनचटनसमये इत्यथं: ।

त्रियामान्ते इति तृतीयप्रहरप्रान्ते ।

प्रियोगेजाताः क्रब्यास्तत एव चोत्तमाः स्युरित्यागयः ॥ रविनरमाह—

" स्याँद्ये कुजस्याति नन्दा चुश्चिकमेषयोः १ । कुलीरयुग्मकन्यानां भवायामे बुधाहनि२ ॥ १ ॥"

18021

मूर्यो ३ स्यां ३ स २ भुजा २ नरो २ र ५ उदरा १ थोभाग १ जानु २ नमे ६- ह्विशित्रिद्यमद्विपश्चकुकुहत्त्तमेषु भेष्वकैभात्। भूपः १ स्वाद्वशनो २ ऽंमलो ३ ऽधिकबल ४ श्रोरो ५ धनी ६ शिलवान् ७,
र स्यां ३ स २ भुजा २ करो २ र ५ उदरा १ थोभाग व्विप्रिज्ञिद्वियमद्विपश्चकुकुद्दत्तकेंषु मेव्वकैभात् स्वाद्वशनो २ ऽनलो ३ ऽधिकबल ४ श्रोरो ५ धनी
グーとうってたつか

||Yo \|

धनवान्

रविचन्ने क्रमेणेवमायुह्मयं विचस्रणेः ॥ २ ॥ गुन्ने पप्टिस्तथा जान्वीरष्ट षट् पाद्योस्तथा । " शतं मूर्धि मुखे स्कन्धे चाशीतिभुजहस्तयोः सप्तसप्तिवर्गीण हन्नाभ्योरष्ट्रषिष्टका ॥ १ ॥ । १ | सुशीलः १ | परदाररत १ | बिदेशगमनः मिक्षाचरः

स्याजातकर्म चरलघुमदुधुवसेंष्वमीषु नामापि । तचाविरुद्धमुभयोयोंनी१ गण२ राशि३ तारका४ वेंगः५॥ १७॥

पादयो.

जातकर्माद्याश्रित्याह—

स्थापना

रविनर-

स्मिन्धिल•

ब्याख्या--जातकमे पद्यीजागरादि । चरेत्यादि पुपु चन्द्रयुक्तेपु वा एगामुद्यममये वा एतत्सवनिषपु मुहूर्नेषु वा कार्यं । अस्मिन् प्रकारम्रथे-

ऽपि पूर्वपूर्वस्यालामे, उत्तरीत्तर. प्रकार आदरणीयो न खन्यथा । यदुक्त न्यबहारप्रकाशे—'धिष्ण्यानां मीह्रानिकमुद्यात् शीतरिमयोगाच अधिकवकं

यथोत्तरमिति "। यदि च तदेव दिनम क्षणेऽपि च तस्यैव कार्य क्रियते तदा श्रुभतरं यच्छीनक'---

" नक्षत्रचनत्स्रणानां वलमुक् डिगुणितं स्वनक्षत्रे " इति ।

बाहुद्वये स्थानअष्टः स्थादेलपि क्वचित् । विशेषस्तु—

ब्याख्या—अर्कमादित्यक्रीक्रान्तम रविनरस्य मूर्धिन दरवा, क्रमाजातकस्य जन्मभ यावद् गण्य ।

जारः ८ स्यात्पधिकश्च ९ भिश्च १० रिप चीत्पन्नः जमाद् बालकः ॥ १६ ॥

एवं सर्वकार्ये भेषु वाच्यं । अमीष्यिति नामाप्येषु स्थाप्यं । उभयोशिति प्रस्तावाह्म्पत्योः गुरुशिष्ययो। स्वामिभुत्ययोश्रेत्याध्यम्— उडूनां योन्योऽत्य १ द्विप २ पशु २ मुजङ्गा ४ हि ५ शुनको ६-अत्राष्टाविद्यतेमानां योनीराह—

त्व ७ जा ८ मार्जोरा ९ खुद्रय १०-११ वृष १२ मह १३ ज्याघ १४ महिषाः १५।

1180811

तथा ज्याघ्रे १६ मे १७ म १८ भ्य १९ किम २० नकुलद्वन्द्व २१-२२ किपयो २३,

हिरि २४ विजी २५ वन्नावलिरियु २६ रउनः २७ कुजार २८ हिति ॥ १८॥

ब्याख्या--योन्य इति उत्पत्तिस्थानानि, प्रताश्र गुरुशिष्यद्ग्पत्यादियोगार्थं पूर्वाचार्यैः किष्पता एव, न तु पारमार्थिक्य इति रत्नमाकाभाष्ये ।

ब्याएया—श्वा च म्णश्चति तित्ववैरस्येत्यनेनान्यमते वेरे वाच्ये समाहारद्वन्द्वे श्वेणं, यत्रैकस्य जन्मभस्य श्वा योतिरन्यस्य च मुगयोनिः तयोः

लोकात्त्रथाऽन्यद्विप द्रम्पतिभत्रेभूत्य-योगेषु वैरमिह वर्ष्येमुदाहरन्ति ॥ १९॥

भ्वेणं हरीभमहिबभु पशुप्लबङ्गं, गान्याघमभ्वमहमोतुकमूषक च।

पशुरजः । ओतुमांजारः । द्वयेति मघाषुर्वाफल्गुन्योराखुः । एवमग्रेऽपि ॥ योतिवैरमाह--

श्वेण वैरमिलशः । प्लवङ्गो मकेटः । अन्यद्पीति ज्याष्ट्रेण श्वमार्जारमिलादि । भर्तेम्यन्येत्युपरूक्षणत्वाद् गुरुशिष्यादियोगेऽपि । विशेषम्तु—

" विद्वाय जन्मभं कार्ये नामभं न प्रमाणयेत् । जन्मभस्यापरिज्ञाने नामभस्य प्रमाणता ॥ १ ॥ " तथा —

" ह्रयोजैन्सभयोमैलो द्वयोनीमभयोस्तथा । जन्मनामभयोमैलो न कतेन्यः कदाचन ॥ २ ॥ "

अस्यार्थः--ह्योर्जन्ममज्ञाने त्रयोरेच मेलक्षिन्त्यते। एकस्यापि जन्मभापरिज्ञाने तु ह्योन्मियोरेच चिन्त्यः, परमेकस्य जन्मभमन्यस्य च नामभं

एवं मेलो न विलोक्यः । एवमेव गणराह्यादिसवैप्रकारेषु सेयं । एतौ व्यवहारप्रकाशे ॥ सप्तविंशतेभीनां गणानाह---

||\$08||

**言の**と जान्मेषमिधुनादितः सकाशाद् पधो राव्रिः स्यात्तिक्क शत्रुषड्षमकं राशीशानां मियो वैरसद्रावात् । तत्र यसाष्टमो राशिस्तस्य मृत्युः स्यादिति रक्ष-च्याल्या---यत्र द्वयो राज्ञी मियः पष्टाष्टमौ स्थाता, तयोः षड्ष्टमकाभ्या राशिक्ष्टं, एव द्विद्वादशनवपञ्चमादिष्वपि भाष्य । सृतिरिति यत्रौ ब्याख्या-पितृम मदा, राक्षसं मूळं । स्वयोगिति आत्मीययो. । अतीति आतिश्येन । यज्ञामभयोरेक एव गणः स्वात्, तयोभ्रेशं प्रीतिरि-अभिजिद्विचाधरगणे, इति कचिद् । बिशेषस्तु-मुख्यस्य वरादे रक्षोगगो, गौणस्य च कन्यादेर्नुगणस्तदाष्युभयो: सद्राशिक्टरवे ९ तस्त्वामिमैड्ये रात्रोरोजान्मतिः षष्टे सर्वाः स्पदोऽष्टमे । राशौ द्विहादशे नैःस्ट्यं स्वामिनैत्र्ये पुनः श्रियः ॥ २२ ॥ " रक्षोगणो यदा पुसः कुमारी नुगणा भवेत् । सद्भक्त्र १ खाप्रीति २ थेंनिद्युद्धि ३ स्तदा द्युभम् ॥ १ ॥ " अथ राशिक्ट, रात्रीनां मिथो वैरमैन्यादि चाह— माकाभाव्ये । सपद इति ओजाट्रेन सकाशाद्यमे राशो सति यत्स्यानत्प्रीतिषडष्टमकं रात्रीशानां मिथः प्रीतिसद्भावात् । तद्य भावः— प्रीतिः स्वयोरति, नरामरयोस्तु मध्या, वैरं पलादमुरयोम्नेतिरन्त्ययोस्तु ॥ २१ ॥ स्यान्मानुषस्त भरणीकमलासनक्षेष्र्वोत्तराज्ञितग्रशंकरदेवतानि ॥ २०॥ दिन्यो गणः किल पुनर्षसुष्यहस्तस्यात्यांभ्वनीश्रवणपौष्णम्गानुराधाः " स्वकुले परमा प्रोतिमध्यमा देवमर्थयो. । देवराक्षसयोर्धरं मरणं मर्लरक्षतोः ॥ १ ॥ " रक्षोगणः वित्मराक्षस्वासबेन्द्रांचत्राष्ट्रदेवबरुणाग्रेभुजंगभानि ब्याख्या-कमलासनक्षे रोहिणी, पूर्वाणामुत्तराणा च त्रितयम् ॥ र योनिशुद्धी ३ नाडीवेधशुद्धी ४ च सत्यां सुयोग एव । यद् गर्गः--अन्त्ययोन्स्मा । उक्तज्ञ--

त्तीय विमर्भे नगपञ्चम श्रेष्ठाश्रेष्ठ विचारः॥	\\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
てるしていろべるようでしているからか	99-4-4-4-4-4-4-
गपना यया—  कन्या सिह होकस्य माध्यस्थ्यमितरस्य मैत्री, तमैतानि सप्त ग्रीतिद्विद्वाद्यानि । शेपे खा-  हुटमपि शुभस् हाक्तुष्के स्वामिनोसिशो माध्यस्थ्य तिहिद्वाद्यानि । शेपे खा-  गुप मुक् हुन्य पुर्व हिसांख्युध्योवेर ' इनि मते सिथो वेरे वा, तेनेतानि पञ्च श्रुद्विद्वाद्यानि । शिकिक्रमोऽप्याह—" मिह्नजीविपमराशितो द्वितीयत्वे सति स्युस्तानि श्रुपानि मुक् स्युस्तान्यश्रुभानि, यानि स्युस्तानि श्रुपानि होतीयत्वे सति स्युस्तानि श्रुपानि होतीयत्वे सति स्युस्तानि श्रुभम् स्युस्तान्यश्रुभानि स्युस्तानि श्रुपानि होतानि श्रुपानि होतान्यश्रुभानि सान्द्रिश्चनित्र गंपार्व स्ताराध बाहुष्ट्य सदि । तद्विद्वाह्य स्योत्व नाश्चानां मक्कटं श्रुभदं यदि । तद्विद्वाह्य स्यान्य सुक्तान श्रुपानि सुक्तानि श्रुपानि सुक्तानि श्रुपानि सुक्तानि यावत् । नाडीतारास्वरूप नाधानां मकुटं श्रुभदं मतम् ॥ १ ॥ '' सिह्दिद्वाह्य सुक्ता श्रेपाणि सर्वाणि द्वाद्वान्यश्रुभानीति भूष्ठ	तु ब्यवहारमभारा ॥ अयो मेटयात् परे त्वाहुः कल्छिकान्नवपञ्चमम् । एकन्छक्षे च भिन्नांको अयः शेषेषु च द्वयोः ॥ २३ ॥ अयो मेटयात् परे त्वाहुः कल्छिकान्वपञ्चमम् । एकन्छक्षे च भिन्नांको अयो मेटयात् परे त्वाहः-राशीययोमियो अयार्य क्ष्यहहेतुः। विवाहे स्थपदात स्थापना ए. ११० विलोक्या) यमेशं तु सत्या श्रेष्ठमेत्र । यत्र तेकस्य मेत्री, अन्यस्य तु माध्यस्य तन्मध्यम् । (स्थापना ए. ११० विलोक्या) विशेषस्त—ग्रीनिनवपञ्चमात् ग्रीतिद्विद्वाशकमुनमः, ततोऽपि ग्रीतिषष्ट्यमक । तथा— सेन्यस्य नवपञ्चमत् ॥ १ ॥ " असन्तनस्तु चरो प्राह्मो नासन्ता कन्यका पुनः । सृतेकमातापित्तरं संप्राह्मं नवपञ्चकम् ॥ १ ॥ "
कन्या   मिह   हुडमिप शुभम्   शुक्रम   शुः   मिन   कुम   सीन   कुम   प्तान्यशुभानि   क्के   मिशुन   इडमिशुभत्तस्	हिः किल्किनवपञ्चम् वपञ्चम स्वभावात् कल्हहे किस्य मेत्री, अन्यस्य तु । गत् प्रीतिद्विद्यायक्रमुत्तमः, त
म्पां स्पापना यथा— २ १२ मेप सिधुन सुप सिह सिह कर्क तुला कर्क्य धनु. हुद्शानि श्रेष्ठानि	तु ब्यवहारमभाग ॥ अयो मेटयात् परे त्वा ब्यात्या—कलिकृदिति न यमेशं तु सत्या श्रेष्टमेय । यत्र त्वे बिहोपस्तु—प्रीतिनवपञ्चम
V A VI ACV ACV ACV ACV	ACH ACM ACM AC
आरम्भ- सिद्धेः <b>॥१</b> ०९॥	

क्रिक्ट कर सम्बद्ध स्थान स साधिक स्थान स्था स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य	्र नलाष-
अस्याथेः—यदि कन्याया राशितो गणने वास्य राशिरासको, वरराशितक्ष गणने कन्याया राशिर्देर, एवं सित नवपञ्चमादीनि सर्वाणि ग्रुभानि । सृतैकेति वरकन्ययोमीध्येकस्य मातापितरी सृतो, तदा नवपञ्चम ग्रुभमेवेति नारचन्द्रटिप्पण्यां । एकऋसे चेति ऋक्षशब्दोऽत्र राश्यथे, ततो द्वयोरि यधेक एव जन्मराशिस्तदा नवांशमेदाच्छुभमेव, द्वयोरिपेकं यदि जन्ममं तदा ह न	
प्तानि मध्यमानि	कन्य। सकर
थेप्डानि नवपंचमानि ९ ५ मेप सिंह सृप कन्या मिथुन हुङा	्ते स्थान

" पक्स जायते यत्र विवाहे वरकन्ययोः । मूलवेधस्तु स प्राक्तां महादुष्टफलप्रदः ॥ १ ॥ '' क्षां न्यां अपि च ऋभ्रमान्दो नक्षत्राथेंऽप्याह्ति, तेनैकनक्षत्रेऽपि पादमेदाच्छुभमेव, एकपाद्रिते तु न झुमं । यदुक्तम्--" पक्रनक्षत्रज्ञातानां परेषां प्रीतिष्तमा । दम्पत्योस्तु मृतिः, पुत्रा भ्रातरो वाऽर्थनाशकाः ॥ १ ॥ "

1188011

'' पराशरः स्माह नवांशमेदादेकक्षरात्र्योरिप सौमनस्यम् । ष्कांशकत्वेऽपि वशिष्ठशिष्यो नैकत्र पिंडे किळ नाडिवेघः ॥ ३ ॥ '' शेपेषु च द्वयोशित शेषेपूमयसप्तम १, दशमचतुर्थ २, तृतीयैकादशेषु ३, द्वयोगिप संबन्धिनोः श्रेय एव। रात्र्योरेवात्र मैत्रीसितो न तदीया-'नक्षत्रमेक यदि भिन्नराङ्योरभिन्नराक्योरपि भिन्नमृक्षम् । प्रीतिस्तदानीं निविडा जुनार्योश्चेत्क्रत्तिकारोहिणीवन्न नाडिः ॥ १ ॥ " '' नाग्निदेहत्यात्मतनुं यथा वा, द्रष्टा स्वद्धेने हि द्रीनीयः । पकांशकत्वे समतैव तद्वन्न भतृभायोञ्यवद्दारिनिद्धः ॥ २ अत्र क्रतिकारोहिणीवदिति, यथा क्रत्तिकारोहिण्योर्तिथो नाडीवेघोऽस्ति, तथा नाडीवेघो यदि स्यादित्यर्थ: । तथा--

16881

" राशिक्टे शुमे लब्धे प्रहमैत्रीं न चिन्तयेत्। अलामे राशिक्टस्य प्रहमेत्री तु चिन्तयेत्॥ १॥

योंमेंत्री विचायाँ। यद्गदाधरा---

एकपादत्वेऽपि ग्रुभमेवेत्यन्ये । यदुक्तम्—

तत्रापि स्वासिमैडये एकस्वामिकत्वे च श्रेष्ठतरमेव । सर्वेषामेषां क्रमात् स्थापना यथा-

ततीय विमशे विमशे गुरुशिष्या- देनिडीनः क्षत्रश्रम-	्र   शुभम् ॥	8/	<b>X</b> 6	V.Y.		, a/	10000	
TO TO TO TO THE POST	\(\frac{1}{2}\)	<u>ک</u>		יד פע	ン	200	759	んべと
भन्नोभयसप्तमेषु तृतीयैकादशेषु च स्वामिमैडयविन्ता नास्येव । द्यम- चतुर्थेषु त्वाद्ये चतुष्ट्ये मैत्री अन्त्यद्वयोरेकेशत्व, तेनैतानि षट् श्रेष्ठतराण्युक्तानि । होपाणि पट् स्वभावादेव श्रेष्ठानि । विशेषस्तु—आदो तावन्नयोन्यादिश्चिद्धिंकी, ततोऽपि राश्योर्वश्यस्व वस्त्रमाण, ततोऽपि रात्रीशयहयोमेत्री, ततोऽपि राश्यो. स्वभावमैत्री बस्ति। यदुक्तम्———————————————————————————————————	ं परः पर. पूर्वगर्मा गर्वच्या, हस्ते त्रिवगां युगपछातेश्चत् ॥ १ ॥ '' परं सारामेत्री नाडीवेघशुद्धिश्च सर्वत्र  विलोक्ये प्वेति, ग्रामधारणागति	केऽप्वेतमाहः	' जन्मराशिस्थतो प्रामित्रिषच्डः सप्तमोऽपि वा ।	स्वकाया द्वयनाशाय आपदा च पदे पदे ॥ १ ॥ चत्रशोऽष्ठमको गामे दाक्तो महि क भीका	यत्रेचोत्पद्यते अर्थस्तत्रेवार्थी विलीयते ॥ २ ॥	पञ्चमो नवमो आमो द्वितीयो यदि वा भवेत्।	ं द्शमकदिशश्चव शुभद्ः स फलप्रदः ॥ ३ ॥ "	म् । गुरुशिष्यवयस्यादेने वध्वरयोः पुनः ॥ २४ ॥
9.9 सिंह कन्या तुरुा स्राध्यक्त धन		तुर्धश्रेष्ट	S H	मीन	— कर्क	कन्या बश्चिक	18 -	तं शुभम्
हैं हिल्ला हिल्ला हिस्स स्थान स्थान		द्शमञ	भूव	मिथुन	ासह तुला	धनुः कंम विश्व	पूर्व तस्तवद्धं नाडीवेधमाह-	धिष्ण्यमेकनाडीगतं शुभ
स. श्र		ामचतुर्थश्रेष्ठतरं	٥ چنج نجج	म्	अप । तिहा	कन्या मिथुन मीन घनुः	वाच्यासु पूर्व तासक	डेने धिष्ण्यमे
क्षेत्र मीन भिष्ठन भिष्ठुन				-		खम मीन मी	ED)	वक्र त्रिनाडिक
में		डमयसप्तम	मृष	ज्ञुप निकास		सिंह कन्या	<i>a</i>	IP*
CALACAL ALACALAC	2h~	<b>∵</b> .	- 6C-	41- CY	<b>≥</b> ⊾	<u> </u>	7521	-96-YI
आरम्म- क्रिडे: 11% १९ ::		y 16	. J <del>e</del>	<b>₩</b> \			"	

ब्याएया---नाड्योऽत्र रेखारूपा सक्ष्याः, ततो येषां जन्मभामि नामभानि वा एक्रनाङीगतानि म्युरतेषा नाडीयेघोऽस्ति । मिन्निमिन्ननाझीगतावे '' सुअसुद्धि सेवयसिस्सा घरपुरदेस सुह पगनाडीआ। कन्ना पुण परिणीआ हणइ पइं ससुरं सासुं च ॥ १ ॥ " वयस्यादेरिति, आदिपदात्मभुस्यादिसर्वेद्वयेष्वपि मंबन्धिनोर्मिथो नाडीवेधः ग्रुभः । वधूवरयोरिति, दम्पतियोगे तु नाडीवेधो न ग्रुभः । स नास्तीति भाषः । श्रिमाडिकचक्रस्थापना यथा-

विशेषस्तु--मुनमुहदाद्रीमा नाडीवेषसन्नाये विरुद्धयोनिकभयोगोऽपि न दुष्यति । दम्पत्योनांडीवेधे तु फलमेयम्--

हृन्नाडीवेघतो भर्तेमेंध्यनाडीव्यधे द्वयोः । पृष्टनाडीन्यधे नार्या मृत्युः स्यान्नात्र संज्ञयः ॥ १ ॥ '' आद्यनक्षत्रसंगता या सा क्ष्ताक्षी " पतचकं समालिष्य अभिवन्याद्यंहिपङ्कितः । वेघो दाद्शनाडोभिः कतेन्यः पतिकन्ययोः ॥ १ मधं निरन्तरो येषां दम्पतीनां भवेद्रयथः । तेषां मृत्युने सदेहः सान्तरस्त्यब्पदुःखदः ॥ २ ॥ " " समासन्ने ब्यधे शीघं दूरवेधे चिरेण वा । वेधान्तरभमानेऽत्र वर्षे दुप्रं प्रजायते ॥ २ ॥ " अपि च यदि नक्षत्रचेषस्त्यक्तुं न शक्यते, तदाऽपि पाद्वेधस्त्याज्य एव। उक्तज्ञ नरपतिजयचर्यायाम् —

द्वयेषु गुरुशिष्यादेः प्रीतिहेतोः परस्परम् । त्रिपञ्चसप्तमीं तारां सर्वत्र परिवजेयेत् ॥ २५ ॥ सदा नाज्ञयत्येकनाडीसमाजो, भक्रुटादिकान् सर्वमेदान् प्रशस्तान् ? ॥ भथ तारामेत्रीमाह— सर्वेषां चैषां मैत्रीयकाराणां नाडीवेधो बलिष्ठः । यहुक्तम्-

" पकनोडीस्थिता यत्र गुरुमेत्रश्च देवता । तत्र हेपं रुजं मृत्युं क्रमेण फलमादिशेत् ॥ १ ॥

तथा तत्रेव प्रन्थे दम्पतिवहेवतामंत्रथोगुरुशिष्यथोगे च नाडीवेघो दुष्ट इस्युक्त । तथाहि---

रेति द्वयो: संबन्धिनोर्नासवर्णवर्गो यदि भिधः पद्यमी स्वाता, तदा तदीश्वयोर्जातिबेरसद्माबात्याज्यौ । वर्गेशाश्चेव हर्षप्रकाहो---यथायोगं वाळनीयं शेष च देंगं निर्णेय। यदि तु मिथो लभ्यदेय नायाति, तटा यस्मेंच 'खात्तस्यैन निर्णेय। यथा कणादनव्मीकपोर्ग्रेस्थिययोनोमच-भिर्भागे यष्छेष, तस्यार्थे जाता ये विशोपास्ते आद्याङ्कवता उत्तराङ्कवतो हेयाः, तेन त्वाद्याद्धभ्याः । एव क्रमोक्कमाभ्या यथासंभव लभ्यदेयमानीय शुद्धिश्व नाहिनेधा५ जन्ममे परिज्ञायमाने जन्मभेनैन निलोक्याः, अन्यथा तु नामभेन । नर्गमेत्री१ लभ्यदेयज्ञानेर तु प्रसिद्धनाम्नैन निलोक्ये ॥ " पुंछोरार्शाशयोभेंत्र्यामेकेशत्वे च वस्यमे । षडप्टमादिग्वपि स्यात्तारामैन्या करप्रह. ॥ १ ॥ " इति दंबज्ञब्छमे ॥ वर्गमेत्रीमाह---ह्रयेदिवत्यत्र योज्य, प्रधान (ना) चेथ तारामैत्री । यटुक्तम्,---च गुरुवरप्रभुमश्रतीना तारा त्रिपञ्चसप्तमी विल्डोक्यते । यहुक्तम्—''भीरुपाद्चल ७ पञ्च ५ तृतीया ३ शोकवैरविपदे वरतारा.'' । सर्वेत्रेति सर्वेपु प्तमी स्वात्तदा न तयोस्तादर्शा प्रीति: स्वादिति। त्रिपक्रेति पूर्वोक्तेन ताराणा नवकत्रयकल्पनविधिना गुरुशिष्यादितारासु त्रिपक्रसप्तमत्व भाज्य। विश्विष्य " वैनतेयौर तुर सिंह३ श्वा४ ऽहि५ सूपक६ मृगो७ रणाः८ । क्रमादकचटादीनां स्वामिनोऽभी स्मृता बुधै. ॥ १ ॥ " वर्गवक्तःथतासंबद्ध मिथो लभ्यदेयज्ञानमाह— नामादिवर्गाङ्कमथैकवर्गे, वर्णोङ्कमेव क्रमतोऽक्रमाच । ॰याख्या--डभयोरिति सर्वेद्वयेषु द्वयोः सबन्धिनोर्नामाधाक्षरमोर्वगोङ्कौ स्थाप्यो, द्वयोश्चेदेको वर्गस्तदाऽऽद्याक्षराङ्कावेव ताभ्या जात्साङ्कसाष्ट-डरणो मेषः । एषा पञ्चमेन पञ्चमेन सह जातिबैर, वृकसजातीयत्वात् **छनो मेषेण सह बैर । विशेपस्तु—योनि**१ गण२ राक्षि ३ तारा-च्याख्या—परस्परभिखुभयतो योज्य । परस्पर प्रीतिहेतोः, परस्पर **भिपञ्चसप्तमी तारा त्याज्येति । कोऽर्थः** १ यदि द्येकस्यापि तारा न्निपञ्चस-ब्याख्या—अकारादयः स्वराः अवर्गः १ । ततः कवर्गाधाः पञ्च वर्गा. ६ । अन्तस्थायवर्गः ७ । शपसद्दाः शवर्गः ८ इत्सटो वर्गा.। इत-चत्वारोऽकचटा वर्गाः क्रमात्तपयद्यास्तथा। यत्नतो वर्जनीयाः स्युरितरेतरपश्चमाः ॥ २६॥ न्यस्योभयोरष्टहृतावशिष्टे, ऽधितेविशोषाः प्रथमेन देयाः॥ २७॥

```
र्गाङ्की =यस्ती=(क)-२(व)-७ जाता सप्तविंशतिः, तस्या अष्टभिर्भागे शेषं त्रयः८)२७(३, आर्धते सार्धविशोपः कणादेन कल्मीकस्य देमः । तावेव
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               न्युक्तवात् स्फुटान्येव । वश्यत्वं तु बक्ष्यते। स्त्रीदूरेति वधूराशिर्वरराशितो दूरगः श्चभः, वरराशिस्तु वधूराशित आसन्नः श्चभ इत्ययः।वर्णेति 'भीना
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       त्तस देवेन देयो निर्णातः। एव सर्वेन्न। लभ्यं च स्तोकं वर्यं, दातु लातुःच सुराक्याचादिति नारचन्द्रटिप्पण्यां। अत्र गर्गोक्तः सङ्ग्रहश्लोकोऽयम्---
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    तयोरेनोत्क्रमात्स्थापने ८१ जाता एकाशीतिः, अष्टभिभागे शेष एकः, अर्थे-अर्थनिशोपः श्रीदत्तेन देवस्य देयः। मिथो नालने शेषोऽर्थनिशोपः श्रीद-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     क्तसुदाहरणं । तथा आदिनायश्रीदत्तयोर्वगोङ्कौ स्थापितौ १-८-जाता अष्टाद्श, अष्टभिभांगे शेषं हो, अधे एको विशोपो देवेन श्रीदत्तस्य देयः
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 बिपरीतौ =यन्तौ ६-२-जाता द्वारुष्ठ तः, ३ ष्टभिभागे शेषाभावाश्वास्ति किञ्चिद्वस्मीकेन गुरोदेंगं, किंतु गुरुणैव शिष्यस्य देयमस्तीत्येतद्योगनिधानम्रन्थो∙
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   मेंधु ३ । महमेत्री प्रीतिपडष्टमक १ प्रीतिहिंद्वादशक २ प्रीतिनवपब्बमेषु ३ । गण १ योनि २ तौर ३ कर्नाथता ४ नांडीवेध ५ वर्ग ६ कभ्या
                                                                                                                                                                                                                             प्रायो न विचायः। यहक्तम्-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     नामकरणे च भयोन्यादिभिविधिष्योपयोगः। तत्र शैक्षस्य नाम्नि नाडीवेधो वर्षः, जिनस्य तु नाम्नि त्याज्य एव । ताराविरोधश्च जिनिधम्बाधिका
                                                                                                                   " योनि १ गण २ राशिमेदा ३ लभ्यं ४ वर्गश्च ५ नाडिवेधश्च ६ । जूतनविम्बविधाने षड्विधमेतद्विलोक्यं हाः ॥ १ ॥ "
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       यत्र वर्णाधिका नारी तत्र भतों न जीवति। यदि जीवति भंती स्वीचदा पुत्री न जीवति ॥ १ ॥ " इति महादेवः ।
तत्र यस्य धनिकस्य जिनस्येव जन्ममं ज्ञायते, तस्य जन्ममेन योनिगणराशयो नाडीवेधश्च विलोक्याः । न तु वर्गकभ्ये, यतो वर्गयोर्भियः
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      युजिः गागुक्ता ''पूर्वोधयोगिपूढस्त्रीणामतिवछभो भवेद्भतो" हत्यादिना । विशेषस्त-सुनीनां किळ जिनबिम्बकारियतुस्तद्वारणागतिज्ञाने शिक्षस्य
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    असार्थः—ह्रयेषु गुरुशिष्यद्भपतिभर्तृभृत्यादिरूपेषु एते अद्धाः। तत्र राश्योः स्वभावजा राशिमैत्री, तृतीयैकादश १ दशमचतुर्थो २ भयसप्त
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    " राश्चि १ ब्रहमेन्नी २ गण ३ योनि ४ तारै ५ कनाथता ६ ऽवस्यम् ७
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     खों दूर ८ नाडियुति ९ वगे १० ळभ्य ११ वणे १२ युजयो १३ द्वयेषुद्धाः ॥ १ ॥ "
```

115821 पञ्चमत्वं मिथो लभ्यदेयं च जिनस्येव, तसापि प्रसिद्धेनेव नाम्ना विलोक्येते, सक्त्रापीय शितिः । जन्मभाषरिज्ञाने तु तस्य योन्याद्यपि सबै प्रसिद्ध-श्रेद्रलिष्ठाः स्युत्तदा प्राधा अपि । अयं भावः-अब्पवलेन बलिष्ठी नामिभूयते इत्यभिप्रायेण धनिकस्य ओत्वादिबेलिष्ठो, देवस्य चीन्दुरादिरब्पवल इत्ये-गममेनैव विलोक्षं। तत्र पूर्वं ताविज्ञानधिक्योथौतिगणवर्गाणां मिथो वैरं त्याज्यमेव । वैरसङ्गवेऽपि वा धिनक्तका योन्याद्यो देवसत्केभ्यस्तेभ्य-" दुव्यारस नवपंचम छक्कड्टग ति पण सत्तमी तारा। अन्तुन्न गुरुसीसाणं नामकरणे विवज्जिज्ञा ॥ १ ॥ गुरुसीसाण करिज्ञा नाम न विरुद्धजोणीप रिष्वे । जइ हुज्ञा न ते रिष्टंब आरूढ पगनाडीप ॥ २ ॥ " गणवर्गांवरोधो तु साल्यावेव । सम्पदेय च मिथो विलोक्यं, मिथो राशिमेध्यावभावे राशीनां वश्यत्वं च प्राद्ये, तनावे शत्रुषदष्टमकादी-तावता न दोयः । जातिवैराभावे च धनिकयोनिवर्गयोरवकत्वेऽपि न विशिष्य दोषः, शास्त्रे योनिवर्गयोर्जातिवैरस्यैव वजैनात्, शोकेऽपि च तथेवाद्र्र-णात् । तथा यत्र देवराशितो धनिकराशिरासको, धनिकराशितस्तु देवराशिट्टरे ताप्रीतिषडष्टमकादि प्राध्न, इनरतु न । तथा तादक्ज्युद्धापराकाभे तु तद्षि तु गुरुशिष्ययोर्मियसाराविरोधः शत्रुपदष्टमकादीनि च सर्वाणि साज्यानि । योनिविरोधोऽप्येवमेव । नाडीवेघसन्नावे त्वसो न दुष्टः । उक्तज्ञ हर्पमकादी-कचित् प्राद्ध । देवराक्षसरूप गणवैरमप्येवमेव, यतो लोके वरकन्यादेरिप श्रद्धापरालाभे देवराक्षसरूप गणवैरमप्याद्वियमाणा इश्यन्ते। शिष्यनामकरणे अस्य स्त्रीकस्यान्त्रय एवं—नामाद्यवर्णस्य गीचरश्चरुष्या जीवेन्द्रकेषु बल्षिषु सरम्व, जृणा नाम विधीयते । अय मावः—नामकर्तुराचायदियं केऽपि वर्णा मेत्रीमाजः सन्ति, तेषां वर्णानां मध्ये यस्य वर्णस्य जीवेन्द्रकेगोचरग्रुष्ध्या बलिष्ठाः स्युरिष्टादेने त वर्णमादौ न्यस्य, शिष्यादीना नाम " जीवेन्द्रकेंपु चलिषु त्रिषु गोचरद्युद्धितः । नामप्रथमवर्णस्य मुणां नाम विधीयते ॥ १ ॥ " इति प्रणेभद्रः । कणिवेधोऽहि सौम्यस्य मागे मैत्ये श्रुतिद्ये। हस्तिचित्रोत्तरा३ पौष्णाश्विनादित्यद्वये शुभः॥ २८॥ नामपि विशिष्टतरदेष्टियासंभवास् । पुत्रादिनामस्वपि सर्वं प्रायः वैक्षनामवज्ज्ञेयं । एवं च सित-क्यास्या--सीम्यो बुध. । गुरावपीति क्यवहारसारे । उत्तराह्तिमाः देयम् ॥ अथ कार्यान्तराण्याह---

प्राथमकिएको बालः शैक्षश्र, बारे बाऽमुक्तेऽपि कुजनानी सर्वत्र लाउगै। पूर्वात्रनं बालस्य बाटणाल्वं। पछे इति "धुंसः पछे मासि, पुत्र्यास्तु पज्नमे ब्याख्या---आद्य हिडन गोचरचयांत्रमण च, प्रथमक्टन आद्यार मः प्रयोजनमस्येति, 'पत्रक्टालस्रणान्तक्रवाख्यानाख्यापिकात्" इत्यनेनेकणि पूर्वाज्ञानं मासि शिज्ञांश्च षष्टे, मं बाह्यं स्वातिमित्रञ्च मुक्तवा ॥ २९ ॥ आचारन प्राथमकांल्पकस्य, मृदुध्यविस्पचरेषु मेषु।

" राशिशुक्ते च मन्दाग्निः शनिमौमे बलक्षयः । बुधार्कगुरुवारेषु प्राशं तु हितावहम् ॥ १ ॥ " मासीति" भोजः । "मामनियमो न पुत्र्याः" इति तु हरिः । अरिक्ततियात्रिनि च मर्यत्राप्युद्ध । विशेषस्तु — इतः पूर्वोक्तनक्षत्रेभ्यः यातभिषक्र्याती स्वक्ता, 'चो' भिष्यक्रमत्वारस्वाति चेत्यं योष्यः ॥

पाज्रभोगोऽभिन्निरिनुराधारेवतीस्गे। हस्ते पुष्ये च गुनिन्दुवारयोश्च प्रश्रस्यते ॥ ३०॥ चित्राचरेन्द्राभ्यिनपुष्यरेवती-हर्तेन्द्वैस्तुल्यप्तौ क्षणेऽथवा ॥ ५१॥ क्षोरं ग्रुभस्याहिन नारकाबछे, तिथौ च रिकाष्ट्रमीषष्ट्यमाष्ट्रझते।

तारकेति, उक्त हि—"जन्माथानेत्यादि"। तारावलं च क्षीरेऽवर्गं प्राद्य, यत.—"तारामुद्ध लउर" धृति हर्षप्रकाशे । चन्द्रबरुमप्यवर्गं ब्याख्या—क्षौरभिति बालाना प्रथनं यस्य मुडनिनिति नाम । 'शैक्षाणां तु प्रथमछोचः, द्येपक्षोराणि तु वारममात्रग्रुष्ध्यादिनाऽपि स्युः । " क्षीरे मास दुनोत्यकों भीमोऽष्टी सप्त सूर्यजः । पट् प्रीणातीन्दुर्घो बो गुरुनेव भुगुरंग् ॥ १ ॥ " इति ब्यवहारसारे । ग्रुभस्येति अक्त्रवारे । यतः---

18881

प्रासमिति ज्यनद्वारप्रकाशे । अष्टभीति ''ड्यापो बलं नामिन'' इति हुस्तः । अमा अमावास्या । चरं स्वालादि । पेन्दवं मुगक्तिरः । तुल्यपताविति यबुक्तमानि नाप्यन्ते क्षीरं चावइय कार्यं, तद्रोक्तमाना यः पतिः स एव यस्य क्षणस्य पनिः स्यात्तस्मिन् क्षणे क्षीरं कार्यं, क्षणश्च मुद्दत्तांक्योऽह्यो

रात्रेवो पञ्चद्राोऽंशः । तद्रीशास्तावदेवम्---

डम्ह्र ९ दिति १० गुरु ११ हरि १२ रिव १३ त्वष्ट्र १४ नलाख्या. १५ क्षणाधिपा रात्री ॥ २ ॥" क्षणनामात्ते पुनरेवम्— ज्येप्ठा१० विशोखिका११ मूळं१२ नक्षत्रं शततारकम्१३। उत्तर१४ पूर्वं फल्गुन्यो१५ क्षणास्तिथितमा द्विने ॥ ४ ॥" एषां मध्ये च-"माद्रों १ स्ठेपा २ तुराया ३ च मवा ४ चैन घनिष्ठिका ५ । यूर्नापाहो ६ त्तरापाहे ७ अभिजि ८ द्रोहिणी ९ तथा ॥ ३ ॥ " शिव १ भुजग २ मित्र ३ पितृ ४ वसु ५ जल ६ विश्व ७ विरिञ्च ८ पङ्गजप्रमवा. ९ इन्द्रा १० ग्रीन्ट्र ११ निशाचर १२ वरुणा १३ र्यम १४ योनय १५ श्राहि ॥ १ ॥ रुटा र जार हिबुधाः ३ पूपा ४ दसा ५ न्तका ६ छि ७ घातारः ८।

'दिल्खणदिसि मुक्त गर्म दिल्खपद्दुशगमागमाइक्यं। जं तं सन्वं सुह्यं अभिजिन्मुहुत्तिम अङ्गमप्॥ ५॥ " यतः ह्रषेप्रकाशे—

'उप्पाय विद्धि बद्दवाय द्व्हतिहि पावगह विहिसदोसे । मज्झण्हमओ सूरो सब्बे बचणीय सुरुबकरो ॥ ६ ॥ " पूर्णमद्रोऽप्याह— विह्नलतामुपगतवित निस्मन् विजयाह्नयो भवति योगः। यस्मिन् विहितं कायं, न चलति कथमपि युगान्तेऽपि ॥२॥" ज्ह्रोऽप्याह— दुपहरघडिआ ऊणे दुपहर घडिषग अहिअ मल्झण्हे । विजय नाम मुद्दुनं पसाहग सञ्चकज्ञाणं ॥ १ ॥ " इसाहुः " रवी गगनमध्यस्थे मुहुत्तैऽभिजिद्दाह्नये । छिन्ति सकछान् दोपाश्चक्रमादाय माधवः ॥ १ ॥ <sup>११</sup> केमिन्तु---" यसते यहचक्रमसौ रविरुद्ये यावदेव यामयुगम् । उद्वमति वमनकाले वान्तं तद्विह्नलीभवति ॥ १ ॥

ईसि संझामइकंतो किचि उन्मिन्नतारओ । विजओ नाम जोगोऽयं सन्त्रकज्ञपसाइओ ॥ १ ॥ "

सायं सन्ध्यायामि विजयगोगो हप्पन्नाहो उक्तः, तथाहि--

ल्छेन प्रातस्यसन्ध्यायामपि यात्रेष्टा, तथाहि-

" आवश्यके तथा याने सीम्येऽस्ते निघनेऽपि वा । ब्रजेद्कोंद्ये वाऽपि मध्यात्न वाऽचिश्रद्धितः ॥ १ ॥

12% 12% 12% अभ्यक्तलानाशिनभूषितयात्रारणोन्मुलैः क्षौरम् । विद्यादिनिज्ञासन्ध्यापवैस्त नवमेऽह्नि च न कार्यम् ॥ ३२ ॥ क्याल्या—सिहोतो भुषः । यात्रा प्रस्थानं तदुन्मुखैः । विद्याया आदिः प्रारंभः । सन्ध्यासिन्नोऽपि । पर्वं दीपोत्सवादि । नवमेऽन्द्वीति 'रींद्रः १ ध्वतो २ मेत्र ३ आरभटः ४ पञ्चमस्तु सावित्रः ५। वैराजो ६ गान्धर्वे ७ स्तथाऽभिजि ८ द्रोद्दिण ९ बलैरि० च ॥१॥ विजयो११ ऽथ नैक्नीताल्यो१२ माहेन्द्रो १३ बाल्णो १४ भगाप श्चेच । पते पुराणकथिता दिवसमुद्धत्तिध्याऽभिजित्कृतुपः ॥२॥" अत्र दिक्शूलाद्यमिति नक्षत्रदिक्शूलकीकादिकं वक्ष्यमाणस्वरूपं सुहूनेष्वपि नक्षत्रवहिचायँ, यस्यां दिशि च तदुरपद्यमानं स्यात् सा दिक् प्रयाणादौ त्याज्या । तथा चरस्थिरादयः सप्त धिष्ण्यमेदा धिष्ण्यसंबन्धिक्षणेष्वपि इष्टकार्यानुरूपतामपेक्य विचार्याः । पारिघन्नेति वक्ष्यमाणपरिषद्गदं '' रात्रावाद्गी १ तथैवाष्ट्रौ पूर्वभाद्रपदाद्यः ९ । आदित्य १० पुष्य ११ श्रुतयो १२ हस्ताद्याश्च त्रयः १५ कमात् ॥ १ ॥ यक्सिन् विष्णये यच कमोपदिष्टं, तद्देवक्षैस्तन्मुहुचैऽपि कार्यम् । दिक्शूलाद्यं चिन्तनीयं समस्तं, तद्वद्वण्डः पारिघश्च क्षणेषु ॥ २ ॥" अत्र तीम्पेऽस्ते झृति ययकींद्यसमये मध्याहूने वा, तात्कालिकलमुकंडिलकायां सप्तमेऽष्टमे वा भवने सीम्यमहः स्यात्तदा तिःशंकं प्रयाणं रुषु-अभिजि १ द्विजयो २ मैत्रः ३ साथित्रो ४ बलवान् ५ सितः ६ । विराज ७ ध्रिति सप्त स्युः क्षणाः सर्वार्थसाघकाः ॥ ३ ॥ ब्रह्मा १० जीवः ११ पौष्ण १२ विष्णू १२ समीरो १४, रात्रावेते नैर्सताष्यः १५ क्षणोऽन्यः ॥ ४ ॥ " री हो १ गन्धनों २ ऽर्थप ३ श्वारणाख्यो ४, नायु ५ नेह्री ६ राक्षसो ७ घातु ८ सीम्यो ९ । तथा---' उपा प्रगंसयेद् गर्ग " इति । एव च सन्ध्यास्तिनोऽपि शस्ता इति ताप्यं । तथा---" उषाभिष्यानं वरयोगमेवं त्रितारमाहुमुनिवुन्दवन्दाः "। इति इत्युक्तो बहुपयोगित्वास्त्रप्रसङ्गः क्षणविचारः ॥ प्रथममप्रथम च क्षौरमाष्ट्रित्य वर्जनीयान्याह--मुहुत्तेष्त्रपि नक्षत्रवद्विचार्य यात्राधं कुर्यादिति स्तमाष्ये । पौराणिकक्षणास्त्वेवम्---कुयांबित । प्रातस्त्रसन्ध्याया उपात्रितारसंग्रेऽपि । यत्पूर्णमद्रः---

्र||न्द्यादिन्छ-नियमाले निनातप्रोक् विद्यां सुराध्यापकराजधुत्रसिताकेवारेषु समारभेत । पूर्वाधिवनीमूलकरत्रयेषु श्वतित्रये वा सगपञ्जके वा ॥ ३५ ॥ सर्वेदापीति सर्वेषु वारनक्षत्रेपिवसर्यः। द्रारक्रमेतिकुळाचारोऽय केषाञ्चित्। तथा च हुर्गेसिहः-'मुण्डयितारः श्राविष्ठायिनो भवन्ति वधुमुदाम्''। इति॥ ब्याख्या—भ्रौरमेष्वित्यस्योभयतोऽपि योजनाद्यमर्थः—क्षौरमेषु त्रिपञ्चनप्तमताराधभावे क्रात्वारेष्वपि च ग्रुभग्रहस्य काळहोरायां पञ्चमे पज्चमे खिंकौरिदनादिति शेषः, नवम्यामिति तु न ब्याख्येय रिक्तावेन तहुर्जनस्य जातःवात्, कि तु यरिमन् दिने प्राक्तन क्षौरं क्रतं, नस्माद्गणनया यत्रवमं ब्याख्या—यः पर् क्षौराणि संखग्नानि क्वत्तिकायामेवाकास्यत् स षर्क्कतिकः । एवमन्येऽपि । गणिविद्यायां तु क्वत्तिकाविशाखामघाभरणीष्वेव '' विद्यारमेमे मुणां वाराः, कुर्वते भास्कराद्यः । आयु १ जीख्यं २ मृति ३ लक्ष्मीं ४ बुद्धि ५ स्निक्सि ६ च पञ्चताम् ७ ॥१॥" नियमालोचनायोगतपोनन्याः कारयेत् । सुक्त्वा तीक्ष्णोग्रमित्राणि वारौ चारशनैश्ररौ ॥ ३६ ॥ षर्क्रातिकोऽष्टवैरंचित्रिमैत्रश्चतुरत्रः। पश्चपैत्रः सकुन्सूलः क्षौरी वर्षे न जीवति ॥ ३३ ॥ रमञ्जूकमी नरेन्द्राणां पञ्चमे पञ्चमेऽहनि । क्षौरमेषु नखोछेखो न्यके क्षरे विशेषताः ॥ ३४ ॥ ' निगमान्नवमे चाहि प्रवेगं परिवर्जेयेत् । ह्यमे नक्षत्रयोगेऽपि प्रवेशद्वापि निगमम् ॥ १ ॥ " सर्वेदाऽपि शुभं कौरं राजाह्मामृतिस्तके । वन्धमोक्षे मखे दारकमेतीर्थननादिषु ॥ १ ॥ दिने समधुकमे कार्य, नखोछेखोऽप्येवमेव, परं व्यके इत्युक्तस्त्रत्र विवारस्याज्य. । कुजशनी तयोहोंरा च विशिष्य प्राझाः ॥ दिनं तस्मिन् द्वितीयवारस्य क्षोरं न कार्यं । न च केवलं क्षीर एव, प्रहप्रवेशादिष्वपि नवमदिवसो निषिद्धः । यहुहाः— इरं च मद्रहच्यक्षेरिषुक्क, अमद्रह्यक्षीराणि तु नवमेऽप्यांत्रं स्यु.। निरासनानानापि क्षीरं न कार्यमिति रुष्ठः ॥ इति ज्यवहारसारे । पूर्वास्तिमः । श्रुतित्रये वेति केश्रित् श्रुतिरेवीचे, न तु तन्नयम् ॥ •याख्या--सुराष्यापको गुरः । राजपुत्रो बुधः । समारमेतेति यदुक्तम्-लोचकमं निषिद्ध । विशेषस्तु-

1000 कमादंत्रोषु स्प्यदिः, कूरो१ मन्दो२ ऽतिपातकी३। पदुध येल्वा ५ च यल्वा ६ च, मूखं ७ श्रोप्नयाद्भवेत् । ४१॥ ब्याख्या--नियमाः सम्यक्तबद्वाद्रशवताद्याप्रिताः, आलोचना धर्मगुरूणानंत्रे प्रायिश्वत्तमार्गणाय स्वपापप्रकाशनं, योगाः श्रुताराधनतपोविधिति-सित वर्णसंकरसंभवात् । मिह्न चेति शाखेशप्रहस्य वारे च। तस्य वेति 'वा' शब्देनेदं सूच्यते-यदि लग्नवलाद्यपनय: क्रियते, तदा शाखेशप्रहस्य वारे शेपाः, तपः सिद्धान्तोक्तेष्यादि पड्मेद, तेषां निदः प्रतिपत्तिसमयक्रियमाणो विधिविशेषो जैनपिंप्रसिद्धः । आदेरन्यदपि धर्ममयोत्सवकार्यं मुक्षते । विशेषस्तु—" शान्तिकं पौष्टिकं कार्यं क्रेज्यशुक्तार्केवासरे । कन्याविवाह्यस्थेत्रं पुष्याश्विष्यवणे तथां ॥ १ ॥ " इति त्रिविक्रमः ॥ ब्याख्या--शाखाधिषी चेदाधिष एत, यो जीत्रसितारेत्यनेन प्रागुक्तरतिसम् पङ्विधादित्रलाल्ये केन्द्रध्ये सत्युपनयः कार्यः । शाखाधिषे निर्वेते लग्नं ग्राइं। लग्नकुण्डिकायां च शाखेशी बिल्छः सन् केन्द्रस्थः कार्यः। यदि च दिनश्चिद्धिमात्रेण क्रियते, तदापि वारः शाखेशग्रहस्येव ग्राह्म इति । चर्णनाथो वर्णानां जीवसितानित्युक्ते. । यद्वा सूर्येन्दुजीवानां सब्हत्ये, सर्वे वर्णनाथाः सब्हा प्वेति देवज्ञवछ्रमे । उपनयो यज्ञोपवीतप्रदानम् ॥ माघादौ पश्रके मासां पौष्णाश्विन्योः करत्रये । श्रुतिद्वये भूगादिलपुष्येषूपनयः श्रिये ॥ ३९ ॥ युग्मम् ॥ मौद्धीयन्थोऽटमे गर्भाद्धनमतो वार्ध्यजन्मनाम् । राज्ञामैकादशे च स्याद्वत्सरे द्वादशे विद्याम् ॥ ३७ ॥ पराजितेऽरिवेश्मस्थे, नीचस्थेऽस्तंगते गुरौ । सितेऽपि चोपनीतः स्यात्, श्रुतिस्मुतिबहिष्कृतः ॥ ४० ॥ न्याख्या—मौंक्षीबन्धो मेखलाबन्धः । अष्टमे इति यथाकुलाचारं विप्राणा गर्भाइशमे वपेंऽपि अग्रजन्मानो विप्रा: । विश्नो वैद्या: ॥ शाखाधिपे बलोपेते केन्द्रधेऽहि च तस्य वा । बले सूर्येन्दुजीवानां वर्णनाथे बलीयसि ॥ ३८ ॥ ब्याख्या--- महयुतौ जातायां यो दक्षिणगामी स पराजित इति वराह.। श्रुतयो वेदाः, स्मृतयोऽष्टाद्या आन्नेयाद्याः ब्याख्या---लमस्थेऽकैनवांशे सत्युपनीतः कूरः स्यात्, चन्द्रनवांशे मन्द इत्यादि ॥ अथ प्रायो विप्राधान्नितं पंचन्त्राश्लोकेराह-

त्तीय विम्यें 18881 विधुगुरुशुक्रोक्नेः मार्केधनगुणहीनः कुजान्वितेः क्र्रः। सबुधेबुधः सश्रीरेः स्यादुपनीतोऽलसो विगुणः॥ ४४॥ व्यास्या—मारेतित म्यामकेयुती मत्यामिलयः । बीरः बनिः । अय स्रोक्षे राज्यामिषेठकप्रेऽपि योज्यः॥ अध्यापकः ४ कमेसु वृद्सु विद्वान् ५, विद्यार्थयुक्तों ६ ऽन्त्यजसिवक्ञ ७ ॥ ४२ ॥ व्याख्या—चतुष्ट्ये इति अर्के केन्द्रस्ये मखुषनीतो राजसेवी स्यात् । वन्द्रे तु वैक्यवृत्तिः कृषिपाञ्चपाल्याहिकर इत्याहि । बहूनां केन्द्रस्थाने ब्याख्या--सितांशे इति यत्र तत्र रात्रौ स्थितश्रन्द्रो यदि श्रुकसाशे सादिसर्थः। एवंमप्रेऽपि। यमाशे इति यमः शामिस्तासाशे इति चेद्रुतु-ब्याख्या—मतमोक्षो मौक्षीयन्घन्छोटनादिरूपः । केशान्तो मुण्डनं । चौलं चूलाकमे । यथा कुलाचारं प्रथमे तृतीये वा वर्षे यक्षियते । लग्ने गुर्गे त्रिकोणे सिते सितांद्रो विधौ च वेदज्ञः। भवति यमांद्रो गुरुसितलग्नेषु जडो विद्योलऋ ॥ ४३ ॥ चन्द्रे षष्ठाष्टमे सत्युभूर्खेत्वमथवा बटोः । त्रतमोक्षेऽथ केशान्ते चौछे चैवंविधो विधिः ॥ ४५ ॥ केन्द्रोपचयधीयमेष्वकेन्द्रं जसुराचितः । शेषे जिष्ड्दशायस्थैराद्ध्यात्वातवेदसम् ॥ ६७ ॥ बहैः परियहं पाहः क्रतिकारोहिणीसुगैः। उत्तरात्रितयङ्गेष्ठापुष्यपौष्णद्विबनैः ॥ ४६॥ चतुष्टयेऽक्रीदिषु राजसेवी १, स्याङैर्ययुत्तिः २ 'क्रमतोऽस्त्रयुत्तिः ३ । यो बलाब्यसास फल बाच्यं। एवमन्यवाप्युद्धाम्॥ ह्युक्रस्प्रानि स्युः । विश्वीरुश्वेति 'च' शब्दास्कृतप्रश्र ॥ गुवविष इति योऽनन्तरमेव मार्घाष्टश्लोकेरकः ॥ ब्याएया—शेषेः कृत्रशुक्तमन्देः ब्याएया—परिप्रहः स्थापनम् ॥

ब्याएया--उद्यो लग्न। जलचारिण. कर्कमकरकुंममीनाः । नमु कुंमस्य जलचरत्वरूढिंगीस्ति, सत्यं, परमत्र जले चरतीति यौगिकम्युत्पत्तीर्वे• उद्येऽथ नवांशे वा, राशीनां जलवारिणाम् । उद्यस्थे च शीनांशो, वांहेरहाय शाम्यति ॥ 3८॥ वस्रणास् कुंमोऽपि संगृहीतः। अहाय शीघम् ॥

न्याख्या---अग्न्याधानकप्ने धनमनने यदि कूराः स्युस्तदा द्विजो नि.स्त: स्थात्, सन्तः सौम्यास्तदा 'आख्यः' स्थात्, इन्दुश्चेत्तदाऽ**बदः, छिद्रे**-भ्यरोगानीः स्यात्, खुधशुक्रयोरत्वष्टमस्थयोने किञ्चित्फलिमिति? । काने च ज्ञयमाविति, लग्ने चकाराचन्द्रे च, बुधशनिषुते द्विजस्य मृत्युरिति रक्षमाका-ऽष्टमें चेत्कश्रिद्ग्रहसारा मृत्युः । अन्नायं विशेषोऽनुस्तोऽपि ज्ञेयः—''अष्टमस्थे चन्द्रे द्विजपत्न्या मृत्युः, भौमे द्विजस्थेव, रविगुरुशनिषु नु द्विजोऽसा-कूराः कुर्युधिने निःस्वमाह्यं स-तोऽन्नदं विधुः। हन्युद्छिद्रे प्रहाः सर्वे लग्ने च ज्ञयमौ द्विजम् ॥ ४९ ॥ भाष्ये । लछस्त्राह—'' लग्ने विधा वा बुधकारियुक्ते, लोकाग्निना विह्निष्पेति सङ्गम् ''॥

ग्वीनव**ल** गरेवापन

चन्द्रेऽर्के वा त्रिशाञ्चस्थे लग्ने धनुषि वा गुरौ । मेषस्थेरवा १० स्त ७ गे वाऽऽरे यज्वा स्यादात्तपावकाः ॥ ५१ ॥ जितरस्तमितैनीवशञ्चक्षेत्रगतैरिप । सोमभौमसुरावायँराहिताग्नि नन्दति ॥ ५०॥ ब्याख्या--आरे मीमे । एष्ट्यातः पावको येन । यज्वेति याज्ञिकः ॥ इति विप्राद्याधिकारः संपूर्णः ॥ ब्याख्या—पुतु सत्सु, आहितोऽभिनर्येन ॥

नववाससः प्रधानं वासवपौष्णाध्विनादितिद्वितये । करपञ्चकध्रवेषु च बुधगुरुद्धानेषु ।। ५२॥

शोको९ मृत्यु१० नंरपतिभयं११ संपद्ः१२ कर्मसिहि१३, विद्यावाप्तिः १४ सद्शन१५ मधो बह्यभत्वं जनानाम्१६ ॥ १ नष्ट्रमाप्ति १ स्तद्नु मरणं २ बिह्नाहो ३ ऽर्थासिद्धि ४, आखोर्मीति ५ मृति ६ रथ धनप्राप्ति ७ रथांगमञ्च ८ । व्याख्या--नववाससः परिधानं प्रधानं स्थादिति योगः । वासवेत्यादि, यदुक्तम्--

18881

क्रतनवभागे वासित कोणेषु सुरास्तथान्तयोमेनुजाः। असुरास्तु मध्ययोः स्युमेध्यतमो राक्षसो भागः॥ ५५॥ न च केवळं भेतस्येव, यहक्कलापि वद्यस्य भोगे एतान्येव भानि शुभानीति ब्यवहारप्रकारो। रक्तवस्थागे धुंसामपि तान्येव भानि शुभानि " नवाम्बरपरीमोगे कुर्धेन्त्यकोदिवासरा. । जीणै १ जलाई २ घोकं ३ च घनं ४ ज्ञान ५ सुखं ६ मलम् ७ ॥ १ ॥ " वासः प्राप्तं विवाहादौ राज्ञा दतं च यन्सुदा । विरुद्धेऽपि हि वारक्षे तद्रसीताविज्ञाङ्कितः ॥ ५८ ॥ धान्यं २३ विपोद्धवभयं २४ जलभी २५ धेनं च २६, रत्नाप्ति २७ रम्बरधृतेः फलमश्विभात् स्यात् ॥ २ ॥ " मुक्ताप्रवालमणिशङ्कमुवणंदन्त-रक्ताम्बराण्यविधवात्वमतिः सती चेत् ॥ ५३॥ " न्यापायैते रवौ पीतं बुधे नांठं शनौ शिति । गुरुभागैवयोः श्वेत रक्त मझलवासरे ॥ १ ॥ % " पुष्यं पुनर्वेसुं सेव रोहिणी चोत्तराभयम् । कोंसुमे वर्जयेहले भर्घातो भवेदातः ॥ १ ॥ " मित्राप्ति १७ रम्बरह्रातिः १८ सल्बिल्ब्बुतिश्च १९, रोगो २० ऽतिमिग्रमशनं २१ नयनामयश्च २२ । •पाख्या—वारक्षे इति उपलक्षणत्वाचन्द्रादिग्रातिकूल्पेऽपि वसीत परिद्धीत ॥ क्षितदग्धादिवस्नमाश्रित्याह्— योषिद्वजेत करपश्चकवासवाश्वि-पौष्णेषु वक्रगुरुशुक्रदिनेशवारे यानि योपितो वक्ष्यन्ते, इमानि तु श्वतवस्त्रमेवाश्रित्योक्तानीति तु व्यवहारसारे । ब्रघेत्यादि, यरुक्तम्--अत्र कीसुभवस्दर्योपळक्षणस्वास्प्रवालंग्काम्बरहेमशङ्खादिष्वपि पुर्यादिभानि साज्यानि ॥ •याख्या—वस्तास नव भागान् कृत्वा तेष्वेवं सुराद्या. स्थाप्याः। तथाहि— कम्बलमोगे रविरि शुभः तत्र तस्रोक्तवात् । केऽप्याहुः--ग्यास्या—करपञ्चकेति, विशिष्य च-

ć	्रेंट्र निर्माय जिस्से	द्यादि	धनग्रा	नक्षत्रापि
-96-	<u>&gt;</u> :>-9			\$£
	सुर १ नर् २ दनुजर पलादाः ४ अष्ठतम १ अष्ठ २ हीन ३ हीनतमाः ४।	स्वेंडरयशु भ	धादि देवां	दंशप्रान्तेषु तु सर्वेष्वपि सनिष्टमेत्र । यञ्जलः
	द्व श्रष्ठतम्	भ थ्रु. य	क	श्रष्टतम्
	असुर	राक्षस	1	D)
-	_ <b>.</b> E	1	<u>.</u>	正

भत्र गक्षमत्रान्देन असुरा भि संगृहीताः, अत एव रुगथवा मृत्युरित्युक्त असुराशे रुग्, राक्षसांशे तु मृत्युरित्यर्थः । श्रीकत्पाच्यन्छेद्गन्थ-

बुत्ती हु श्रीगुरुगच्छयोग्यवस्त्रेषणाथैनिगैतसाधूनामादी तादुग्बछाभे एवमेव नवभागक्रहानया निभित्तज्ञानमुक्तं । तथाहि---

" देवेमु उत्तमो लामो माणसेमु अ मज्जिमो । असुरेमु अ गेलनं (सं) मरणं जाण रब्बसे ॥१॥ "

क्षिते दग्धेऽथ लिप्नेऽस्मिन् गोमयाञ्जनकर्वेमैः। अभुके भूरि भुक्तेऽल्पं फलमेतच्छुभाग्नुभम् ॥ ५७॥

एवं शयनेति शरपादिष्वपि नवभागैरेवमेव फलमूझमिलथैः ॥

' क्म् राक्षसांशेज्यवाऽपि मृत्युः, पुंजन्म तेजख्य मनुष्यभागे । भागेऽमराणामय भोगमुद्धिः, प्रान्तेयु सर्वत्र भवत्यनिष्टम् ॥ १ ॥ १

द्राप्रान्तेषु तु संबन्धाप भागष्टमंत्र । यद्धहाः---

नक्षत्राणि।।

•याख्या—अस्मिन्नित वस्ने परिधीयमाने इति शेष: । भूरीति यदि तद्वातोऽनाहतं तदा शुभाशुभं फळं बहु भुक्ते त्वल्पं । विशेषस्तु---" छेदा्छतिः श्रिये स्याच्छत्रादिसमा गतापि रक्षोऽंगे । काकोळ्कादिसमा न देवभागाश्रिताऽपि पुनः ॥ १ ॥ " सुलभं स्वं भवेन्न्यसं निखातं दत्तमेव वा । सृदुश्रुतित्रयादिखलघुभेषु शुभेऽहनि ॥ ५८॥

1182811

ब्याख्या--न्यस्तं स्थापनिकायां वाणिज्यज्यवसायादौ वा मुक्तं, निक्षांतं भूम्यादौ, द्नं ज्याजेनापिंत, नष्टमञ्चानाद्गतं तद्पि वाशब्देन संगु-

हीतं । शुमेऽहनीति कुजशनिवजैवारे । विशेषस्तु-

		10.4	-	5
X-X-X	Жe	3	6	_
स्वाहानसभावाने विकास स्थाहर है.	" निधिछडिघधनचिवधनमादित्याद्वाह्या करात् गैष्णात् । द्वितये श्रवणत्रितयोचनाम निकार-५५ —	जेत प्रनीदिष्ठ कमात्। तमाप्यते सखाद १ महा ३ ===:४- ३ =	ज्यास्या—सुन्वादित आसन्नस्याने इति शेष.। अन्धेष मने काने काने कि कि ति है।	ं भाग, काण्यु त्वधामात कांचेत् । हिपाद्चत्तपाटेष्टानित र जन्म
-96-4× 4.	(- <del></del> //-	% <b>≥</b> ₹	2	<b>6</b> -
See to appropria	<b>和</b>	॥१२५॥		

सुलोचन ४ 1	=यास्या	ZIR - RIS
र चिछं ३	लाभः	शीघ्र
	िदिशा	ू पूर्व पूर्व
१ मानेक्		घनिष्ठा
प्रक्ष		रुवा०

. यत्नेन '

अनुराधा, ड॰पा० | शतभि० | दक्षिण

ड का

त्य त्य

रोहिणी ।

रंजती

मृगक्षिर | अश्वना

बुत्तान्त अभाव:

पश्चिम

पुरु भार उ० भार

अभिजित्

ज्येष्टा

चित्रा なれる

मवा

उत्तर

외국대

je H

पूर्फा० स्वाति

पुनचेसु

क्रिंसिका

सुलाचन

विछ काव

न प्रेतकमें क्षवींत यमले सन्निपुष्करे।

दिनगुद्धी । अन्यत्र त्येवम्

त्तीय विमर्जे कार्यहारे प्रतक्तमीन-ब्याख्या--प्रक्षेण इतो गतो भवान्तर प्रेतस्रस्य कमै छोकरूड। यमले इति, पञ्चके तु तहुर्जने प्रागप्यूचे । रिकुकजवारी चात्र साज्याविति " रिविरिक्खा छ व्वाला वारस, तरणेहि जाइ थेरेहि न जाइ

। क्रांमिअधवाद्रोंस तथा स्लात्राधयोः ॥ ६१

भमइ

पुग्याश्विनीस्वातिहस्ता ज्येष्ठा अवणरेवती । पषु प्रेतिकया कार्या रिववारं विना बुधेः ॥ १ ॥ "

इति ब्याख्या---भागं पज्ञदयमुहूर्तत्वादि प्रागुक्तं । नैवेति अभिजिखपि न कार्यः पुत्रकः '' अवड्ढ अभिष्टं न कायन्वो '' इत्युक्तः । स्रैप्य सपैदछः सुपणेन रक्षिनोऽपि न जीवति । मूलाद्राभिरणीयुग्ममघान्नपाद्विदेवतैः ॥ ६३ ॥ म्ते माघौ पञ्चद्यमृह्तैनिव पुजनः। एक्सिज्यान्मृह्तैस्तु क्षेत्यः शेषेस्तु भेक्भौ ॥ ६२ ॥ फ़रना मृतमाधुपार्थं स्थाप्यः, सस्कारावमरे मध्य एव स्रेप्यश्रेति शितिः ॥

द्ष्यस्य मृतये वारा भानुभौमरानैश्चराः । प्रातःसन्ध्यास्तसन्ध्या च संक्रोन्तिसमयस्तथा ॥ ३ ॥ " इत्यादि ॥ " मूलास्त्रेपांमघाः पूर्वांत्रयं भरणिकाश्विनी । कृत्तिकाद्गं विशाखा च रोहिणी द्यमृत्युदाः ॥ १ ॥ " तथा— तिथयः पञ्चमी पष्ट्यप्रमी नवमिका' तथा । चतुदंश्यप्यशावास्याशिहना द्रप्रस्य मृत्युदाः ॥ २ ॥ ब्याख्या---न जीवनीति ग्रेपेपु जीवतीत्यथः । मूलेखादि, विवेकविलासे विवम्--

1828

मामान्मगोत्तराषाहे विंशत्यहां मघामु च । पक्षेण तु हिंदैवत्ये घनिष्टाहस्तयोस्तया ॥ ६५॥ जातरोगस्य पूर्वदिस्वातिङ्येष्ठाहि भैस्तिः । भवेत्रीरोगता रेवत्यतुराघासु कष्टतः ॥ ६४ ॥ भरणीवारुणओजचित्रास्वेकाद्याहतः। अधिनीक्रितिकारक्षोनक्षञेषु नवाहतः॥ ६६॥ व्याख्या---उत्तरापाहेति, अभिजिज्ञानरोगस्य मासद्वयेन मृत्युरारोग्धं चेति बृद्धाः ॥

18281 आइबाइ घरेनिसुअंगह, पनरहमाहि ठवे निणु अंगह । बारह बाहिरि तस्स य दिज्जइ, जीनियमरण फुडं जाणिजाइ ॥ १ आदित्यपुष्याहिबुध्नरोहिण्यार्यमणेषु तु । सप्ताहोदिह ताराया यदि स्यादनुक्तुलता ॥ ६७ ॥ ब्याख्या--ताराया इति " शुक्केऽप्यासूरिथते रोगे " इत्युक्ते: ॥ अत्र प्रसङ्गान्मृत्युज्ञानं छिष्यते---

रब्याक्रान्तभमादी द्त्वा भुजङ्गस्थापना यथा—स्थापना यथा नं. २.

डितीयं २ अष्टम ८ चतुर्देश १४ विशं २० पड्चिश २६ वा स्पात्तदा बहु-तया दिणे भवे मच् नन्नहा जिणभासिअं ॥२॥" केऽप्यत्रेवमप्याहु:-चन्द्राकेतन्मेति, अयं भावः—'सूर्येन्द्रोभै रोगिणश्चेकनाड्यां चेत्स्यान्मुत्यु अत्र से ये प्रहा येषु येषु सेषु स्युस्ते ते तेषु तेषु भेषु देयाः, ततो ऽकैभाद्रोगिनामभ यावद् गण्यते। यद्याद्यनाङीमध्ये प्रथमं१ नवमं९ त्रयोद्यं रीगकाले नरस्य' इति । दिनश्चन्द्रियन्थे तु त्रयत्रयसागं विनाऽप्याद्रीदिचक्तस्था-१३ एकविंश २१ पद्मित्रं २५ वा स्यातदा मरणं । यादे द्वितीयनाडीमध्ये क्रेय: । यदि तु तृतीयनाडीमध्ये तृतीयं ३ सप्तमं ७ पञ्चद्रं १५ एकोनविश १९ सप्तर्मियं २७ या स्वात्तदाऽरुपक्लेश: । शेषद्वाद्राभेषु आरोज्यं " आहाँचै: पञ्चद्यभिस्त्रीणि त्रीण्यन्तरा त्यजन् । त्रिनाडिचक्रे चन्हा १ कै २ जन्म ३ वेधे न जीविति ॥ १ ॥ " रवेभौग्यं ताबत्कष्टपरंपरा ॥ १ ॥ रोगिणो जन्मऋसस्य पकनाङ्यां यदा रिवे. रोगिणो जन्मऋसस्य पक्रनाड्यां यदा राशी । तदा पीडां विजानीयाद्ष्यप्रहिषकीं ध्रुवम् ॥ २ ॥ " रविंदू जम्मनष्खनं, तिविद्यो न हु जीवहं " आई अहा मिगं अंते, मज्झे मूळं पहडिअं ततश्र-''र्गबंद्जम्मन्ख्खन् एकनाडोंगय जया शुभाग्रुमप्रहवेषाच विशिष्य ग्रुभाग्रुमं वाच्यं । यतिबछ्ये त्वेवमेव चक्रमाद्रोमाद्रौ दग्वा स्थाप्यमूचे— पनं फलं चेनमूचे, तथाहि---एतत्सूचितत्रिनाडिकचक्रस्थापनेयम्—नं ४. त्रिनाडिम्जन्नस्थापना यथा--नं ३,

्मैषज्यमिष्टं मुगवारुणानुराघाघनिष्ठाश्चतिरेवतीषु । पुष्याश्विनीराक्षसहस्तचित्रापुनवैसुखातिषुं देहपुष्टयै ॥६८॥ करप्रदास्तद्राज्ये तु यदि तत्रैव सींख्यताः । तद्राऽकाले भवेन्मत्युः वस्यमीयानमापितम् ॥ ३ ॥ एतैरम्येश्व प्रकारीर्यभाष्य कृष्प्रहद्शेन्दुपातिकृष्यतिष्यादिच्छेदादिभिर्यथान्नायं रोगिणो मृत्युत्तमयो निर्णयः ॥

क्याख्या--भेषउर्ष रसायनादि । वारविशेषेऽजुक्तेऽपि सक्त्र सीम्यवारा प्राद्धाः, इह स्वकोऽपि, भेषउयस्य तन्नोक्तेः । एवं हय १ गजकमै २

गिनामा**ला-**

पञ्जविधि ३ माटक ४ वापी ५ कूपा ६ राम ७ बालनामस्थापन ८ वेश्मकरण ९ हथवाहन १० बीजोप्ति ११ नगरादितोरणोच्छ्य १२ सुरपूजादि

क्कर्याद् द्विर षड्व भुजग८ दिक्ः तिथि१५ राक्त १४ विश्व१३—संख्ये तिथौ च न कदाचन भूतिकामः॥७०॥ ब्याख्या-उछाघनं नीरुजीकरणं। वारेषु शुक्रेन्द्र, मेषु बाह्यादीनि च लाज्यानि । प् (पै)णंभद्रे बुधगुरू, हर्षप्रकाशे शनिश्र खाज्या उक्ताः स्नाममुद्धाघनस्येष्टं वारयोनेन्द्रग्रुक्तयोः । ब्राह्मपौष्णोनाराश्केषादित्यस्वातिमघामु च ॥ ६९ ॥ अभ्यंगमक्कुजजीवसितेषु पर्व-संक्रान्तिविष्टिषु विवर्जितयोगयुग्मे। १३ सर्वमंगल्यकमेस्विप विशेषानुक्ते सीम्यवारा रविवारश्र प्राधा इत्यूद्यम् ॥

ब्याख्या--अभ्यङ्गमिति स्वास्थ्येन तेलाभ्यङ्गयुत स्नानमित्यर्थः । पर्वाण्यकेन्द्रमहणदीपोत्सवादीनि । सक्रान्तीति सूर्यसंक्रमणदिवसे । योगौ सङ्गीतान्नं नवं दन्वा श्रुभेऽहि ध्रुवचान्द्रभे । पुनवंसुकरत्रोत्ररेवतीनां द्वयेषु च ॥ ७१॥ " रविमन्दारवारेषु विष्यै वा व्यतिपातकै । स्नातव्यं व्रणमुक्तेन शश्चिन्यशुभतारके ॥ १ ॥ " ब्यतिपातंवेधत्याख्यी, वणमुक्तस तु ब्यतिपातविष्टगोरपि न स्नाननिषेधः । उक्तञ्च--

म्याख्या—द्वयेषिवति, एवमष्टी मानि ॥

गाह्यात्रा-ब्याख्या—गजानां कमं शान्तिकदन्तम्त्तैनादि । भश्रानां शान्तिकनीराजनादि । रीद्रे इत्यादि शेषेषु तु कार्यमित्यर्थ. । सामान्योक्केऽपि चाय विशेषो दक्यः—'' अश्विनी १ पुनर्वसु २ पुष्य ३ हस्त्रत्रयेषु ६ गजानां, तथाऽश्विनी १ सृग २ पुनर्वसु ३ पुष्य ४ हस्त ५ स्वाति ६ थनिष्ठा ७ गजवाजिक्तमे नेष्टं रौद्रे पूर्वो ३ त्तरा ३ विशाखासु । भर्गणित्रितयाश्वेषाद्वितयज्येष्ठाद्वयेषु तथा ॥ ७३ ॥ राजावलोकनं कुर्यान्सदुक्षिमधुबोडुभिः। वासवअवणाभ्यां च सुधीः सर्वार्थिसिद्ध्ये ॥ ७२ ॥ ब्याख्या—राजेति, यो यस स्वामी स तस्य राजा ॥ ॥तमिषक् ८ रेवती ९ त्वथाना च कमं कार्यमिति " ॥ || \ \ \ \ |

•्याख्या–गवामिस्युपलक्षणस्वाद् गजतुरगमहिष्यादीनामपि । स्थानमिति बन्धनार्थं स्थानकरण यान गोचरादौ । प्रवेशो गृहादौ । भूतेति चतुर्देशी गवां स्थानं च यानं च प्रवेशश्च न शस्यते। तिथां भूताष्टद्शांक्ये श्रोचचित्राध्ये च भे ॥ ७४॥

क्रयिक्तयौ न हि गवां हस्तज्येष्ठाश्विनीयनिष्ठाभ्यः। अन्यज्ञ पौष्णवाक्णराधादिखद्वयेभ्यञ्ज ॥ ७५ ॥ व्याख्या-अन्यन्नेति हस्तादिष्वेच कार्याविस्ययः । अपि च-

" तीक्ष्णेषु पशुं दमयेत् दारुण्य न घनेषु संप्राक्षम् । पशुपोषणं विषेयं चरेषु दीक्षा रतं मृदुपु ॥ १ ॥ " इति न्नझः ॥ हलस्य वाहनारंभं न हि कुर्वान कहिंचित् । पूर्वासु कृत्तिकासापैज्येष्ठाद्राभरणीषु च ॥ ७६ ॥ न्याल्या—बाहनारंभमिति प्रथमं हकेन भूम्युक्टेलनम् ॥ क्षेत्रारभहेने कि भं माद्यमित्वत्राथे हरूचक्रमाह— हलचक्रेऽक्रमुक्ताद्वात्रयं नेष्टं शुभं त्रयम्। खजेन्नव शुभाय स्युः कृषौ भानि त्रयोद्या ॥ ७७ ॥

लाङ्गलं दिण्डिका यूपं योत्रद्वयसमित्रतम् । हलं न्यस्य लिखेन्सामि रिनेणा भुक्तिषिण्यतः ॥ १ •याख्या—अर्कमुक्तादिति भर्रेण भुक्त्वा मुक्तादारभ्याष्टाविद्यातिभानि हळचक्रे एवं स्याप्यानि । तथाहि—

अधिनीं मुक्तमं प्रकल्प

कल्पनया हल-

गवी हानिः से स आ

लांगल स्वामिनो भयम्

स्वामिनो भयम्

اما درا م

118301

विद्यमाना।

=0ee

ब्याख्या---प्रतिषिद्धानीति, शेषभेषु तु सर्वेबीज्ञानामुप्तिः श्चभतत् स्यादिलर्थः।परं पूर्वोत्तनकश्चद्धेषु शेषभेषित्रति श्वमाति रत्नमालाभाष्ये। विशेषस्तु-

" स्थाप्योऽहिः सूर्यमुक्ताद्भाष्ट्रनाडयेकान्तरक्रमात् । मुखे त्रीणि गले त्रीणि भानि द्वाद्यः नोद्रे ॥ १ ।

बीजोग्नौ प्रतिषिद्धानि पूर्वाभरणीद्वयम् । सापौदित्यश्चतिज्येष्ठाविशाखाबारूणान्यपि ॥ ७८ ॥

श्रेष्ठं नैव शुभं त्रयं च विक्रतेः२३ षड्विंशतेः सत्रयम् ॥१॥"

सीरेऽन्यं त्रितय न पश्चद्रातोऽप्यष्टाद्शात् पश्चकं,

सुलस्ये त्रिके क्षेडं सस्यानामग्रद्धिः स्यात् । गलस्ये त्रिकेऽक्षनमङ्गार रिपातः । उदरस्ये द्वाद्याः । पुच्छस्ये चतुष्के निह्मण्डुरुता बग-इत्युक्तान्यत्र विमर्ते नामप्राहमेतान्युपयोगीनि कार्याणि । सन्ति चान्यान्यपि छमाग्रुभानि कार्याणि । तेपामयं संझेपः पूर्णभद्रोक्तः-जलाद्ययं न कुर्वीताश्विनीभरणिमिश्रभैः।आजपादश्रुतिस्वातिभाग्यदारुणभैस्तथा ॥८०॥ न वृक्षरोपणं कुयित्कराद्रीदिलविहिमैः। अक्षेषामाक्तज्येष्ठाधिनेष्ठाभवणैरपि ॥ ८१ ॥ वीजोमौ पोडशाश्रीणि पक्तिविशात्तथा त्रयम् ॥''इदं द्वादश ग्रुमानि शेषाण्यग्रुभानि॥ च्याख्या—जळाशयं वापीक्रुपतडागादिकः आजपाद पूर्वभाद्रप्रदा। साग्य सगदेवतं पूर्वफल्गुनी। दार्षणान्यक्षेषादीति॥ इद बीजोसिद्दनक्षे विचार्यसित रत्नमाङाभाष्ये । ब्यवहारप्रकाशेडप्युक्तम्---ब्याख्या—अत्र कृषिचक्रे ्रशनिचक्रवटनुक्तोऽपि नराकारोऽभ्यूख , ततो मुखादिनवस्थानेषु सूर्यभाटास्याष्टाचिकातिभान्येचं स्थाप्यानि, यथा— ब्याख्या-उत्तरास्तिम.। पुपु नाटक कर्तु क्षिक्षितु वा प्रारभ्यते । संघानाद्यमिति मदिरादिक नाचरेत्र कार्यमित्यथैः असुल १ सुल २ मध्य हे लाभा ४ रति ५ रति ६ मध्या ७ थँ ८ दुःख ९ क्रुत्कमज्ञाः ॥ ७९ ॥ संधानायं नाचरेतिंक च सुकत्वा. थिष्ण्यं क्रुरं दारुणं वारूणं वा ॥ ८२ ॥ चतं मैत्रे स्याद्धनिष्ठाद्वये वा, हस्तज्येष्ठापुष्यपौष्णोत्तरे ३ वा । क्रिषिल्चे सूर्यक्षांदिषु ५ क १ रसे ६ न्द्र १ ग्रि ३ सू १ रसे ६ न्दु १ युगे: ४। ' अर्कमकाष्ट्रमाश्रीणि द्वाद्शाच त्रयं ग्रुभस् । सरमिति यस नाम । यहि स्थे पञ्चके मूपकादीतीनां भी । त्रिनाडीरुफ्णिचक्रस्थापना यथा— न न्यास्या—आदेत्य पुनर्वेमु । मारुतं स्वाति ॥ 3年有名前 3 लाभ: अरति: 1183811

ऽसप्राश्-18351 अत्र 'क्र्रविलम्पाइ त्ति' यह्नप्रं क्र्पड्वमै क्र्प्रहाष्यातित क्र्इप्टं वा, भादिशब्दान्नक्षत्रेष्वपि नीक्ष्णोप्रतिष्ठेषु क्र्रप्रहाष्यातिष्ठेषु पातौपप्रद्याविहतेषु वा । 'क्र्यारे भ' ति चशब्दात् क्र्प्पडहोरायां क्र्करणे च विष्टयाख्ये । "अन्नत्य विवशेअं ति' भ्रुभे कार्थे तिष्यादीति सर्वाणि भ्रुभान्येवादर्णी-सीमन्तकर्म पुरुषे ळग्नेऽंशे च चिकोणकेन्द्रस्थे । जीवे चिकोणकेन्द्रच्ययाष्टमेष्च्युभरहितेषु ॥ ३ ॥ इति सीमन्तकर्मे २ । गुरौ भुगौ वा केन्द्रस्थे मिश्रतीक्ष्णोग्रवर्जिमे । जातकर्मे शिशोः कुर्यान्नामिन्यसनं तथा ॥४॥ इति जातकर्मे ३ नामस्थाने ४ । याति। कप्तमपि ग्रुभपद्वर्गं ग्रुभप्रहाप्यासित ग्रुभद्द वा। भान्यपि कार्यानुसारेण चरल्धुमृदुधुवाणि सौम्यप्रहाप्यासितानि प्राद्याणीत्यर्थः । न चैतेषु कायेंषु कश्चिह्यसत्त्रमहः, "लग्नं विवाहे दीक्षायां प्रतिष्ठायां च सम्यते" इति च वक्ष्यमाणत्वात् । ये पुनरेतेष्वपि लग्नमादरीतुमिच्छन्ति, तेषां भ्रते-ऽस्मिन् विमशें मोक्षीबन्धाधिनपरिप्रहान्तकार्याणामप्रेतनविमशें च यात्रायाः वास्तुनिवेशप्रवेशयोश्र सूत्रक्रतेव लज्ञबरूनित्रानि । येषु तु नोक्कानि तेष्वेषं-विलेती विषमेऽकीगुरू नरं स्त्रियं समग्रहे कुजेन्दुसिताः । लग्नाद्विषमोपगतः शनैश्चरः पुत्रजनमकरः ॥ २ ॥ " इलाधानम् १ " शुक्रेज्ययोवेलवतोः शेषेष्ववलेषु पुंप्रसवयोगे । द्विपदे लग्ने शीषोद्यिनि च गुरुशुक्रयुतद्ये ॥ १ ॥ यद्वा त्रिकोणकेन्द्रस्थितयोरनयोः स्वजन्मलग्ने वा । लग्नोपचयगे चन्द्रे ऋतौ स्रुतार्थी भजेद्धार्याम् ॥ २ ॥ " " रित्ततिहि असुहजोगे क्रूरविळगाइ क्रूरवारे अ । आयरह कस्मिणपल्लं असुहे अन्नत्य विवरीअं ॥ १ ॥ " कर्णेवेषः शुभे ळग्ने सौम्यत्रद्दविलोक्ति । कूरोज्झिते च लाभत्रिसंस्थैः सौम्यत्रहैः शुभः ॥ ५ ॥ इति कर्णेवेषः ५ विपमक्षे विषमनवांशसंस्थिता गुरुशशांकलप्राकीः । पुंज्नमकराः सममेषु घोषितां समनवांशगताः ॥ १ क्षीणे चन्द्रे मिश्चः संपूणे सत्रद्ध यज्वा स्यात् । झेज्यसितेलेज्ञस्थेनींरुककूरैमेहान्याघिः ॥ ६ निर्धनत्रिकोणकेन्द्रान्त्यगैः फलं तद्यदेव तत्रुगेषु । लग्नात् षष्ठाष्टमगश्चनद्रोऽनिष्टः शुभयुतोऽपि अत्र धुप्रसवेति युप्रसवयोगो जातकोक्तः । स चैवम्--अन्नप्राशनलग्ने मूलोदिस्थे महे फलमेवम्--

लग्नात् पष्टाष्टमगश्चन्द्रोऽनिष्टः शुभयुतोऽपि ॥ ७ ॥ इति प्रनीशनम् ६

बूडा शुभाय शुरफर्ममेषु,मोम्येषु केन्द्रे म्रियते कुजे॰खात्। क्षीणे क्षयायोड्डपते जराय, मानुः सुतस्तस्य च पङ्गुताप्त्ये॥९॥इति चौकम् ८। तीम्येद्यमोषगतेर्ठेग्ने चन्द्रात्मजे गुरौ वाऽपि । विद्याघिष्पारम्भै जीवेन्दुजवर्गमे चन्द्रे ॥ १० ॥ इति विद्या ९ क्षित्मारंभै १० । भत्र प्रवाजितीत चतुरादिमिप्रैहरेकस्थानस्थैः प्रवज्यायोगः । तथा जन्मति यत्र राक्षै चन्द्रस्तदाशीशोऽन्यग्रहेरदष्टः सम्, शर्मि पश्चेत्तदा प्रव-्ये विलम् र्शाश्ममे बराशो गुरुवीक्षिते । हिबुकस्थैः शुभैर्नृत्य काव्य चारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥ इति नाव्य ११ काब्यारंमी १२ । पेत्र्येशयाम्यमूलेन्दुमेषु शुद्धेश्यमेश्पे च । वेतालिसिद्धिः पाताले भृगौ हो कुभळग्रमो ॥ १३ ॥ इति वेतालमंत्रादिसाधनम् १॥ हिचुकेऽकै गुरी लग्ने धर्मारंभो रवेदिने । गुरुज्ञलयवंग वा ग्रुमारंभास्तयोवेले ॥ १४ ॥ इति धर्मारंभ १५ नन्यादिके १६ मोक्सार्थिना च दीक्षा स्थिरोद्ये कर्मेंगे त्रिद्द्यपुज्ये । पापैर्धर्मपाप्तैवेल्व्हीतैः प्रवज्ञितयोगे ॥ १५ ॥ वस्त्रप्रद्वण कुर्यात् क्र्रेस्त्यक्ताप्टमान्तिमेलेग्ने । उपचयमेषु च सिन्निहेष्टिग्विन्दाबुपचयस्थे ॥ १७ ॥ इति बक्क्यापारः १९ अंपघसेवा विहिता शुभाय वलवत्सु सीम्यखेटेषु । निधनान्त्रसप्तमरिपुलक्ते कूरे विना रिप्टम् ॥ १८ ॥ क्षोरं श्रुमकर्रामछे. केन्द्रस्थेनों शुभं श्रहेः क्र्रे. । द्वाद्शधननिकोणाष्ट्रोभेनेद्सुखनुद्धिकरम् ॥ ८ ॥ इति क्षोरम् ७ । शीतांशी बुधराशिस्थे शुमेपूद्यवतिंपु । मंत्रादिप्रद्यणं कार्यं हित्वा पापप्रदोद्यम् ॥ १२ ॥ इति मंत्रादिप्रहणम् १३ । श्रीमन्त्यायुष्याणि कार्याण कार्योण्युक्तस्तिसिन्नेच राज्याभिषेकः ॥ १६ ॥ इत्रायुष्यकार्याणि १८ । केन्द्रिकोणोपगतेश्च पापे, स्नानं हित रोगविसुक्तिकाले ॥ १९ ॥ इति नीक्क्त्वानम् २१ पूर्णं चन्द्रे वेश्म ४ मेऽफंऽम्बर १० स्थे जीवे लग्ने वाकपतेवांसरे च । उयायोगः । यदि वा तदाशीत तथाविध शनिः पश्येत्तदापि प्रज्ञायोगः ॥ इति टीक्षा १७ । लमे चरे कैन्द्रगते च जीवे, क्र्रे दिने रिक्तितथी क्रहोन्द्रो षिना रिष्टमिति रिष्टयोगा जातकोक्तास्तद्माचे इत्यर्थः ।

183311

लमस्थिते शुमे शुद्धेऽच्टमे थिष्ण्ये स्वयोनिके । रक्षावृद्धिः कयश्चापि पशूनां शोमनो भवेत् ॥ २१ ॥ भोमे दिवाकरे वा द्रामायगते ग्रुमप्रद्वविलग्ने । विद्यायुचीपजीवी योनिवशादाश्ययेदीयम् ॥ २० ॥ योतियगाद्विति येण हरिममित्यादिकं योनिवैरं सम्बेद्यर्थः। इति मुपादिसेवा २२ ॥

स्वयोतिके इति उरूनां योऽन्योऽश्वद्विपेतादिना य: पशुसावोतिके नक्षत्रे । इति पशुक्रमे २३ ॥

दोर्वल्ये पापानां श्रुकेन्दुवले गुरी विलग्नस्थे। चन्द्रे जल्राशिस्थे कुर्यात् कृपिकर्मवीजवृक्षोप्तोः ॥२२॥ इति कृपिकर्मे२४ बीज२५ वृक्षोप्तयः२६। तोयानां कर्माणि प्रोक्तानि बुधोद्गमे गुरोरुद्ये। चन्द्रे जल्ज्चरराशै रव १० स्थलिते दुर्वेलेरश्चभेः ॥ २३ ॥ इति जलभयादि २७ । शुभद्रा यद्वयोमचरेः सीम्येलेग्नाभ्रवित्तलाभगतैः । कूरैर्व्ययाघवर्जं विपणिः सेन्द्रे सिते लग्ने ॥ २४ ॥ इति विपणिः २८ ।

18381

द्शमैकाद्शे इति स्वजन्मराशेजैन्मल्झाद्वेति शेपः । पण्य भाण्ड रिक्छुम्भधारिपुरुषरूपत्वात् कुम्भलझस्य वजैनम् । इति क्रयविक्रयौ ३० । द्शमैकाद्शे लग्ने वित्तकेन्द्रत्रिकोणगैः । श्रुमैः पण्यस्य कर्मोक्तं वर्जेथित्वा घटोद्यम् ॥ २६ ॥

वित्तप्रयोगकालश्चरोद्ये पुत्रधमेकेन्द्रेपु । ग्रुमयुक्तेष्वथ निथमे प्रहरहिते शोभनः प्रोक्तः ॥ २५ ॥ इति वित्तप्रयोगः २९ ।

चन्द्रोद्ये तिह्वसे केन्द्रे उसे रससंग्रहः । स्तेयस्य समयो लग्ने बुधे भौमे नमः स्थिते ॥ २७ ॥

अत्र चन्द्रोद्ये इति लग्नस्थे चन्द्रे । केन्द्रे क्ये इति केन्द्रस्थे गुरी । इति रत्तसंग्रह ३१ रतेये ३२ ॥ कि बहुना ?

व्ययनैधनसगुद्धौ सद्योपचयोद्ये । सर्वारम्मेपु संसिद्धिश्चन्द्रे चोपचयस्थिते ॥ २९ ॥

सद्योपचयोद्ये इति, इष्ट्यंसो जन्मङप्राजन्मराशेवॉपचयस्था ये राशयरतेषु लप्तरथेषु

**#888** 

सर्वाधिसिद्धिषु राशी न ग्रुभो विलम्ने, सौम्यान्वितोऽपि निधनं न शिवाय लग्नम् ॥ ३० ॥

ग्रुभा न ग्रुभदो निधनन्ययस्था, धर्मोन्त्यधीनिधनकेन्द्रगताश्च पापाः

अत्र निधनमिति, इष्टपुंसी जन्मलग्नाजनमराशितो वाऽष्टमं लग्नं कापि कार्ये न प्राद्यमित्यर्थः ॥ कृरकमे पुनरेवम् --

भिमयारो मंत्राडिनोच्चाटनं। रिपुनिघने इति, रिपोर्जिवासितस्य जन्मलग्नाज्ञन्मराशेवां योऽष्टमो राशिस्तिसिंह्यग्नस्ये सित इस्रादि। पुषु यानि निरवयकर्माणि तानि शुभैन्छुभिरादरणीयानि, यानि हु धर्मवाधकानि तानि पापमीरुभिः परिहरणीयानि, न च सावद्यप्रवृत्तेभ्यः प्ररूपणीयानि ॥ तिच्छम्याथवहेमहंसरचितस्यारंभसिद्धः सुघी-श्रृङ्गाराभिघवातिकस्य शिवदक् ३ संख्यो विमशोंऽभवत् ॥ १ अभिचारविधिवंळवार्श्वन्द्रे क्र्रस्य योगवर्गस्थे । रियुनिधने लग्नस्थे रिष्टयोगे बुधे विक्षिनि ॥ ३१ ॥ ॥ इति श्रीमति आरम्भसिद्धिवातिके कार्यपरीक्षात्मकस्त्रतीयो विमर्शः ॥ ३ श्रीसूरीश्वरसोमसुन्दरगुरोनिं शेषशिष्यात्रणी-गैन्छेन्द्रः प्रभुरत्नशेखरगुरुद्देदीष्यते साम्प्रतम् ॥ इति कार्यद्वारम् ॥ ७ ॥

> || 30 || || 30 ||

183411

## 🛭 अथ गमद्वारम् 🗆 ८

॥ चतुथों विमर्शः ॥ ४

अथ गमद्वारं बद्बाद्री प्रस्थानविधिमाह'--

प्रत्थानमन्तरिह कामुंकपञ्चरात्याः, पाहुर्घनुदंशकतः परतश्च भूत्यै।

तम् राजादिराचार्योदिश्र स्वयं देहेन कुर्यात् छत्रधनुःस्वखङ्गशयनासनायुधसज्ञाहदर्पणादि प्रास्थानिकमक्षतमालापुद्धकादि वा वस्तु, गन्धाचीदिपूर्वं प्रस्था॰ पयेष् श्वेतवस्त्राद्यपि, न तु क्रष्णजीणीदि, नापि शक्षमद्यीषधलवणस्नेहगुढोपानक्षभृति अन्यदृष्युपहतं वस्तु वा । काभुकेति चतुर्विशत्यद्गुलमानैश्रतु-भेंहैस्तैर्धनुः । प्रस्थानं यातां दक्षिणपार्श्वे साधनीयमिति बुद्धाः । सामान्येति, भूमिभुजो महानृपाः, मांडलिका गंदछेशा, ताभ्यामन्ये ये ते समाना एव, प्रखावाद्न्योऽन्यसिति स्वाथे यणि सामान्याः, वाचस्पतिमते पुछिगोऽयं शब्दः । दश चेति महानूपः प्रस्थानं प्राप्त एकत्र स्थाने दशाहं नोछंघेत दशदिनमध्य एव पुरस्तास्प्रयाणं कुर्यादित्यथैः । एवं पद्य सप्तेत्यत्रापि भाव्यं । अथ कार्यवतातिष्ठेत् प्रास्थानिकं वा स्थापयेत् तदा प्रुनरन्येन सुमुह्नतेंन

ब्याख्या—प्रस्थानं प्रसिद्धं, यरिकल यात्रामुहूर्त्तसाधनाय क्रियते, तस्करणे च तिथिवार्तमभ्रत्राणि सान्येव प्राध्वाणि यानि यान्रायां वह्यति ।

सामान्य १ मांडलिक २ मूमिसुजां ३ कमेण, स्यात् पर्श्व संप्त दश चात्र दिनानि सीमा ॥ १ ॥

1183611

प्रदेशे चेतिष्ठति, तत्र परमतान्येवं—-'यदि क्वचित् पथि त्रिदिनीं स्थितस्तराऽत्रे पुनरन्यसुमुहूनैवलं गृहीत्वा चलनीयमिति" गौतमः । पञ्चाहस्थिता-

" योघानामविरोधेन तोयेन्धनवशेन वा । ज्यादिरात्रोषितां सेनां पुनभेद्रेण योजयेत् ॥ १ ॥ "

वित्यन्नि: । सप्ताहस्थिताविति च्यवनः । कछोऽप्याह—

प्रस्थानकाद्मप्रस्थलेत्, न तु प्रथममुहूर्तवलेन । विशेषस्तु—कतरद्प्युद्धिस्थानं प्रति मुळग्नमुहूर्ते प्रस्थितो नृपादिबंहूनि प्रयाणानि गरवा क्वचिदेकन्न

्री विमर्शे यत्रायां तिम्शक्ति परमेतानि मताम्ययुक्तानि । यतः प्रथमे सुनिश्चिते कमे प्रस्थितो याबत्त्वमृहं नायाति तावत्तदेव लग्नामिति बहूनां सम्मत मतिमिति रत्नमा-लाभाग्ये । तया पुरेत सुसुहुर्गसुलग्नेन प्राह्म यात्रा इत्वा पश्चान्त्रित, न तु प्रयमलग्नसुहुत्तैवलेनेन द्वितीयामपि यात्रा हृयीत् । प्राक्त मीमाकथनेन पञ्चमेऽहि चलनीयमेवेति नियमित । अथ यात्राहाँणा नवनक्षत्राणा मध्यात् येनेक्षत्रैः कृतप्रस्थानेन पुता पञ्चभ्यो दिनेभ्यो. भन्येतुरिति अन्यत्र द्विनीयेऽहि भन्येयुः, '' प्रगंपराघरोत्तरादेगुस् " इलाधुम् प्रत्यये ''अधणूसु'' इसन्ययत्त । तुर्येऽहनीति पारिशेष्याद्विभनीपुनर्वस्त्रोः यात्रा दिनतिथितारावलग्रुद्वौ मगकरातुराथासु । आध्विनपौष्णधनिष्ठाभुत्यादित्वद्वये भेष्ठा ॥३॥ ब्यास्था-हेनेति । ग्याग्या—चेद् प्रस्थान अवणे छतं तरा तद्दिन एव प्रस्थानाड्यतञ्चलनीय । तद्दिरीत्याधारस्य " कालाध्वभावे " त्यनेन कर्मत्वे हितीया । इति ज्यमहास्मारे। राजात्रीनातु रविवारोऽपि क्रुभ इति ज्यवहारमकाञे। तथा—"पडिमइनवमहमिचउन्त्रमिसु गमणं करे न खहवारे"इति हर्षमकाषे । यद्रा-" रयछत्र १ मन्भच्छतं २ पर्यंऽपवणं ३ तहा सिनिग्वायं ४ । सुरघणु ५ परिवेत्त ६ दिसादाहाह ७ जुनं दिणं हुई ॥ १ ॥ " उति त्रपेपमारो । अत्र दुष्टिमिति माथुपं विनेति माथुस्था, एतद्रहिताचे हिनाछेद्धिः स्थात् सीस्पवारेण वा । पद्धान " गममेऽमित्यो वाराः कमराः कुर्वते फलम् । नेःस्ट्यं १ धनं २ कनं ३ दृष्णं ८ जयं ५ चेव श्चिय ६ वध्यम् ७ ॥ १ ॥ ॥ थ्रुतौ तदहरन्येचुर्धनिष्ठापुष्यपौष्णभे । तृतीये मैत्रम्पयो हस्तेन तुर्येऽह्नि ब्रजेत् ॥ २ ॥ क्षतप्रधानेन पञ्चमित्नेऽप्रतश्वलनीयमेन, एन सहाहन्याह्योरिष यथामप्रदायमवांगिर्ननिषमोऽभ्यूद्धः ॥ प्रस्थाने समयशुद्धिमाह— '' रेग्नतां तु समुत्थानं श्रेष्टं स्वामिहितावहम् । अश्विन्यां गतगामित्वं नौभैत्रेद्रहुरलभृत् ॥ १ ॥ पूर्वाफल्गुनीसौम्ये च हस्तचित्रासु वैष्णवे । वादित्रमङ्खेश्वापि पोतं संचारयेजाले ॥ ३ ॥ » अनुराघामुने भेव थनिष्टा हस्तवैष्णवे । प्रत्यापयेत्ततो नावं सर्वेकामसमृद्धये ॥ २ ॥ यहाह.—"मंगार्थमा यात्रा वीर्यादवहीयते प्रदः मर्वः" । नैप्रस्थान त्वंबं ब्यवहारसारे— ऽर्वातापि चलनीय तान्याह— 1153011

चतुर्ये विमग्ने यात्रायां नक्षत्रादि " दसिम तेरिस पगिम वीशको, भिगुसुओ गमणेऽतिसुद्दावहो । गुरुपुणन्वसुपुस्सनिसेसओसयभिसा अणुराह बुहे तद्दा ॥ १ ॥ " यिः कार्यकत भवेत्' इति ब्यवहारमारे । तारेति, यदुक्त--''जन्माथानानिवता" इत्यादि । तारावरु च यात्रायामवद्यं प्राधं । श्रेष्ठेति अभिजित्यपि ग्रुति यतिमुस्ते । तिथीति पस्रिट्छिम् वमफत्मुद्रम्थक्र्राक्ष्यतिथीनां त्यागात्तिषिश्चिद्धः, पूर्णिमाऽपि च त्याज्या । यतः-"पूर्णिमायां न गन्तध्यं, थ्रीदिनः १ कल ३ २ ख्रंच नन्द्नः ३ कालकर्णिका ४ । धर्मः ५ क्षयो ६ जयश्रेति ७ दिना नामसदक्ष्तलाः ॥ २ ॥ " " धेत्राया द्विगुणा मासा यतीमानिव्नेयुताः । सप्तमिस्तु हरेद्मागं यच्छेपं तिष्ट्नं भवेत् ॥ १ ॥ यात्रा प्रेष्टेंच । गहाहाः -- "अभितिति कृतप्रयाणः सर्वायोन् साधयन्नियतम् " । विशेषस्तु --

1153211

" पहि कुसलुलिमा निर्हि कज्जसिद्धिलामं मुहुत्तेओं होइ। रिख्लेणं आरुमा चंदेणं सुच्नसंपत्ती॥ १ ॥" इति दिनग्रद्धी । तथा चन्द्रसःमगोचरादेः शिवभुजगोत्याचुक्तदिनरात्रिमुहूर्तानां लग्नस्यापि च बलं संभवे प्राध्ममेव । यदुक्तं---इति दिनशुद्दी । तथा--'तिध्यादिगुणाः सर्वे शुभेन लभ्यन्ते " इति रुछः ॥

मध्या तु धुनप्विन्येष्टाद्वयवारुणेषु यात्रा स्यात् । निन्याद्रिभरणीद्वयिचत्रात्रयसापैपैत्रेषु ॥ ४ ॥

ड्याख्या---मध्येति प्तानि दश भानि नेष्टानि नाप्यनिष्टानीति भाव: । निन्धेति यत: 'कृतप्रयाणोऽष्टास्वेषु कदाचित्र निवर्तते'' इति ब्यव-

" अशुमे मे शुमे घन्ने दिवा यात्रादि साधयेत्। श्रमे मे त्वश्चमे घन्ने रात्री यात्रादि साधयेत्॥ १॥"

यतः---'नक्षत्रं बलबद्रात्री दिने बलवती तिथि: " इति लछः ॥ भय भविशेषाद्यात्राये दिनांशनियममाह--

हारसारे । नारचन्द्रे तु 'उयेष्टामूलयोः श्रेष्टा, चित्रास्त्रातिश्रवणधनिष्ठासु मध्या, उत्तरात्रये च निन्धा यात्रा<sup>1)</sup> इत्युक्त. विशेषस्तु—

न दिवाचे घ्रवमिश्रेस्तीक्ष्णैमेध्येऽय लघुभिरन्त्येऽंशे । अंशेष्टिवति राजरिप मैत्रो १ म २ वरे १ ने भैयाता ॥५॥

= | | | |

ब्याख्या- त्रिमामीकृतत्य दिवम्साधेऽशे ध्रुवमिश्रभैयांत्रा न कार्येत्यादि, इति त्रिमामीकृताया रात्रेराधेऽंगे मैत्रभेषु यात्रा न कार्या । उप्रभेषु

हितीयेऽंशे, चरमेषु तृतीयेऽशे चेति । यहाहाः —

18381 "धनहानिमृत्युची नियतो भम्नः पराजयश्चेच। यस्मादेभिः कालैः प्रायेण चिवजेयेत्तस्मात्॥ १॥" अस्य बक्ष्यमाणपरिषस्य चापबादमाह-मपुउ हिच्छा वि प रापूडर अभ सर्वदिग्डारको पुष्यहस्तौ, मैत्राश्विनी युतौ । तावेव मर्वकालीनौ सृगञ्जनिसमन्वितौ ॥ ६ अन्रर परिघयन्त्रं विह्वियायुपरिघोऽत्र न लंदयो, मध्यमानि तु मिथः स्वदिशोः स्युः॥॥॥ इलाटि न प्रयोज्यमिलयरे । दिनशुद्धिकृना तु दिग्यात्रायां पड्माना सर्वकाली नत्यमूचे । तथाहि – सर्थै. । 'श्रवणरेत्रसावि सवैहिरद्वारके' इति नारचन्द्रे । सर्वकालीनाविति प्रु मेषु 'न दिवाह्ये कोऽपैः १ ए९ मेपूरीच्या यात्रा श्रमेति श्रीस्थानाङ्गचन्द्रप्रजपिनुच्यादिपु । एव क्रत्तिकादिः भय भाव.—एतानि सप्त सप्तोदीच्यादिदिग्द्वारकाणि । तथाहि—धनिष्ठादेसप्तमान्युत्तरद्वारकाणि, मघाषनुराषादीति त्रीणि भत्तत्रक्षानि कमात् प्वंद्रिजपश्चिमद्रिद्धारकाणीत्यतोऽहिमन् भमप्तकत्रये फमार् पूर्वादिदिख यात्रा ग्रुभा । अशेति गमने । चिह्नवारिवति मसरेखचक्रवचतुरिक्ष कृति-ब्याख्या—नसुक्तक्षं घनिष्ठा, तत आरम्य सप्त साम्यन्तरादिनद्विष्टिष्ठ गमने ग्रुभानि । ब्याख्या--सर्वासु दिख्छ विदिख्य च द्वारं ययोस्ती, एपु परिघो भदिर्श्यल च न स्यादि-कादिसससप्तमेषु स्थापितेषु आग्नेयवायन्यकोणयोः परिवः स्यात् । तस्य स्थापना यथा— सप्त सप्त गमने बसुन्नक्षादुनरायभूति दिश्च ग्रुभानि पुस्सिस्सिणिमिगहत्था रेवइसवणा गहेस्रभ्या ॥ १ ॥ " '' पुग्वदिसि सन्यकाळं रिद्धिनिमिनं विद्यारसमयम्मि । भथ यात्राया टिम्झुद्धि बदन् परिवमाह-1183811

भयमाग्नेयवायन्यकोणावसंवितान्तरालरेखारूपः परिषो नोह्यन्यः। अयमथः - धनिष्ठादिचतुर्देशमेषुत्तरप्राच्योरेव, मधादिचतुर्दशमेषु दक्षिणप्रती-ष्णोरेय च गन्तक्य । मध्यमानीति मिथः स्वानि स्पजनभूतानि परिधै प्रवाशंस्थत्वेन यानि भानि सन्ति, तेषां दिशोस्तानि पार्श्वसादिगुक्तानि भानि यात्रायां मध्यमानि स्युः, न श्रुनानि नाष्यश्रमानीत्यर्थः । अथं भावः-धनिष्ठासप्तकस्य कृतिकासप्तकं स्वं, तिह्क पूर्वा, तस्यां गमने धनिष्ठासप्तकं

इति पूर्णभद्रः। अस्यार्थः-क्रतिकादिभसप्तकस्य क्रमेण भौमाचाश्रम्द्रान्ताः सप्त ग्रहा. स्वामिनः, तेषु स्वस्वभरषेषु पूर्वस्यां याशा ग्रुमा । म्त्रं दिख्छ यात्रायां भनियम उक्तः, विदिख्छ यात्रायां तु को भनियमः १ उच्यते—पूर्वद्वारमैराग्नेयां घजेत, दक्षिणद्वारभैर्नेक्तां, पश्चिमद्वारभेतीयतां, मध्यमं । एवं क्रसिकासप्तकस्य धनिष्ठासप्तकं स्वं, तिष्क् उत्तरा, ततस्तस्यां गमने क्रतिकासप्तकं मध्यमं। एवमन्याधेऽपि भाव्यं । मन्येयं परिघोकत्या उत्तरद्वारभेरैयानीं चेति स्फुटमेन, विदिवा दिगनुगामित्वात् । उक्तच्च देवज्ञव्छमे —" यायात् पूर्वद्वारभेरितकाष्ठा प्रादक्षिण्येनेवमात्रा विपूर्वाः " । " प्राच्यादिषु चरन् भानुः सप्तके छन्तिकादिके । चितनोति दिशामस्तं यात्रा तासु कृता श्रिये ॥ १ ॥ " इत्यपि फुणेभदः ॥ उह्नेघ्यः परिघोऽपि लग्नबलतः शूलं तु भानां सदा, हेयं तच युनः सुरेश्वरदिशि ज्येष्टाम्बुविश्वोद्धिभाः।

" स्वामिनः सप्त भौमाद्याः क्रमतः क्रन्तिकादिषु । प्राच्यादौ तत्सनायेषु तेषु यात्रा महाफला ॥ १ ॥ "

अत्राशा विपूर्वो इति विदिश इत्यर्थः। विशेषस्तु—

मघादिसत्त्रभानां तथेव भौमाद्याः सप्तेयाः, तेषु तत्तत्त्रस्थेपुद्भिच्यां याज्ञाा ह्यभा । एव शेपदियोर्गि भाव्य । तथा---

राघावैष्णववासवाजपदभेयोम्यां प्रतीच्यां पुनब्रोह्मया मूलयुजा तथोत्तरदिशि स्याद्येमक्षेण च ॥ ८ ॥ । •यास्या--उछन्य इति एकान्तिकेषु कार्येषु, परचक्रागमादिषु शुद्धे यातन्यदिङ्मुखे प्रहबलोपेते यात्रालभ्ने सति परिघलङ्घन न दोपायेत्यथेः

सदेति श्रूलनक्षत्रेषु मस्मु, लप्नश्रुद्धावपि न गच्छेत्, यतो भश्रूलदोपः शुद्दलक्तेनापि न रलति । उक्तञ्च—'' त्यजेह्यनेऽपि श्रूलक्षे, श्रूलक्षे नास्ति

10821

1 101017

मामयाह आतम् ।

निर्धेति:" इति ज्यवहारप्रकाशे । सुरेति पुर्वाद्यिक्षोहुनी पूर्वोत्तरापाढे यामी दक्षिणा ।

्र विमर्थे विमर्थे गोशिनी विचारः॥		#283H
するというかんりんしんしょうとうとうしょ	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	₹-664:V
'पुन्वाइजिक्डस इति उ डकाः । तथाहि ''च्येष्ठा१ भद्र श्रोत्सुक्याद्यारि ', उत्तरह पच्छि	र्गोताद्युशुक्रयो २ भॉममन्द्यो ३ जंस्य ४ च त्यजेत् ॥ १० ॥ •यास्या—हिम्ज्लिक्ञ्लस्यापना यथा— अवस्यकर्बच हु गमनेऽनयोविधानमाह— दिस्त्यूलध्वंसि चन्देन चन्दनं १ द्धि २ सित्ताम् ३ । तैलं ४ पिछं ५ च सिपैश्र ६ खलं ७ वा (चा) कािदेषु कमात् ॥ ११ ॥ हिम्बूलि हिम्ब्लदेन विहिशोऽपि प्राक्षा । वन्देतेति कोऽथं.? चन्दनहध्याबेहितलकं क्षयंत् ॥ योगिनीचारमाह्	स्याचोगिनी शक्त कुबेर विहिर स्क्षोष्ठ ऽन्तकाष प्पत्यक्षिके शदिश्चट । यातुने भन्या प्रतिपन्नवस्यादितो विना पश्चिमवामभागौ ॥ १२ ॥
मञ्जस्यापना— उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर वि. मान्यश्राल अप्रवे वि. स-ध-प्र म	गायक्य   उत्तर   इंद्यान मगल   मगल   बुध गति   बुध   बुध गति   बुग   मोम गुक   बिहिग   मोन पधिम शल्यक्य पूर्व	य   दक्षिण
### \$\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	<u>*\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_</u>	( <u>+)</u> %- <u>-</u> jk-9

चतुर्व विमयें गमद्रार्दे- योगिनी सम्मुख- घटिकामा-	= x'	nèa है।
4-96-4-96-4-96-4-96-4-96-4-96-4-96-4-96	terest sets	2-5-X
- प्रक्रमेराकोऽन्तमदिकः पुत्रोत्तरोनम्हेनदि। मनुश्च संमुखी स्वात्। प्रतिपञ्चवम्यादिव इति ने पक्षतिययः महेव स्युर्दिनश्चाष्टे। त्तव च वि समि सावस्वाय द्वैशान्यां। पृत्व च वि ने ने दृषः पद वाउ हुट दिसिसु पिडिव हम्म मतान्तरे योगिन्याः कोष्टकम्	7 - 4 पूर्व 5 - 6 - 9 9 द्यार्था 2 - 10 हि.सण १ - 6 - 1 - 2 - 6 - 1 श्रे स्वां ति स्व	ा मितनाड्यो दश चाघो१० वाम१० दक्षिणे प बन्द्रे । तथा तत्काळयोगिन्यवर्श्य साज्या, सा चैव चउ घडिआ पुरओ पुःघुत्तदिसिसु अणुक्रम

मार्म-मिद्रेः सिद्रेः

चतुर्व विमर्धे गमहारेका- ल पात्रयो- विचारः ॥	แรลงแ
ととしてなりかんできまるとうのとうなるとうと	がかれが
अत्र दिगिहींसे धुर्स ति, यहा यहतंमानदिन तस्य या या दिक् प्रोक्का तस्या दिशि धुर्स प्रभाने योगिती वसति, तत्रोध्य प्रमानकाष्ट्र हायादि । एन वाहतीयावा न्यां वामाजेकुचरस्या, होपाण्यामोन्यादिमायानस्यसिष्टि हायादि । एन वाहतीयावा न्यां वामाजेकुचरस्या, होपाण्यामोन्यादिमायानस्यसिष्टि हायादि । एन वाहतीयावा न्यां वामाजेकुचरस्या, होपाण्यामोन्यादिक्तावादक्तावादक्ताव्तावादक्ताव्यादक्तावादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्याव्यादक्ताव्यादक्ताव्यादक्याव्यादक्याव्यादक्याव्यावादक्याव्यादक्याव्यावादक्याव्यावादक्याव्यावादक्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव	ति । १२ १२ १२ १० वर्गानुनियाविदस्त्वाहु:—'शुक्छप्रतिपदादितिथिचतुष्के प्वनिने-  १०   १०   १०
i die die	
आरम्भ सिद्धेः १९४३॥	

जिशानगर्जै गणनीगं, ष्ट्रशगुरत्येन तत्र काकस्य प्रवेशाभवनादिति ते पाहु.। एषां मते वारप्रतिबद्धावेव कालपाशो, न तिथिप्रतिबद्धो ॥ राहुचारमाह-अमगामस्मादिचतुर्देश्च पादाः, डवाम्यां स्वधः । युनरेकान्ड्याहिनिधिचतुर्के पूर्वामेर्यादिचतुर्देशु, गामाया तूर्वं घुनः । कृष्णप्रतिष्णादित्रिचतुर्क थिमचायन्याद्विन्तुर्दिस्र पाद्यः, पज्ञम्यां स्वधः । एत्रमेव तृतीयाऽप्यान्नुत्तिर्वांच्या । तसमुखश्च सदापि कारु द्वि । अत एत पूर्णातिथिषु प्रामादादेः ब्यास्या—सुमुखाद्र भिंतमष्टमु यामार्थेषु क्रमश. प्राच्यादिषु पष्टया पष्टयां हिक्षि प्रचान् गाहुरसमुखवामः मन्निष्टो द्रोय इत्यन्वय; कार्यः । असमुखेति यातां गुष्टतो दक्षिणतश्च वर्षे इत्यर्थः। यामार्थशब्देऽभिर्निन्धः प्राग्वत्। अहरिंगमिति दिवा रात्री च राहुश्चरति । समुखात् प्रभातादारभ्य, गहुरसंमुखवामोऽष्टसु यामार्थेष्वहानिंशं युमुखात्। क्रमशाः षष्ट्यां पष्ट्यानिष्टः प्राच्यादिषु प्रचरत् ॥ १४॥ दिणवार पुरवाईक्रमेण संहारि जस्य ठाणि सणी । काळं तस्य वि आणसु तस्मंमुहुपास भणइ इगे ॥ १ ॥ " इति ज्योतिपनारे । पष्टगां पष्टगामिति आसे पामांधे प्राच्यां, द्वितीये ततः पष्टगां वायच्या, तृतीये तत्तोऽपि पष्टगां दक्षिणस्यामिति । उक्तच्च हपैप्रकाशे---अप्टासु प्रथमाद्येषु प्रह्मार्धेन्बहर्निशम् । प्र्वेस्यां वामतो राहुस्तुर्यां तुर्या प्रलेहिशम् ॥ १ ॥ " '' जामदे राहु गई प्रवार दा ३ ई ४ प ५ आ ६ ड ७ ने ८ दिसिसु।'' । तथान्यारोपादिस्तरंतरमते, अयं उध्नं बाऽष्यस्य कालस्य बाऽयश्यसंभवातिति " तथा— प्तमहोरात्रे राहोद्विराष्ट्रितः ॥ अप्रदक्षिणं गणने तु सा दिक् तुर्था तुर्था स्थात् । यदुक्त नारचन्द्रे-चन्द्रचारमाइ— अहोरात्रे द्विरात्रुत्तिः ॥ राहुचार स्थापना

1188311

118881 मेषादिद्वेष यात्रायां सम्मुखस्वतिशोभनः॥१५॥ चन्द्रअरति पूर्वादौ कमात्रिदिक्चतृष्ट्ये।

भाषेत्रहगाण उत्तर ७

विस्तार श्रम् वार्						
ಲ್	<b>\$</b> 296-	それていまるのか				
	•यास्या—मेषादिचतुष्कस्पश्चन्द्र. क्रमाच् पूर्वादिचतुर्देक्ष चरति । एवं सिहादिचतुष्क्षमन्नादिचतुष्क- योरपि ।	दिनगुद्धो तु चन्द्रसापि ग्रुफ्रविष्ठिय सम्मुखत्वं प्राद्यमूचे। तथाहि—  " उद्यवसा १ अहवा दिसि २ दारभवसओ ३ हवहं ससीसम्मुहो।  सो अभिमुहो पहाणो गमणे अमिआइं विस्संतो॥ १॥ "  अतिशोभन इति, उक्तञ्ज नारचन्द्रे—  गय दक्षिणो राहुयोंगिनी वामतः स्थिता। पृष्ठतो द्रयमप्येतचन्द्रमाः संमुखः पुनः ॥१॥"				
		मेप, सिंह, धन				
	कके, द्रश्रिक, मीन	उत्तर् सम्द्रमार् यन्त्र				
		开始的				
		भिधुन, तुका, कुम्भ				
<del></del>	<del></del>					
*2%	*5%	PLOCHESCO				

1188611

•यास्या--राज्यन्येति रात्रेरन्य दिनस्य प्रथम याम चाकैः प्राच्यां तिष्ठति, दिनमध्यमयामी तु दक्षिणस्यां, दिनांन्त्ययामं राज्यास्यामं चापरसां. रविहाँ हो तु पूर्वादी यामी राज्यन्त्ययामतः। यात्रारिमम् दक्षिणे, वामे प्रवेशः, पृष्ठगे द्रयम् ॥ १६ ॥ शिवेभैषमयामी त्रीस्या । नारचन्ट्रे तु सर्वप्रहाणामुद्यममयाहारभ्य अमणवद्याहष्ट्रहेक्ष्पर्ममूचे । तथाहि---

" स्वस्योटयस्य समयात्पूर्वेयामाहितः क्रमात् । संचरन्ति ब्रहाः सब सर्वकालं दिगष्टके ॥ १ ॥ "

यात्रेति-डिभिणेऽक यात्रा कृता ग्रुमा । यहाहाः--

" पूर्वांते चीत्तरां गच्छेत् प्राच्यां मध्यंदिने नथा । दक्षिणामपराह्णे तु पश्चिमामधैरात्रके ॥ १ ॥ "

" सम्मुखीनोऽर्थलाभाय दक्षिणः सर्वसंपदे । पिष्ट्रम. कुरते मृत्युं वामश्चन्त्रो धनक्ष्यम् ॥१॥ "

रविचारमाह—

ब्षभ, कन्या, मकर

भतिशब्देन दक्षिणोऽपीन्दुः श्रुभ इत्युच्यते, यदुक्तं नारचन्द्रटिपनके--

" न तस्याङ्गारको विष्टिनै शनेश्चरजं भयम् । व्यतिपातो न दुष्येच यस्याकों दक्षिणस्थित. ॥ १ ॥ '' नक्षत्रममुष्क्षकेऽप्यत पृत्रोक्त—

म् स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र योश्रोत्तरापूर्वे यदि गरेशत, तदा सूर्य सकरादिस्थे दिवा दक्षिणापश्चिमे यदि गर्छेद् , चन्द्रे वा ककोदिस्थे रात्राधुत्तरापुर्वे यदि गच्छेत्तदा यातुर्वेधव-द्क्षिणां पश्चिमा च सर्वेद्रा गच्छेत् । सर्वेटेति कोऽर्थः ? दिवा रात्रौ चेति, अर्अन्द्रोरेकायनासभचे तु यथासख्यं दिवानिसं गच्छेत् । अयमर्थः-यद्गडकों मकराद्रौ तदा हिने उत्तरां पूर्वां च गच्छेत, यदा ककोंद्रौ तदा दिने दक्षिणा पश्चिमां च गच्छेत्। एव चन्द्रे मकरादिस्थे रात्राद्वत्तरां पूर्वां च अनग्रोरभैः--यदाऽहेन्द्र मकरादिपट्के उत्तरायणे रतः तदा प्रशिमुत्तरां च मर्थदा गच्छेत्। यदा च ती कर्कादिपट्के दक्षिणायने सासादा प्रवहा प्रविद्यापवना पूर्णा नाडी नासारन्धरूपा यस स्यात्तरपद् वाम दक्षिण वांऽहि पुर: कुत्वा च सिंद्ये कार्यस्पेति शेष: । उक्तक्र विवेकविकासे-गच्छेत् , कक्रीदिस्ये तु रात्री दक्षिणां पश्चिमां च मच्छेदिति । विपर्यये त्वशुभं कोऽथैः ² रवीन्द्रोमैकरादिस्थगेदिक्षणापश्चिमे यदि गच्छेत् कर्कोदिस्थ-षद्शताभ्यधिकान्याहुः सहस्ताण्येकविंशतिम् । अद्दोरात्रे नरे स्वस्थे प्राणवायोगेमागमः ॥ १ ॥ " सिद्धेय ब्रजेदथ विजेतुमना विपक्ष-पक्षं स्वतस्तु विदधीत विनाऽऽनपक्षम् ॥ १७ ॥ '' रिविशशिक्तरप्रदीर्पा मकरादाबुत्तरों च पूर्वों च । यायाच ककंटादी याम्यामाशां प्रतीचीं च ॥ १ ॥ अयनानुकूलयानं हि तमकेन्डोद्वंयारसंपत्तौ । द्युनिशं प्रगुक्ष यायाद्विपर्यये क्रिशवधवन्धाः ॥ २ ॥ " ब्याख्या---अध्यात्मशास्त्ररीखा इंसः प्राणवायुस्तस्मिन् विशति सप्ति न तु निःसरित सित । यदाद्वराध्यात्मिकाः---हंसेऽन्तरा विशाति दक्षिणतोऽथ पृष्ठे, कृत्वा रिषं प्रवहनाडिपदं पुरख्र । एवं गमनेऽभी दक्षिण एव स्थाटिति भाषः । लहाः पुनरिष चन्द्राभेषारानुकूरुयमेषमाह्न-न्धादिदोपाः ॥ रविचारमेव हसचारेण विशिष्याह—

1188511

" स्क्रिणे यदि वा वामे यत्र वायुनिंदन्तरः । तं पादमग्रतः कृष्वा नि.सरेन्निजमिन्दरात् ॥ १ ॥

न हानिकलहोड़ेगाः कण्टकैनिपि मिद्यते । निवरीते सुखेनेव शुद्रोपवद्रवर्जितः ॥ २ ॥

दूरदेशे विधातन्यं गमनं तुहिनधुती । अभ्यणेदेशे दीप्ते तु तरणाविति केचन ॥ ३ ॥ "

शुक्रचार-विष्यः ॥ #98%= चतुर्थं विमर्थे गमदारे र्दिक्स्पर्यंनमुचे, तथा शुक्रोऽपि अमन् यखाः प्राच्यादिटियो यां दिशं याति, यद्वा मेपाद्याश्रःवारश्रत्वारः पूर्वाद्याश्रतसश्रतको दिश इति तेषु अमन् •याक्या-ग्रुक्ती यन्नित यस्या दिक्ति प्राच्यां प्रतीच्या बोट्नेति तहिक्षि यातां सम्मुखः स्पादित्यप्रे योज्यं । अमम् वेति यथा रवेश्रेमणवद्गाम्बतु-" प्राणप्रवेशे घहनाडिपाद, क्रत्वा पुरो दक्षिणमकैविम्बम् । प्रदक्षिणीकृत्य जिन च याने, विनाप्यद्वःशुद्धिमुशन्ति सिद्धिम् ॥ १ ॥ " अत्र सुहिनेति बामदक्षिणनाड्योः क्रमाच्चन्द्रसूर्यंतज्ञेषं । विशेषस्तु—" हक्षिणनाड्यां पूर्णायां विषमपदेः १-३-५-७-९ गन्तब्यं प्रतीचीद-क्षिणयोश्र न गन्तब्यं । बामायां तु पूर्णाया समपदेः २-४-६-८-१० गन्तब्यं, पूर्वोत्तरयोश्र न गन्तब्यमिति" स्वरोद्रयविदः । ब्रजेदिति प्रस्तुतइं-अथ विजेतुमना इति अर्पे जिगीषुः तन् अर्थानमेव स्वतः सकाशात् आनो वायुस्तस्य पक्षं पाश्वं विना, प्रतावता शून्यपाश्वं कुर्यात् केचित वितानपक्षे इति पेठुसत्र वितानश्वटः शून्याथैः । कोऽथैः ? रिक्तेऽङ्गे रिष्ठुः कार्योः, न तु पूर्णं, यथा सुखाजीयते अर्थाच्छवर्गः पूर्णाङ्गे कार्यैः " वहनाडिगतो वाच्यो दक्षिणेऽकैऽर्थल्ज्घये । रिक्तनाडीगतः राजुर्जीयते पृष्ठगे रवो ॥ १ ॥ '' श्रुक्षचारमाह— " पुत्रनाडिदिसापाय अग्मे किश्वा सया वि ऊ। पवेस गमणं कुज्जा कुणंतो साससंगहं ॥ १ ॥ " गुरुवन्धुनुपामात्या अन्येऽपीप्सितदायिनः । पूर्णाङ्गे खलु कर्तेच्याः कार्यसिद्धिमभीप्सिता ॥ २ ॥ " अरिचौराघमणीद्या अन्येऽज्युत्पातवित्रहाः । कर्तन्याः खद्ध रिकाङ्गे जयलाभसुखार्थिभिः ॥ १ ॥ डत्थं त्रिया तदिशि संसुखः स्यान्यास्त तत्रोदयसम्मुखीनः ॥ १८॥ गुकस्तु यत्रोदयति अमन् वा, यां याति यद्दारक्तमेति भं वा मचारादिगुद्री सत्यां जिनं प्रदक्षिणीकृत्य वजतो बिहास्य सर्वाधासिद्धिः स्थात् । उक्तञ्च यतिवछुमे-निभागतोऽय गुष्टे कृत्ना रिनिमित्येतदत्रापि योज्यं । यदुक्त यतिच्छमे-उपलक्षणाःवाच प्रवेशेऽप्ययमेव विधिः । यदुक्तं दिनशुद्धौ-||§%\|

= 7°° ~ गमद्वारे प्रतिशुक्त वर्णनम्। बाल्यवार्षकस्वनीचस्वास्त्रपितस्ववक्रगामिस्वप्रद्वपाज्ञितस्वादिप्त्वपि सस्यु यात्रा दुष्टा, "याने क्यक्र सबलोऽन्वेष्य" इस्युक्तः। तथा च रत्नमालायाम्— " नीचगे प्रद्वजितेऽय चिलोमे, मार्गेवे कल्जुषितेऽस्तमिते वा । प्रस्थितो नरपतिः सबलोऽपि, स्निप्रमेव बश्मेति पिषुणाम् ॥१॥" न्यास्या—संमुखोऽप्यानेष्टत्वात् प्रतिकूच्छुकः प्रति<sup>श्चक</sup>ः, प्वमग्रेऽपि । त्रिविधमिति इद्मपि मतं प्रान्यकृतः सम्मत, तेन यत्प्रागुक्तं 'स्राज्यस्तु पास इस्पर्यः । यत्द्रारकमिति परियचकोक्तरिया यहिग्द्रारकं मं समेतीति त्रिधा सम्मुलस्यमनेऽपि शुक्रस्रोद्यदेगेव प्राची प्रतीची वा सम्मुक्षी अत्र स्वभवनेति स्वभावेन गृहप्रवेशमात्रे, न तु नन्यगृहप्रवेशोऽत्र याद्यः, तत्र प्रतिशुक्त त्याज्यमिति वक्ष्यमाणत्वात् । तथा शुक्रस प्रतिशुक्त त्यजन्येके यात्रायां त्रिविधं बुधाः। तस्मात्यतिकुनं कष्टं ततोऽपि प्रतिसोमजम् ॥ १९॥ स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विभ्रमे तथोड़ाहे । नववध्वागमने च प्रतिशुक्रविचारणा नास्ति ॥ ३ ॥ " इति लख्डः । " पीष्णाग्यिनीपाद्मेकं यदा बहति चन्द्रमाः । तदा शुक्रो भवेदन्धः संमुखं गमनं शुभम् ॥ १ ॥ " इत्याद्यः " अग्रतो लोचनं दन्ति दक्षिणो ह्यशुभगदः । पृष्ठतो वामनश्चेव शुक्रः सर्वेसुखावहः ॥ १ ॥ " केचित्— निष्ठेच पोडशकृति २५६ दिवसान् प्रतीन्यामस्तंगतस्तिवह सयक्ष १३ दिनान्यहक्य: ॥ १ ॥ " " प्राच्यां भुगुजेलिधितत्त्व २५४ दिनानि तिप्ठेत्, तत्रास्तगस्तु नयनादि ७२ दिनान्यदृश्यः । पकत्रामे पुरे वापि दुर्मिक्षे राष्ट्रविभ्रमे । विवाहे तीर्थयात्रायां वत्सशुक्रौ न चिन्तयेत् ॥ २ ॥ " काश्यपेषु निश्चेषु भुग्वञ्याङ्गिरसेषु न । भारद्वाजेषु वात्स्येषु प्रतिशुक्तं न विद्यते ॥ १ ॥ सस्य पूर्वायं-'अधिकाया बङ्गिपादान्तं यावचार्ति चन्द्रमाः" इत्येके पठन्ति । तथा---तथा स्वजन्मनक्षत्रनाषेऽप्यसमिते यात्रा हुप्टेति देवज्ञवछुमे ॥ सात्या । विशेषस्त-दिक्षिणोऽपि श्रुक्रस्साव्यः । यदुक्तं नारचद्रे-क्रुक्रस्पोदयास्त्रिनसंख्या चीत्मगिक्येच नारचन्द्रटिप्पनके---

```
नत्ये
विमर्भे
गमद्वारे
नत्सकरू
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     18881
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      शुक्रवद्गीमगुषयोएपि सम्मुखत्व दक्षिणभुजस्थात्व च साज्यमिति जिनिक्रमः । घुष. सम्मुख एव साज्य इति तु रत्नमाकाभाष्मे ॥ वत्सचारमाह—
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      '' वपुरस्य शत हस्ताः श्र्ङ्गयुगं षष्टिसंयुता त्रिशती । पन्नाभिषुन्छशिरसां भूप १६ नव ९ त्रि ३ शर ५ करमानम् ॥ १ ॥ "
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              क्याख्या—प्रवासी दूरदेशयात्रा, वास्तु गृहादि तस्य द्वारं न निवेह्यते, अर्च्यतेस्यचां जिनादिप्रतिमा तस्याः प्रवेशो भनिकगुहानयनं ।
अत्रेति वत्से । नारचन्द्रहिप्पनके वत्तरक्ष्यमेव प्रोचे—
                                                                                                                                                                                                           'तसात् प्रतिक्षनमिति' श्रुकाद्पि भौमः सम्मुत्तः कष्टदुत्वात्कष्ट , तमपि त्रिविष त्यनन्तीति योग.। तसाद्पि सोमजो बुधः मम्मुत्तः कष्टः ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    " पञ्च १ दिक् २ तिथि ३ सिंज्ञ ४ तिथि ५ दिक ६ शरवासरान् ७ ।
तत्रोद्यसम्मुलीन' इति तद्रैकान्तिककार्यविषयं, सौस्प्ने तु यथात्रांकि त्रिविधमपि सम्मुखत्व साज्धमिति द्रष्टव्यं । तथा चोकं दैवज्ञवछमे-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              सम्मुलोऽयं हरेदायुः घ्टे स्याद्धननाश्चानः। बामद्क्षिणयोः किन्तु बत्सो बाफ्डिजनदायकः॥ २१॥
                                                                                                                                 मघादिश्रवणान्तानि भानि शुक्रो यदा चरेत् । नापाचीं न प्रतीचीं च तदा गच्छेष्डिजीविषुः ॥ २ ॥ "
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       बत्सः प्राच्यादिष्टेति कन्यादिभिन्नि रवौ । प्रवासवास्तुद्धाराचिप्रवेशाः सम्मुखेऽत्र न ॥ २०॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     बत्सिस्थितिर्दिक्रचतुष्के प्रत्येकं सप्तमाजिते ॥ १ ॥ "
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        " प्रतिशुक्तेऽपि निर्गेच्छेद्नुकूलो बुधो यदि । गतः प्रतिबुधेनान्यैः राक्यते रक्षितुं श्रहैः ॥ १ ॥ "
                                                                   " धनिष्ठादिकमन्क्रेषापर्यन्तं भगणं भृगुः । यदा चरति नोदीचीं नापाचीं च तदा ब्रजेत् ॥ १ ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             तथैन स्थापना—(नमीपस्थपत्रे विलोनया) इद ज्योतिपसारे । केचिद्रस्स्य वास्तुसंज्ञामाहु. ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      च्याख्या—सुगम. । अन्येऽर्शादेमचैग्रहाणां बस्तवद् गृहाण्येवमाङ्ग-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             हस्ताः १०० ३६० १६ ९ ३ ५
देहः सन्ने पदाः नाभिः पुच्छं शीप
                                                                                                                                                                                                                                                          उक्तम देवज्ञवछमे-
```

1188311

वतुर्थे विमये गमहारे शिवचारव-णैनम् ॥ 1025 इह प्रसद्वात् शिवचकं लिख्यते अत्र पूर्वादिष्धि वसन्तीति शेषः। श्वेपाः सिंहादिकत्रये ॥१॥' पूर्व वत्सः कन्यादिकत्रयं र्क्भ सर्वेषां स्थापना यथा— मीनादित्रयमादिखो धन्वादित्रितये राहुः, राहुचार चक्रम् दक्षिण उत्तर તસ્ત્રિમ चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-गुरु पूर्व सिहकन्यातुला श्रि चाराणां चक्रम् ष मिथुन कर्के, रतिचारचक्रम् द्धिया उत्तर दक्षिण उत्तर क्षितिष्ठिति н×Iр मझीम दक्षिण 30 ₹0 34 त सप्या शिवो मासमेकं तथा हो, ~ つ % 0 स्थितिनुं नक 보기 ty O पश्चिम त्र 3° व्तस्तार तथा ट्रथ वत्सनी महत्या संस्थितो विक्षित्रस्ति अध्यधं नाहिके 1184011

चतुथं विमधं गमहारे धुद्रेलम विचारः ॥	แรนยแ
なるでのよういろうというというというとうかんしょう	かまる本の生
बायक्य व तत्तर व हो शा हुयं च स्थापना स्थूकमानेन । सूझ्मीक्षक पुनस्वम् । सिजवारस्थापना— हृयं च स्थापना स्थूकमानेन । सूझ्मीक्षक पुनस्वम्— मेरिडके: वही शा हुयं च स्थापना स्थूकमानेन । सूझ्मीक्षक पुनस्वम्— वही शा वहायेन सहरिष्ण हितानपके: सार्घ वहित्रं प्रचान काने होने सार्घानी स्थात । सुन प्रवह प्रचान काने होने सार्घानतके: सार्घ वहित्रं सार्घ वहित्यं सार्घ वहित्रं सा	जियोद् शहुदनने रणे झगटके तथा । यूते चैच प्रचासे वा पुष्ठे मुष्टै शिवे जयः ॥ ३ ॥ स्पराक्ष शकुना दुष्टा भद्रा प्रह्मचरुं तथा । दिग्दोपा योगिनीमुख्या अभयाः स्युः शुमे ग्रिवे ॥ ४ ॥ " तथा— स्थैराश्यादित. सन्ये लग्ने तत्कालसम्भयम् । पृष्ठदृक्षिणगं झत्वा जयेद्युद्धे न संशयः ॥ १ ॥ भलापैः—पत्र रातावकोऽस्ति तत्कुंसा दस्ता तत भारभ्य सृष्ट्या गण्यते, ततश्च तदानी यहतेमानं कमं सात्त्व पृष्ठतो दक्षिणतो वा झत्वा
वडी २॥ मक्दुश्यान सक्दुश्कम सक्दुश्कम सक्दुश्यान सक्युश्यान सक्युश्यान सक्युश्यान सक्यु	ाषवाद् शञ्चहनने रणे झगटके तथा । यूते चैच स्पराक्ष शकुना दुष्टा भद्रा प्रह्वकं तथा । दिन्दे " सूर्यराष्ट्रत. सन्ये लग्नं तत्कालसम्भवम् । फू भसाषे:—यत्र रातावकोऽसि तत्पूर्वसा दत्ता तत भ
ठनत् मेषेऽक्रेः घदी शा द्धिण तुलाक्रेः घदी शा	ावदाद् शबुद्दनने रणे झगटने स्टराक्ष शकुना दुष्टा भद्रा १ स्पर्राश्यादित. सन्ये लक्नं त <sup>अस्पा</sup> षेः—यत्र सत्रावकोऽस्ति र
वायक्य वायक्य वायक्य वायक्य वायक्ष २॥ ४% १% १% १% १% १% १% १% १% १% १% १% १%	ाषवादं शत्रुहनने रणे झग स्वराक्ष शकुना दुष्टा भद्र " स्वरीराश्यादित. सब्ये लक्ष्रं <sup>असापे</sup> ः—यत्र रातावकोंऽस्ति
24-564-64-64-64-564-26-64-86	36-5-56-5-56
आरम्भ- सिद्धेः ॥१५१॥	

でとるこ उत्सवमधानं स्नानं प्रगुणं चोपेक्ष्य मङ्गलमशेषम् । असमापिते च स्नुनक्युगेऽङ्गनतीं च नो यायात् ॥ २२ ॥ अवमन्य माननीयान्निभैत्स्य स्त्रीं च कमापि संताब्य। बालमपि रोद्यित्वा जिजीविषुनैंव निर्गेन्छेत् ॥ २३ ॥ क्पाटाद्रो विकानं । भाषशब्दात् क्षिर:संघट्टांहिस्खळनाहि । ग्रुममपीति ग्रुमाग्रुमं शकुनं ज्ञात्वा कुर्यान्न अग्नाः । विशेषस्तु— " रिक्तोऽनुकूळः कुम्मोऽम्भः प्रणाय प्रयोजितः । विद्यार्थिचौरवणिजां प्रयाणेऽतीच सिद्धिदः ॥ १ ॥" इति मास्करन्यवद्दारे । गृहिति गृहशब्दः कलहज्बलनाभ्या योज्यः । भोतुयुद्धित महिषादियुद्धमपि । दुर्वचनं माऽगाः मरिष्यसीत्याद्यमङ्गलवाक्यं । वसनाञ्चलस्य सङ्गः च्याएया---प्रगुणत्वं सवेषु योज्यं । उत्सवः कीमुषादिः । सानमुष्ठाघनस्य सामान्येन वा । मङ्गळं विवाहपुत्रास्रप्राधनादि । सूतक्युगं क्षुतगृहकलहरुवलनौतुयुद्धदुर्वचनवसनसङ्गाचम् । अग्रुभं यात्रावसरे ग्रुभमपि शक्कनागमाद्विन्दात् । २४ ॥ " सवैतः श्रुतमशोभनमुक्तं, श्वौतुगोपशुक्तं मृतिदं तु । कैचिदाहुरफ्ठं हि चलाघद्वृद्धपीनिक्तियालक्षतं च ॥ १ ॥ " अस्थाय भावः-यात्रायां चेत् कश्चित् रिक्तघटहस्तो जकार्थी अध्वयोन सह समेति तद्र सोऽपि घट इव पूर्णीभूय निवर्तते । तथा--" प्रमत्तो व्याधितो भोतः थ्रान्तः कुद्दो बुभुक्षितः । अध्वानं न प्रपद्येत क्षीववेपस्तथैव च ॥ १ ॥ यो वा प्रस्थानके गत्वा पुनर्गृहसुपागतः । इत्येवमादिचेष्टामिः सिद्धिनस्त्यभिगच्छतः ॥ ३ ॥ " राजो तु मेथुनं कृत्वा प्रभाते योऽभिगच्छति । यात्राकालेऽथवा प्राप्ते मैथुनं यो निषेचते ॥ २ ॥ युदाहि छवन् जयी सात् ॥उक्ता यात्रायां समयग्रीदिदिक्ग्रदिश्र । भथ चेष्टानिमित्तादीनां भ्रविमाह— न्यास्या-अन्नेतद्पि छछोक्तं छध्यं-•यास्या—ध्रुतेति, वक्तञ्च— तिमृतमृतकमेदात् ॥ 11862

नतर्थं विमञ्जे गमद्वारे दिग्मुख-शीपोंदय-= | | | | (समीपस्यपत्रे विलोनया) विदेयदतु—यात्राया हमं प्रायश्वरमेव प्राधं । ज्तद्विकोमयोरिति उत्तरपूर्वामुस्तरनोषु यथामदृष्यं दक्षिणपिष्रमामुर्स्तह्यनेपूत्तर- | वा चरवं पुष्पफळादिवेकत वा म मर्वेडिप भौम उरपातः । आन्तरिक्षा उत्कानिर्वातपवनगन्धवेषुरग्नक्रचापरोहितेरावतपरिवेषदण्डपरिघादयः । दिन्या-ग्रास्तात् । अयमत्राभिस्मिधः-अन्येराचाँयः स्वस्वप्रन्येषु यात्राधिकारे तर्ह्गकुना अपि विस्तरेणोक्ताः, अस्माभिस्विद्यप्रस्तुतत्वाच्छकुनत्रााद्वाद् प्रहणं । उरवातेषु चेति, चक्राराद्राहुयोगिन्यावि चिन्तयेदिति रत्नभाष्ये । भौमैत्यादि मौमो सूमिकम्पथहहदादिः । यद्य चराणां स्थिरत्वं स्थिराणां भत्र प्राणः परुन्य पष्टांगरूपः । पन्न पट् चेत्येकाद्श । भष्टौ द्विगुणान् पोडशेल्पः । शकुनागमादिति चसन्तराज्ञादिरचितशकुन-ध्याख्या—आकालिक्योऽकालज्ञाः गभै चर्षाकालं व। विना सक्षाता इत्यथैः । वसुमतीनाथ इति, उपलक्षणत्वात्सामन्तादेराचार्यादीनां च स्यार्या—मेपायाश्रस्यारश्रस्यारश्रसारश्रसियीया हति मागुक्क, ते च तत्तदिमुखा हति ज्योतिज्ञो. । तथा चेय चतुर्दिमुक्कन्नानां स्थापना । अन्दार्केषिरागिटिप्रहर्सेचेक्रतकेतुदर्शनात्यः । लालाटं धतुरेन्द्र न ग्रुभक्रदन्यत्र शस्त्रफलिमित तु ल्खः । न प्रवसेदिति, आ सप्ताहादिति देवज्ञच्छमे आकालिकीषु विद्युद्धन्नितवर्षासु वसुमतीनाथः। उत्पातेषु च भौमान्तरिक्षदिन्येषु न प्रवसेत् ॥ २५ ॥ एकाह तु साज्यमेवेति सारङ्गः । दषः केतुः पोदगाह विवज्यैश्रेत्रे वैनाखे च दष्ट. ग्रुभोऽस्रो इति तु वराहः ॥ अथ यात्रायै लग्नमाह— यातच्यं दिग्मुखे लग्ने सिष्ध्ये शीषोदये तथा। एतद्विलोमयोजितु यात्रा यातुने सिद्धये॥ २६॥ चातुर्वेण्यंसाथाएर्णं यात्रामुक्त्वाऽय रिषुविजयप्रयोजनां तृपादियात्रां चत्वारिंगता श्लोकैः कथयबादौ दुनिसित्तपरिहारमाह— " आये विरुद्वे राकुने प्रतीक्ष्य, प्राणान्त्रुपः पञ्च च पद्च यायात् । अधे डितीये डिगुर्णास्त्रतीये, व्यावृत्य कुनं गृहमभ्युपेयात् ॥ १ ॥ " इति खमालायां । पूर्वांगमने गृषीटयङ्गे चेत्यषः । न मिद्ये इति, यछ्छ.—"अनिष्टःं दिक्पतिलोमङ्ग पृष्ठोट्ये वान्छितकार्यनाशः ॥ तरपरिज्ञानसंभवाच न ते प्रोक्ताः ॥

चतुर्थे विमये गमद्रारे गमनेऽनि-एकुछम्न भनेन चेढ़ सूचयति-आदी तावजानुरुंग्ने ज्ञाते सति यात्राल्यनं देयं, नान्यथा, यतो जन्मरुग्ने ज्ञाते सति ' अशातज्ञन्मनोऽध्यन्येयांनं योज्यमिति स्मृतम् । प्रश्नलग्ननिमित्ताद्येविद्याते सदसत्पत्ने ॥ १ ॥ " इति रत्नमाकाया । अत्र यानं योज्यमिति यात्राकानं देयमित्यथैः । जन्मरात्रीति जन्मनि यत्रेन्दुः तयोरिति जन्मलग्नजन्मराक्योरपेक्षया ये उपचयस्थास्त्रिषड्दक्षेकादशा राज्ञय: परेषु द्वयोरप्यनुपचयस्थरात्रिषु यात्रा नेष्टा । विशेषस्तु–राशेकेन्मराशिकेन्मळग्नं वा तद्धिपौ वा तत्कालकग्नाबतुथे सप्तमे वा स्थानके भवतस्तदाऽपि यात्राक्रीजेयः । यदि च ग्याएया---जन्मकाने इति यात्राकतुंनुपादेर्यजन्मकानं तस्मिन् काने यात्रा ग्रुभा, प्वमग्रेऽपि भाव्यं । स जन्मराशिः स प्वोदयो ळग्नं तत्र यात्रा न शुभा । रत्नमाळायां तु जन्मराशिकरनेऽपि शुभा यात्रेत्युक्त । तयोत्रोपचयस्येषु राशिष्टिष्टा परेषु न ॥ २७ ॥ जन्मलमे ग्रुभा यात्रा जन्मराष्ट्रयुद्ये तु न। दंशायुर्महयलान्यवलोक्य दनं यात्रादिसुहुत्तं फलदं स्यात् । वृष कन्यामकर जप्तस्य विम्मुन्नचक्तम् दक्षिण 1184211

राशियांत्रालम्ने सप्तमतुर्यस्थेः पापम्रहेर्यदि युतो दघो वा स्यात् । सीम्येति स एव सीम्येरापि यदि युतद्दयसदा न पराभव हति भावः । विशेषस्तु-यात्रासमये जन्म-कुण्डलिकासम्बन्धिनी भष्टमपष्टभवने कूरसौम्यमहाधिष्टिते अग्रुभे । यहुर्क देवज्ञवछमे—'वधः प्रयातुरस्विधिः प्रसूती रम्प्रासिमे कूरग्रुभान्विते चेत्'॥

अष्टमं स्वेन्दुलग्नाभ्यां ताभ्यां षष्टमथ द्विषः। तद्राशिनाथयुक्तं वा लग्नं यातुरनर्थकृत् ॥ २९ ॥

पापैरस्ताम्बुगेर्हेट युते वा जनमलग्नभे। सौम्यग्रहेस्तु नैवं चेत्तदा यातुः पराभवः॥ २८॥

चाम्बुगैः सौम्यैयदि न युतो न दष्टो वा तदा पराभवः, पापैरिव

ब्याल्या---अस्तेति यत्र तत्र भवने स्थितो जन्मक्षप्रस्य

शबुसक्कजन्मराशिजन्मकप्नयोरुपचयगृहाणि चतुथे सप्तमे वा स्युस्तदापि जय एवेति रत्नमाळायाम् ॥

||8\a|

(मिथोवक्य-स्यलाम्ब्रसंभूतसरीसृपात्या, मवन्ति वश्या विलनां स्वकानाम् । समा बुसंस्था विषमान् भजन्ते, वश्या रजन्यां विषमाः समानाम् ॥२॥" ' चतुष्पदा डगंहियशा विभिहाः, सरीसुपश्चाम्बुचरास्तु भक्ष्याः । सिहस्य वश्या विसरीसृपाः स्युक्छं जनोक्तव्यवहारतोऽन्यत् ॥ १ ॥ जन्नराः, सरीसपो गुश्रिक इति । ततश्च सिंह विनाऽन्ये मेपयुपद्धश्चिकक्षमा मानुपाण<sup>ा चर्य</sup>ा, जलचराः कर्कमकरमीना मनुष्याणां भक्ष्याः, सिंहस्य ब्याख्या—जन्मकासीयो य इन्दु. स स्वेन्दु., स्वळग्नं च जन्मस्प्रमेव, ताभ्यामष्टम यह्वग्न तद्यात्रायां साज्य, ताभ्यामेव यत् पष्टं तद्षि ब्याक्या—उद्ये लग्नेऽंगे नवारो च तत्र कर्नेबुक्रिकयो. कीटरवेन यात्रायामक्षमत्वाहुजैनं । मीने तु मस्थितो वक्रेण पथा आन्त्वा आन्त्वा "जन्मक्षे १ लग्नाप्रमराशिलमे २, पष्टोद्ये ४ राजुभलग्नतो ६ वा । तद्राशिनाथै ६ रथवोद्यस्थैः, करोतु यात्रां विपभक्षणं वा॥१॥ " स्वाज्य । तथा द्विपस्नाभ्यां यत् पष्ट, क्रोऽथं: ! द्विपोऽभिषेणथितुमिष्टस जन्मलग्नाज्ञन्मराशेश्व पष्टस्थानस्यौ यौ रात्री तावषि <sup>छर</sup>ने स्वाज्यौ । तद्राक्षि-नायेति ये स्वेन्टुळग्नाभ्यामष्टमे पष्टे च ये च या (जे) तब्यस्य जन्मेन्हुजन्मळग्नाभ्यां पष्टे गृहे तेषां पण्णामपि राशीनां ये इंशास्तेमृतिरथेथुन ऽसिद्कार्य, पश्चात् ममेति । उक्तञ्च सनमालाया, ''वक्र. पन्या मीनलग्नेऽशंके या, कार्यासिद्धौ स्यानिवृत्तिश्च तत्र " । तथा कुम्भस्य रिक्तवात् कुम्मलग्नकुम्भाशावपि साज्याबुक्तो रत्नमालायां । मूर्तिस्य इति यात्रालग्ने स्थितो प्रहो यद्यहर्वेली तदाऽहन्येन यात्राऽहो न निशि, निशावली चेत्तदा ग्याएया—मिएध्रे इति कार्येरिवति येप.। नौयानमिति जलचरल्गने, उपलक्षणत्वाज्जल्बरनवासे वा नौयात्रासिद्धि.। प्रवहणपूरणे च अनयोरथं —अजबुयसिंहा धनुरपराधं मकराद्याधं च चतुष्पद्रा., मिधुनक्रम्यातुलाकुम्भा धनुराद्याधं च मनुष्याः, कक्षेमीनो मकरपश्चाधं च सिंध्यै सौम्येशलग्रामि नौयानं जलसेव्वपि । जानीयाछोकतत्राच राशीनां वर्यतां मिथः ॥ ३१ ॥ कर्मग्रिश्वकमीनानामुद्येऽशे च न ब्रजेत्। सूर्निस्थेऽहर्वेछे रात्रौ राजिवीयेऽहि च यहे॥ ३०॥ निस्येन नाह्नि । उक्त हि—''वलिनोऽह्नि गुरुसिताकां'' इत्यादि ॥ निविधाताकामी स्वाता । वश्यतामिति, उक्त हि देवज्ञवस्रमे-पछ्नम तद्पि खाज्य । तथा च देवज्ञवछमे—

द्यश्रिकस्मापरो सुश्रिको बरुक्षीनत्वे सति वर्यः स्यात्, मेपद्वयसुपद्वादीनां सम्भवेऽपि च सुश्चिम्बदेन बर्काधिक्यं विचार्यं वर्यता भावनीया ! समा तिति, यि द्वावि रात्री स्थलजी जळजी सरीसर्वो वा तदा द्वयोर्मध्ये यो बिलष्टिसस्येतरी वश्यः, यथा युपस्य मेपो वश्यः, मकास्य मीनकर्को पश्यो, गुसंस्था इति, इष्टलम्नं किल दिवा स्यात्रात्री वा, तत्र दिवा समराजयी विषमरात्रीनां वश्याः, रात्री तु विषमरात्रयः समरात्रीनां वश्या इति। अस्य मुश्रिक्त विना समें वश्याः । अन्यदिति कृष्ठिकस्य सिहोऽपि वश्यः । समें पुंराशयः कन्याया वश्याः, धनुपः समेंऽपि वश्य इत्यादि । रथलाम्बुसम्भूः प्रयोजनं तु "यम् वह्यं स्तलमेन्द्रोः" इति स्त्रोके वस्यति ॥

जनमकाछे गुभैर्युक्ता द्वितीयास्तरणेश्र ये। निष्क्र्रा निर्विकाराश्र ते लग्ने राश्यः ग्रुभाः ॥ ३२॥

नतुषं निमये गमदारे यात्रायां होरानि-हपणं ।

ग्याख्या--या होराऽकेंण सुक्ता सा अर्षमुखी, मुज्यमाना तिर्यंत्मुखी, मोक्यमाणा त्वघोमुखी, पुनसाद्पेतन्यसिखः क्रमाद्भ्यंतिर्थ-च्याख्या--यद्यात्राल्ग्मं स्रोबजम्मल्ग्नास्योवंद्यं स्थात् द्विषो जेतन्यस्य जन्मल्ग्नजम्मराद्योषंद्यं च। तथा मन्नोरेव न तु स्बस्य ताम्यां स्यासया—द्वितीया इति येषा किल जातके वेषासंज्ञा, ''सूर्यांद्दितीयसभं वेषाः'' इत्युक्तः । निष्कृरा इति जन्मकाले येषु क्र्प्प्रहो नाभूत्। विसुक्तात्रान्तभोग्यानि राह्यधन्युष्णरहिमना । जध्वैतियैगधोमुक्यो होराः स्युक्दयाविध ॥ ३४ ॥ यच बह्यं स्वलग्नेन्द्रोने च बह्यं द्विषरनयोः । हात्रोरेवाष्टमं ताभ्यां लग्नं यातुजंयावहम् ॥ ३३ ॥ इत्युक्तमष्टीम: श्रोकेयांत्राहुँ छन्नं । अथ ''जत्ता छन्वममसुद्धीष्'' इति हर्षप्रकाशोक्तेयांत्राहुँ होरादिवर्गपञ्जकमहि— निविकारा इति, क्र्मुक्तराशिः यविकारः, चन्द्रेण भुक्तत्तु निविकारः जन्मकाले ये राशय ईद्यास्ते यात्रालग्ने शुभाः ॥ जन्मलग्नजन्मगिष्यं यद्षमं स्यात्त्रमं यात्रायां ग्रुभम् ॥

गधोमुख्यः पुनस्तथेन तिस्नः क्रमाद्रुष्वदिसुख्यः, एवं पुनः पुनरद्यावभीति स्वेदियं यावत् । यहा उद्यो लग्नं तत्राधिकृता होरेत्यभैः तं यावत् पुवं

त्रिविधा होराः करप्याः । एवं चाहोरात्रे चतुर्विद्यतिहोरासके त्रिविधहोराणामष्टाष्टा बुत्तयः स्युः ॥ फलमाह---

ज्ञयमुध्वंमुखी होरा विपद्सित्यंगानना । अधोजुली रणे यातु भन्नं दियाति लग्नगा ॥ ३५॥ ब्यारया---जयमिति एव करुप्यमाने सत्यभीष्टा लग्नहोरा यधुष्येमुखी स्पात्तदा जयदा ॥

ब्याख्या—राह्यो राह्यो त्रयत्रयभावात् पर्नित्राब्द्द्रेष्काणाः स्युः, तेषु यः जलरालैरुपलक्षणत्वागुष्पैभाण्डेबाऽऽस्य. सीम्यसामिकः सीम्बेन द्रिकाणः फलरताब्यः ग्रुभनाथः ग्रुमेक्षितः । ग्रुभोऽग्रुभस्तु मास्त्राहिपावकः पापवीक्षितः ॥ ३६ ॥

11848

र्गुग्दशा दष्ट एव सीम्याज्ञारो वा य. स्वारत यात्राल्यने श्रुभः । अशुभस्थिति यस्तु शस्त्रसर्पानिमधुँतः, केचित् पावकस्थाने पाशक पठन्ति, तेन सीम्येहेष्टे जयः स्यात्प्रहरणसिंहते पापद्धे च भङ्गः, साग्नी दाहोभ्य वन्धः सभुजगनिगडे पाप्युक्तेभि वाभ्भीः ॥ १ ॥ " ाग्नैबंन्धनेवां युतः, तथा क्र्रास्टः उपलक्षणावात् क्र्युतः क्र्रोकः क्र्राकारो वा सोऽग्रुभः । उक्तञ्च— " द्वेरकाणाकारचेष्राग्रणसदश्यफलं योजयेद् वृद्धिहेतो, द्वेरकाणे सोम्यक्षपे क्रमुमफलयुते रत्नभाण्डान्बिते च ।

जाति-नि मैयः ॥

। गमद्वार हेष्काण-

तेपा रूपाणि चेच चृहजातके-मेपे प्रथमद्रेष्काणो नरोऽभ्युद्यतपश्चेहसाः कृष्णो रक्ताक्षो रीद्रः १। अय द्रेष्काणो मनुष्य एव, विद्येपानिभधाः

नार, एव येषु विशेषो न वस्यते ते मनुष्या एम श्रेया. । द्वितीयः स्त्री शोणाम्बराऽश्वाऽऽस्या दीर्घमुखोरूपाड़ी (पदी) एकेनाहिणोपकक्षिता, चतुष्पदोऽयं,

तत्तुत्यास्यत्तात्, प्रममेप्रेऽपि यथायोग भाष्य २ । तृतीयो नरः क्रूरः कपिलो रक्ताम्बरोऽभ्युधतद्ग्दहस्त. ३ । १ । घुपे आद्य. स्त्री कुन्नितलूनकेशी स्यूलोद्राऽमिनदृष्यचन्ना भूपणानीच्छति १। द्वितीयो नरोऽजास्यो धान्यक्षेत्रवास्तुहस्त्रग्नक्ष्मिण दक्षश्रतुष्पद्रोऽय २। तृतीयो नरो बृहक्षायपादः ३। २।

मिथुने आयः की सुरूपा टीनप्रजा डिट्टिनभुजा ऋतुमस्याभरणार्थे माटरा १ । द्वितीयो नरो गरडास्य उद्यानस्यो याणकवचधनुष्मान् सगोऽयं २ ।

मृतीयो नरो रतमिष्टत. पण्टिनो यहतूणकाची धनुष्मान् ३ । ३ । क्तें आधो नरो हस्तिसमान्नोऽसकण्ठ. सूकराखाः पत्रमूळभून चतुष्पद्रोऽय १ ।

द्वितीयः स्त्री यीयनस्या ममर्पा वनस्या ३। तृतीयो नरः सर्ववेष्टितो नीस्यः स्वर्णाभरणान्गितः ३। ४। मिहे आद्यः मालमछिनुभोपरि गुप्रः मृगालः

भा नरश्र मलिनपामाः अय नरः चगश्रतुष्टस्थ १। द्वितीयो नरोऽखाकुनिः कृष्णालिनरम्पतस्य दुर्धपों धनुष्माजताप्रमामः चनुष्पदोऽय २ । तृतीय

योजनम् ॥ ्। ७ । कृष्ट्रिके आद्यः क्षी नग्ना स्थानच्युता सपैनिबद्धपादा मनोर्माऽिध्यतः कूलमायाति १ । द्वितीयः स्त्री भर्तकृते सर्पाद्यताद्गी कूर्मकुम्भाकृति स्थानसुलानि वान्छति २ हतीयो नरः सिहरूपिश्चिपिटकूर्मतुल्यास्यः अयं कूर्मश्चतुष्पद्श्व ३ । ८ । घतुपि आधो नर आयतधन्वपाणिनुमुलोऽश्वकायः कुम्भकनुस्तुम्हस्ता देवालय प्रयुत्ता ३ । ६ । तुलायामायो नरस्तुकाहस्तश्चतुत्वयर्थो मानोन्मानचतुरो भाण्डं विचिन्तयति १ । द्वितीयो नरो गुप्रास्तो घटानियतः क्षितस्तृषितः खगोऽयं २ । तृतीयो नरः फळामिषधरो हैमत्पावमैभद्वानररूपो रत्नचित्रितो धनुहंस्तो वने सुगान् भीषयते चतुष्पदोऽयं प्तकास्यो यागरचेष्टो नरः ऋचींकुग्रितकेशो दण्डमकामिपहस्तः चतुष्पद्रोऽयं ३ । ५ । कन्यायामाद्यः क्री पुष्पपूर्णघटयुता मिलनाम्यरा गुरोः कुक यान्त्रतंत १ । द्वितीयो नरो लेखिनीहस्तः स्थामो कोमशो बखाद्वितिहारा विस्तीर्णधन्यपाणिः २ । तृतीयः स्त्री गौरोचा सुधौताप्रदुष्टलाच्छादिता

चतुरपदोऽय १ । द्वितीयः स्त्री सुरूपाऽडिधरत्नानि विघट्टयन्ती गौराङ्गी २ । तृतीयो नरो गौरो निपण्णो दण्डहस्तः कूर्चीक्रीशेयकचर्मवाही ३ । ९ । मकरे आधो नरो रोमशः सूक्ताकृतिः स्थूलदंष्ट्रो बन्धनसृत् रीद्रास्यः चतुष्पद्ोऽयं १ । द्वितीयः स्त्री स्यामा सालद्वारा लोहाभरणभूपितकर्णी २ । किरीटी स्वक्पत्रमियसिषकभूत् ३ । ११ । मीने आद्यो नरः स्नमौक्तिकशङ्खपाणिः साभरणो नौस्थोऽडिध तर्ति १ । द्वितीयः क्षी गौराङ्गी नौस्था-ऽिध्यतः कूलं याति २ । तृतीयो नरो नग्नो भीस्त्रौराग्निभ्यां ब्याकुछितः सर्पावृताङ्गो गर्तान्तिकस्थाः अय ब्याकुछद्रेष्काणः ३ । इति १२ । एपां खगोऽयं १ । डितीयः स्त्री मछिनाम्बरा शीपें माण्डेवाहिनी अरिनना दग्षे शकटे लोहानि गृह्णाति २ । तृतीयो नरः सिहरूपश्च स्थामः सरीमकणिः हतीयो नरः किन्नराद्वरसूर्णा कचची धनुष्मान सकम्बकः स्कन्धे रत्नचिन्नितं कुम्मं वहति ३ । १० । कुम्मे आधो नरश्चमंसद् गुधास्यः सकम्बकः

सग्रङ्गलापात्री बन्धः" इत्यादि । यात्रायां तु यथीपयीगस्तथीक्तमेव । श्रुभनाथ इति द्वेष्णाणेशाः प्रापुक्ता एव । श्रुमेक्षित इति, यो द्वेष्काणी लग्नेऽ-

धिकृतोऽस्ति तन्नामा राशियांत्राकुण्डलिकायां यत्र तत्र स्थितो यदि ग्रुभग्रहेर्द्येत तदा स द्रेष्काण: ग्रुमेर्हष्ट इत्युच्यते । स्थापना यथा---

चिन्तानष्टाद्वेगक्षे प्रयोजनं ''द्रेप्काणेस्तरकराः स्प्रता'' इति । रोगिप्रक्षे ''गुप्रकोलोर्गाञ्यंत्रेरहिते रोगिणो स्रतिरिति'' । बन्धमोक्षप्रक्षे ''धनोरमै न्यरो

लग्नविति 'धातन्य दिह्मुखे लग्ने (२६)'' इत्यत आरम्य ''यम् वा वर्श्य स्वलग्नेद्रो. (३३)'' इति यावछग्नविषयं यदुक्तं तासर्वं द्वाद्यां-शेऽपि योज्यं। नवांशवदिति, अयमथः—शनिकुजवर्जानां त्रिंशांश. ग्रुभः, अकेन्द्रोखिंशांशाभावात्॥ उक्ता षह्वगंधुद्धिः। अप यात्राया द्वाद्श भावानाह— व्याख्या—असीम्यः कूरो प्रहस्दिद्रोकाद्रशवर्जान् सन्वांन् भावान् हन्ति त्रिद्रोकादर्शास्तु पुप्णातीत्यथेः । किंसवोंऽपि कूर एव १ नेत्याह⊶ कर्भे चासित यूति, असितः घानिदंशमभावमपि हन्ति, शेर्पाश्च सर्वान्, केवलं ज्येकाद्शावेच शलिः पुष्णातीति भावः । सीम्योऽप्णिसिति, सीम्योऽपि भन्न घुपे द्वितीयस्य कन्याद्रेष्काणस्य स्वामी ब्रुध. सीम्यस्तस्य मीनमूर्तिस्थयो: ग्रुक्रजीव-यीश्र पूर्णो दृष्टिः, एवं पापस्वामिकत्वं पापदृष्टःत च भान्य । एन वस्यमाणे ठदयास्तश्चदृष्यादो ब्याख्या—कमेति माग्यं ब्यापारी वा । पुषु स्थानेष्वेषां शुभाशुभोद्दकां प्रहबलाहिचार्यन्ते ॥ इह च पूर्वोक्ता भाविष्वारणा बहुसमैव हिनि योघायकमन्यानसीम्यः कम्मै वासितः। सौम्योऽप्यरिं सितोऽध्वानं चन्द्रश्च तनुजीविते ॥ ३९॥ लप्तवद् बादशांशस्तु जिंशांशस्तु नवांशवत् ॥ ३७॥ '' लमेऽर्कस्य नवांशे वाद्यननाद्यः कुजस्य वित्तभयम् । इन्दोः प्रतापद्वानिः शनेनवांशे मरणमेव ॥ १ ॥ " शन्यर्भेन्दुकुजाँस्सिक्त्वा श्रमोऽन्येषां नवांशकः ततुः १ कोशो २ भटो ३ यानं ४ मन्त्रो ५ ऽरि ६ वत्मे ७ जीवितम् ८। मनः १ कर्मा १० जेना ११ मन्त्री १२ भावाः स्युरुद्यादयः ॥ ३८॥ व्याख्या—स्यम्बेति, यदुक्त देवश्वब्ह्यमे— नवांशादीनामि, सौम्यकूरघ्टां च भाग्यम् ॥ यात्राया द्वादशमावेषु प्रहविचारमाह— **■888** 

गुरुगुफ्रुषुन्दुरूपो प्रहोऽरि पष्टमाव हन्ति "सौम्याः पष्टेऽसिमा" इत्युक्तेः, शेषमार्वास्तु पुष्णात्येव, कूरप्रहस्तु षष्ठमार्व हन्त्येव कूरबादेवेत्यपेरथेः

गमद्वार ग्रहस्थान यात्रायां शुभाग्रुभ

#85% 1888

चतुर्थः विमर्थे गमद्वारे यात्रायां द्यापति विचारः ॥		=
96-1646-162:1646-166-	\$ 95-\$5-\$5-\$ <del>\$</del>	- scape Carpert
नतु कि सवाऽपि सीम्पोऽरिवर्जसर्वभावान् पुष्णात्येव ! नेत्याह-सितोऽभ्वानमिति सितः शुक्रोऽभ्वानं महसमावमपि हन्ति, चन्द्रश्च प्रथमायं सिनायाय हति त्रक्तमेव । एवं चायमथेः सम्पद्य.—  " स्व १० स्वश्नानिवर्ज्ञेमुपंचयमाः क्र्राः सर्वेगाः शुभाः साम्याः । हित्वास्ते ७ सितमप्रम ८ लग्न १ ग-शशिनश्च यात्रायाम् ॥ १ ॥ "  इति कृता यात्राकुण्डिकनायां सामान्येन द्वाद्रसमाविचागणा ॥ अथ मूर्तिस्थमहन्यवनस्थामाह—  जनमन्यनिष्टः सौम्योऽपि न लग्नस्थः शुभो महः । तत्रिष्टदस्तु पापोऽपि यात्रालग्निस्थितः शुभाः ॥ ४० ॥  स्वात्या—सोम्योऽपि यो जनमसमये मृत्युच्ययमवनस्थनादिना अशुभः स यात्रालमे मृतौ न शुभः, तत्रेष्टः इति, यस्त क्रूगेऽपि रिषु ६  लाभ १३ स्थानादिना जनमनेहदः स यात्रालक्ष्मे मृतौ शुभ एव, जनमशुमाशुभमहाश्च विस्ताते आतिकारग्रेयाः । समासेन लेवम्—  " क्रमन्तिवद्यायम्याः सिनोन्दमायदोऽन्तिमाप्रियवज्ञाः । स्प्रान्तिमरिपवज्ञां ब्रघः प्रशस्ये जननसमये ॥ १ ॥ " स्थापना—	पापोऽप्यमीष्टदो जन्मलग्नक्षंस्वामिनोः सुहृद् । सूर्तिस्थितः ग्रुभोऽपि स्याद्गुभोऽरातिरेतयोः ॥ ४१ ॥ स्याख्या—जन्मलग्नक्षेति जन्मलग्नेशजन्मराशीययोयों मित्रम् ॥ सुहृद्यापतेः सचः सफलो जनने बली । क्रोऽपि विविधो भद्रसानौ सौम्योऽपि नेतरः ॥ ४२ ॥	्याख्या—यात्राकाले यस्य प्रहस्य दृशाऽस्ति स दृशापतिस्तस्य सुद्धनिमत्रम् । विशेषस्त दृशापतिरिष् यात्रासमये सवलो विलोक्यते । यह्यह्यः— " यात्रा नेव दृशापतानुपहृते नेवास्तगे नावले, नीचस्थे न च नेव विन्निष्णि नृषां देया कदाचिद् बुधेः । " इति
नमु कि सवाऽपि सोम्पोऽरिवजंसवैभावान् पुष्णार्षेव ! नेत्वाह-सितोऽ हित, शुक्रेन्द् पष्टभावं विनात्रयत इति त्रक्तमेव । एवं चायमधेः १ " ख १० स्थशनिवज्ञीमुपच्यगाः क्र्राः सवैगाः शुभाः सेनम्या इति कृता यात्राकुण्डलिकायां सामान्येन द्वाद्यभाविच्चागणा जनमन्यनिष्टः सौम्योऽपि न लग्नस्थः शुभो प्रहः स्याख्या—सीम्योऽपि यो जनमसमये सृत्युव्ययमननस्थत्वावि लाभ ११ स्थानादिना जन्मनेष्टिदः स यात्राल्ग्ने भूतों शुभ एव, जन्	सिव ३-६-११ चन्द्र १-२-३-४-५-७-९-१०-११ संगल ३-६-११	
* POST CONTRACTOR AND	36-16-96-16-36	J. 184966
		*

चतुर्थ विस्ठें गमदारे तानकार	भारत्य संज्ञाः ॥			1188811	
= <del>254504604</del>	たらろうらんとうかん	<i>96</i> ₹	% %	96-	(- bC
ग्राकमतंप्रमाणतद्विभागादेस्त्ररूपं च जातकादेभ्यो सेयं, इह त्वप्रस्तुतत्वाद्यतिविक्तरत्वाच न प्रतन्यते, स्थानाद्यन्यायं तु वार्षिकं दिनद्गा- ठ दर्शते, तथाहि————————————————————————————————————	" हार्गि १ धन २ रुज ३ रुष्ट्मों ४ देन्यं ५ रुष्ट्मों ६ च वन्धनम् ७ । मय ८ थियं ९ चाकोदीर्ना द्युद्तिनद्याः क्रमात् ॥ ३ ॥ " अत्रायमान्नायः-स्वनामरात्रौ यद्दिनऽकैः सद्कान्तस्तदिनादारम्य वर्तमानदिन यावदिना गण्यन्ते इयन्तो दिना गता इति, तत्राचा विश्वतिदिना रयेदिनद्याः अप्रे पञ्चाशिद्या इन्दोरित्यादि, एव गणने यस्प प्रहस्य दिनद्गा तदानीं समेति स द्यापतिरिति । 'सद्यः सफल' इति यस्त्रामीं गोचरेण प्रतिष्ठ्रवेषेन या शुभः स सद्यः सफल., यस्तु गोचरेणानुक्र्कवेषेन वाऽशुभः स सद्योऽफल । तथा जन्मपत्रिकायां यो वली रूपवानितादिवदिति- शायने मत्वर्थीयोऽय ततो यः सर्वोत्कृष्टवल इत्ययैः । 'इतर' इति यो वर्तमानद्गेशस्थारिः, यो वा तन्मकाले निर्वेल इति । नन्न यदि जनने यन्नीत्युक्तं तत्रा जन्मति सर्वोत्कृष्टवलोऽपि यो सत्युक्षात्वादिनाऽनिष्टदस्तसापि मूर्ता त्राह्यव्यतहः । मैवं, 'जन्मन्यतिष्टः सौम्योऽपि" इत्यनेतेव तस्य निपेधभवनात् ॥	जन्मकाले विषोपंद्वाऽन्योऽन्येनोपचयस्थिताः । तानाख्याः मौस्यवत्करा जातकोक्ताश्च कारकाः ॥५३॥	ब्याल्या-जन्मपत्रिकाया चन्द्रात्रिपद्द्यैकाद्रास्यानां प्रहाणां	चन्द्रापेक्षया तानसज्ञा । तथा जन्मन्येत्र येऽन्योऽन्यसादुपचयस्था- स्तेगमप्यन्योऽन्य तानसज्ञा । कोऽथै. ! पितपत्रग्रह्यित्यादित्यमान-	
त्वप्रस्तुत् । । गर्ता हि ७ स् देवा	नम् ७ वर्तमानां नद्शा त मऽश्चभः १ वर्तमार	高	0 9	¥;	
्रहरू मान्त्री व ३३	्वन्ध्य द्यास्य द्यास्य होते हिने हिने हिने	તક	W) 20	भय	
	ह च साहिता स्य प्रह्व कुक्केचे तत्र'ः यो ग	13	en, eu,	वधन	
तस्प्रमाणतद्विभागादिस्त्ररूपं च जातकादिभ्यो ति, तथाहि—— जनामराश्वितः प्रभूति गण्यते वर्तमानस् रची १ न्द्र २ भीम ३ ज्ञ ४ शनी ५ अद्याभ्यि २८ पञ्जाण ५६ रसाश्चि ३६ गाः पष्टयधिका विश्वती ३६०।	छक्ष्मीं व्यक्तान्त्र गणने य गिचरेणाः रै. । 'इ बछोऽपि	क्त	er, es,	कदमी	
च जा गण्यते १ इ. इ. १	न्यं ८ ८कः स एव प्रत्	ᆏ	m m	है न्य है न्य	
स्त्ररूपं मृति अ नीम भे	८ दे यहिने स्यादि, कष्ट्यक नि स	रक	∞ 5~	ल्दमी	86.
भागाति म ति म १९३	लक्ष्मी मरावी इन्द्री खि. स सबेहि	<b>.</b> #•	2	<u></u>	आ. मि.
गणवहि तथाहिः मराद्यिः १ त्व भिष्यः	त्या है । स्वमा शिक्षिमा शिक्षमा स्वमान्	ज्ञ	် ဝ	धन	
ट्याकमतंष्रमाणतद्विभागादेस्बरूपं च जातकादिभ्यो हं दक्षेते, तथाहि— '' निजनामराश्वितः प्रभूति गण्यते वर्तमानस् रची १ न्दु २ भौम ३ ज्ञ ४ शनी ५ अछाभ्यि २८ पञ्च्याण ५६ रसाश्चि ३६	ान २ व यमाझाय वा धुम वा धुम वोऽय त् ते ब्रह्मीत्	ا نی	န	हानिः	
ह्याकमतध्यमणतद्विभ प्रमाणं स्युकं दक्षेते, तथाहि— '' निजनामराश्वित स्यो १ न्दु अधाशिव २८ सर्वे दिनाः पष्टयधिका	" हार्गित्त १ धन्त २ रुज ३ रुष्ट्सों ४ देन्यं ५ रुष्ट्सों ६ अत्रायमाझायः-स्तनामरात्तो यद्दिनेऽक्तेः सद्कान्तस्ताहि रमेदिनद्याः अग्रे पज्ञाशदिना इन्दोरित्यादि, एव गणने यस्त प्रतिष्कुरुपेधन या शुभः स सद्यः सफरुः, यरतु गोचरेणानुक्त् सायने मत्तर्यायोऽय ततो यः सर्वोत्कृष्टवरु इत्यर्थः । 'इतर' नतु यदि जनने यसीत्युक्तं तदा जन्मति सर्वोत्कृष्टवरोऽपि यो इत्यनेनेय तस्य निपेधभवनात् ॥	प्रदाणा	द्यादिनामि	फलम्	
<b>७२५७२७५८</b>	المراجع المراج	6 <del>7</del> 66	?\ <u>`</u>	ع 4 و	%-7×
आहम्भ- सिद्धेः ॥१६१॥					

सर्वे पच तेऽन्योऽन्यकारकाः, कर्मगस्तु तेषां विशेषतः ॥ १ ॥ " अत्रोदाहरणम्--त्रान्द्रस्य मम्बन्धियान्द्राचेन द्विष्ठावाद्वेकैनमहस्य शेषास्त्रानमंद्राया व्यवह्वियन्ते, अन्योऽन्यस्य कार्यं तन्त्रन्ति विस्तारयन्तीति कृत्या। एवं कारकसंज्ञाया अपि द्विष्टां सान्वर्थरां च भाग्य । ते च मूरा अपि सौम्ययत् स्युः तन्वादिययोक्तभावेषु क्युभा इत्यर्थः । जातकोक्ता इति ज्ञातके ये कारकसंज्ञायोक्ता-स्तेऽपि कूरा अपि सीम्यवनस्युः । ते चेवं–तत्रोक्ता ये महाः स्वक्षे स्वोचे स्वन्निकोणे वा स्थिताः केन्द्रेषु स्युस्ते सर्वेऽप्यन्योऽन्यं कारकसंज्ञाः, तेपां ब्यास्या—डेशशब्दस्य प्रायेक सम्बन्धाज्ञान्मेशकप्रेशयोरिति योज्यं ! अयमर्थः—यात्राचिक्षोषोंनुपादेर्जनमति यत्रेन्दुसाद्दाद्यीशो जन्मेशः तस्य तज्जनमस-स्पात् । तथा रुग्न केन्द्रं वा विनाऽपि स्थितस्य ग्रहस्य यदि कश्चिद् ग्रहो दगमस्थाने स्वक्षोंचित्रिकोणाना-मध्ये वृषामकेन्द्रस्थी प्रहः शेषप्रहाणां विशिष्य कार्यक , मवेषां चैतेषा चन्द्रयुतिषष्ट्या बळवरवं, यथा कर्के क्षे तत्त्ये चन्द्रेऽक्रीऽरागुरुमन्दाः स्वस्तो-तथा लग्नस्थग्रहस्य द्रगमतुर्गस्यो ग्रहः सर्वोऽपि स्वगृहस्तोचस्वन्निकोणेष्वस्थितोऽपि कारकाल्यः मन्यतमस्थो निसर्गमेत्या तात्काछिकमेत्या च सम्पन्नः स्यात्तदा सोऽपि तस्य कारकास्यः स्यात् । उक्तद्रा---जन्मलग्नेशयोस्तानः कारको बार्डाप लग्नगः । असौम्योऽपि ज्ञुभाय स्याद्वयस्तः सौम्योऽपि चान्यथा ॥ ४४ ॥ कारका निगदिताः परस्परं १, छन्नगस्य सकलोऽम्बराम्बुगाः २ ॥ २ ॥ " स्वक्षोंच (क्षेतुं) गमूलत्रिकोणगाः, कण्टकेषु यावन्त आधिताः । " स्वर्धकोणोचगः खेटः खेटस्य यदि कर्मगः । सुहत्तद्गुणसम्पन्न: कारकश्चापि संस्मृतः ॥ ३ ॥ " कर्कटोद्यगते यथोडुपे, स्वोचगाः कुजयमाकेसूरयः अत्र सक्छ इति स्वगृहोद्यक्रिकोणेष्वस्थतोऽपीति भावः ॥ त्याः सन्तो मिथः कारकाः स्युः । स्थापना यथा---188511

1883

जन्मपत्रिकायां जन्मेशलग्नेशयोत्सानः कारको या नास्त्रि त यात्राकग्ने मूतौं न ग्रुमः। तद्यं भावः---यात्रायां तानस कारकस्य वा बलं गाद्यानेव । तथा---

स्कलग्नेशप्रहस्य वा यो प्रहो जन्मपत्रिकायां तानरूपः कारकरूपो वा स्थात् स कूरोऽपि यात्राळग्ने मूर्तिस्थः ग्रुभ एव । ब्यस्त इति विपरीतः सौम्यप्रद्वोऽपि

नत्थं मित्रथं भ	ापन्य गमद्वारे बक्रिमार्शेन	) ग्रहदिनम् माणम्	= <u>F</u> • C - %		ę		1	18 6 3 1
でもしていると	<b>296</b> → k	367K	*****	1-76 M	<del>1</del> 56	<b>₹</b>	₹56	4564E
" नायकाः स्यु प्रस्ताै ये रक्षका ये च चर्धकाः । ते क्र्रा अपि यात्रायां लग्नस्याः ग्रुभदा प्रद्याः ॥ १ ॥ " इति देग्दाचछमे । एगं च स्वरूप गृहज्ञातके ॥	वक्ता कन्द्रध्य तद्रगा लग्न यातुज्यापहः। गांतप्रमाणवर्षेवा विक्रुत्य नभश्चरः॥ ४५॥ ब्याएया—अकेन्द्रोवेक्नामम्भवाद्गोमायन्यतरो यो यहस्तदानी वक्नगोऽस्ति स एकोऽपि यात्रालक्ने केन्द्रस्यो जय हन्ति, क्षि पुनद्विताः १ अयेति	ं पणसिंडि ६५ इक्कदीसा २१ वारस अहियं सर्व च ११२ वावन्ना ५२ । चउतीस सर्व च १३४ कमा वक्कदिणा मङ्गलाईण ॥१॥ " पणसिंडि ६५ इक्कदीसा २१ वारस अहियं सर्व च ११२ वावन्ना ५२ । चउतीस सर्व च १३४ कमा वक्कदिणा मङ्गलाईण ॥१॥	लग संग पणाल ७४५ विषावई ९२ चुआलस्त्य १४४ पञ्चस्यचडव्योसा ५२४। दोअ सत्या चालीसा २४० मङ्गलमाईण मग्गदिणा ॥२॥" गतीसादि गसाबैविकृतोऽपि महो यात्रालग्ने मुत्तौं न ग्रुभः, अतिचरितो महो गतिविकृतः । अतिचारस्वरूप चैवं लह्योक्तम्— " पक्षे १ दनाहं २ चिपन्नी ३ दनाहं ४ मासमन्त्रक्तिः । स्टिन्सः निस्ति —	प्रमाणेति पुर्वेग्रमाणात् हस्बी महान् वा खे लक्ष्यमाणः प्रमाणविक्रतः, एत्र वर्णविक्रतोऽपि सान्यः । स्रह्मस्वाहः " जस्य महस्य वा खे लक्ष्यमाणः प्रमाणविक्रतः, एत्र वर्णविक्रतोऽपि		रेवती ७ यास्य ८ मञ्जेषा ९ जन्मश्लोण्यकेतः क्रमात् ॥ १ ॥ "	उत्तरान्तश्चरो भानोः शुभो नान्यस्तनौ ग्रहः। फलेन वर्गो वारश्च तत्त्रगन्योमगोपमः॥ ४६॥	•याख्या—इष्टेऽद्ति यत्राकोटयास्ते स्याता तास्थानं सम्यप्निणीय चिह्नयितन्य, यत्र च विदक्षितप्रहस्योद्यास्ते स्यातां तद्गि । एवं च योऽक्रि
का ये बृहर	<b>ठथ</b>	हैं स	ठसय ।त्राह्म् दशाइ	# H	2 W. S.	280	६ मास	ग्ता त
ये रक्ष स्वरू	न् <b>रा</b> क्रीमाह	सिम्म सिक्ष	खुआ यहो य ध्री ३	নে	r.	30 64 5	0 8	ास्ते स
द्रती : गांच	7 ति दस्भवा सम्भवा	त्या ७ १ वास	ति नेडिंग निस्		398	888		क्तिंडय
# F F	म् प्रदेश स्विकास स्विकास	म हार सा स्	यणवः गिर्वकुतं ाहं २	( <del>च</del>	!i	<u> </u>	१० त्रिपक्षी	हैं या
ाः स् विद्धमे	न अर्हेन्	स्र इन्हेटी इन्हेटि	४५ । गत्मान् दश	מה	<u>ب</u>	8		-इष्टर
नायक देयज्ञ	व स		डि ह सान्ने स्था	म	ພ ອ	589	यक्षं	<b>स्या</b> –
इसी है	व्याप्त सम्बंद्	'' पणसिंहि	त्तर द्वर प्रम् गयी " प्	प्रहाणां	चक्रदिनानि	मार्गाद्दनानि	भितिचार	<u>•41</u>
15-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-	-6C-X-	% <del>3</del> -≿	% <del>}</del>	7€%-	¥59-	Y-1-6(	÷€€-	をもつよう
आस्म- सिद्धेः	ाई के अं विकास		- ~					

विमर्थे विमर्थे मन्ते खन् तत्त्रहत्त-मूर्तिस्थो यो क्योमगो प्रहस्तनुल्यफलो क्षेयः । अयं भावः—जन्मन्यनिष्ट इत्यत आरम्येतच्छ्लोकपूर्वार्थं याबहुक्तया रीत्या याद्यो प्रहो मूर्तो श्रुभो-ऽधुभो वा निर्धारितस्त्राद्दगर्दयेव प्रहस्य पद्दर्वाो प्रहोरादिमूर्तों शुभोऽशुभो वा त्रेयः । यात्रादिने वारोऽप्यवमेव निर्धार्थः विशेषस्तु— " उपचयकरस्य वर्गः कूरस्यापि प्रशस्यते छग्ने । चन्द्रो वा तद्युक्तो न तु विपरीतस्य सोम्यस्य ॥ १ ॥ इत्युक्ता सार्धपट्छोकैम्तिस्थब्रहच्यवस्था । अथ यात्रालम् पड्चगै वारख्च'नियमयति-फछेनेति वर्गः पड्चगगीः यात्रादिने वारख्र तनुगो उपचयकरग्रहिने सिन्धिः क्र्रेऽपि यायिनां भवति । सौम्येऽप्यनुपचयकरे न भवति यात्रा शुभा यातुः ॥२॥ " इति छछः । तथा— रूपं शहस्य वर्गे स्वदिने द्विगुणं स्वकाळहोरायाम् । त्रिगुणमरिवर्गयोगे फळस्य प्रान्त्यस्ततीर्याशः ॥१॥ " इति श्रोनकः। तथा— ष्ट्रीक्यामुदेसस्तमेति च म उत्तर्चरः। यश्वाकेस्थान प्रवोदेखस्तमेति च सोऽन्तश्वरः। एती यात्रालग्ने मूर्तां भुगो । अन्य इति अकांद्रसिणचरस्त्वग्रुमः । स्वस्थाने न शुभो मन्दो ळग्नेऽन्यत्र शुभावहः । यात्रायां चन्द्रमाः रास्तो दिग्वछेन विवर्जितः ॥ ५ ॥ 71 इति देवश्चछ्ने । " बलिनः कण्टकसंस्या वर्षाधिपमासदिवसहोरेशा. । द्विगुणशुभाशुभफलदा यथोत्तरं ते परिन्नेयाः ॥ १ ॥ " इति लख्नः सीम्योऽपि न शुभं दने रिपोवरि विलग्नपः । वारे मित्रस्य पापोऽपि भवेच्छुभफलप्रदः ॥ १ ॥ " इति दैवज्ञवछुमे तथा येषां वार. शुभोऽग्रुभो वा तेषा कालहोराऽपि तथैव । तत्फळ चैव— उक्ता मूनों प्रहतःषद्वगोदिन्यवस्था । भथ शेषकेन्द्रावाक्षित्वाह— केन्द्रेषु प्रहसून्येषु लग्ने वीर्येण वर्जिते । बलहीनैश्च सौम्यैः स्पादिभिषेणयतो भयम् ॥ ४७ ॥ मग्दारद्वघसूर्याणां स्थानेषु शुभदो गुरुः । द्युक्रेन्दुस्थानगो लग्ने धनयोधविनाशकः ॥ ३ ॥ सौम्यस्थाने शितः शस्तो लग्नस्थोऽन्यत्र नेष्टद्ः । छायापुत्रो रिवस्थाने प्रोतिहोऽन्यत्र नाशद्ः ॥ ४ ॥ इन् च मूसिग्रहरास्प्राप्ति यद्यपि यात्रामुह्दियोक्त तथापि विवाहादिसवैकार्यलग्नेप्वपि योष्यं । विशेषस्त--जीवशुक्तशनिस्थाने स्थितो लग्ने जयार्थदः । स्थानेष्वकैन्द्रमोमानां शशिस्तुर्गनर्थदः ॥ २ । .लग्नेऽकारी शनेवाम्नि शुभावन्यत्र मङ्गदो । शीनांशुरुद्यप्राप्तः सर्वेकार्येषु नाशदः ॥ १ 1188311

चतुर्थ विमन्धि गमकार तानकार कारूब संजाः ॥			16 th 611	
きょうしょりかん たいりゃんかんりんしょ	<u>وي</u>	چې	25	<u>په ود</u> ۲۰
हवातमामममममममममममें से नामकादिश्यो त्रेयं, ह्राड रामकादिशामानाये नामकादिशा नामकाद्वार हानाममममममम् हे स्थान स्थानमाममम् स्थान स्थानमामम् स्थानमामभ्ये विज्ञानमामम् स्थानमामम् स्थानमामम् स्थानमामभ्ये विज्ञानमामम् स्थानमामम् स्थानमामम् स्थानमामम् स्थानमामभ्ये विज्ञानमामम् स्थानमामम् । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	जन्मकाछे चित्रोयद्वाडनयोडन्येनोपचयस्थिताः।	तानाक्ष्याः स्वाम्ययत्क्र्या जातकात्त्राक्ष्य कार्काः ॥५३॥ व्याणाः—जन्यपिकायं पन्यत्रिय स्वेकासम्बन्धाः वाह्या	ाम्यापेक्षमा सान्त्रंका । यथा मनमन्यय येडन्योडन्यमायूप्तयम्बताः	
ग्यामधु । मान भूगा भूगा ।त्रमुभा गर्भाभा	ផ	0 8	품	
ं, युष्ट माननेः व व्यव् व व्यव् वास्त्रम् भिन्नः	عيم	2.4	भिराः	
यो केर जिस्तु १५ दर्भ वृष्ट के क्ष सादिना सादिना यो न	<b>11</b> 2	4,	47.1	
गणादिव यन्तम् यम्भायः सर्वाम्यः गण्यान्यः स्रोडित	4.	84, 64,	ोहणं क्या	
द्यं जा। प्राप्ते स्थाने भूदेर स्थाने भूति । प्रति । स्मार्थ	÷	2.4	1.1.	
स्वयम् भूति । प्रीम ३ प्राप्ति ॥ प्राप्ति । प्राप्तम	۴.	<u>با</u> بو	मा व्यक्ति	. 12
त्रायाती त्रिक्त म त्रिक्ता त्रिक्ता मार्गित मार्गित	ţſ.	ジャ	<u> </u>	м. (4. тъ
त्याताताताताताताताताताताताताताताताताताता	यो	0.5	Ę	
प्रमानाममामामियामापियास्य स जामकादिश्यो अ ह स्मृती, तथाहि————————————————————————————————————	₩.	e er	tribra	
र्वाक्याणमामाणादिभागिरिक्वत्तप् च जागकादिश्यो ।  ' निज्ञामार्याक्ष्यः सभूति मण्यने वर्तमान्तम् मनी १ न्यु स् भीम ३ हा ४ मनी १ न्यु स् भीम ३ हा ४ मनी १ भिर्मा प्रश्नित्ता मधूति मण्यने वर्तमान्तम् मनी १ न्यु स् भीम ३ हा ४ मनी १ भिर्मा प्रश्नित्ता १ मनी १ भिर्मा प्रश्नित्ता १ भूति ।  ' हार्नि १ भन् १ भन् १ मनी १ न्युमी १ भूति । भूति । भूति भी भूति । भूति । भूति भूति । । भूति । । भूति । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	महाणा	यवादिनावि	1,24.t	
かんかん かんしょくしょ かんしょんしょ しんしょんしょう	€ <b>3</b> ~ 5	<u> </u>	<u>ζ</u> ζ.	
<u> </u>				<b>*B</b> .

भारता-सिद्धाः ।।१६२॥

ब्यास्या-इंशजब्दस्य प्रायेकं सम्बन्धाज्ञान्मेत्राक्षेत्रायोरिति योज्य ! अयमथै:---यात्राचिकीषोंनुपादेजन्माि यत्रेन्दुस्तद्राद्यात्रा जन्मेत्राः तस्य तज्जनपत-सवे पच तेऽन्योऽन्यकारकाः, कर्मगस्तु तेषां विशेषतः ॥ १ ॥ " अत्रोदाहरणम्--स्यात् । तथा लग्न केन्द्रं वा विनाऽपि स्थितस्य ग्रहस्य यदि कश्चिद् प्रहो द्यामस्थाने स्वक्षोंचत्रिकोणानाः देष्टायं सान्वगीरवं च भाग्य । ते च कूरा अपि सौम्यवत् स्युः तन्वादियंशोक्तभावेषु शुभा इत्यर्थः । जातकोक्ता इति जातके ये कारकसंग्रयोक्ता-तेऽपि कूरा अपि मीम्यवन्स्युः । ते चैवं-तत्रोक्ता ये गृहा स्वभै स्वोचे स्वत्रिकोणे वा स्थिताः केन्द्रेषु स्युस्ते मवेऽप्यन्योऽन्य कारक्तंग्राः, तेषां ग्रास्य मम्बनिध्यान्द्रायेन द्विष्यादेकेमग्रस्य श्रेपासानसंज्ञाया च्यचहियान्ते, अन्गोऽन्यस्य कार्य तान्वन्ति विस्तारयन्तीति कृत्या। एवं कारकसंज्ञाया अपि द्रुष्टायं सान्यगेत्यं च भाष्य । ते च क्राा अपि मौम्यनम म्यः मन्तिमानेमानेमाने ास्मे द्वामकेन्द्रस्थो प्रह. शेषप्रहाणा विशिष्य कार्यकः, सर्वेषां चेतेषां चन्युतिष्टव्या यलवाचं, यथा कके सभे तास्ये चन्द्रेडकडिऽरागुरुमन्द्राः स्वस्यो-तथा लग्नस्थमहस्य द्यमनुपंस्थो महः सर्वे।ऽपि स्वमृहस्वोध्यस्विक्रोणेष्वस्थितोऽपि कारकाष्यः मन्यतमस्यो निसर्गमेत्या तात्काछिकमेत्या च सम्पन्नः स्यात्तद्। सोऽपि तस्य कारकाल्यः स्यात् । उप्तज्ञ---जनमलग्नेश्योस्तानः कारको बार्डाए लग्नगः । असौम्योऽिप श्रुभाय स्याद्वयस्तः सौम्योऽिप बान्यथा ॥ ४४ ॥ कारका निगदिताः परस्परं १, ळग्नगस्य सकलोऽम्बराम्बुगः २ ॥ २ ॥ " स्वक्षोंच (क्षेतुं) गमूलिजिकोणगाः, कण्टकेषु यावन्त आधिताः स्वश्नेकोणोचगः खेटः खेटस्य यदि कर्मगः । सुहत्तद्गुणसम्पन्नः कारकश्चापि संस्मृतः ॥ ३ ॥ " ककंटोद्यगते यथोडुपे, स्वोचगाः कुजयमाकंसूरयः अन्न सक्त इति स्वमृहोन्नप्रिकोणेष्वस्थितोऽपीति भावः ॥ स्थाः मन्तो मिथः कारकाः स्युः । स्थापना यथा---

1863

1883

रककननेशग्रहस्य वा यो प्रहो जन्मपन्निकायां तानरूपः कारकरूपो वास्यात् सक्तोऽपि यात्राळग्ने मृतिंस्यः ग्रुभ एव। व्यस्त इति विपरीतः सीम्यग्रद्दोऽपि जन्मपन्निकायां जन्मेशल्ज्जनेशयोस्तानः कारको वा नास्त्रि स यात्रालग्ने मूर्तो न ग्रुभः। तद्वं भावः---यात्रायां तानस्य कारकस्य वा बलं गाद्यमेव । तथा---

त्र्रे विषयं विषयं विषयं यश्यिमार्थ- यश्यिमार्थ- यश्यिमार्थ- यश्यिमार्थ- यश्यिमार्थ- यश्यिमार्थ-		•			॥१६३॥
とりなるできるできるできるかんかん	4- 4-	- <u>*</u> *	-1:-7		******
<ul> <li>अग्यका प्या प्रमाणि के प्रकाम के प्रकाम । के मुद्द अस्पि यात्रामं व्यक्तमा कुत्रमा ब्राद्दा ॥ १ ॥ ॥</li> <li>अभि क्षिताम के मेन्द्रिय राज्यों क्ये प्रकाम के प्रकाम । व्यक्तियों सित्रान्त्र नम्बर्ग । १ ॥ ॥</li> <li>अभि क्षिताम के मेन्द्रिय राज्यों क्ये प्रकाम । व्यक्तियाम मेन प्रकाम क्षिता अस्पा के क्षिता ।</li> <li>अग्रका के मेन्द्रिय काम काम्यका के अस्पा के प्रकाम काम काम काम कामिका । वास्ताम ।</li> <li>अग्रका काम कामिका के माम्य अस्पा काम काम काम काम काम काम काम कामिका ।</li> <li>अग्रका काम कामिका के माम्य काम कामका काम काम काम काम काम काम काम क</li></ul>	अवस्थान प्रतिसामित स्टब्स महान्या मात्रा के क्ष्यमाणा अभागतिमात, सर्व पर्यातिमात्री	भनां ।			પ્યાલમાં— જાંગીત પ્રમાસંત્રમાન મામા મામાણ મામાણમાં તેમ મામાં મામા મામા મામા મામા મામા મામા મ
The state of the s	<u>;</u>	1	8 14 6	A stron	याग
1. 4. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1.	論	=	2.4.4.	£ 6	441144
1 1994 7 1994 7 1994 7 1994 7 1994 7 1994 1994	ή	: 3.5	35	ot Afrikal 10	14/1/4/
n ragination of the state of th	T.	5-	7.		y. n.z.
14.000 14.000 14.000 16.0000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.0000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.0000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.0000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.000 16.0000 16.0	.;. ;;	5,1	1944	Ä	
nice of the property of the pr	पहाणाँ	મના દુનાદિ	rju-kjum	://///////////////////////////////////	1113
WENTEN ENTEN		X-5-	7 - 5 - 5	32.6	32.832
A PARTY OF THE PAR	10 Y	<u></u>			
अस्टब्- सिडेंडा सिड्डा					

मिता गह-तत्पड्व-गीदिञ्य मूर्तिस्थो यो ब्योमगो प्रहस्तनुल्यफळो झैयः । क्षयं मावः—जन्मन्यनिष्ट इस्यत आरभ्यैतच्छ्लोकपूर्वार्धं यावदुक्तया रीस्या याद्यो प्रहो मूर्तें! क्यमो-ऽद्युभो वा निर्धारितस्त्राद्यस्थेव प्रहस्य पड्नगों प्रहहोरादिमूर्तों ग्रुमोऽग्रुभो वा झेयः । यात्रादिने वारोऽप्येवमेव निर्धायेः विशेषस्तु— ' उपचयकरस्य वर्गेः क्रूस्त्यापि प्रशस्यते छग्ने । चन्द्रो वा तद्युक्तो न तु विपरीतस्य सौम्यस्य ॥ १ ॥ उपचयकरग्रहिने सिद्धिः क्रोरिष याचिनां भवति । सौम्येऽध्यनुपचयकरे न भवति यात्रा शुभा यातुः ॥२॥ " इति छछ: । तथा— " क्षं शहस्य वर्गे स्वदिने द्विगुणं स्वकाछहोरायाम् । त्रिगुणमरिवर्गयोगे फलस्य प्रान्त्यस्तृतीर्याद्यः ॥१॥" इति द्यीनकः । तथा इत्युक्ता सार्धपट्रुक्षोकैम्तिस्थमहब्यवस्था । अथ यात्राळग्ने पड्नगै वारक्च नियमयति-फलेनेति वर्गः पड्नगारे यात्रादिने वारश्च तत्रुगो स्वस्थाने न शुमो मन्दो लग्नेऽन्यत्र 'शुमाबहः । यात्रायां चन्द्रमाः शस्तो दिग्वलेन विवर्जितः ॥ ५ ॥ 11 इति देवधवछमे । हुदीच्यामुदेसस्तमेति च म उत्तरचरः। यश्वार्कस्थान एबोदेसस्तमेति च सोऽन्तश्वरः। एती यात्राल्यने मूनों भुभो। अन्य इति अर्काइक्षिणचरसम्भुभः। " बिन्नः कण्टकसंस्था वर्षाधिषमासदिवसहोरेशाः । द्विगुणशुभाशुभफलदा यथोत्तरं ते परिजेयाः ॥ १ ॥ " इति ल्रह्यः ' सौम्योऽपि न शुभं दने रिपोवरि विलयपः । वारे मित्रस्य पापोऽपि भवेच्छुभफलप्रदः ॥ १ ॥ " इति दैवज्ञवछ्नमे । तथा येषां वार. शुमोऽग्रुमो वा तेषां कालहोराऽपि तथैव । तत्कल चैव— केन्हेषु ग्रह्मन्येषु लग्ने बीयेण बर्जिते। बलहीनैश्च सौम्यैः स्यादिभिषेणयतो भयम्॥ ४७॥ मन्दारबुधसूर्याणां स्थानेषु शुभदो गुरुः । शुक्रेन्दुस्थानगो लग्ने घनयोधावेनाशकः ॥ ३ ॥ सोम्यस्थाने शितः शस्तो लग्नस्थोऽन्यत्र नेष्टदः । छायाषुत्रो रविस्थाने प्रीतिदोऽन्यत्र नाशदः ॥ ४ ॥ इदं च मूतिग्रहस्त्ररूपमिह यद्यपि यात्रामुद्दिश्योक्तं तथापि विवाहादिसचैकार्यलग्नेष्वपि योज्यं । विशेषस्तु---जीवशुक्तशनिस्थाने स्थितो लग्ने जयार्थदः । स्थानेष्वकेन्द्रमोमानां शत्रित्तुत्रनर्थदः ॥ लग्नेंऽक्रीरी शनेयाकि श्रुभावन्यत्र मङ्गदी । शीतांशुरुद्यप्राप्तः सर्वेकायेषु नाशदः ॥ उक्ता मूनो प्रहतस्पद्वगोदिन्यवस्था । अथ शेषकेन्द्राद्याश्रित्याह---

18881

श्रिये विधुः सुले४ ऽस्ते७ तु सिनज्ञौ(७) व्यत्ययेन वा(८)। याने त्रिकोणकेन्द्रभ्याः सौम्याः षट् आयगाः परे(९)॥५५॥ ब्याम्या—स्य द्वितीय । येपेषु कूत्तौम्येषु मर्वेषु । एवं योगा प्काद्य ॥ यातुःपाग्दक्षिणयोज्ञीसितान्तर्जयकरः सुखे चेन्दुः(१२)।गुक्रेकान्तर आर्के(१३)ज्ञों वा ग्रुकाच्(१४)भौमाद्या(१५)|५७। जयाय मुत्तें रि मार्तेण्डः सौम्यः स्वेश सप्तमो विधुः(१०)। बृहस्पतिवा नैन्द्रस्थः शेषेषु स्वारे यर् १ वितिषु(११)॥५६॥ मन्दारौ ज्यारेय १ (षद् सु ज्ञासितेज्याश्रोत्कदाः श्रिये(५) । केन्द्रे च बलिनौ ज्ञेज्याविन्दौ त्वापोक्लिमेडवले(६) ॥५४॥ गुक्रज्ञाक्षी अस्वरमातृषुरेक्तमशः अिये (३)। लगारि (६०) च जीवाक्षी जयदौ ज्यष्टमे विघौ (४)॥ ५३॥ ब्याख्या—गान्या दक्षिणस्या वा चेवात्रा तदा ज्ञुक्रयोमीष्येऽन्तराले तिष्ठनिन्दुः ग्रुम । परं यदि सुखे तुर्यस्थाने स्थातदेव ज्ञुमः, नान्यथा। प्रतीच्युदीच्योस्त यात्रायामय योगो नापेक्ष्यः । तथा गुरुरेकान्तर इति गनितो गुरुरेकान्तरगृहे स्थित इत्येको योग.। क्रो चेति श्रुकायुष्प एकान्तर-गृहे स्थित इति द्विनीय । मीमाद्युध एकान्तरगृहे स्थित इति तृतीयः । देवज्ञव्छमेऽध्युक्तम्— न्याएया-नितन्ते सुखे, चन्द्रोऽस्ते इति न्यलय. । याने इति यात्राया श्रिये स्युरिति योगः । परे क्रूराः ॥ न्यास्या-फ्रमम इन्युत्तराषेंऽपि योज्यं । न्यष्टमे इति, यदीन्दुरष्टमगृहे न स्यात् ॥

1050

गुरुजेयाय लग्न १ स्यः क्रोलीम ११ नमो १० गतैः (१६)। तथा चन्ट्रेड्यमे पछ ग्रुक्ते लग्नगतो गुरुः (१७) ॥५८॥

ब्यालगा- एने नदा प्रत्येक्तोगाः सप्तरमा ॥ अथ चोमिष्डिमाह-

तद्रामत्र श्रोके गोनाश्रस्मार.।

" भुगुजादथवा मदीसुताद्वुध पकान्तरमे स्थितो यदा । रविजाद्थवा गुरुस्तदा, बजतो यान्त्यरयः क्षयं रणे ॥ १ ॥ "

चतुर्ध विमये गमदारे हिक्तमंगे-गियोग-सिद्धो भीर्घमे९केन्द्रेषु बुघवाक्पतिभागेवैः। योगो१ऽधियोगो२ योगाधियोगा३ श्रेक १ द्रिक रिनिकैः ३ ॥५९॥ म्यात्या--- उपगुरुग्रुक्षणामन्यतम एकश्रेत् धीधम्मैकेन्द्राणामन्यतमस्यानस्यः स्यातदा योगः १ । द्वी चेत्तया तदाऽधियोगः २ । त्रयोऽपि ''योगेन यो याति चृपोऽरिदेशं, सुखेन सोऽभ्येत्य १, घियोगयाता। प्राग्नोति कीतिं विजय धनञ्च २, योगाधियोगेन महीमशेषाम् ३ ॥१॥" अन्नाज्ञायः—यद्यपरी यात्रायोगो लभ्यते वा न लभ्यते वा परमुभयथाऽपि यात्रा तदैव कार्या। यदि धुधगुरुधुफ्राणामन्यतम प्कोऽपि चेताथा तदा योगाधियोगः ३ । एषां फलान्येव दैवदाबछमे--

अथ द्विकयोगा अष्टोत्तरं शतं । कथं ? ज्ञारुश्चकाणां प्रहाणां तावन्नीणि द्विकाति स्युः। तथाहि-ज्ञाफ् १ ज्ञाको १ चेति। तत्र ज्ञाफ समुदिती प्रत्येक पट्स्थानेषु स्थिताबिति लब्धा एकेन हिकेन पट्सङ्गाः। एवं शेपहिकाभ्यामपि षट् पड् कभ्यन्ते, एवमष्टाद्या १८। एते समस्तद्विक-धीधमैकेन्द्राणामन्यतमे स्थाने स्थितः स्थात् द्विप्रमृतीना तु किमुच्यते ! इह च स्थूरबुस्या योगास्त्रयः, सूक्ष्मेक्षिकायां तु द्विचावारिंगद्धिका त्रिवाती ३४२ योगानामुष्पदाते । कथमिति चेदुच्यते–एककयोगास्तावद्षाद्य । कथै ! धीयमैकेन्द्रेस्तावत् पट् स्थानानि सन्ति, तथाद्वि ५–९–१-४-७–१० । एसु पर्सु प्रायेक बुध एवेक. स्थित हति ळब्धा बुघेन पड्मङाः । एवं गुरुग्रुकाभ्यामपि प्रायेक पर् पर्, प्वमष्टाद्र १८ ।

= 0 2 2 एवमेच द्वितीयहिकेऽपि क्रमोस्क्रमाभ्यां त्रिश्य ३० । तृतीयद्विकेऽपि तथैच त्रिश्यत् ३० । तिस्तुणां त्रिश्यता योगे नवतिः ९० । पाश्रात्यादात्रायोजने-त थेव पुनखयः, पुनहों, पुनरेस्थ्रति मीळने एतेऽपि पञ्चद्य। उभयोः पञ्चद्याकयोयोंताने त्रिशत् ३०। एते प्रथमहिकेन क्रमोक्ष्मास्थापनाभ्यां कठपाः। न्यस्य, घुधः पुनः पुनक्त्थाप्य पुरः पुरो मण्ड्यते, एवं लभ्यते पञ्च। पुनर्धम्में गुरू प्रथमे हुमं च न्यस्य हुधस्य पुनः पुनरःथापनया लभ्यन्ते चत्वारः।

पुनरेक १ अति मीलने सबे पद्यद्य १५। एते ज्युवोः क्रमस्थापनया कन्धाः । यदा त्वेती निपर्ययेण स्थाप्येते, कथं १ धियां गुर्धमें बुधः इति

पद्ध मङ्गाः । पुनर्धमे बुधं प्रथमे गुरुं च न्यस्य, पुनः पुनग्रैरुरूथाप्य पुरः पुरो मण्ड्यते, एवं कब्धाश्रत्वारः ४ । एवमेव पुनस्तयः ३ । पुनहीं २ ।

गोगाः ॥ अथ व्यस्तद्विकयोगाः, तथाहि-धियां बुधं धमें च गुरु न्यस्य, गुरुः पुनः पुनरूथाप्य षष्ठ पद् यावचाल्यते, अनेनाक्षचारणिकाख्यकरणेन करधाः

ऽष्टोत्तरशतं द्विक्योगाः १०८ । सथ त्रिक्योगाः वोडशाविका द्विशती २१६ । कथं ? त्रयाणा त्रिक्योगस्तावदेक एव । ततो ज्ञापुर्ह्यकाणां त्रिकं

गण्याो, ग्रेगी पाग्रेसनस्थामगोह्मद्रारमभचारणिकया लभ्यन्ते पट् ६ । यदा ब्रुधः युनः पुनक्त्याच्य प्रथमे मण्ड्यते शेषी चाप्रतनस्यानयोस्तदाऽप्यकः ॥त्। मामारी लभ्मन्ते, गद्माच गुरुरत्थात्य प्रथमे मण्ड्यते शुक्तक्र चतुर्ये तटापि शुक्तस्य पुन. पुनरुथापने त्रयो लभ्यन्ते। एय गुरी. पुर. पुरश्रारणेन अपास एतः एतरस्थापनमा व युनद्वां २ | युनस्ताधेवेकः १ | सर्वेऽस्वेते दक्ष १० | एते छधे धुरि स्थिते लड्घा. | यदा च द्वयोऽस्युस्थाप्य धर्मे एनरिए गप्रानरगरिंगए ७५। पग्रचरगरिंगतोहँगस्य मीकने नवति. ९०। अथ घिषा बुध धमें गुरु प्रथमे श्रुक च न्यस, श्रुक. पुन॰ पुनरुंथाप्यते भारणया प्रथो कभ्मन्ते । पुनर्गुभस्योर्थाप्त पुरश्चाकने एक.। एतेऽपि सर्वे द्या १०। द्यानद्वययोगे विंदाति. २०। एते बुध्युरुधुफ ट्रति स्यापना-गामे गति प्रकाशः । युष्ट न क्यापनाफमा. पट् स्युः । कथं ? यथा— 'पुन्नाणुपुन्निहिट्टा समयामेएण कुरु जहाजिट्टं । उन्निमतुख्य पुरमो निसिन्न पुनरेसओरि मीलने मधे पन्नद्रम १५ । एते ज्ञस्य धुरि स्थापने ळच्याः । यदा हु गुरुधुरि स्थाप्यते शेपी चाम्रे तदाप्यनेनैव करणेन पन्नद्रम मों शुन्नं न नगसा, शुन्नस्य पुनः पुनक्त्याच्य पुनः, पुरश्रालने लब्धाः पञ्च । ततो धमें समुदिती बुधगुरू प्रथमे शुक्त नयस्य शुक्तस्य पुनः पुनक्त्या-ग्नेन लभ्यन्ते चत्वारः, तथेव पुनरायः, पुनद्रें।, पुनरेक्श्रेति भीक्ने समें पञ्चद्य । एते ज्गुक्युग्मस्य धुरि स्थापने कन्धाः । यदा तु ज्ञुक्युग्म पुरि स्भाग्यते गुरुभाग्ने तदाप्पनेनेच करणेन पचद्द्य छभ्यन्ते। यदा च गुर्श्युक्युग्म धुरि स्थाप्यते बुधश्चाच्रे तदापि तथैच । पछद्धकत्रयमीलने च गगुितामेन गर्मु स्थानेपु तिष्ठतीति जाताः पङ्भद्राः । भथ धियां बुधं धम्में गुरुश्चकी च न्यस्य समुदितानेव ती पुन. पुनरुध्थाप्य पुरः प्ररो मगटपेते, मंगे लडमाः पत्र । धर्मे ज्ञं प्रथमे गुरशुक्षी च न्यस्य प्राज्वत् तधुरमस्य पुन. पुनहत्यापनया कभ्यन्ते चत्वार्,, तर्पेव पुनखयः, पुनहाँ, त्तभगन्ते। गत्। च भुक्तो धिर स्थाप्यते होवी चाग्रे तदापि तथैच पञ्चद्या। पञ्चद्यकत्रयमीलने पञ्चचत्वारिंगत् ४५ । अथ धियां समुदिती द्यथाुरू, पुरामागे रीगो ॥ १ ॥ जामम उ निरिष्तते खलु सो चेन हविज्ञ अक्षविकासो । सो होड् ममयमेको बज्ञेभक्वो पयसेण ॥ २ ॥ " प्रति गानोगक्षभरणेने काम्तिराणिकाणा चोटा स्थापनाक्षमः स्थात्, तथाहि— | १२३-२१३-१३४-३१२-२३१-३२१ त्तात्रा अत्रामनुष्ताणामे त्रमित्तम् विष्टक्षरवक्ष्यवचा वोढा स्थापनाक्रमः स्थाप्यते, तथाहि—

18981

	चतुध	तम्ब	गमद्रा	राजपो	
64°	3. C	Ç <b>₹</b> }	%	ત્ર:⊱	<u>.</u>
	स्थित सम्स मिन्छ न्यम् सम्म मिन्न सम्म	तता प्रथमे स्थापनाक्रमे यथा चिक्रतिर्भक्षा जातास्त्रथा हितीये स्थापनाक्रमेऽपि चिक्रतिः, एवं तृतीयेऽपि यात्रत् पछेऽपि स्थापनाक्रमेऽपि विक्रति-	💹 निंशतिभंताः स्युः । ततो विंशतेः पड्मिगुणने जातं विंदा शतं १२०। तस्य पाश्चात्यानां नवतेः पण्णां च मीलने जाते हे शते पोडगाधिके २१६।	💹 एते जिक्योगभन्नाः । एतेः सह एककद्विक्योगानामष्टादशकाष्टोत्तरहातयोर्मोलने त्रिशती द्विचत्वार्षिका ३४२ योगानामुत्पवते हति सिद्धम्	अ   प्रात्तिस्मेक्षाम योगानस्त्वाऽथ दक्षिमापेक्षं योगद्वयमाह

馬馬

```
शुक्तं ज्या १ या ११ म्बु ४ मं पर्यम् जीवो यात्रामु केन्द्रमः। राज्ञां दत्ते जयं क्र्रेः कलत्रादित्रयान्यमैः ॥ ६० ॥ 🎢
                                                                                                                                                                                                                                                   बुधो बपुः सुख ४द्रेपि ६ व्योम १० स्थो बीक्षितः शुभैः। जयाय राज्ञां पापेषु लग्ना १ स्त७ व्यय १२वर्जिषु ॥६१॥
नक कालार महाराष्ट्र काराष्ट्रियमाठेष हार्रियमाठेष
                                                                                                                                                                  ब्याख्या--त्रय मसमाष्टमनवमभावस्त्पम् ॥
```

स्याख्या-रूपकशब्दोऽत्र बृत्तवाची, सप्तानां रूपकाणामधैरधैऽधं वाक्यसमाप्तेरवक्षंकृतत्वादेवमूचे। राजयोगेष्वपीति, बृहज्जातकोक्ता राजयोगा डित सप्तरूपकार्धैः सकलक्षोकत्रयेण चोत्तेषु । योगेषु राजयोगेष्यपि ग्रुभदा भूभुजां यात्रा ॥ ६२ ॥ इंग्रेकाश्रितेषु च तथैकतमे विलेशे, स्वक्षेत्रमे शिशिति पोड्य भूमिपाः स्यु: ॥ १ ॥ " " वक्ताकेजाकेगुरुभिः सक्लेखिभिन्धः, स्वोचेषु पोड्य मुपाः कथितैकलग्ने । व्याख्या-एवं सबेऽप्येते यात्रायोगार्खाणि शतान्येकषष्ठ्यधिकानि ३६१ ॥ अथ समधेयति--सपि यात्रायासुपयुच्यन्त इत्यर्थः, ते चामी सर्वकार्षेषुपयोगित्वारसच्याख्या उपदर्श्यन्ते, यथा---

**■**%**9**%**■** 

सक्छेरिति गुपु चतुरवेषि स्वोचस्येषु । कथितैक्छग्ने, इस्येषां चतुणां प्रहाणां मध्यादेकैकस्मिम् कन्नमे चत्वारो राजयोगाः । त्रिमिश्रेति

तेषां मध्यान्निष्यस्येषु तेपामेव च त्रयाणां मध्यादेकैनस्मिन् छप्रमो हाद्या, एव षोढ्या। तथा ह्रयेकाश्रितेष्विति, पुतेषां चत्रुणां वक्रादिप्रहाणां

|**長の**公 पज्ञता १५ मेटा., पज्रसिरंष्टे पर् ६, पर्शिरेक. १ । तथाहि-लग्ने रविभीमधुधगुर्शिमंदेष्टे एको योगः १, रिप्रोमसुधशुर्भोद्विंशियः २, रिप्रोम-, कंड द्वितीय. २, तुले तु तृतीय. ३। सब सि ७। अथ मेपैऽकं: कंज जीव मकरे मौम शेषा बयेच्छ, एवं मेपे लग्ने एक. १, कंजे द्वितीयः २ । अथ मैपेऽर्फः फ्र मन्द्रम्तुछे ग्रानि. एवं मैपछरने तृतीयः ३, तुछे चतुर्थः ४। अथ मैपेऽर्फ. कर्म चन्त्रो मक्रे भौम. एव मैपे छग्ने पद्यमः ५, मकरे पष्ट. ६ । अय क्रंत्र चन्द्रजीयों तुले यानि. एव क्कं लग्ने सप्तमः ७, गुलेऽष्टमः ८ । अथ क्रिंस्यो जीवेन्द्र मकरे मीमः । एव क्ष्तें , महरे तृतीयः ३ । सर्वे द्रम १० । अथ मेपेऽबंस्तुले शनिमैक्रे भीम. श्रेपा यथेच्छे, एव मेपे लग्ने एक. १, तुले द्वितीयः २, मकरे तृतीय. लाने नामा. ९, मकरे द्याम. १० । सथ कर्के चन्द्रस्तुले शनिमैकरे भीम. एव तुले लग्ने एकाद्या ११, मकरे द्वाद्याः १२ । अथैकाश्रितेषु मध्यादुद्दाभ्यामुचस्याभ्यां तयोरेव चेकेकस्मिन् कन्नते चन्द्रे ककेरये द्वाद्य । एषां मध्यादेकस्मिन्न्चस्ये तिसिन्नेच च कन्नागे ककेरये चन्द्रे बत्वारः, क्तें िनीयः २, तुले तृतीय ३, मनरे चतुर्थः ४, एव बाबारः । अथ तिसि. मेपेऽर्फ. करें जीवस्तुले शिमा शेषा यथेच्छं, पूर्व मेपे लग्ने एकः मये पीउन १६ । एते पूर्वा गेंकाः । अय द्रवाधितेपूर्वन्ते- क्कें चन्द्रः मेपेऽकं. क्कें जीवः शेषा यथेर्छं । प्वं मेपे लग्ने प्कः १, क्रें द्वितीयः में बन्द्रे मेपलप्रस्थेऽ में मार १, में लग्ने बन्द्रजीयी द्वितीयः १, करें बन्द्रे तुललग्ने शनी तृतीयः १, करें बन्द्रे मकालप्ताये भीमें चतुर्थः एतं त्रयोद्य १३ । अय करें जीवस्तु हे त्रानिर्मकरे भीम शेषा यथेच्छ, एव करें करने एक: १, तुछे द्वितीय: २, मकरे तृतीय ३, एवं काने मोत्तममते ग्रामिसमानमामकनवात्रस्ये इत्यर्थ. । भय भावः--यो राशिलैंग्नेऽस्ति तस्य यो नवात्रो राशिसमनामाऽस्ति स वर्गोत्तः माग्मः, म एम च ममात्रो लग्नेऽधि फ्रतोऽस्ति तदा लग्नं वर्गोत्तमगतमुच्यते, एव चन्द्रेऽपि वाच्य, तिस्त् ्वन्द्रवितिरीति चन्द्रस्य नापेश्रा, तद्रन्य-भेट्रेश्रगुभिः पत्रभिर पत्र्भितां द्वे प्रतिखरन द्वात्रिशालयोगाः, एव चन्डेऽपि वगाँतमगते राप्ति राप्ति प्रति द्वातिशासिः । कथं 2 लग्ने चतुर्मिद्धे एवमि पोडन । सन्ते हाशियत् । तयाहि-मेपेऽक्षेः क्ष्णे जीवस्तुले गित्तमैक्रे मीत्त. शेषा यथेन्छं, इंदर्श्यां गृहस्थिती मेपे लग्ने एको योगाः १, " वगात्तमगते लग्ने चन्डे वा चन्ड्वजिते"। चतुराधैत्रहेर्धे नृषा हाविशति: स्मृता. ॥ २ ॥ " ४, गुते प्राः मह पोडरा १६ । मर्चे ज्ञातिश्वत् ३२ राजयोगाः । अथ पत्रश्रतान्यष्टाविशत्रधिकानि ५२८ राजयोगानामाह— 三年の**~** 

मकरे मीमः धनुषि स्पेंन्दू यमलग्न इति यत्र तत्र रात्ती शनिलंग्नगः इत्येकी योगः १। पतिभूमेश्रान्य इत्यस्मिनेव योगे मीमे सेन्दै योगः १, मेपे द्वितीयः २, द्यपे हतीयः ३ । तथा यमेन्द्र झति शनीन्द्र स्वोचे कझस्थो, ततश्च हुहे शनिः, दुपे चन्द्रः पष्टभवनं पष्टराक्षिः कन्ये-कुम्मे शतिमेंपेऽकः दृपे चन्दः, नुयुगिति मिथुनं, तत्र द्यथः सिहे जीवः वृक्षिके भीमः ईद्द्यां प्रहस्थितौ तैरेव तनुगैरित्युक्तः कुम्मे कर्गने पृको ा, भीमगुप्रजीयगुक्तशनिभिः पष्टः ६। अथ पण्णां दृष्टः–ाविभौमग्रुधगुर्ग्युक्तशनिभिरित्येकः ।। मर्वेऽप्येते द्वाविदातिः २२। एते मेषळग्ने वर्गोत्तमगते सिति स्युः, एवं द्वाद्रशळग्नेप्त्रपि वगोंत्तमगतेषु भावाद्द्वाविंशतेद्वांत्रशमिगुणने जाते हे शते चतुःपष्ट्यधिके २६४ । एवं चन्द्रस्थाप्येकेकराको वगोंत्तम-क्र<sup>के</sup>रेकः १, रविमोमउघनीपणनिमिद्वितीयः २, रविमोमद्यष्यक्रकानिमिस्हतीयः ३, रविमोमजीवञ्जकानिमिश्रतुर्थः ४, रविद्यथनीव<u>ज</u>्ञकानिमिः पञ्चमः १२, मीमनुष्युक्तग्रिमिखगोर्या १३, मौमजीयग्रुक्तग्रिमिश्रपुर्देग १४, त्रुषजीवग्रुक्तग्रिमिः पद्मद्याः १५। सथ पद्मानां द्रष्टिः-रविभौमनुष्रजीय-रसितु तजीवशनिभिष्टमः ८, रविद्युष्यग्रुजशनिभिनंबमः ९, रविजीवश्चक्रात्रातिभिद्देशमः १०, मौमतुषजीवश्चकैरेकाद्यः ११, भोमसुषजीवश्नमिद्दिष्यः तुषशनिपिस्हतीयः ३. रहिमोमजीपश्रकेशपुर्थः ४, रविमोमजीपशनिपिः पञ्चमः ५, रविमोमगुफ्रशनिपिः पष्टः ६, रविद्यधनीपश्चकेः सप्तमः ७, सर्थः, तत्राकेंद्यधो, तुले ग्रुक्तः, मेपे भौमः, कक्षे जीवः, एवं तुले ळग्ने एको योगः १, वृपे द्वितीयः । सर्वेऽप्येते पद्य । अथ श्रीनाह---नवांत्रास्यस द्वाविकातेद्वांचिकातेभांवाच्हे कते चतुःपष्ठयधिके २६४ । मीलने पद्ध कातान्यष्टाविकानि ५२८ । अथ पद्ध योगानाह— सचन्द्रे सीरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चापधरमे, स्वतुङ्गस्थे भानाबुद्यमुपयाते क्षितिपतिः ॥ ४ ॥ " क्रते तुक्षेऽकेन्द्रोधेत्रिषे यमलमे च जुपतिः, पतिभूमेश्वान्यः क्षितिसुतिवलमे सद्यक्षिति । यमेन्द्र तुङ्गेऽङ्गे सिवत्याशिजी षष्ठभवने, तुलाजेन्दुक्षेत्रेः सिसितकुजाजीवैश्च नरपौ ॥ ३ ॥ " " यमे कुम्मेऽर्फंऽले गवि राशिनि तैरेव ततुमै ईयुक्सिहालिस्थैः शतिज्युष्वक्रेमुंपतयः । 18921

ल्यनगेऽर्थोदेवार्के धनुःस्ये द्वितीयो योगः २ । सचन्द्रे सीरेऽस्त इति मेषल्यनेऽकंः धनुपि गुरुः तुले यतीन्द्र एवं तृतीयः ३ । प्रनद्वीवाह—

" बुचे सेन्दों लग्ने सिवित्गुरती हणांशुतनयेः, सुह ४ ज्ञाया ४ ख १० स्थैभेवति नियमान्मानवपितः ।

**三条の公**三

मानम् ॥ = | | | | | गमद्वारे राजयोग-संख्या-हुये इति धन्न्यश्वष्त्रार्धक इत्युक्षेधंनुषि जीवेन्द्र मरुरे भीम एव सति मीनलग्ने सग्रुक्ते प्रोग. १, कन्यालग्ने सबुधे द्वितीय: २, " मृगमुखेऽर्कतनये तनुसंस्ये, छगकुर्छीरद्दरयोऽधिपयुक्ताः । मिथुनताँ लिसहितां चुधशुक्तां, यदि तत. पृथुयशाः पृथिदीशः ॥९॥" युपे ल तने चन्द्र: सिहेऽर्फ. युश्रिके जीवः कुम्मे याति, इत्येको योगः १ । 'सूगे मन्दे' इति मक्रे छन्ते याति: मीने चन्द्रः मिथुने मीम: मीने लगने चन्द्र: कुम्मे शतिः मक्रे मीम मिहेऽर्नः इत्येको योगः १। अले सारे इति मेपे लग्ने आरो मीमः कर्के जीव इति द्वितीयः कन्यालग्ने उथ., मिथुने गुरुः, मीने जीवेन्द्र, मकरे शतिभीमी, एव योगः १। सन्तेंऽत्येते राजयोगा. पञ्च शतान्येकोनाशीत्राधिकाति ५७६ । " कार्क्षणि लग्ने तत्स्थे जीचे चन्द्रसितजैरायप्राप्ते. । मेपगतेऽक्तं जातं विद्याद्विकमयुक्त पृथिवीनाथम् ॥ ८ ॥ " सुतस्यो वक्राकीं गुरुर्याशसिताश्चापि हिबुके, बुधे कन्या लग्ने भवति हि मुपोऽन्योऽपि गुणवान् ॥ ६ ॥ " " झपे सेन्द्रे लग्ने घटमृगमृगेन्द्रेपु सहिते-गैमाराक्षेयोंऽभृत्स खलु मनुज शास्ति यसुघाम् अजे सारे मूर्तों शशिग्रहगते चामरगुरों, सुरेन्ये वा लग्ने धरणिपतिरन्योऽपि गुणवान् ॥ ७ ॥ " " स्वोचसंस्ये बुधे लग्ने भुगौ मेषूरणात्रिते । सजीवेऽस्ते निशानाथे राजा मन्दारयोर्मुने ॥ १० ॥ " मुगे मन्दे लग्ने सहजरिषुधर्मन्ययगतैः, शशाङ्काद्यैः स्यात पृथुगुणयशाः पुंगणपतिः ॥ ५ ॥ " " हये सेन्दो जीवे मुगमुखगते भूमितनये, खतुइस्यौ लग्ने भुगुजशशिजावत्र नुपती । मकरे लग्ने शिनः मेपे भौमः कर्कं चन्द्रः मिहेऽकः मिथुने बुधः तुछे बुक्त. एव योगः १ । सुतस्थाविति फन्यालग्ने बुध मक्ररे मीमश्रनी धनुषि चन्द्रजीवज्ञुका इति तृतीयः ३ । पुनखीनाह-कम्याया त्रुथ. धनुषि जीव. सुकाकों ययेच्छं इति द्वितीयः १ । पुनस्रीनाह— कर्के लग्ने जीत: धुपे चन्द्रशुक्त्युषा: मेपेऽके एव योग. १ । र । यहा कड़े लग्ने जीय. मेपे भीम. इति हतीय: ३ । || No ||

||SO2| स्गोचस्त्रगुत्रस्यक्तिकोणगेस्तिभिश्वतुभिर्वा प्रदेवेलयत्तेर्तुनयंत्राजा तृपाः पञ्भिः पङ्भिः मप्तभिर्वाऽन्ययन्ता अपि । हीनेरिति ज्याद्यश्वेत् स्वोषा-स्त्रसे ग्रुके इति यदा कुम्मो छम्ने तदा पातालस्थे स्त्रसे धुपै ग्रुक. तुछे चन्द्रः शेपा रिवेन्धुजद्यापुर्शनयस्तृतीयकानैकाद्यास्था मैपकुंम्भ पूर्वोत्ताराजयोगीः सामान्यक्रलजा भिष नृपाः स्युः, नृपकुलजाना तु कि वाच्य ? वक्षमाणैस्तु नृपकुलजा नृपाः स्युः, अन्यकुलजास्तु ममुःस्था इत्यथेः, इत्येको योगः १ । यदा तु कको छान तदा पातालस्थे स्वक्षे तुले भ्रुकः मीने चन्द्र. शेषाः कन्याकर्केयुपस्था इति द्वितीयः २ '' स्वोचाक्षींत्रकोणगैर्वछिष्टस्त्र्याद्येभूपतिवद्यात्रा नरेन्द्राः । पञ्चादिमिरन्यवंद्याता, हीनैवित्तयुता न भूमिपाळोः ॥ १२ ॥ " " सोम्ये वीयंगुते तनुसंस्थे, वीर्याह्ये च शुमे सुकृतस्थे । धम्मार्थोपचयेष्व्य शेपैधंमीत्मा नुपक पृथिवीश. ॥ १५ ॥ " लग्ने बली बुधः, नवमे बली शुभग्रहः शुक्रो गुरुवां, शेषा नवमद्वितीयत्रिपब्द्शैकाद्शस्थाः, पुत्रं योगा नव । अथ द्वाबाह-" स्वभ्ने शुक्रे पाताळस्ये, धम्मैस्थानं प्राप्ते चन्हे । दुध्थिक्याङ्गपाप्तिप्राप्तेः शेपैजीतः स्वामी भूमेः ॥ १४ ॥ " सिंहस्थेऽकंऽजेन्त्रे लग्ने, भीमे स्वोचे कुम्मे मन्दे । चापं प्रान्ते जीवे राशः, पुत्रं विद्याद्म्मेर्नाथम् ॥ १३ ॥ " दिस्थिता अपि वलहीनास्त्रदा प्रस्तुता धनिनः स्युनै तु मुपाः । अत्र त्रिचतुरादिभिः मप्तान्तैः पञ्च योगाः । तथा---नुपतिकुलसमुत्था पार्थिवा बक्ष्यमाणैभैवति नुपतितुल्यस्तेष्वभूपालपुत्रः ॥ ११ ॥ " " अपि खळकुळजाता मानवा राज्यभाजः, किमुत चृपकुळोत्थाः प्रोक्तभूपाळयोगैः । अजेन्द्राविति मेपे करने चन्द्रे इत्यथैः । इति यौगः १ । प्रनद्रांबाह---सर्वे योगा अष्टी ८ । तथा— प्रममभन्न प्यां फलमाह्न-जुपतुल्याः । ते चामी-

चतुर्व विमञ्जे गमद्रारे गजयोग ≣ອອ**≥**= "चृपोद्ये मूर्तिध्नारित्वाभगैः, शशाङ्गजीवार्कस्तापरैर्देषः । सुखे गुरो खे शशितीक्ष्णदीधिती, यमोद्ये लामगतैर्देपोऽपरै: ॥ १६ ॥" घुषे कप्ने चन्द्रः मिथुने जीवः तुछे शनिः मीनेऽर्ककुज्ञधश्चकाः इत्येको योगः १। सुखे गुराबिति शनिर्केषे तुथे जीवः दवासेऽर्केष्ट्र एकाद्गो " मेपूरणा १० य ११ तन्नु १ गाः शशिमन्दजीवा, यारी घने सितरवी हिन्नुके नरेन्द्रम् । वक्रासिती शशिसुरेज्यसितार्क्रसीम्या, द्वोरा १ सुखा ४ स्त ७ शुभ ९ खा १० प्ति ११ गताः प्रजेशम् ॥ १७ ॥ <sup>११</sup> दगमे वन्द्र एकादशे शनिः लग्ने जीवः द्वितीये बुधमीमी तुर्ये शुक्राक्तें इत्येको योगः १ । वक्रासिताविति होरीति सनं शुभं भर्मभवनं गासिकमिः, तत्रोऽयमयः-भोमशनी लग्ने तुर्ये चन्द्रः सप्तमे जीवः नवमे शुक्तः ट्यामेऽकं. एकादशे बुधः इति हितीयः २ । सर्डाष्येते हितीये मक्ने गुरगुष्रतुषानामन्यतमो हरने, यद्वा गुर्वादीनां हरनेषु सस्यु धन्तिमीनचृषतुकामिधुनहन्याहरनेरिनत्ययैः । मसमे ग्रानिः द्रयामेऽकैः प्वं योगे ाता भोगिनः खुः। शुभेति शुभग्रहाणा रात्रयः सयका. सेन्द्रेषु कुग्महाः कृरराधिस्थाः एवं योगे जात. पुळिन्दाना चीराणां च स्नामी स्यात् धनी च। " लग्ने शीरिस्तया चन्द्रास्त्रिकीणे जीवभास्करी । कर्मस्थाने भवेन्नीमो राजयोगस्तदा भवेत् ॥ १ थने चन्द्रशनी मेपे जीव. खे राहुमागंवी २ । अथवा दशमे जीवबुधशुकास्तथा शशी ३ ॥ २ ॥ अथवा दशमे जाकों भौमराह च पष्ठगो । राजयोगेप्वेषु जाना राजान. स्युनेरोत्तमा. ४ ॥ " गुर्शसतद्यवलन्ने सप्तमस्थे॰केपुत्रे, वियति दिवसनाथे भोगिनां जन्म विद्यात् । ग्रुभग्वयुतकेन्द्रे. कूरभस्थेश्च पापैबेजति शवरवृस्युस्वामितामधैमाक् च ॥ १८ ॥ " ॥ इति बृहजातके राजयोगाच्यायः ॥ मीमञ्ज्यमुकाः, इति द्वितीयः २ । सर्वे योगा ज्काद्मा ११ । युनद्वांबाह-अन्येऽपि राजयोगाः मनित, नथाहि-तजयोगास्त्रयोद्द्य १६ । सप प्रासङ्गिकमाह— || || ||

ニンタ~ चतुर्थ विमर्धे गमद्रारे गजयोग फलम् त्रातृस्थाने यद्। जीवो लामस्थाने शशी भवेत् । उचेषु वा शुभः केन्द्रे लग्ने वा जीव पक्तनः ॥ १९॥ आसे जीवः सितः प्रान्ते यथा मध्ये निरन्तरम् । राजयोगं विज्ञानीयाः कुद्धग्यचळवर्षनम् ॥ ४ ॥ " विशिष्य च-सिंहे जीवस्तथा शुक्र. कन्यायां मिथुने शनिः । स्वक्षेत्रे हिबुके मीम. स पुमान्नायको भवेत् ॥ १० ॥ कन्यायां शोरिचन्द्रो च मुगे मीमो घटे तमः । सिंहे जीवो भवेज्ञातो राजा शबुक्षयद्भरः ॥ ११ ॥ मिथुने च यदा राहु: सिंहस्थो भूमिनन्दनः । चृश्चिके च यदा जीवः स पुमाजृपतिमेंवेत ॥ १४ ॥ स्वगृहे च घने जीवः तुळायां च भवेत् सिंतः । शौर्रमंकरे मिथुने चन्दः स्यादाजयोगकृत् ॥ १५ ॥ युग्मे शशी वृषे जीवः सिंहे शोरिभूंगे कुजः । शुक्रस्तुलायां कन्यायां बुघाकों राज्ययोगदाः ॥ १६ ॥ आहो जीवः पश्चमे वा द्यमे चन्द्रमा भवेत् । राज्यवात् स्यान्महाबुद्धिस्तपस्वो वा जितेन्द्रियः ॥ ६ । शुक्रा जीवो रविभौमो घने मकरकुरभयोः । मीने च वत्सरे जिंशे जातः स्थात्सर्वकर्मेछत् ॥ १२ ॥ छग्ने सीरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भवने सितः । राजमान्यो महाकामी भोगपत्नीरतस्तथा ॥ १३ ॥ सहज्ञस्यो यदा जीवो सृत्युस्थाने यदा सितः! निरन्तरं प्रद्वा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ ५ ॥ व्रिनृतीये सुते धमें कमेंग्यपि यद्। यहाः । राजयोगं विजानीयात् जातस्तत्रोत्कटो भवेत् ॥ ८ ॥ ।द्रा-सिंहे जीवस्तुलाकीटघतुर्मकरकेषु च । त्रहाः स्थाने तद्ग जातो देशभोगी भवेत्ररः ॥ २० यनेशुक्तश्च मौमश्च मीने जीवस्तुले बुधः । नीचश्चन्द्रो रवेयुंको राजयोगोऽभिषीयते ॥ १७ ॥ मीने शुक्रो बुघश्चान्ते लग्ने सूर्यो धने राशी । सहजे च भवेद्रोमो राजयोगं प्रचक्षते ॥ १८ ॥ ाने न्यये यद्। लग्ने सप्तमे भवने यहाः । छत्रयोगस्तदा नीचकुलोऽपि नुपतिभेवेत् ॥ ९ ॥ स्वक्षेत्रस्या यदा जीवघुधसूर्यसुनास्तदा । जातकस्य सुदीधिषु. सम्पद्घ पदे पदे ॥ ७ ॥

177.4. (元)

<b>利はキー</b> 商学: 「18で。」	विद्यास्थाने यदा सोक्या. कमैक्थाने च चन्द्रमाः । धमैक्थाने पुनः सोम्यास्तदा राज्यं विद्यीयते ॥ २१ ॥ युग्मे युपे मेपमीने कुम्मे च मक्तरे यहाः । यद्वा ज्युक्शुकेन्दुराहच. म्युश्यतुष्ट्ये ॥ २२ ॥ यद्वा तुर्थ सिनारेन्दुगुर्वकैश्यनय क्थिताः । योगेप्वेतेषु ये जातास्तेपां स्यादाज्योगिता ॥ २३ ॥ जन्मचनुर्थे मचने मार्गवरिवगहचन्द्रभीमेषु । जातो बुध्युकेषु च यृथिद्यीपालो भवेत् पुरुषः ॥ २४ ॥	ディングのようかとう	चतुर्थे विमर्थे गमद्वारे
	्यमे ट्युंट मन्ता मान्युंट मन्ता विहें । यत्तात्त प्रकृषों रक्षकृष्यः कुळवर्षेत्तः ॥ २६ ॥  हितीये वैकाद्ये या विकोणे या भवेद्यि । सप्तमे या नवेजीयः मुक्षों राजमानिनः ॥ २६ ॥  गुक्तिये वैकाद्ये वा विकोणे या भवेद्यि । सप्तमे या नवेजीयः मुक्षों राजमानिनः ॥ २८ ॥  गुक्तियः मुक्षिते यमे करो करो भवेत् पुनः । सप्तमे भवने करो धनसीभाग्यज्ञातकम् ॥ २८ ॥ "  ' यदि सवेप्रद्रिश्येत्रायायोगः । नथा—  अन्योऽन्यस्योचराद्यिस्थां यदि स्याना ब्रह्मे तद्या । राजयोगं जिनाः प्रह्मित्ते सु महाफळम् ॥ ३० ॥  गुर्गे पूर्णभृद्रण्योत्ते । तता—  गुर्गे पूर्णभृद्रण्योति । तता—	そうじゅう しゅうしゅうしゅう	सुतुकादि- योगाः
64-PS	ं राबवज द्वाद्गगरनुफाअन्याद्षितीयमे: सुतुफा: । उभयस्थितेहैरथरा कैमहुममन्यथैतेभ्य. • ३१ ॥''  शत्र रविप्रांमिति रविवजी भोगादिष्य इत्यर्गः । तनोऽय भावजन्मगविकाया चन्द्राद्हान्त्रो स्थाने भोमादिश्वरक्रिय्म् स्थान्तान्त्रान्तान्त्रोमारः । वन्त्राद्द्वित्याद्वान्त्रान्त्रम् नेत्रोमादिः कश्चिद्महत्तन् दुर-  थरायोगः । अभ्ययेति यदि चन्द्राद्गाद्गीयम्थानवोभोमादीना मध्ये कश्चिद्महो नामि नदा केमहुमयोगः ।  'स्योग्नयर्यांचीशि द्वितीयगेश्चन्द्रांजीवैद्यि । उभयस्थैकभयचरी राजयोगाः पडन्यमी ॥ ३२ ॥ ''	からまってみずかく **	॥१७९॥

वीशियोगेऽपि चन्द्रवर्शितेति योज्यं, चन्द्रवर्शितेमानिग्रहैरिति चार्थः पदपीति पूर्वश्लोक्त्येषिनाः महेते त्रय इति पर् । यदापि च मुस्मेशि-चन्द्रे सर्वप्रदृष्टे ग्रु स एव भम्रक्रमहुमाक्यो राजयोगः स्यात् । एते सप्तापि राजयोगा जातकोक्ताः । लह्यस्वाह-'' केन्द्रे शीतकरेडिप वा प्रद्युते क्याऽत्रापि योगभन्ना बहुबोऽप्युषधन्ते तथापि स्थूरबुत्तिरेवात्र विवक्षिता, वैचित्र्यार्थं अन्थक्षताऽपि पड्यमी इत्येव सट्र्योक्षेत्र, सप्तमः केमद्रुमस्वधमः, ¥<01

कैमब्रुमो नेत्यते ''। एवमेते विकीर्णराजयोगाभत्वारिशत् ४०। सर्वमीलने यात्रायोगा नव शतानि पदशीत्राधिकानि ९८६॥ अय चित्तमृद्धिः सर्वतिमित्तेम्यो बलिनीत्याह्-

स्कछेष्वपि कार्येषु यात्रायां च विशेषतः। निमित्तान्यप्यतिक्रम्य चित्तोन्साहः प्रगल्भते॥ ६३॥ '' स्यन्द्नं दक्षिणे पाश्वे विपृष्ठहृद्ये हितम् । वामपाश्वे तु नारीणां मनसञ्चानुकूलता ॥ १ ॥ '' ध्याक्या-निमित्तानीति, यद्यपि निमित्तं क्लि दैहिकं वामदक्षिणाङ्गरफुरणादि । उक्तं हि दैवक्षचछ्नमे-

भङ्गस्पर्वादि त्विद्वितं, दुर्गावित्र शकुनः, कप्नादि तु ज्योतिषं, तयाच्यन्नामेदकत्पनया सर्वेषां निमित्तत्वमेवोचे । चित्तोत्ताह ब्रुति " भक्निरा ऐन्यादि ४ दिश्च मातङ्ग १ रथा २ श्व ३ नरवाहनैः ४ । बजेत्क्रमेण भूपालो दिक्पालोह्यासिमानसाः ॥ ६४ ॥ ब्यक्या--नरवाहनं शिविकादि। दिक्पालेति यातन्यदिताः पतिमिन्द्रा १ प्रि २ यम ३ नेक्स्त ४ वरण ५ वायु ६ कुमेरे ७ शान ८ कर्ण। मनोरसाइं " इत्युक्तः प्रागविसंवादित गऽनुभूतं प्रातिभज्ञानं कग्नादिभ्योऽपि बरुवदित्यर्थः ॥ यात्रायां दिगित्रभागविधिमाइ— तथा 'अहाः स्युरेन्ते" सांद्कान्योक सूर्योदिमहं च सहपै ध्यायन् सिन्नलधः। उक्तम् रत्नमालायाम्-" स्यायनात्राभीमरं हष्टचेताः, स्रोणीपाळी निविकम्बं प्रयायात् ?' ।

॥ इति गमद्वारम् ॥ ८

まりとこ

मत्यं निम्ये नास्त्यारे	आयशोग- नाशोभन निचारः	= = = = =
अथ वास्तुद्वारमाह— वास्तु नरुयं विभूत्यायुः कीर्तिकामो निवेश्येत्,ज्ञात्वाऽऽय १क्षे २२ययां ३ शॉस्तु ४चन्द्र ५ ताराबछे ६अपि ॥६५॥ १०	भूति अत्रादिशक्ताद्वास्त निमित्तराकुनादिभि । ज्ञान्या प्रप्टुगृंहारम्भे कीतंयेत् समयं सुधी ॥ १ ॥"  अत्रादिशक्ताद्वाद्वम्पाय्येत्व । नजु कथमद्रस्यत्वेन निर्णय. १ उच्यते—  "शीपेरमुखरयाद्वरहृदयोधद्वराणिपक्तिदृद्वस्तिष्ण्याद्वर्तज्ञानि । ऊत्तर्ज्ञान् १० जङ्घेररचरणा १२ विति राशयोध्जाद्याः ॥ १ ॥"  इति छघुजातके । अगाजाया इत्युक्तं तथापि यत्तात्कालिक लग्नं तदेव शिरः, ततोऽन्याद्वानि । ततम्म—  "काल्छुंसो यद्त्रं तत्त्प्र(त्प्र)या स्पृय्ति चेन्छुभे । युक्तं चिलोकितं वापि सद्यनिर्माणमादिशेत् ॥१॥"इति देवज्ञवल्लमे॥ आवादीन्येनाद्व—  "मावस्य वत्तर इंगान पर्वादि ८ वितिनोऽतासा निममान्तेष क्रोभ्यनमः ॥ ६६ ॥	प्रिम प्रिम प्रिं । मार्ग्य । मार्य

ध्वजः परे तु सिहस्य तौ गजस्य घुषस्य ते। एवं निवेशमहीनित स्रतोन्यज घुषस्तु न। ६७॥ सरो मेर्यागृहे शस्तो ध्वाङ्क्षः शेवकुठीषु च। मृषः सिंहो गजश्रापि प्रासादपुरवेश्यसु ॥४॥" अग्निवेश्मसु संबंदु गृहे वन्ह्युपजीचिनाम्।धूमं नियोजयेत् किञ्चिष्यानं म्लेच्छादिजातिषु॥३॥ इत्साष्ट्र विवेकविलासे ॥ भाषेषु विक्षिमयं नियमयति—

ज्याख्या--देध्यान्ययोद्यातः फलं स्थात् । स प्वाष्टह्नताधिक आय. स्थादिस्यन्वयः । भावश्चायं-देष्यांदन्यो विस्तारः, घातो मिथसादनं सह्गुणन-गुवस ते इति मुवाये प्राप्ते सोऽपि ध्वजगजसिक्षात्रापि देवाः । चुषस्तु नेति मुवाये एच प्राप्ते मुवायो हेयोऽन्येप्नायेषु प्राप्तेषु तु मुवायो न देव ब्गास्या—यत्र मिद्राय: प्राप्तस्त्रत्र सोऽपि च दीयते, न टोषः, एवमग्रेऽपि । ती गजस्येति गजाये प्राप्ते सोऽपि ध्वजसिंहावपि च देयो । आयो देह्यान्ययोवातः फलमछह्दतेऽधिकः। फलमछ्मुणं भा २७ में भं तत्राछह्दते न्ययः॥ ६८॥ इसमे: ॥ आयाधानयने करणमाइ---

स्त्रक न दीयन्ते सज्यन्ते वा, कि तु निरुद्धा दण्डा हस्ता एव वा स्थाप्यन्ते तदा तेषां दण्डानां हस्तानां वाऽकुगुरुरूपीकरणादन्वष्टाभभांगे झुन्यस्येव शेषीभ-मिति याचत् । ततन्नेष्टवास्तुनो दैघ्यं विस्तरेण गुणिते योऽङ्गः स्थात् स फकाक्यः, क्षेत्रफलमित्यपि तस्य नाम । अष्टेति स एक फलाक्नोऽश्वभिभंष्यते यच्छेपमधिकं तिष्ठति स इष्टबास्तुन भायः, एकशेपे ध्वजः, द्विशेपे भूम इत्यादि, शून्यशेषे तु ध्वाङ्घाय इति । भयमजाझायः- षड्मियंवेत्ताबदद्गुळं, चतुर्विशत्यड्गुलेहंसाः, चतुर्भिहंसैहंण्ड: इति, ततो यत्र दण्डेहंस्तेवो मितं क्षेत्रं तत्र सर्वेत्राङ्गुकानि द्रवा हित्वा वाऽभीष्टायः प्रसाप्यः, यदि **य**ङ्गुकानि

ランツニ

"न हस्तमानेन गुणान्वितं स्याद्यदा तदा तद्रणितोक्त्युक्त्या । प्रदाय हित्वा यदि वाङ्गुळानि, प्रसाध्येत्क्षेत्रफलं ग्रुभायम् ॥ १ ॥"

हस्तानासुपयंह्नाुकानि दस्ता हित्वा वा तथा कथिब्रहेर्व्युशुत्वे कर्वपयेत् यथाऽष्टभक्ते क्षेत्रफ्छे विषमाङ्क एवावशिष्यते । उक्तक्र देवझव्होमे 💳

वनेन प्वाङ्काय एव समेति, स चोत्तमानां गृहेष्वयुक्तः । अथ वासना-अङ्गुकरूपयोदेष्यंविस्तारयोधीते क्षेत्रफलं स्याविति, कोऽर्थः ! तिसान् क्षेत्रे सर्वसङ्ख्यया तावन्त्येवाङ्गुळानि स्युः भायाश्राष्टेव, ततोऽष्टभके क्षेत्रफळे शेषाङ्कसमो ध्वजाद्यायः स्वात्, स च विषम एव श्रेष्ठो न तु समः । ततक्ष

अत्र भ्रुभायमित्युपलक्षणं, तेन नक्षत्राथिप यथा तिसन् गुहेऽनुकूकमुराधते तथा स्त्रफ्ं माध्यं । नक्षत्रानुकूत्पप्रकार्धाप्रे वक्ष्यते-'' प्रारक्षं अत्र कांमिहनाः काविष्णक ( कार्मिक ) इस्त क्र्यमं: । तथा देतगुडे भित्तिबाहुत्यं क्षेत्रफलमध्ये गण्यते, अन्यष्ण तु भित्तयः क्षेत्रफकात् "गुटेषु कर्मिकइस्तेन मानं स्वामिकरेण वा। देवतानां तु चिष्ण्येषु कर्मिहस्तेन केवलम् ॥ १ ॥ " मम्मुने चन्द्र " क्लादिना । विशेषस्तु-

श्रुष्टगाम्तुनम्तु जन्मभानयनमेनं-फलमष्टगुणमिति अधिक्ताब्द्रोऽम्रे सम्बन्धते, फलाङ्कोऽष्टगुणो भासे इति भेः सप्तिंबात्या भागे यद्धिक शुनि ज्यवद्गारप्रकारो । युषुक्ता आयाः । अथ जन्मभ, तत्र सामान्येन वास्तुनस्ताचन्नममं कृत्तिका । यदुक्तं ज्यचद्वारप्रकारो-" माद्रपद्रततीयायां शनिद्रियसे क्रिनिकाप्रथमपादे । व्यतिपाते राज्यादो विष्य्यां वास्तोः समुत्पत्तिः ॥ १ ॥ " " क्षेत्रकलान्त्रसित्तीर्देवगुष्टेऽपि प्रकार्येष्टिहास् । आक्रम्य बाह्यसूमि क्षेत्राद्धितां नेहे ॥ १ ॥ "

||622| फ्छे व्ययेन वेहमाङ्याक्षरैआह्ये त्रिभाजिते। अंद्याः जन्ना १ न्तक २ ६मापा ३ स्तेषु स्पाद्यमो यमः ॥ ६९ ॥ दीगं तिऐत्तिक्यास्तुनो जन्मभ। अमादिन भात् मुहाणा स्वामिना मह पदष्टमकाहि चिन्त्यते। तत्राष्टेति तिस्तिष् भाद्वेऽष्टभिभंके शेषाङ्गेन स्ययः स्वात्, रपालगा—क्षेत्रणण्डाङ्क ग्ययाङ्क तद्गुहनामाक्षरमद्ग्या च क्षित्या जिनिमाने यच्छेत सोऽंग. । तथाहि—फ्क्कोने हन्माताः द्वियोचे यमांबाः ज्ञान्तः १ कृरः २ प्रजोनश्च ३ श्रेयानध्य मनोरम. ५। श्रीवत्सो ६ विभवश्चेव ७ चिन्तात्मको ८ व्ययोऽष्टमः ॥ २ ॥ <sup>»</sup> " पंशाचस्तु ममायः स्याद्राक्षसभ्याधिकै न्यये । मायाजूनतरो यक्षो न्ययः श्रेष्ठोऽष्ट्रया त्वयम् ॥ १ ॥ अग्रेमशेषे गान्ती नगयः, द्विभेषे मूस यामस् ग्रुन्गशेषे चिन्तात्मक इति भामना ॥ अवानयनमाह— भटिमिभीमाप्राप्ती सु भाष्ट एत स्यताद्वः, स्वयन्न नेथा पैताच । यक्ष २ सक्षम ३ मेटात् । यस्त्रारंगः-स्त्यदीपे सर्वाताः ॥ पेशमान्येखुकं तत्ताताः प्राह्-

अत्र प्रसारवत्रष्टोहिष्टादिप्रत्ययपञ्चकमपि सुवचमेव, पर प्रन्थगीरवः "स्धेयं १ धनं २ जयः ३ पुत्रो ४ दारित्य' ५ सर्वेसम्पदः ६।मनोह्योदः७ श्रियो ८ युद्धं ९ वैषम्यं १० वान्धवा ११ धनम् १२ ॥१॥ ब्याख्या— आद्यपंक्ती चत्वारो गुरवः स्याप्याः, शेषपङ्कित्वाद्यगुर्वेषो लघुः, अम्रे तूष्वंसमं । यत्र तु पृष्ठे रिक्त स्थानं तिष्ठति तेषु स्थानेषु गुरवो न्याख्या--एताः किल धुत्रादिसंज्ञाः सान्त्रथाः, तेन सर १ दुर्भुख र क्रा ३ क्षया ४ क्रन्दा ५ ख्यानि गृहाणि अञ्चभानि । तदुक्तं वास्तुत्राध्ये---भयाद्तुपयोगित्वाच नोच्यते ॥ अधैभिः पोद्दराभक्नेध्रैवादिनामोस्पित्तमाह---= mg = प्रदाक्षणस्थे बहुमानि स्युधेवादीनि षोड्या प्वोदितो गृहद्वाराहिक्ष्विलिन्दैलेघुदितैः गुरोरधो लधु नगरयेत् पृष्ठे न्वस्य पुनगुँष्त्न् । अग्रतस्तूष्वंबद्याचावत्सर्वेलघुभँवेत् ॥ ७२ ॥ सुमुखं ८ दुमुंखं ९ मूरं १० सुपक्षं ११ धनदं १२ क्षयम् १३ ॥ ७० ॥ आकन्दं १४ विपुलं १५ चैच विजयं १६चेति पोड्या। देयाः, एवं तावद्यावस्तवंळघुरन्त्यो भक्षः स्पात् । चतुरक्षरबुत्तजाताविवात्र पोदम भक्षाः । स्थापना यथा— क्षयक्ष १३ मृत्यु १४ रारोग्यं १५ सर्वसम्पित् १६ ति क्षमात् । घ्रवादीनां फलं क्षेयं " इति । सम्प्रत्यमीषां पस्त्यानां प्रसारः प्रतिपाद्यते॥ ७१॥ युग्मम्॥ घुवं १ धन्यं २ जमं २ नन्दं ४ खरं ५ कान्तं ६ मनोरमम् ७। केचिस्मुपक्षस्थाने विपक्षनामाहुः । पस्त्यानि गृहाणि ॥ प्रस्तारप्रकारमाह---115181 1518 1601521 181511 110026 10000 01000 01000 182¥

नास्तुद्वार - Total । ततोऽयमथं —यत्र रुघुमत्यामेन दिशि अरिन्दः प्रतिशालागोजायिदः, ततश्च यत्रेनोऽपि न रुघुस्तदेकापनरकमात्रं गृह ध्रुनाक्यं । यत्र तु दिस्यछिन्देर्छंघुदित्रिति छघुमिरुद्वा. कथिता ज्ञापिता इति याचस् पा॰गामिलेन्टरतद्वन्य, पत्र तु दक्षिणस्यां तद्यमित्यादि । एवं यत्र यत्र त्यषुरतस्यां तस्यां दिति रुष्ठसंस्थानवशादेको द्वी त्रयो वाऽस्तिन्दाः । पोदशे सुसुल ॥ " देवस्वहासेऽप्युक्त-गृहस्य मुखतः प्राचीं प्रकल्य तत्प्रदक्षिणम् । पर्यटद्भिरिकन्दैः स्युः प्रस्ताराष्टेश्मनां भिद्रा ॥ १ ॥ " मनोरम ७ ट्याण्या-गुरद्वाराष्ट्रित गस्तां दिशि गुरद्वारं सा पूर्वां, ततः प्रदक्षिणं दक्षिणाद्या दिशः । उक्तच्च चिनेक्तिचित्रासे-पूर्वाटि दिग्विनिहेश्या गृहद्वारन्यपेक्षया । भास्करोद्यदिक् पूर्वा न निज्ञेया यथा श्रुते ॥ १ 1515 5115 तु चरमारोऽभिन्दाः । आषगृहे तु लब्बभामान्नास्त्रिकिन्द् । सर्वेषा सुब्मकारस्यापना यथा— 2515 ततोऽत्रायभर्ते चतुर्मिगुर्मिगृहस्य प्वविधाश्रतनोऽपि दिनोइनाचृता ज्ञेया. । L 1155 मन्द्र क SISS 14 SS 7 ISSI धान्य 1 [ 2222 

तिनग

विषुक्त १५

आफिन्द् १४

धनद

सुपन्र-निपक्ष ११

ic d

33.1

क्षत १२७ । द्वयोरप्यङ्कयोर्मियो घाते जातं द्वाविक्षतिसहस्राः चतुःशत्येकोनात्रीतिक्ष २२४७९, इदं क्षेत्रफल । अस्याष्टीभभीगे शेषं सप्त ७। सप्तमो भथायाद्या उदाहियन्ते-यथा कस्यनिद् गृहस्य देष्यं सप्त हस्ता नवाङ्गुळानि च, हस्त ७ भङ्गुळ ९ । विस्तारश्च पञ्च हस्ताः सप्ताङ्गुकानि, हस्त ५ गजायस्तस गृहस्येलागतं (१)। भथ भं—सेत्रफक २२४७९ मष्टभिगुणितं जातं रुक्षमैकोनायीतिमहत्ता अष्टगती द्वात्रिशम् १७९८३२। अस्य सप्तः अं ७। द्वाविष हस्ताङ्को चतुर्वियासा सह्गुण्याङ्गुङानि मध्ये योज्यन्ते। जातो दैष्यङ्किः सप्तसस्याधिक शतमङ्गुङानि १७७ । विस्ताराष्ट्रस्तु सप्तिविशं ग्रीतिपड्टमकादिक राशिबङ्माप तत्वतश्चन्द्रवङ्मेव । ताराबङ प्रथम् दिवह नोक्तं, परं नक्षत्रकथने तद्मि सुज्ञातत्वात्सूचितं झेयं । तथाहि---गुरुशिष्यादिबद्त्रापि त्रिपञ्चसप्तमी तारा त्याख्या, केवल तत्र मिथो गण्यते, इह तु गृहेशमाद्गृहम यावद् गण्यं, गृहेशस्यैव प्रीतेरिष्टत्वात्। आह च सारङ्गः-स्रात्, सोऽप्यशुभः । यनः प्रष्ठस्थेन्द्रो चीरक्रतानि खात्राणि बहुद्यः पतनित । यदि त्मयपार्श्वमित्तिद्योः समेति तदा भव्यं । प्रासादेषु तु सम्मुखेन्द्रः हुए फिल द्वित्राधपवासाणां गुहाणामनेके प्रकाराः स्युः । एकापवासाणामापे चतुरत्तां शतं प्रकाराः सम्भवेयुः । इह तु दिल्मात्राथं पोषधा-ब्याएया-परिमचक्तवत् कृत्तिकादीति सप्त सप्त भाति चतुदिञ्ज न्यस यदं गृहस्योपयमानमस्ति तद्विचायैते, यदि तदं गृहस्य द्वारिदिशि समीति तदा तस गुहस्य मम्मुलश्रम्दः स्थात्, स चाशुभः, यतोऽग्रतःस्ये चन्द्रे कर्तुस्तत्र न निवातः । यदि तु पश्रात्यभित्तिदिशि समेति तदेन्दुः प्रुप्धस्यः प्रार्थं सम्मुखे चन्द्रे न बस्तुं बास्तु कल्प्यते । पृष्ठस्थे खात (व) पाताय इपोस्तेन खजेद् गृही ॥ ७४ ॥ " वेश्मनामेकशालानां शतं स्याचतुरुत्तरम् । द्विपञ्चाशद्द्रिशालानां त्रिशालानां द्विसप्ततिः ॥ १ ॥ " वास्तुनि चन्द्रवलमाइ— शान्ता १ मनोरमा २ क्रूरा ३ विजया ४ कछहोन्द्रवा ५ । पष्मिनी ६ राक्षसी ७ बीरा ८ ऽऽनन्दा ९ चेति तारका: ॥ २ ॥" ग्रुभाय । उक्तञ्च वास्तुशास्त्रे–'प्रासादनुपसौधश्रीगृहेषु पुरत. शशी''। अव एवात्र गृहीत्युक्तं । इति चन्द्रवरू । 'भगयेत् स्वामिनक्षत्राद्यावद्भिष्ण्यं मृहस्य च । नवभिस्तु हरेद्धागं शेषं तारा प्रकीतिता ॥ १ ॥ हिंग्युच्ये । उक्तज्ञ रह्नमालाभाष्ये—

1182811

言とは

विश्वसा २७ भागे शेषं द्वाद्य १२ अधिनीतो द्वाद्यभमुत्तरफत्गुनी तस्य गृहस्येत्यागत। तम्न गृहं कत्पनया पूर्वाभिमुखं, तेनोत्तरफत्गुनी भं दक्षिण-

रुनसर्ज्ञा, नद्रणद्भि हो, ब्यनाङ्गश्च चत्वारः, आभ्या योजितं क्षेत्रफल जात २२४८५। अस्य त्रिभिभागे शुन्यशेषस्वाद्राजांशस्तद्गुहस्य (४)। चन्द्रबेले ाक्षत्रोमत्यवतरे उक्त (५)। राशियळं त्वप्रे वक्ष्यते। तारावळं त्वेवम्-गृहेशस्य जन्मभ कल्पनया थनिष्ठा, ततो गणने उत्तरफ्लाुन्यष्टमी तारा (६)॥ मित्ती ममागतन्या<sup>मु</sup>ढयं (२)। अय व्यय.-भाद्वी द्वाडय, तत्याष्टिमिम्गिगैषा अत्वार. ४, चतुर्थ. अयान् डययः (३)। अ**थांशः-**तत्य गृहस्य कत्पनया गमपि नारमेतेलयः । ''मेवस्निय्यनस्येऽर्कं पूर्वामुखे गेहे कृते राजभय । युपरन्यामक्रस्येऽकें दक्षिणामुखे गेहे कृते पुत्रादिसत्युः । मिथ्रनतुका-•पाएया—तुङाठीलायुक्तेऽपि पूर्वोक्तचान्द्रमामयज्ञके एव, न शेषमासेरित्रति स्वय ज्ञेष । द्रयता द्विसमाबा राजयः । न किञ्जिदिति चतुर्दिनमु-भाद्रादिज्ञिमासेषु प्रवादिषु चतुर्विशम् । भवेद्रास्तोः शिरः पृष्ठं पुन्छं कुक्षिरिति क्रमात् ॥ ७७ ॥ वैशाखे आवणे मागें पौषे फाल्गुन एव च। कुर्न्नीत वास्तुपारम्भं न तु शेषेषु सप्तस ॥ ७५॥ स्व ९ श्रीप्राप्ति १० वित्तभीति ११ च लक्ष्मी १२, कुर्युश्चेत्राचा गृहारम्भकाले ॥ १ ॥" इति दैवश्चवह्यमे कुम्भस्पेऽनें पिश्चिमामुरो गेहे कुते सन्तापादि । कर्कवृश्चिम्मीनस्येऽनें उत्तरामुखे गेहे कुते कुकक्षय" हति छ नारचन्द्रटिष्पनके "शोकं १ घान्यं २ मृत्युदं ३ पञ्चतां च ४, स्वाप्ति ५ ने स्ब्यं ६ सद्गरं ७ वित्तनाशम् ८ । पाक्पश्चिमास्यं सगज्जम्भक्तीसिहस्थिते द्वयङ्गगते न किञ्चित् ॥ ७६ ॥ नवरमेते शुक्रप्रतिपदाद्याश्वान्द्रमासा एव प्राद्याः ॥ अथ सद्कान्तिचिह्नितान् सौरमासानाह— यामारमेत्रोत्तरदक्षिणास्यं, तुलालिमेषषेभभाजि भानौ । क्याग्या---वास्तुप्रागम्भमिति सूत्रपातखातादिकमैक्रएपेनेसर्थः। न स्विति, यदुक्तं--भथ वास्तुत्रारम्मे मासानाह-

'ईशानादिषु कोणेषु चुपादीनां त्रिके त्रिके। शेषाहेराननं त्याल्यं विलोमेन प्रसर्पतः ॥१॥" नाभिः, आग्नेये पुच्छं, नैक्रते मुस्कलं, एवं संहार्ण शेपी अमति । बुपादित्रिके हंबाने मुखं, असार्थः - संहारेण शेपिन्निभिमिनित्रेभति, ततो यदा मासत्रयं तन्मुखमीताने तदा ततो भाव्रपटादिमासिन्ने प्राच्यां वास्तोः शिरः, दक्षिणस्यां पृष्ठं, पश्चिमायां पुच्छं, उत्तरस्यां कुक्षिः । मार्गोदिमासत्रिके दक्षिणादिचतुर्दिक्षु शीपांदीति, फाल्गुनात्रिके पश्चिमादिचतुर्दिक्षु, ज्येष्ठा-इति दैवज्ञव्छमे । केचिद्वास्तोर्वेत्सनामाडुः। अनेन च वास्तोरद्विक्वयनेन खातादी दिप्तियम भाग्नेये मासत्रय नामि:, नैऋते मासत्रयं पुच्छं, वायब्ये मुष्कंछं श्रेयः। यदा वायब्ये मुखं तदेशाने सिंहादि क्रिके वायन्ये, बृध्यिकादित्रिके नैस्ते, क्रुम्मादित्रिके वाग्नेये सुखं। स्थापना चेय-एवं च---दिमासत्रिके त्त्तारादिचतुर्दिख्य। अयं भावः-कुक्षाचेच प्रथम खननारम्भः कार्यः, नान्यदिख्य । यदुर्फ---पुन्छं खनेत्स्त्रीश्चमगोत्रद्दानिः, स्त्रोपुत्ररत्नान्नवसूनि कुक्षो ॥ १ ॥ " ' शिरः खनेन्मात्रपिनृत्रिहन्यात्, खनेच पृष्ठे भयरोगपीडाः । स्याल्या--अत्र यास्तुनो दक्षिणपाश्रींपपीटं सुप्तस्य नागस्याकारेण स्थापना यथा--उक्तः । विदिप्तियमः युनरेव-भावादिमासत्रगापेश्रया नागचारस्य ध्ये. आ. ध्या. देख शिराद्य: मार्ग, थे. मा क्रक्षिः उत्तर 98 पश्चिम तर् ě. 120X

चत्यं विमर्श

" विदिक्त्रयं स्पुर्रोस्तिष्ठेत्स्यवक्त्र १ नाभि २ पुच्छकैः ३ । शेषस्तिज्ञितय त्यक्त्या भूखातकार्यमाचरेत् ॥ १ ॥ दक्षिण

नाभी च म्रियते भार्या धनं पुन्छे मुखे पितः । इति मत्वा शिक्षान्यासे भूखाते तत्रयं त्यजेत् ॥ २ ॥ "

ランシニ

वत्यं वस्तुद्धारे महराद्धारे विवारः ॥	1182811
15/2014 - 1- 3/2016 - 10-16-26-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36	-75-1-95-
इति वास्तुशाहि ॥ भावाषुक्तेस्ताप्पमांशिक्स् । समोधिक्व्ययं क्षेतुः समनामयमांशिक्स् । विक्द्धराशितारं च विनाऽन्यद्वेश्म शोभनम् ॥ ७८ ॥ व्याख्या—यनायेन ममोऽधिको वा न्यवस्युष्ट साज्यिमिति मवैत्र भाव्य । एतेन व्ययाद्धिक भावः श्रेष्ठ , सोऽपि विपमोऽतिश्रेष्ठः दियरावात् । यहा हा —,, कुर्यात् दियराधिकारं स्वयोनिमं शुद्धतारांश्यम्' इति । यहा गृहस्य नाम कर्तुनींशा सम । यत्र यमांबोर्ष्यतिः। यस्य राशिना सह दर्गामारके गञ्चव्हमक दिहादगादिक्स् में रक्षोगणे स्वागिभयोन्या सा तारातिस्त्यमसमी स्वात् । चक्तारायस में रक्षोगणे स्वागिभयोन्या सा तिक्द्रमित्रयोतिक ना तद्गुह स्वाल्य । यहाहाः — "आयादिक्दे भवने न सुसं पञ्चमके त्वपत्यमृतिः ॥ १ ॥ निधनं सप्तमतारे पञ्चमतारे च तेजसो हानिः । विपद्स्हतीयतारे यमाराके गृहप्तिमेश्ये ॥ २ ॥' वार्यनेस्त्रता	महार निर्मात के दें , मार नामाय निर्मान मान्य कर मुद्धान निर्मात कर मुद्धान निर्मात निर्माण कर मुद्धान विद्यान निर्माण कर मुद्धान मुद्धान निर्माण कर मुद्धान
भी में जिस्से शेषचार. ।  पूर्व पूर्व से में में जिस्से भी भी में जिस्से भी भी में जिस्से भी भी भी में जिस्से भी	लगा न बिना कथ पत्रधमकापिषियायेते १
できるというとうというというというとうなったとうとうとうとうと	900
आरम्भ- सिद्धाः ॥१८९॥	

=000 सूत्रस सिद्धिनेधन्समैत्रस्थिरसातिकानक्षेपुष्यैः।न्यासः शिलायाः करपुष्यमार्गपोष्णध्वेषु अवणे च शस्तः॥ क्याख्या--विप्राणा भ्वजाये पश्चिमामुलं गुहद्वार कुर्यात, ध्वजो हि प्राच्यां तिष्ठति, प्रतीचीमुले च द्वारे स विप्राणा प्रवेशे सम्मुलः स्थितः पक्स । नृपात् पञ्चमो शक्षिः कन्या । शेर्षं च हो । उत्तरफल्गुनीमस्य द्वितीयः पाद. तस्य गृहस्येत्यागतं । ततश्च धनिकस्य धनिष्ठोत्तरार्थजन्या जन्म-एकिः फ़ुम्भः, म च विषमः तसाद्षमस्य कन्याराक्षेः प्रोतिषउष्टमकं "ओजात्साद्ष्यमे प्रीतिः" इत्युक्तेः ॥ वर्णानां बताद् मुहेप्त्रायमुखयोठप्रैयस्थामाह⊶ जातं सप्त लक्षा एकोनचिंग्रतिमहस्त्वास्त्रिमस्यासिमसिक ७१९३२८ । एपामष्टमतेन भागे शेपमष्टचत्वारिंगत् ४८। क्येकं ४७। तस्य नवभिभांगे कडधं इति व्यवहारप्रकाशे । उराहतगृहस्य भमुत्तराषत्त्युनीति त्रिपादं, ततस्त्रजैवास्यार्थां भाग्यते-प्रागानीतं क्षेत्रफकं २२४७९, इदं द्वात्रिगता गुणितं सूर्येन्दुजीवसीम्यानां भाग्गेवस्य च वासरे । सूत्रपातादिकं कार्यं निष्पत्तिमभिवाज्ञता ॥ २ ॥ " गृहतिवेशे कप्रवलमाह— चराद्न्यत्र लग्नेन्द्रोः शुभैः संयुक्तदष्ट्योः। कमे १० स्थितेषु सौम्येषु गेहारमभः शुभावहः॥ ८२॥ न्याख्या—अलिन्दः प्रागुक्ताथे. । निर्यूहो भिरयादेवेहिनिंगंतो दारुविशेषो मर्ननालकाष्टिः । आदेः प्रग्नीवादिग्रहः ॥ गुहे सूत्रपाताषाह— ' शंत्रफले गर् ३२ मुणिते भक्ते बस्वभ्रमूमिभिः १०८ शेपात् । व्येकान्नर्याभः शेपं पादो लब्धं चुपाद्धमणः ॥ १॥" ये गृहेऽलिन्दिन धूहिनिर्माचाश्वतु दिंशम् । न तेष्वायादिकं योष्मं बाह्यभूषासु वास्तुनः ॥ ८०॥ क्रमाद्रिपादिवणानां विषमायैध्वेजादिभिः। धीमद्भिष्मि निर्दिष्टं प्रतीच्यादिमुखं क्रमात् ॥ ७९॥ शुभाय सात् । एव तिहाये उत्तरामुखं द्वार शज्ञां गृहेषु दक्षिणदिक्स्यत्वारिमहस्य । एव शेपेष्वपि मान्यम् ॥ आयाधपवादमाह— ब्यास्या—वसुनाथं धनिष्ठा। मैत्राणि मृदुमानि । तिथिवारश्चिदिस्तु रिक्तादिवर्जनात् स्फुटैव । उक्तञ्च ब्रह्मशाम्मुटीकायाम्— " एकाद्शी डितीया पञ्चमी सप्तमी त्तीया च । प्रतिपद्शमी चेष्टां त्रयोद्शी पौणेमासी च ॥ १ ॥ ब्याएया - चराद्न्यत्रेति स्थिरे द्विस्त्रभावे वा लग्ने, चन्द्रेऽपि च स्थिरद्विस्त्रभावराशिस्ये । 18801

योगात्सु-चतुथ निमर्जे गरतुद्वारे गृहवासे गृत्पवेंगं सुविनीतवेपः,मौक्येऽयने वास्रर्ष्वभागे। कुर्याद्वियायालयदेवताचाँ, कल्पाणधीभूतपलिक्षियां च ॥८५॥ 📆 वर्गेत्यो दुर्येलः कुर्यादावर्षादन्यहस्तगम् । एक्रोऽपि चून ७ कमै १० स्यः परांद्रो स्याद्यदि ग्रहः ॥ ८४ ॥ ग्यात्या—कुगांशित गुरमिति क्षेप । पराक्षे कृषि परकीयनमाक्षे उत्तराघोक्तयोगे केवल्जारमेकान्त, पूर्याघोक्तयोगमिलने त्येकान्त पूर, महिणीन्दो मृहस्योऽर्ज मुर्ग सौरयं सिते धनम् । चित्रले नाशमायाति नीचगेऽस्तंगतेऽपि च ॥९॥" इति देवज्ञवछ्ने । तथा— ''मुठेषु यो चिसि कार्या निवेशनमनेशयो । स पच विदुपा कार्यो देवताऽऽयतनेष्वपि ॥१॥" एति ब्यवहारप्रकाशे । लग्ने दोपमाह— स्वोचस्थे लग्नमे शुक्रे १ हिचुकस्थेऽथवा गुर्गे २ । स्वोचे मन्देऽथवा लामे ३ घाम्न. सश्री स्थितिश्चिरम् ॥ ५ ॥ " केन्द्रिक्तोणगैः सौम्यैः, क्रुरः राज्ज्ञिष्यभौः। गुभाय भवनारमभोऽष्टमः क्रुरस्तु मृत्यवे॥ ८३॥ न्योमिन चन्द्र सुखे जीवो लामे मौमशनैश्चरी । यस्य धाम्नः समाशीति स्थितिस्तस्य श्रिया युता ॥ ४ ॥ चिरमिति अमितायुरिखर्ग. । येऽमी गुरारमञ्ज्ञे विशेषा उच्यमाना मन्ति ते जिनालयादिप्रारमजन्तेष्यपि योज्याः । तथा— सितो लग्ने गुरु क्षेन्द्रे खे बुधो रविरायगः । निवेशे यस्य तस्यायुर्वेश्मन शरदां शतम् ॥ २ ॥ " गुरुलेमे जले शुक्त समरे ब सहजे क्रजः । रिपै भाव्यंदा वर्षशतायु. स्याद् गृहं तदा ॥ १ ॥ र्गभ्या परागाणगाभ्या न महालेडिं मुर्गात स्वात् ॥ यानातितुत्तमुषार्देः मामान्येन नन्यमृहे वा प्रतेत्रानिधिमाह---जिश्जुसुतलग्नस्थैः सूर्यारिज्यसितैभेवैत् । प्रारम्भः सद्मनो यस्य तस्यायुष्टे समाशते ॥ ३॥ "स्बर्भे चन्द्रे विलग्नम्ये तीवे कण्टकवर्तिनि । भवेछक्ष्मीयुते घाम्नि भूरिकालमवस्थितिः ॥ ६ ॥ स्वमित्रोद्यगुद्दांशस्थेस्तक्ष्यगिध्यरमासते । खगैरन्यगतेरन्ये नीचगैश्चापि निर्धना ॥ ७ ॥ अनस्तम सितेज्येन्द्रजन्मराशिविलक्षयः । स्वोच्चस्वक्षेत्रभागस्यभेवेन्छ्रोसोरयदं गृहम् ॥ ८ ॥ स्याख्या-मृत्यचे इति गृतस्यामिन इति होषः । विशेषस्तु-

भगसाञ्चन्याञ्चन्यन्यत्वे ॥ गस्तुद्वारे गृहप्रवेशे अवादिशन्त्र|न्धिकमामक्षयमामाविष तत्र न दुष्टाविस्थः । युवेमाने इति चरत्रके इति भावः । आल्येति वास्तुवास्त्रोपदिष्टं वात्तुष्जन भूतविक न्यास्या--प्रविशेतित चन्द्रे गोचराष्टम्बरगीविधिनाऽनुकूलेऽरिक्तियौ विष्ममादिकुयोगामावे चेति स्वयम्शं । यदुकं - '' तारेन्द्रोर्येककाले तिथाः "विशाखासु राजी सुतो दारुणेषु, प्रणाशं प्रयाख्युत्रमेषु क्षितीश.। गृहं दहाते वहिना वहिषिक्ष्ये, चरे' क्षिप्रधिक्य्यश्च भूयोऽपि यात्रा॥" इति द्वज्यह्ये । प्रांकुम्मेति जलकलगानग्रतः कृत्वेसमैः । गृहं यहिग्मुखमिति, भय मानः-प्रविभिमुखे गृहे प्रदेशक्षेपु कृत्तिकाहिमसमैपु विधाय बामतः सूर्य पूर्णकुम्भपुरस्तरः । यहं यहिङ्झुखं तहिरद्वार्धिषण्ये विशेषतः ॥ ८७ ॥ युग्मम् । "सवैत्रहैचिमुक्तं प्रवेशमं शस्यते प्रयत्नेन । किश्चित्सौम्यसमेतं शुभप्रद कीर्तितं मुनिभिः ॥ १ ॥" इति छछः । " मासादिसङ्ख्यानियतं सीमन्तोत्रयनादिकम् । याम्यायनादौ तत्सवै क्रियमाण न दुष्यति ॥ १ ॥ " इति त्रिविक्तमः । प्रचिशेहेरम बार्षु हित्बाऽक्षितिनन्दनौ। मैख पुरुष्य्वस्वातिषमिष्यमुद्वाक्षेरः॥ ८६॥ गित्तेऽहि ग्रुभदस्येति " ज्यचहारप्रकाशे । हित्वेति रविकुजयो रोग-रक्तप्रकोपकारित्वात् । भेश्रेति, यदुक्तं--" सीम्पेऽयने कर्म थ्रुमं विधेयं, यद्गहिंत तत्खद्ध दक्षिणे च ।" भत्र भ्रममिति, नवरं--प्रवेष्ट्रमधिकारः, तेन पूर्वोक्तगुण्युतमि प्रवेशम यदि गृहामिमुखदिग्द्रारकं स्थात्तटाऽतीव शुभं । विशेषस्तु-च दिख्क विसिक्ष विधाय। बस्याणधीरिति तदानी सद्बुन्दिरेवानेयेति भावः ॥ वाराषाह-न्याक्या-स्विनीनोऽनायुद्धः १९वित्रोचितश्र । मीम्पे इति उत्तायणे । यहंक --

= 66%= = 66%=

"त्यजेत् कुतारां प्रस्थाने शुक्रको गृहवेशके। यात्रामु च नगोहखीनजे सम्मुखद्क्षिणो ॥ १ ॥"

तथा नन्यगृहप्रवेशे शुष्टः सम्मुखस्याज्य, । यत् त्रिविक्रमः--

भत्र गृहचेशके इति नन्यगृहप्रवेशे ॥ लग्नवकमाह—

१ पवित्रचित्रक्षेति माधीयान्.

वत्ये विसंग्रे विसंग्य विसंग्रे विसंग्	# 8 2	
जन्मराशिविलप्राभ्यां प्रथमीपच्यास्थितम् । लग्नं स्थिरं तद्शाश्च प्रवेशे साद्विर्ष्यते ॥ ८८ ॥ ब्यार्या—प्रथम जन्मराशिजनमल्यस्वपेम कनं प्रवेशे श्रेयः। यह्यह्यः—  " स्वनक्षत्रे स्वलग्ने स्वलग्ने वा स्वमुहुनै स्वके तिथौ । ग्रह्मवेशमाङ्गस्यं सवंमेततु कारयेत् ॥ १ ॥ "  श्रुरकमे विवादं च यात्रां चेव न कारयेत् । " वाभ्यामुपच्यस्थोऽपि राशिकंके शक्तः । यह्यहाः—  " आरोग्यदो १ थनहरो २ धनदः ३ सुलग्न ४, पुत्रान्तको ५ ९रिगणहा ६ थ्य नितम्यिनीग्नः ७ ।  प्राणान्तकृत् ८ पिटकदो २ थ्वे १० थनीव ११ मीदो १२, जन्मश्रेतस्तदुद्याच विलग्नराशिः ॥ १ ॥ "  स्थिरमिति सामान्योक्तेशि आम्यं स्थिर प्राय, न त्यारण । अनेन वृतकुम्ययोत्भ्यतमे (२) काने तक्तवाशे च प्रवेशः श्रेष्ठः, तयोरेप  प्राप्यत्तादिति भावः । तद्रगाश्चिति चन्नाराद् द्वित्तभावावित कप्रांतौ प्रवेशे हुदी, न वराणामेच कप्राताना दोपोक्तः । तथाहि—	"धुनः प्रयाणं मेपे स्यान्मृत्युः ककें तुके रुजः ।   प्रान्यनाशो मुने लग्नेरंत्रेष्ट्र फलमीद्दर्यम् ॥ १ ॥" इति हाहः ।   प्रान्यनाशो मुने लग्नेरंत्रेष्ट्र फलमीद्दर्यम् ॥ १ ॥" इति हाहः ।   प्रत्यामुरामादिगिमज्ञी विनं ज्योतिपसारे उक्ता—   "कूरा तिल्लगारसगा सोमा किंदे तिकोणंगे सुद्या ।   कूर इम अद्य असुद्धा सेसा मित्यम मिद्दारम्मे ॥ १ ॥   किंद्रुमंति कूरा असुद्धा तिश्गारत्ये सुद्धा सन्ते ।   किंद्रुमंति कूरा असुद्धा सेस समा गित्यवेसे अ ॥२॥" स्थापना—	
जनमराशिविलग्राभ्यां प्रथमोपचयस्थितम् । लग्नं स्थिरं तद्शाश्च प्रवेशे सिद्धिरिष्य व्यात्या—प्रथम जन्मराशिजनमळप्रक्ष्यमेव कनं प्रवेशे श्वयः। यह्यह्यः—  " स्वनक्षत्रे स्वलग्ने वा स्वमुह्ते स्वके तिथो । गृहप्रविद्यामाङ्गस्य सवंमीतत् कारयेत् ॥ १  श्वरकमे विवादं च यात्रां चेव न कारयेत् । " वाभ्यामुपचयस्थोऽपि राक्षिकंने ग्रसः । यह्यह्यः—  आरोग्यदो १ धनहरो २ धनद् ३ सुस्तम् ४, पुत्रान्तको ५ ऽस्गिणहा ६ ऽथ नित्तिवनीम्न. ७ ।  प्राणान्तकृत ८ पिटकदो ९ ऽर्थ १० धनोद्य ११ भीदो १२, जन्मश्रेतस्तदुद्याच्च विलग्नराशिः ॥ १ ॥ "  स्थिरमिति सामान्योक्तेशिष प्राम्यं स्थिर मार्य, न स्वारण्य । अनेन वृषकुम्भयोर्ण्यतमे (३) कम्ने तन्नवांशे  स्यादिति भावः । तद्रगाश्चेति चक्तराव् दिस्यमावाविष क्रमांनौ प्रवेशे हुष्टो, न चराणामेव क्रमाताना स्पेपोक्तः । तथा	महसस्यं गुर्मिवेग्नावी —  3 ताम  3 - ६ - 1	
म्म- हैं सिद्रेश हैं १९३॥ क्षेत्रकर्म अप्रकर्म (क्षेत्रकर्म अप्रकर्म क्षेत्रकर्म क्षेत्रकर्म क्षेत्रकर्म हैं इस्त्रकर्म (क्षेत्रकर्म क्षेत्रकर्म क्षे	444 4 4 - 8 - 9 - 9 - 9 - 9 - 9 - 9 - 9 - 9 - 9	

अत्र पुनर्वसाविति र स देवमातुरवामिकत्वात् । विख्वीति अभिजिष्कृत्रणयोरन्तराले, स्षिपाळनकहैरवामिकत्वात्तयोः । अत्योत्सुक्ये स्वनमो-" रात्री विवादमे शत्तः सन्मुहुने स्थिरोद्ये । वधूप्रवेशो नेवाच प्रतिशुकान्स्यं विदुः ॥ १ ॥ " इति भास्करः । तथा--पुनवैसी च स्तिकामृहस्य निमितिः स्मृता । विरिश्चिष्णुभान्तरे प्रवेशनं च तत्र हु ॥ १ ॥ " इति रत्नमालायां ॥ इति श्रोमति आर्क्मासिखिवातिके गम १ वास्तुनिवेशप्रवेशप्रीक्षात्मक २ श्रातुर्थे विमर्थेः सम्पूर्णः ॥ ४ ॥ तिष्छण्यात्रबहेमहंसरितस्यारम्मसिद्धेः सुधी-श्रङ्गारामिघवातिकस्य समभूतुर्यो विमर्शोऽयेतः ॥ १ ॥ " असित्रिश्वरसोमसुन्दरगुरोनिःशेषशिष्यात्रणी-भौच्छेन्द्रः प्रभुरत्नशेखरगुरुदेंदीप्यते साम्प्रतम् । ॥ इति वास्तुद्वारम् ॥ ९ ॥ सन्यान्तरे तम प्रवेशः कार्यः ॥

1188811

विलमद्वारे राशिख-दशापति विचारणा पञ्जमो विमर्शः॥ ५ ॥ 

॥ विलग्नद्वारम् ॥ १०॥

||886||

अय निकन्नद्वारमाह—

लगं विवाहे दीक्षायां प्रतिष्ठायां च शस्यते । रवौ मक्रकुम्भस्ये मेषादिज्ञयगेऽपि च ॥ १॥

प्ररुण । राम्पते इति अगस्याऽऽर्रणीयतया यहु मन्यते । एतानि कार्याणि शुद्धलन्नगलेनैव कार्याणि, नान्यया । शेषकार्याणि तु दिननक्षत्रशुद्धी सत्यां गुगमपि दगाप्रवेत हासीयतारहालिकलम्ने द्वापति-तिन्मगदीमा करमादिखा्वेनेन्द्रोमित्रोचौपचयप्रिकोणादिखानवताच ग्रुभतरमुक्तं युद्धताराके, तथादि-ष्याण्या—द्रीक्षायामिति उपस्थापनाऽपि दीक्षेत्र, प्रतिष्ठा जिनदिम्बप्रामादाद्रीनां । चोऽनुक्तसमुच्चयाथेः, तेन राज्याभिषेकमूरिपद्रामिषेकयोरिपि मुमुह्तेमाग्रेऽपि कार्याणीति भागः। नतु पदि जन्मलप्ताच्हुमाशुभं स्थात्तक् विवाहादिकरनप्रायक्ष्यविचारणैः कि प्रयोजनं? भथ चैतेषामेत्र प्रामाण्यं तद्रा जातकादिवाम्जाणामानथैगयप्रमतः । मेय, यतो यज्ञातकादो ग्रुभाग्रुभफत्यमुक्त तस्य निवाहादिवप्रघलेनाधिक्य न्यूनता वा स्वात्, यथा फिल तम्मफ्ले

पाकस्वामिनि ळग्नगे सुद्ददि वा ×वर्गोस्य सीम्येऽपि वा, प्रारच्या द्युभदा द्या विद्यपड्लामेषु वा पाक-पे मित्रोचोपचयत्रिक्तोणमद्रने पाक्तेश्वरस्य स्थित-श्चन्द्रः सत्फलवोधनानि कुक्ते पापानि चातोऽन्यथा ॥ १ ॥ <sup>7</sup> अत्र पाक्त्वामिनीति द्वापनौ । अपि च प्राणिना जन्मकानमञ्जभमपि तरकालविपाहादिकानवकारन्तुभमपीति सर्वमनवषम् ॥

=500 'मियाहार्री समृत. मौर'' युति रतामालाभाष्योक्तेनेऽर्नेमङ्कान्तिमगुत्ताना सीरमामानां नियम बक्तः । अथ चान्युमामान्नियमयति--

× वर्गंडम्य नमंडिस्वेति च प्रत्यन्तरे,

विलग्नद्वारे मृतस्यमावानि " तथाहि-कार्तिकाक्षेमासत्रये वृषक्रमं शुभं, मावाक्षिमासत्रये निहरुषं, वैद्याखादित्रये वृश्चितकस्न, श्रावणाद्वित्रिके कुम्भल्गनं च। प्पां ध्याएया---राघो मेजातः । एते शुक्तप्रतिषवाश्वान्द्रमासा एव प्राह्याः । ज्येष्ठयोरिति, ननु ज्येष्ठे ताविनमधुनसङ्कान्तिः स्वात्, सा च प्रांगपि गुछद्वामी यावदाशिकामा आहतोऽपि । तथा च त्रिचिक्रमा.-- "कैश्रिदिष्टस्त्यंतः ग्रुचैरपीति" । कार्तिकेति कार्तिकमार्गेत्रीपैयोमेध्यमावात् धीनजाति-एतेन होषेषु पट्सु चान्द्रमासेषु लग्नं न प्राक्षमेषेत्रथः । पाक्रश्रोकारस्वाह—" चतुर्धं कार्तिकादिमासिष्ठकेषु क्रमाष्यत्वारि स्थिरराक्षिकप्रान्य-माझोका, ततः किमिति पुनव्यंष्ठीपन्यासः ? उच्यते-भाषाडमासे मिथुनसङ्कान्सामपि सत्यां सर्वेथा निपेषार्थम् । कैक्रिनिमथुनसङ्कान्तो सत्यामापादस्य ''कातिकमासे श्रुन्धिगुरोर्धिलोक्या रवेश्च चन्द्रवलम् । अक्त्युते घिण्ये देवोत्थानाइशाहं स्यात् ॥ १ ॥'' इति व्यवद्वारप्रकाशे । माघमाल्युनयो राघड्येष्ठयोत्र्यापि मासयोः। लग्नं अयः परे त्वाह्यसहत्कातिकमानैयोः॥ २॥ " पित्रमे यदि सुरपुज्यो नीचक्षें वाऽथवाऽरिसंयुक्तः कम्योहा वैघन्यं प्रयाति संवत्त्तरैः पड़िमः ॥ " गुरुमेघायां पुरुपं हन्ति भाग्ये स्थितः स्थियम् । उत्तराफल्गुनीपादे द्वयं हन्ति न संशयः ॥ १ ॥ गोदावर्धेत्तरतो यावद्वागीरथीतदं याम्यम् । तत्र विवाहो नेषः सिंहस्थे देवपतिपूज्ये ॥ २ ॥ " नीचेऽस्तं वाप्ने लग्ननाथेंऽशपे वा, जीवे शुक्रे वाऽसतझते वापि नेष्टम् ॥ ३॥ जीवे सिंहरथे धन्वमीनस्थितेऽर्से विष्णौ निद्राणे चाधिमासे च लग्नम्। केऽप्याद्वः--यावद्गुरुमीवां नोछद्वते तावत् सिंहस्थद्वेषो गरीयात् । यच्छोनकः--नगींतमस्य मध्यमांग्रस्योद्ये सर्वकार्यसिद्धि.॥ अय येषु सत्सु लग्नं न गृद्यते तानाह---विचाहः स्यादिति भावः, परं कार्तिकशुक्तेकादश्यनन्तरमेवेत्युधं । यदुक्तम्--ब्याल्या -- सिहस्ये इति, यदाहुः सप्तर्पयः --

18681

विलप्रदारे मुद्धारि कर्मणि त्याज्य विषयाः॥ 1188 पादे तु मवामुत्तीर्णखरा न ताहरदोपः । तेन कन्यातिकास्क्रमणादूरस्रोमाहेशविअमादिहेतुना वा सम्पूर्णसिहस्पास सम्मुमाषम्पषे ते "त्रयो न निन्यो यदि फान्गुने स्थादजस्तु वैशाखगतो न निन्य.। मध्याशितौ द्वाविष वर्जनीयो, मृगस्तु पोपेऽपि गतो न निन्धः"॥ 'क्सयो न निन्यो यदि फाज्युने स्यादजस्तु चेत्रेऽपि गतो न निन्यः । स्रगस्तु पोपेण च सम्प्रयुक्तो, विघष्टमनगीदिमिषेतयुक्तम् ॥" इइ च प्रन्थान्तरमंगद्रो विवाहफलमाधित्व दर्शित । प्रतिष्ठादीक्षादिशेषकाव्यँत्वचीतद्रुमारेण फलमूग्रं। एवमप्रेऽपि। धन्वमीनेति, सन्न बिरोषाः— '' यहबोऽत्येषं जगदु. सिंहारुहोऽपि मुत्रशत्रुगुरुः । समतिकान्तमग्रसों न बिरुद्धः सन्बेकार्येषु ॥ १ ॥ " प्राश्ररस्वाह— " सीम्पेश्यनेश्यविमलो पीपचेन्नी परित्यजेत् । पक्षोऽपर. शुभः नैश्चिन्न चैतद्युक्तिमद्रचः ॥ १ ॥" १९ देवक्षपह्यमे । " सिंहडिअ जड़ जीयो महभुनं होइ सह रिव मेसे । ता कुणह निन्धिसंक पाणिग्गहणाइकछाणं ॥ १ ॥ " " भागीरध्युत्तरे तीरे गोदावयध्यि दक्षिणे । विवाहो व्रतवन्धो वा सिंहस्थेज्ये न हुच्यति ॥ १ ॥ " अन्मे रााहुः—" मेपस्येऽर्के चेष्ठग्नं गृद्यते तदा भुक्तमघस्य सिंहस्थेन्यस्य न दोपः" । प्रजन्ति च— भिमत् पाठेऽय विशेष -चेत्रमासेऽपि यदि मेपेऽफ्टं स्थातदा इप्र मुग्रमाणं न दोषायेति । रत्नमालाभाष्ये खेनमूचे-" कर्कादिराशिषट्कं च पूर्वार्धं पौपचैत्रयोः । अस्तमितं गुरुं गुकं त्यजेच्डादिकमीणि ॥ १ ॥ " " सिंहस्येल्योऽसुसिंहांशाज्ञात्नवीतीरयोह्योः । न दुष्टो गद्गयोमेंच्यदेशेषु तु स दुःखदः ॥ १ ॥ " सिङ्स्येज्येन यषाचाः पञ्च ननाताः सिहस्य भुक्तास्तदा देशविशेषात् सिहस्थद्रोपो न ङगति । तथाहि— सप्तर्भयस्यात्.—" देनाविशेषात् सिंहस्येज्य भादितोऽप्यद्षष्ट एव '। तथाहि— इति चिद्याचरीचिलासप्रन्थे । केचिदिरं कुत्तमेवं परन्ति— भत्र पूर्गांधे वीवचैत्रयोरित्वेतद्शममाणः श्रीपति: प्राइ— मवास्पर्मेत्र जीवं स्वजन्ति । आहुग्र-三の**公**社

नियाण श्री, एदं वचो लोकस्ट्या आपाडकानिकशुक्तेशवस्योएनतराजकाले इत्ययः । अधिमासे इति, यदाऽमाबाखामध्ये एका सक्त्रानित-

" पक्तोऽमावास्यायां भनेद्रवेः सङ्कमः, परो द्यांत् । ऊच्च जायेत यदा तदाऽधिमासः शुमेऽनिष्टः ॥ १ ॥ " विशेषत्त्र--" मासद्वयेऽब्र्मप्ये तु सङ्कान्तिनं यदा भवेत् । प्राकृतस्तत्र पूर्वेः स्याद्धिमासस्तयोत्तरः ॥ १ ॥ " रुंगेत् अन्या चान्यमासमसिषाद् तदा सङ्ग्रानितद्योगो मध्येऽचिकामासः । उक्तज्ञ--

विलयवारे

यासिदिम

हति । अधिमासे चेति चकरात् क्षयमासोऽपि छग्ने साज्यः । स चैवं-यदैका सहक्रान्तिः शुक्तप्रतिपदि, अन्या च तसिष्येव मासेऽमावाखायां, पदा हितीयेऽधिमासे तु द्वितीयद्वापुनेक्षयः । इदं काळिनिर्णयप्रन्थे । ब्रह्मसिद्धान्तेऽखुक्तं-''वर्षमध्ये मासद्वयन्नु प्रथममासबुद्धे कर्मेक्रवायोऽपरसव्युम" अत्र माकृत इति मकृतिवंभैज्यवहारस्तरमन्यी वर्षमध्येऽधिमासकद्वये सति प्रथमाधिकमासे प्रथम एव मासी ज्यवहर्तेज्यो न द्वितीयः, क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्थात्, ततो वर्षमध्येऽधिमासद्वयं स्यात् ॥ १ ॥ " तथा— असङ्कान्तिमासोऽघिमासः स्फुट स्यात्, द्विसङ्कान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् । 'द्विसङ्क्राम्तिवान् क्षयमासः,'' स च कातिकमाभैशीष्प्रीष्पेषानामन्यतम एव स्थात् । उक्तज्ञ कालिनिर्णयमन्थे--

छस्सयसङ ६६० छत्तीसा ३६ तिन्निवहुत्तर ३७२ दुष्गपन्नासा २५१ । तिन्निबयाला ३४२ अंगारयमाहे उद्यदिवस कमा ॥ १ ॥ ''रचिकिरणमध्यवतीं चरति सदा सवित्रमण्डले शियाजः। तसान्न दोषकृत्स्यात् सोऽस्तं यातोऽपि भांशपतिः ॥ १ ॥" महाणां सामान्यत उद्याऽसादेनसङ्ख्या चेयं ज्योतिषसारे-

नीचेऽस्तं वेति, लग्नांनयोनीयो नीचस्यो त्याज्यो । यहुक्तं प्रश्नप्रकाशे-"तिशह्येरकगुणाइऽषेवलः४ सत्त, उच्चगावकर्याष्रयनीचस्पार" इति ।

अस्त्रमितस्य तु सर्वेषा नास्ति बलं, केवलं बुधोऽस्त्रमित उदितो वा विवाहादिलग्नेषु सद्दाफल पुर्व । उत्तव्य---

" यस्मिन्मासे न सङ्क्रान्तिः सङ्क्रान्तिद्वयमेव वा । मलमासः स विश्वेयः सर्वेकार्येषु वर्जितः ॥ १ ॥ " इति काठगुमे ।

सुन्नरिन १२० सोल १६ दसणा३२नंद ९ बयालीस ४२ पन्छिमन्यदिणा। भोमाई तह पुन्दे बुह-सिन्न छत्तीस ३६ सगसयरी ७७ ॥२॥ ''

"सूर्योः १२ सप्तद्द्य १७ त्रिभूपरिमिता १३ रुद्रा ११ नया ९ व्यीन्द्व १४,कालांशाः शशिनोऽनुजोक्षेगुरुणः काव्यस्य मन्द्स्य च ॥१॥" सर् मानः—चन्द्राद्मिहाणा रवेरेतावज्ञितायमस्यागमनेऽस्तमय. स्वात्, अन्यथा त्रत्य एवेति खण्डखाद्यभाष्याद्रो । असं वाप्ने इत्युपक्षणं, पुरमस्य पीपः इत्यादि । एव चान्तरान्तरा यानि यानि भान्यधिकानि सन्त्यभितित् १ दातभिषम् २ रेवती ३ पुनर्नेषु ४ रूपाणि तेष्वागतो गुरुकोषगत अस्राय सम्प्रत्रायः-मासाः किङ सर्वेऽप्येकान्तर नक्षत्रनामाद्विताः । नथाहि-अस्विन्या आस्विनः, कृत्तिकायाः कार्तिकः, मृग्यपिध्यं माग्यपिषः, सन्ति । मर्पेग लोके पत्रमरिताशस्येव परमनीचरवेऽपि च यदेन क्रियते वह्योकरुट्यसुरोधाष्ट्रिति ज्गोतिर्दिचः । इष्ट युने जीवे सिहस्ये इस्यनेन पर्गेल, पन्त्रमीनहियतेऽऽ क्र्यादिना च मामस्य शुद्धी उन्ते । काज्ञिनमामशुद्धि दिननक्षत्रशुद्धी च "ज्येष्ठापसस्य न ज्येष्ठे" (मिश्रद्धारे श्लो० ६) ष्यारिना, "ठद्राऐ मृगपेत्रभे" (मिन्नद्रारे स्त्रो०९) इत्यादिना च नक्ष्यति । समयश्रिक्ष्ये नै-नियीयमभ्यदिनयोः सन्धिकाले करनं न प्राग्ने । यद्गद्राध्यरः-" हिस्स पर्चेत्र नीचातात्त्र " वृति तु प्रत्यान्तरे । तत्र लोकरूटमा आषा प्य पसमीचातान्ताः पञ नीचांनार्जिंशासरूपास्त्यज्यमानाः वाक्पतीं मकरगािशमुपेते, पाणिपीडनचिधिनं विधेय । तत्र दूपणमुशन्ति मुनीन्द्रा , केवल परमनीचनवांशे ॥ १ ॥ " इति । " राशामुजो यदोदेति गुरोरस्तमनं यदि । पुत्राप्टकस्य जननी तदोढा कन्यका भवेत् ॥ १ ॥ " इति गर्गः । दीक्षा ग्रुकास्तेऽपि न दुष्टेति तु दिनशुच्दित्रन्थे । विशेयन्तु—यया जीवेऽस्तग्नते लग्नं नेष्ट तया तत्र नीचस्य (स्या) दानपि । " अस्तक्षते मृगुसुते मवेद्यद् बुधोद्यः । पुत्राप्टकस्य जननी तदोढा कन्यका भवेत् ॥ १ ॥ " इति सारङ्गः । अभिजिद्यारुणादिस्यरेयतीसइते सित । तदा लोपगते जीवे विवाहादि विवर्जीयेत् ॥ १ ॥" तेन लप्तपोऽरापो वा यदि क्राप्रहयुत. क्राह्यो वा स्वातदाऽप्यशुभं कान । जीने शुक्रे वाऽस्त्रामिति, यहाह्यः--" अस्तमिते भुगुतनये नारी चियते यहस्पती पुरुषः....." इति ॥ केऽप्याहु.— इस्युच्यते, तस्मिन् मति लग्न न प्राह्ममिति । तथा-प्रहाणामुद्यास्त्रभवनप्रकारस्वयं— पदुष्क विवाहपटले—

128H " निवसति मुहूर्नकालो महानिद्यायां च दिनद्ले यसात् । द्य पूर्वं द्य परतस्तरमाहज्यांचरपलानि ॥ १ ॥ " यतु केऽप्याहुः–दिनस्थापराधे प्रतिष्ठाविवाहादिकानं न स्थात्, अत प्वोकं गृहप्रवेशाधिकारे.–''तौम्येऽयने वासरपुर्वभागे'' (वास्तुद्वारे श्लोक-८५ ) इत्यादि, तद्युक्तमिच विवाहे दिनापरार्थकुग्नस्य सूत्रकारेणेवानुज्ञास्यमानत्वात् । तथा च वद्यति–'विवाहे त्वकीकी जिरिप्रनिष्यनायेषु ज्यभदी'' (मिश्रद्वारे स्रोक ३६ ) न हि खेळ विवाहकानेऽकैसाष्टमस्थावमपराई विना सम्भवतीति, परमपराक्ते प्रतिधादिलमग्रहणक्यवहार: प्रायो न दत्वते, न्पाएया—जीणे इत्यनेनास्त्रसुचा भस्तेच्छुः सन्नित्तर्थः । वाळ इत्यनेनोद्यसूचा नचोदितः सन्नित्यभैः। त्रिप्रामीति त्रिगुणानि पञ्चदग दिनानि नव जीणंः शुक्रोऽहानि पत्र मतीच्यां, प्राच्यां बालस्त्रीण्यहानीह हेयः। त्रिप्तान्येवं तानि दिग्वैपरीत्ये, पक्षं जीवोऽन्ये तु सप्ताहमाहुः ॥ ४ ॥ बेवाहकानं स्वपराक्त गुक्तनः काचिद् दस्यन्तेऽपि, तद्म युद्धाः प्रमाणम् ॥ Heool

वेलर्थः । एवमिति जीण्णाँ वाकन्न क्रमात् । दिग्वैपरीत्य इति, यदि प्राच्यामस्तेच्छुः प्रतीच्यां चोद्गत इति, तद्य पिण्डार्थः—प्राच्यामुदित शुक्री बाल-ष्वास्त्रयहं साज्यः, प्रतीच्यां तु नन दिनानि । प्राच्यामस्तेच्छुः सन् स बृद्धत्वात् पक्षं त्याज्यः, प्रतीच्यां तु पञ्चाहं । पक्षं जीव इति । गुक्सतु नवोदिताचे बाळोऽस्तामिमुखाचे बुच्छ पक्षमेव त्याज्यः । ''गुरुापि ग्यहं बाळः पञ्चाहं घुन्दु'' इत्येके । गुरोस्तु प्रवेस्तिपश्चिमोदयौ न स्तः । अन्ये तु (स्विति) सप्तफ्यांथा डमयोगुरुशुक्रयोरुभयोरिप दिशोरुद्येऽस्ते च बाह्यं वार्द्धकं च, सप्ताहमेनाहुः । अनयोबोर्ध्ये वार्धके च सित छन्नं न माझ-मिति ताप्यै । ''इय च बाह्यवार्धकक्वना निर्वेकावक्षपतत्फक्कप्यथमेव कृता, न तु तारिवक्षीति रत्नमालाभाष्ये'' । विशेषस्तु— " अरिगयनीप वक्ते अत्थमिष लग्गरासि निसिनाहे । अवले रविगुरुसुक्ते सामि अदिहं चयह लग्गं ॥ १ " " ॥ इति विलग्नद्वारम् ॥ १० ॥

मिश्रद्रार् दीथोहा-13081 ननांग्रागोचरा २ ष्टाग्रांशुद्धि ३ श्रुमतारा ४ श्रुमानस्था ५ वामवेष ६ शुक्केतरपक्षप्रारम्भ ७ मित्राधिमित्रगृहस्थिति ८ सीम्यगृहस्थिति ९ मित्राभि-मित्रांगहिगति १० मौम्यागहियति ११ मित्राधिमित्रप्रहयुति १२ सौम्यप्रहयुति १३ मित्राधिमित्रप्रहृदष्टि १५ प्रकाराणामन्यतरे-ब्यागया—काने इति कानसमये । गुरोरिति दीक्षाप्रतिष्ठालग्नयोगुरीः, विवादकाने तु वरस्य । चान्द्रवकमिति प्रागुक्तविधिना राक्षिगोचर 🤋 'एणाङ्गे गोचरवल १ मष्रक २ तारोत्य ३ वेघ ४ पक्षभवम् ५ । क्षमशस्तारा १ वेघज २ पक्षभवानी ३इ गौणानि ॥ २ ॥" नसार्ष्करशुिर्गुरोविलोम्या रवेश्च चन्द्रस्य । नियना ८ न्त्या १२ म्बु ४ गतेप्वपि रेखाघिम्यात्सुशुद्धः स्यात् ॥ ५ ॥ दिग्येति दिग्यो दीक्षणीयः पदे स्थाप्यमानो वा, स्थापको यः श्राद्वादिद्वेन्यं स्थयति । तीवेन्द्रक्रेति एतान्यवस्यप्राक्षाणि । यदुक्तं— " सर्वज्ञामृतरक्षेत्रेतं प्रकल्यात्यखेटजं पश्चात् । चिन्त्यं यतः शशाद्धे बलिनि समस्ता प्रद्याः मयलाः ॥ १ ॥ " " रचिराञिजीचे सचलेः द्युमदः स्याद्रोनर......" इति । प्रहाणां यळतारतम्यादिविभागश्रेवम्— " पूर्ण २० रोटाप्टकयलमूनं पादेन १५ गोचरं प्रोक्तम् । वेयोत्थमर्द्धमान १० पाद्यलं ५ दिप्रतः खेचरे ॥ १ ॥ " लग्ने गुरोबेरस्याथ प्राधं चान्द्रबलं बुधैः। शिष्यस्यापककन्यानां जीवेन्द्रक्षेवलानि च ॥ ५॥ " प्रत्योचरा १ एवगं २ तुल्यवली द्यिकारणाद्नयो । पक्तापि वलेन प्राप्तेन भवेत्सुशुद्धिरिह ॥ ३ ॥ चेद्गोचराद्य तः भयेत्तद्याऽष्ट्यगितिलोन्यते शुद्धिः । गोचरतोऽष्टक्तवगाँ यल्यानुद्राह्दीक्षादी ॥ ४ ॥ कमश डाँग मृगानि यलानि यथोत्तर न्यून १ न्यूनतर २ न्यूनतमानि ३ । आधानकयोस्तु स्पत्नपमाड-॥ अथ मिश्रद्वारम् ॥ ११ ॥ अथ मिश्रद्वार बद्ताटी ताग्रहुग्नप्रडणे प्रहृगोचरजुद्विमाह— र्द्र मामान्येन मर्चप्रशानाधिस्योक्त । चन्द्रस्य तु विश्वित्माह्न-(मे)णापि प्रकारेण चन्द्रानु हृत्ययन्तं प्रारामेव । यदुक्त-

11308

दी क्षाद् समग्रुद्ध्यामप्रकतः श्रुद्धिपते रेखिकामृते बेधात् । शुभदे श्रहे सित शुभा श्रुद्धिः स्यात् प्रोच्यते विबुधैः ॥ ८ ॥ तथा— समशुद्धिरिष श्रेष्ठा शुद्धिपतेर्गेदि भवेच्छुभा रेखा । शुद्धोशस्य न रेखा यदा तदा पद्भियादिवीर्यवतः ॥ ६ ॥ मित्रश्रद्धस्य रेखा समरेखां शुद्धिमुत्तमां क्रुक्ते । तामन्तरेण मुनिभिने ह्यधिकाऽपि प्रशस्यते रेखा ॥ ७ ॥

नवमद्रिपञ्चमगतः समरेखोऽत्यिषिकश्चमफळः सूर्यः । सङ्क्रमकालेन्द्रवलात् समोऽपि सर्वेत्र शुभदोऽर्कः ॥ ९ ॥ तथा— द्यमादुर्वं केवललग्नवलेन स्त्रिया विवाद्यः स्यात् । श्रुद्धिनैवालोक्या रवीज्ययोः पूजयोद्वाद्यः ॥ १० ॥ " अत्र दशमादिति चपीदिति शेषः । इतीद सन्दै व्ययद्वारप्रकाशे

120 SI

जन्ममासा-हमीन

" जन्मद्रिपञ्चनवमद्यनगः खरांशुः, पूजां च वाञ्छति न चाष्टचतुष्येयस्थः ।

जीवस्त्रिजनमद्शमारिगतस्तु पूजामिच्छेत्कदाचिद्पि नाष्टचतुर्ज्यस्थः ॥ १ ॥ " इति तु ज्यवद्वारसारे ।

अत्र न चेति यत्रस्थः प्नां नेच्छति तत्रात्मम्भारवात् पूजयाऽष्यनुकूलो न स्यादिति मावः । गर्भस्वाह-" गोचरविष्ट्घे जीवे वैधन्य-मेच, पुजा त्वप्रमाणं '' ॥ अथोक्तशेषा मासशुद्धि दिननक्षत्रश्चद्धी चैकश्रोकेनाइ—

ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे मासि स्यात्पाणिपीडनम् । न युनस्त्रयमप्येतन्मासाहभेषु जन्मनः ॥ ६॥

ब्याख्या—ज्येष्ठापत्यस्य पुत्रस्य पुत्रया वा पाणिपीदनमिति उपकक्षणमिदं शेषकार्याणां। यदुक्तं हर्षप्रकारी---' सुहकजो वजे सन्वर्धि पि जिष्ठस्स

त्रयमिति दीक्षाप्रतिष्ठोद्दाहरूप । मासाहभेष्टिवति जन्मसम्बन्धित मासे दिने में चोद्दाहादि त्याज्यं । इह चोद्दाहे वरकन्ययो,दीक्षायां शिष्यत्य, " ज्येष्ठ न ज्येष्ठयोः कार्यं मुनायोः पाणिपीडनम् । तयोरेकतमे (रे) ज्येष्ठे ज्येष्ठेऽपि न विरुध्यते ॥ १ ॥ " जिट्रंति ''। सप्तषेयस्वाहुः—

1203 मतिष्ठायां च शिष्यस्थापकयोपिति स्वयम्भूमं । केऽप्याहुः-पक्षो यद्यपरस्तदा जन्ममासोऽपि न विरुद्धः । जन्मतिथिरपि दिनरात्रिभागपरावतेनाबिरुद्धा ।

जन्मभमपि राशिपार्थक्ये भव्यमेव । उक्तञ्च



मिश्रद्वार् दीक्षाद् त्याल्यः दिनानि॥ 130311 सिंगागमिति मट्फ़ान्तिमामस्य प्रिंशतमं भाग सामान्येन दिनमित्ययं.। सद्कान्तिदिनात् पुरः घुष्टे चैक्रेकं दिनं सङ्कान्तिदिन चेति दिनप्रय-'' जन्ममासि विपरीतपक्षयोर्च्यये दिननिशोर्जेनुस्तियौ । जन्ममेऽपि ्मिळ राशिमेद्तः, पाणिपीडनविधिने दुष्यति ॥ १ ॥ " इति ट्यनहारसारे । एकपसेऽपि बाऽनया रीत्रा जन्ममानोऽपि न विरुद्धः। तथाहि-शुक्छपञ्चम्या कार्यंचिकीपोऽस्ति शुक्छाधमी च जन्मतिथि-रित्यं न रोपः, यतस्रस्य धुम फिल शुक्षाष्टमीत एव जन्ममासप्रारम्भः, शुक्कपञ्चमी तत्त्वतोऽपरमासस्थेवेति, विषयेये तु जन्ममासदोपो लागत्येवेति गण्डान्तेषु सर्वेशृतानुभयत सद्कान्तियामद्वये, यामार्थन्यतिगतिष प्रिकुलिक्षेभेन्नं विलम्न जगुः । " इति विद्याद्दगृन्दावने । •याग्या—सादिमसिति चतुद्शीमहितं । केचिन्नयोद्शीमिष वर्जयन्ति । पडन्ति च—" त्रयोद्शीतो द्याहं सूर्येन्द्रप्रहुणे त्यजेत्..." " सवेत्रस्तेषु सप्ताहं पञ्चाह स्याद्वत्रत्रहे । त्रिद्येकार्थांड्गुलप्रासे दिनत्रयं विवन्नंयेत् ॥ १ ॥ " इत्यद्विराः । विशेषस्तु— एकमिककायें तु दिनप्रयम्य त्यमुमयाक्यत्वे प्रात् प्रज्ञात् पोडकावद्य त्याज्या नाड्योऽक्षेपछ्जमात् इत्यपि बहूना मतम् ॥ भद्रार्थयामगण्डान्तक्रलिकोत्पानदूषितम् । दिनं तपसि राक्षां च स्यापने च कुजं त्यजेत्॥ ८॥ सादिमं प्रहणस्याहः सप्ताहं च तद्यतः, खजेभिंशांशमेनैकं प्राक् पश्चाचापि सङ्कमात्॥ ॥॥ '' राह्रै दटे शुमं कर्म वर्जयेद्वियसाष्टकम् । त्यन्त्वा वेताललंसिद्धि पापदंभमयं तथा ॥ १ ॥ " इति देवज्ञास्रुमे । मिलगै.। हरिमदस्रिमस्युकं—" संनेतीय पुन्नं संनेतिदिणं तयियामं च दिणं, विज्ञान्तीता...." नार्चन्द्रेडिल ज्योतिज्ञी: । व्यवद्वारप्रकाशे तुसं—" विलिन ग्रुमप्रदे केन्द्रस्थे सित जन्मभमिष न दुए "। तथाहि— " त्यज सड्कमबासरं पुनः, सह पूर्वेण च पश्चिमेन च 7. ...इति॥ " नो जनममं च कार्य विलिन शुभं केन्द्रने सीम्ये.. .."। दिनशुद्धि प्रयगाह— लाग्या--भन्नेलादि भन्नार्थः क्लिमाभ्यद्रोषलेग्नमषि त्रन्यते, यदुक्तं--मप्ताह चेति मामान्योक्तेऽप्यं विशेदो दश्य — 1120311

" तेजस्विनी१क्षेमक्र२द्ग्रिव्हिष्टिष्टाष्ट्रित्याद्वरद्ग्षष्टद्दा च५ । आनन्द्कु६त्क्रह्पनिवासिनी७च, सूर्यादिवारेपु भवेत्प्रतिष्ठा ॥ १ ॥ " स्पादीमां छमेषु पड्चगेंऽपि च प्रतिष्ठायामेवमेव फलमूग्रामिति रत्नमात्जाभाष्ये । स्थापने चेति चकाराद्वीक्षोद्वाहराज्याभिषेकादिष्वपि कुजवार-इति रत्नमालायां । अत्र तेजस्त्रिनीति रविवारे कृता प्रतिष्ठा प्रतिमायास्तेजो वर्षेयति कारियत्व । कत्पनित्रासिनीति आचन्द्राकेस्मायिनी । " दंपत्योः सद्द मरणं पाणित्रहणोद्ति केतो....."। तशि दोक्षायां शका त्याज्या, न तु प्रतिष्ठायां । यज्ञारचन्द्रः--" ज्येकद्वितीयपञ्चमदिनानि पक्षद्वयेऽपि शस्तानि । शुक्केऽन्तिमत्रयोद्शमान्यपि च प्रतिष्ठायाम् ॥ १ ॥ " " राजाभिषेके विवाहे सिन्भियासु च दीक्षणे । धमधिकामकार्थे च शुभा वाराः कुजं विना ॥ १ ॥ " निर्घातोरकामहीकम्पग्रहमेदादिद्शेने । आपञ्चवासराद्दा नाशमाप्रोति कन्यका ॥ १ ॥ " तथा— अपितिना त्द्राहे रविकुष्णशमिवारा दारिख्रद्रीभोग्यद्राः, सोमवारस्तु सपरनीप्रद् इत्युक्तं । विशेषस्तु — उत्पाता भौमादिमेदाः प्राम्बार्शिताः । सारङ्गस्तूपातेषु पञ्चाहं खाज्यमाहः, तथाहि---स्याज्यः । यदुक्तं यतिवान्नमे-118°&

| So & | " कृष्णपक्षे निषिद्धेषु वार्घिष्णयक्षणादिषु । सङकीर्णानां प्रशंसिन्त दारकमं न संशयः ॥ १ ॥ " इति दैवत्रवछ्ने ॥ मनियममाह---उद्राहे मुगपैनक्षे प्रतिष्ठायां तु ते उमे । आदित्यपुष्यश्रवणधनिष्ठाभिः समं शुभे ॥ ९॥ पुष्यश्रुत्यमिजित्स चेश्वरकयोविताधिपस्कन्द्योमैंत्रे तिग्मरुचेः करे निक्षेतिमे दुर्गादिकानां शुभम् ॥ 1 " मगधिष्ण्यचतुष्केण मेत्राहिबुंध्रपूषमैः । सपुनवैद्धिभिः कुर्यात् प्रतिष्ठामुष्णरोचिषः ॥ १ ॥ " " रोहिण्युत्तरपौष्णवैष्णवक्तरादित्याभ्विनीवासवानुराधैन्द्वजीवमेषु गदितं विष्णोः प्रतिष्ठापनम् । न्यास्या – प्रतिष्ठायामिति प्रस्तावाज्ञैनविन्वादेः, देवतान्तरादीनां प्रतिष्ठासु तु भान्येवं रत्नमालायामूचिरे— क्रै अरक्योरिति 'को' बह्या । तिगमरचेः करे इति सब्स्रेपोऽयं, विस्तरस्थेवं भीमपराक्रमग्रन्थे उक्तः--

मिश्रद्रारे "सप्तपंयो यत्र चरन्ति श्विज्ये, कार्यो प्रतिष्ठा खद्ध तत्र तेपाम् । श्रीच्यासवास्मीकिघटोद्भवानां, तथा स्मृता वाक्पतिमे प्रद्याणम् ॥३॥" सत्र आसम्मवास्तिति युधिष्टिरराज्यसमये ससपैयो मवायामभूत्रम् । तद्भु पड्विंगल्यिभनय्यविंगतिनपैगंतीतीः शक्कालो लप्तः, एक्नैक्मे च रूत्र महागैंदास्प वाराद्यसंद्वितायां। श्रीग्यासेति यत्र मे सहपैयश्रानित तत्रैय मे श्रीन्यामादीनामपि प्रतिष्ठा कार्यां। बाक्पतिमे इति प्रहाणां " आसन्मवासु मुनयः शासति राज्यं युधिन्डिरे चृपती । पड्डिकपञ्चिद्विर५२६मितः शककाळस्तस्य राह्मञ्च ॥ १ ॥ पक्षेक्रस्मिन् घिल्प्ये शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम् । प्रागुत्तरतश्चेते सदीद्यन्ते ससाध्वीकाः ॥ २ ॥ " पुलदः मतुरिति भगवानासन्नानुक्रमेण पूर्वोद्याः । तत्र विशष्ट मुनिवरमुपस्थिताऽरुन्धती साध्वी ॥ २ ॥ " '' पूर्वं मागे मगवान् मरीचिरपरे स्थितो वशिष्ठोऽसात् । तस्याङ्गिरास्ततोऽत्रिस्तस्यासन्नः पुलस्त्यश्च ॥ १ ॥ अवसि सुगतनाम्नो वासने लोकपानां, निगदितमिखलानां स्थापनं च स्थिरेषु ॥ २ ॥ " '' गणपरिद्युद्धरत्रोयक्षभूतासुराणां, प्रथमफणिसरस्वत्यादिकानां च पौष्णे । वर्गरातमेषा स्थितिः, अतः त्रकादी ते पुष्येऽभूवितित्यागतं । प्पामुद्वयन्यवस्था चैव--भन्नामिलानामिति उक्तरीपाणामिन्द्रादीनां स्थिरेषु भ्रुवमेषु । तथा— दुर्गोदिकानामिति आदेभूतयस्रगणमपीदिप्रदणं । तथा---न्यस्यारेषु पुष्यमे प्रतिष्ठा कार्ये । तथा-अत्र महार्पयो यज्ञायस्यायं भावः--

**300€** 

12061

अिन्ध्राचिषे लेष्यगारामायं तथाऽनिले । मृहस्थापनयोगा ये तानष्यत्र विचिन्तयेत् ॥ २ ॥ " इति देवज्ञहाने ।

' स्यतिधिक्षणनक्षत्रकरणेषु न्यसेत्सुरान् । वापीक्षपतडागाद्यं न्यस्येद्रकणदेवते ॥ १ ॥

ष्ट्रं देगतान्तरादियोधान्स्तम् उपोगिर्यदां मग्मनमिति प्रमत्राद्दकः ॥

·	सिगयां त्याञ्चिनादित्यवाहणश्चतयः शुभाः । त्रिषु मैत्रं करः स्वातिमूलः पांच्णध्रवाणि च ॥ १०॥
---	---

1130511

色色

व.मा – भ " उत्तररोदिणिहत्थाणुराहसयमिसयपुन्वमह्नया। मूळं पुणन्वसुरंबहे पुस्सासिणं सवणसाह वप ॥ १ ॥ " सृगचित्राधनिष्ठान्यसृद्धक्षिप्रचरधुवै: । शिप्यस्य दीक्षणं कार्य्यं तथा मूळाजपादयो: ॥ १ ॥ " थ.म अ.वा थ.च **€**a1 त्रिरिवति प्रतिष्ठादीक्षोद्वाहेषु । तत्रेष्ठवं भानां स्थापना-व.म विवाहमेषु विशेषमाह— क्षेनमिष्ठाया कीमायां तिवाहे

मिश्रद्धारे दीया-गतिष्ठादि-

याणामिन्दुना सह पश्चार्धयोगित्वेनोक्तः । धुसामिति व्यियाः पुमान् बह्नभो न तु धुंसः भी तथा इति क्रिया न तादक् सीभाग्यमित्यथैः, पौष्णादित्र-ड्यास्या--प्रियत्वमिति न तथा पुमान् क्रियो बङ्घभो यथा धुंत: स्त्री बङ्घभा इति क्रियाः तौभाग्यमित्यर्थः । प्राग् भाषिकारे पृपां मूकाबित्र-क्तियः प्रियत्वमुद्राहे मूलाहिबुंघवैश्वभैः। पौष्णब्राह्ममुगैः पुंसां मिथः शेषेस्तु पञ्चभिः॥ ११॥

याणां पूर्वाधंपोतिषुक्तेः । मिथ इति अन्योऽन्यं प्रियत्वं । पञ्चभिरिति मघो १ तारफल्युनी २ इस्त ३ स्वास्य ४ नुराधाभिः ५, एषां पञ्चभानां

मध्ययोगित्वात् । एपामेवैकादशभानां वैवाहिकत्वाच्छेषभानां न परिगणनं । अपि च--

भन्न बलिमिरित उद्वाहलमें इति भैपः

'' बह्यभः स्यान्नरो नार्यो बलिभिः पुरुषप्रदेः । स्रोग्नहैः पुरुषस्य स्त्री सर्वैः प्रमोभयोरिप ॥ १ ॥ '' इति दैवश्रबह्यमे

12061

पश्चम विम्के मिश्रदारे जाति-|Soe| परि चेष्पुमो जन्मक्षीनीम प्रतिष्ठापित्यन्ते तदा तेषु क्रायहायैः पीडितेषु सस्यु तस्य धुमोऽनिष्टं स्वात्, यदि तु नाधिन्धियन्ते तदा तानि पीडि-म्याएया—जनमंभे हति प्रतिष्ठाप्यस्य प्रतिष्ठामायितुश्च जन्ममे वद्परिज्ञाने नाममे वा, तस्माद्द्यमादिषु च मेषु प्रतिष्ठा न कार्या। श्रीद्वरिभवसूरिभिस्तेवसूचे-मानसं पञ्चचित्र मिमिति पड्मोऽस्वित्व. पुमान् । जातिदेशामिपेनैन्ध्य नच् घिष्णयानि भूपतेः ॥ २ ॥ <sup>11</sup> तत्र जातिषिष्ण्यान्येवम्— देतमानि तु यथा पणचक्र । राज्याभिषेकभं त्मिषेक्ष । नचु जन्मक्षितां लागः कसात् क्रियते १ उच्यते-प्रायो मानि क्रप्रहासेः पीज्यन्ते, ग्यारया-गर्गको भिग्यादौ चित्रक्रमी वधूतरयोविण्कार्यं महक्कमै वा आष्यकत्रादस्यमाणश्लोकोक्तं क्रमुम्भाषापि विवाहकुत्यं सबै वैवाहिकमेष्येव कार्यम् ॥ " विलयस्योऽयुमो राशिजैन्मलयात् सजन्मभात् । न शुभः सर्वकार्येषु लयाचन्द्रस्तथाऽयुमः ॥ १ ॥ " इत्यादि देवाबहासे । नान्ये मतिष्ठां जनमक्षे द्यामे षोड्ये च भे। अष्टाद्ये ज्योधिशे पञ्चित्रे च मन्वते ॥ १४॥ वर्णकायं विवाहक्षे क्रमायो वरणं पुनः । स्वातिषूर्वा ३ तुराधाभिषेश्वत्रयद्वताशभैः ॥ १२ ॥ लग्नादगित्र कुर्गित त्रिष्ठनयमे दिने। कुसुम्भमण्डपारम्भवेदीयणं-यवारकान्॥ १३॥ •याग्या---लप्तादिति लप्तदिनात् । यवारकानिति उपलक्षणस्वात् कन्यावरणा्यपि लग्नादवोक् प्रिपष्ठनवमदिनेषु म कुयोत् ॥ " कारावयस्त जम्मण रिक्छं दस सोलसं तहहारं । तेवीस पंचवीसं चिम्यपरहार बिज्जा ॥ १ ॥ " वणिजामिश्यनी हस्तोऽमिजितादित्यमेव च । चण्डालानां श्रुति: सापै यमदेवं क्रिदैवतम् ॥ ३ ॥ " " विमाणां कृत्तिकापूर्वारे राज्ञां पुष्यस्तथीत्तराः३ । सैवकानां धनिन्ठेन्द्रचित्रामुगशिरांसि च ॥ १ ॥ " जन्मार्थ द्यमं कमें सङ्घातं पोड्यं पुनः । अघाद्य समुद्यं त्रयोविंघं विनाशभम् ॥ १ ॥ उत्राणां भानि वायन्यमूलाद्रशिततारका. । कर्पकाणां मघाः पौषणमनुराधाविरिष्यभम् ॥ २ ॥ तान्यपि गानिष्टतनं दातुमछं । कथमेनमिति चेदुच्यते यथा-विशेषतस्तु एया भाना सज्ञा इमाः— 13°61

वर्षिणतः । अन्ये जन्मभवदेकोनविंशमाषानभमपि क्राप्रद्वपीडितावे सति प्रवास-पीड्यन्ते इत्युह्यं । नरपतिजयचयियां तु पद्मस्थाने कूमीस्थापनयाऽयमेवायों स्थितत्वादिति भावः । दिख्मात्रं चेदं देशेशानां नामपरिगणनं, तेन नचलण्ड-काल्पतोन्या यत्र सप्डे ये ये देशाः स्थिताः स्युस्ते ते देशास्त्रत्येषु पीवितेषु भन्न क्षमं यान्तीति एपां देशानां कर्णिकायां प्रविभिन्याधष्टदिक्पत्रेषु च राजा च हारहरो ७ मदेशो८ ऽन्यश्च कॉणिन्दः९ ॥ ७ ॥" प्रायः स्युरेव, राज्याभिपेकदिवसेऽभिषेकघिष्णयं च देशनक्षत्रम्। पद्मविभागे क्षेयं पादक्षिण्येन भूमध्यात् ॥ ४ ॥ " पद्मचक्रस्थापना चेत्रम्— गञ्चालो१ मागधिकः२ कालिङ्गश्चत्र क्षयं यान्ति ॥ ६ ॥ आवन्त्योध ध्यानतीं मृत्युं चायाति सिन्धुसीवीरा६ ततश्र—" त्रितयैराग्नेयादैः क्र्यप्रद्यपीडितैः क्रमेण जुपाः प्यंविभाश्र छप्रादियोगा बहुयोऽपि मिछन्ति, न च किमप्यतिष्टफ्लं द्धुः । यदि तु यात्रादिष्वधिक्षियन्ते तदाऽनिष्टफ्लदाः क्रिणंकाष्ट्रहेराह्ये पन्ने नाभी दलेपु च । प्राच्यादिस्थेपु भानीह्र न्यस्याग्निभत्रयादितः ॥ ५ ॥ " तथाहि— " केत्वकांकिभिराक्रान्तं भोमवक्रभिदाहतम् । उल्काप्रद्यणद्ग्धं च नवधाऽपि न मं शुभम् ॥ १ ॥ " ततश्र— दायित्वाह्रजेयन्ति । सर्वमिदं छह्यकृते रत्नकोशे ॥ " देह्यविनाक्षो जन्मक्षेपीडने कर्मणश्च कर्मक्षे । उत्सववान्घवनाघौ समुद्यसङ्गतयोहंतयोः ॥ २ ॥ स्वत्तन्तिनाशो वैनाशिके हते मानसे मनस्तापः । कुलदेशस्त्रीनाशो जातिभदेशाभिपेकेषु ॥ ३ तयाऽत्रापि जन्मक्षोदीनां पीदा. तरकछं चैवं--प्राचक्र-स्थापना

18061

||YoY||

विमर्खे	सिश्वद्धार् विवाहत्वा-	ज्यनध्र-	7					1130411
<b>*</b>	**	G13	( <del>)</del>	ر ج	64.	X9-X1-*	グイト	~~ <u>~</u> ~
करेण सुन्तमात्रान्तं भोग्यं यहणभं तथा।	महादया—क्रिणेति कृत्यमत्र स्वामाक्षिकं प्रासं, न त्वीपाधिकं, तथा	क्षीणायेनेन्दोः पापयुतायेन बुश्रस चीति । ततोऽयमभैः-पद्भं कर्रोण सिक्कुन- शनिसहत्त्वतरेण भक्त्वा मक्के. आक्षान्ते तेनेच भज्यमान, भोग्यं त तद्वनन्त-	फलामि स्पेयं—	क्र्याञ्चतक्र्यावमुक्तक्र्यान्तं व्याच्ययमु कुमारकाणाम् । वद्गित पाणित्रहणे मुनीन्द्रा, वैघत्यमन्द्रेत्विभिरत्रिमुख्याः ॥ १ ॥"	इति सारद्गः । अन्ये खाद्धः— भूक्तं मोग्य च नो त्याज्यं सर्वेकमीस सिद्धिदम् ।	यत्नास्याङ्यं तु सत्कायं नक्षत्रं राहुसयुतम् ॥ १ ॥ "	अहणमामात पर दिनमऽकर्तामहण जात। अहिद्यात पर दिनम भद्य उद्यमसामय वाऽकापुः। आगमे च विषयहाकान्तमपि भे खाज्यमुचे, पापाहि-	''विट्टेरमवद्गरिअ'' अगावद्गारितं चन्त्रिमहाम्त्रान्तमित्ययेः। प्रदेभित्वमिति भीमाषाः पद्म तारामग्रा यस क्रतिकारोहिण्यादेमैत्येन भिरमा ययुम्प्प्रहभिमं । उक्तभ
करेण सुत्तमात्र	द्धार अहा प्रपारता स्यास्या— म्हेरेणे	क्षीणस्वेनेन्दोः पापयुताचे शनिराहन्यतरेण भस्ता	रमेव भोदयमाणं । एषां फलानि रवेवं	फ्रराञ्चितक्र्यावसुक्तम वव्नित पाणित्रहुणे	इति सारङ्गः "भूकं भीष्य स	यत्नास्याङ्गं तु	प्रहणमानात पर उद्यमसामय वाऽहार्षुः।	''विट्रेरमवद्गारिअ'' अगा पच्च ताराम्राग्यस्य कृतिर
ऋरेण सुन्तमात्र	म दिल भहा द्याता	सीणस्येनेन्दोः पापयुताचे अनिराहन्यतरेण अस्या	ज स्मेच भोद्रयमाणं । पृषां	म वर्वान्त पाणित्रहणे	की सारक्षः भूकं मोग्य न	यत्नास्यान्यं त	प्रदेशमात पर्	"विट्रेरमवद्गारिअ" अगा पच ताराम्गा यस कृति
महे महे में मिसा म	3) 39)	1	1	1	*		1	हि। पच तारामा यस कृति
-	3) 39)	1	1	1	*		1	
मध्य	3) 39)	1	1	1	*		1	भेतु
प्य संदे	3) 39)	1	1	1	*		1	शत क्ये म
पुन पुन मुख्	3) 39)	1	1	1	*		1	भन्न बये म् एपा.
मा यन य मस्ट	3) 39)	1	1	1	*		1	शत क्ये म
स सा प्रन प्र सरे	3) 39)	1	1	1	*		1	भन्न बये म् एपा, उषा

मिश्रद्वारे चंद्रभोगेन-ब्याख्या—पर्याप्तमिति योग्यं भवेदिति सण्टद्वः । प्रदाहतमिति कूरप्रहेण विसुक्ताक्रान्तभोग्यत्वेन प्रहेरद्यास्तकरणेन वक्तिप्रहाकान्तत्वादिना वा उदाहरणं यथा—मुगशीषे कार्येचिकीपो, चित्रायां च कश्चित्रीमादिसप्तकान्यतमो वक्षी प्रह: स्यात्तदा तस्य वक्रगतित्वेन दक्षिणा हम्मुगशीषे उत्तरापादायां च भौमादिपञ्चानां मध्ये कश्चिन्मध्यगतिग्रंहः स्यात्तदा सम्मुखद्दशा तृतीयस्रहेषोऽपि। एवमन्यन्नापि माक्यं। परमेष तृतीयो केषो पतिता । रेनलां चाकोदिसप्तकान्यतमः कश्चिद्तिचारी महः स्वात्तदा तस्य शीघ्रगतित्वेन वामा दमित्युभयतो महदक्पाताचदा मृगद्यीपं महभिष्यं स्वात् । लत्रशुखी-'' मज्झेण गद्दो जस्स उ गच्छह तं होइ गद्दमिन्नं।" नारचन्द्रटिष्पनके त्वेवं-यत्र प्रहाणां वामदक्षिणा दक् पतेतत्प्रमहभिक्षा धिष्ण्यं कार्याय पर्याप्तं बन्द्रभोगाद्रहाहतम् । शुद्धं पर्डाभभेवेन्मासैष्ठपरागपराहतम् ॥ १६ ॥ एकं तथाऽभिमुखसंस्थितमध्यनासापय्येन्तभागधृतघिष्ण्यगतब्रहेण ॥ ४ ॥ " इति नरपतिजयचर्यायां । राहुकेत् सदा वको, सदा शोधो विधूष्णम् । कूरा वका महाकूराः, सीम्या वक्ता महाशुभाः ॥ ३ " यिसान् धिष्ण्ये स्थितः खेटस्ततो वेघत्रयं भवेत् । प्रहृद्धिप्रभावेण वामदक्षिणसम्प्रुक्तम् ॥ १ ॥ वक्तो दक्षिणा दिष्टवीमदिष्टिश्च शीव्रमे । भौमादिपञ्चकत्य स्वान्मध्यदिष्टिश्च मध्यमे ॥ २ ॥ वैघद्वयं भजति घिष्ण्यमिभारिदंष्ट्रासंस्थानदिग्द्रयगतोड्डगतग्रद्दाभ्याम् । वेषेनेकागैलेलासिन् श्लोकेऽधिकरिष्यते, शेपाम्यां स्वज्ञाधिकारः ॥ अग्रुद्धभानां ग्रुद्ध्युपायमाह्— द्यशानायात्र सप्तरेष्यचन्ननस्मिकाद्सिममममानां चतुद्धि स्यापना यथा (प्र. २०९)— 1128011

भत्र सूर्येन्द्रोभोगादिति सूर्येण ताप्यते पत्राचन्द्रेण निट्यांप्यते इत्ययः । उपरागोऽकेन्द्रोग्रेहणं (तेन) पराहतं दूषितं ग्रहणभमित्ययः, तत् प्यमा-

दोपैमुंक्तं यदा चिष्णयं पश्चाचन्द्रेण संयुतम् । ततः पश्चाद्विशुद्धं स्यान्नान्यथा शुभदं भवेत् ॥ १ ॥ " लह्वस्वाह—

क्षितं । चन्द्रभोगादिति प्रहक्रतदोषापगमाद् यदि चन्द्रेण भुक्तं सात्तदाऽऽदरणीयमित्यर्थः । यदाह चराहः-

तत्सूपेन्द्रोमोगात्कमेण्यत्वं प्रयाति भूयोऽपि । धिष्ण्यं कमेसु शुद्धं तापनिषेकात्सुवर्णिमव ॥ १ ॥ "

12801

यन दिनमेऽर्हेन्द्रोग्रेहणं स्थात्तत्र गष्टुर्वाक्षित इस्युच्यते, यत्र में केतोरुद्यः स्थातत्र केतुर्वाक्षितः कथ्यते । नतु कथ केत्दुरयम ज्ञायते इति चेदुच्यते-इति सप्तपेय.। यत्र मे केतोरुदयः स्यातत्रेय पण्मासान् मेतुरिति तटपि पण्मासाँस्साज्यं। यसिन् दिनमे ताराप्रहयोभौमादिपञ्चनाम्यतरयोगिभो " पक्षान्तरेण त्रहणद्वयं स्याद्यदा तदाद्यत्रहणोपगं भम् । पक्षाद्विधुदं भवति द्वितीयत्रहोपगं शुप्यति मासपद्कात् ॥ १ ॥ " अग्रेगं मक्स्सेंडर्फं यदि याति विधेतुद् । ज्येष्ठमासोत्तराहं तज्ल्येष्ठायां दश्यते शिखी ॥ १० ॥ मेपेऽर्फं सित रेवत्यां यदि याति विधुन्तुद्. । भाद्रमासोत्तराधे स्यात् पुप्ये केतृद्यस्तदा ॥ १ ॥ स्थे वृपस्यितेऽश्यिन्यां यदि याति विधुन्तुदः । आश्विनस्योत्तराधं तद्रोहिण्यां केतुरीक्ष्यते ॥ २ ॥ तुलांर्र सिन आद्रीयां यदि याति विधुन्तुर । फाब्गुनस्योत्तराधं स्यान्मूले केत्द्यस्तदा ॥ ७ ॥ सिहेऽक्तें सित रोहिण्यां यदि याति विषुन्तुदः । पीपमासापराधं तद्रस्ठेपायां शिस्तीक्ष्यते ॥ ५ ॥ कन्यास्थेऽक मुगशीर्पं यदि याति विधेतुदः । माघमासोत्तराधं तचित्रायां दश्यते शिखी ॥ ६ ॥ आपण्मासॉस्तत्र छग्नेन्द्रमानि, आजिष्णु स्यात्रो शुमं कर्म किञ्चित् ॥ १ ॥ " भरणीमिथुनस्थेऽकं यदि याति विधुंतुद । कार्तिकस्योत्तराघं तदादायां केतुदर्शनम् ॥ ३ ॥ न्शिक्तेऽके पुनवैस्तोर्थिट याति विधुतुद्। नेत्रमासीत्तराधं स्यात् सातो केतृद्यस्तद्ग ॥ ८ भगु स्थिते रवी पुग्यं यदि याति चिधुतुदः । वशालस्योत्तराधं स्यान्मूले केत्द्यस्तदा ॥ ९ कर्त्रस्थेऽर्फे क्रत्तिकायां यदि याति चिधुतुदः । मार्गशोपापराधे तत्केतूद्य पुनर्वसौ ॥ ४ ॥ " यस्मिम् घिष्ण्ये वीक्षितौ राहुकेत्, मेदस्ताराखेटयोर्यत्र च स्यात्। मेदनं स्थातत्रिष भं पण्मासांत्याज्य । उक्तञ्च विवाहबुन्दावने-मांस्याउमं । यात्रकार्ते अङ्के तावस्याउयमित्यन्ये । विशेषस्तु-

चेस्लासदाऽक्षेन्द्रोगीती कलाविकलाहिमके स्पष्टीकृत्य मिथः सम्मीच्य विकलारूपे कार्थे। तद्नु सायनाकेन्द्रमीकने यिकिन्निद्रधिकपद्रकद्वाद्शकरूपं राह्यं-कोऽत्र प्रत्यय इति चेत्, उच्यते-एतहेलासत्कावकेन्द्र राश्यंशादिरूपतया स्फुटीकृत्य तहर्षीयायनांशांस्तयोमैध्ये क्षिप्ता पक्षात्तयोमियो मीकने चेद्रा-यि तु किञ्चिद्धिकं तत्तदा फ्रान्तिसाम्यमतीतं । यदि तु किञ्चिन्न्यूनं तदाऽतः परं भावि । कियता काछेन प्राग् भूतं भविष्यति वेति ज्ञातुमिण्डा क्रान्तिसाम्यनामा दोपो यदि चक्रदले चक्रांधे पड्रूपे स्यातदाऽस्य ब्यतिपात इत्याहा। यदि च चक्रे द्वादगरूपे स्यातदाऽस्य 'पात इति' विधत इति' यीनां षट्के द्वादशके वा स्यात्तदा फ्रान्तिसाम्यसम्भवोऽस्तीति ज्ञेयम्। तत्रापि विशेषः-यदि निरुद्धमेव षट्क द्वादशकं वा स्यात्तदा तदानीयं फ्रान्तिसाम्यम्। ब्याएया—स्फुटार्रेन्द्रोः सायनयोभुक्तांग्रराशिमिक्ने राश्यक्षस्याने षट्कं द्वाद्शकं वा यदि स्यात्तदा क्रानितसम्यसम्भवः, तद्वेका च स्याज्या, स च क्यास्या — वेधेन सप्तरेखपद्यरेखचक्राभ्यां वर्णितेन । उत्पाता भौमाधास्ते यस्मिन् दिनमेऽभूवँस्तन्नुष्पातदूषितं । भषिन्नव्याद्यमहयुद्धाधैरपि पृत-अकेन्द्रोभुक्तांशकराशियुनौ क्रान्तिसाम्यनामायम् । चक्रद्छे व्यतिपातः पातश्रके च वैधुतस्वाज्यः ॥ १८॥ वेधनैकार्गलोत्पातपातलताभिधरपि । दोषैक्पग्रहाधैय नक्षत्रं दृष्धमुत्मजेत् ॥ १७॥ चाहुद्वयं । अथान्नेदं तस्त्र-फ्रान्तिसाम्यवेळा तावन्नियता वक्तुं न पायेते, प्रतिवर्षं तत्परावर्तेमवनात् । तदुक् विवाहवृत्दावने---मीनेऽक्तैऽपरफल्गुन्यां यदि याति विधृतुदः । आवणस्योत्तराधं तद्वारुणे दत्रयते थिखी ॥ १२ ॥ " कुम्मस्येऽके मघा घिष्ण्यं यदि याति विधुतुदः । भाषाद्वमासोत्तराधं भुतो केत्द्यस्तदा ॥ १९ ॥ ह्मोपदुष्टान्यपि च भानि तहोषापगमाद् चन्द्रभुक्ता शुद्धानि स्युरिति रत्नभाष्ये ॥ वेळाशुद्धिमाह— साम्मतं तु-'' ब्रह्मणश्चरणे शेषे ध्रुवस्य चरणे गते । तत्सम्भव इत्याहुर्कांः० ॥ " क्दं न्त्रिक्तमश्चतकटीकायां । उल्कापातपरिवेषहतमपि भं पण्मासौंस्याज्यमित्येके ॥ " जिभागहोषे ध्रवनाम्नि चैन्द्रज्यंशे गते सम्प्रति सम्भवोऽस्ये' । इति । तद्तु च केश्रिद्रचे-" पूर्वाधे पुनरेन्द्रस्य पश्चिमाधे ध्रुवस्य च " इति ।

1283

**研究**成 明 गादिजातमित तम्मध्याद्वाश्यद्वं सम्त्या शेषस्य विकला. क्वांना तस्ताद्वस विकलारूपेण गर्यक्वेन मागो देयः, यहाब्धं तिह्नं, शेपं पष्टया सङ्गुण्य पुन-माम्य विचारमेते। तथाहि-तदानी राद्ममक्तानिकटास्पः स्फुटोऽक्कैः ०-१८-५०-१६, तद्वेषं चायनांसा. १५ कटा ३४ युताः सनित, तषोजने माय-तत्र पर्कोटाहरणे यया—मंत्रत् १५१> वर्षे वैद्यात्रशुक्षद्यम्यां १० गुरी मवायां प्रातवंटी। पङानिष्ध समये ध्रुवस्याषपादे गते सति नानित-नोऽऽः १-४-२४-२६ । रामिगति. स्फुटा कलाः ५७ मिकला. ५८ । तदा च स्फुटेन्दुः ४-११-२-३० । भयनांशकलाः १५ ( विकलाः ) ३४, स्नेनंन मागे यछक्षं ता घट्यः, तथेष पुनभौगे उभ्यन्ते ताति पञाति । इमान्यतीताति इयदिनघटीपछेभ्य. प्राक् क्रान्तिसाम्यमतीतामिसयैः । यदि निट्रं, युन: प्राग्रर् गुणने भजने च रुञ्य घटीपत्राति, इताति प्र्याणि इयद्विद्विनघटीप्छेगंतेः फ्रान्तिसाम्यं भविष्यतीस्पर्यः । यदि च प्रथमवार्भजने भागो न प्राप्नोति तद्रा दिनस्थाने शुन्य क्रान्तिसाम्याद्र्यांपिद्रन गतमैत्यं वा नास्ति, किन्तु घटीपळान्येव कियन्ति सन्ति । यदि च द्वितीयचारभज-नेऽपि भागो नाप्यते, तटा घटीह्यानेऽपि शुस्यं, कोऽयं. र फ्रान्तिसाम्याटवांक् घव्योऽपि गता एप्या वा न सन्ति, किं तु पळान्येव क्रियनित सन्तीत्ययं:॥ गोतने मायनेन्दु ४–२६–३६–३६–१० । चन्द्रमति स्फुरा कलाः ७५० । सायनार्भेन्दुमीलने जातं ६–१–०–५६ । भत्र क्रान्तिमास्यमतीत, कियना मीउट. ३१५६ पष्ट्या गुणने जात २१९३६०, पक्षात्तेमाक्षेत्र ४८४७८ भागे लज्ध घटी ४। शेष पष्ट्या सङ्गुष्य पुनस्तेनीय भागे लज्धं ३१ पन्नाति, च पर्के द्वादराक वा निधिद्दन तटा तत्मर्वे पर्कद्वादककाद्भमध्यात् पातिवित्वा शेपस निकलाः कार्याः, तस्राद्वस्य प्राग्वद् गतिविकलाङ्केन भागे यहुक्यं कारेनेनि जातुमता (स ) गाद्वय पष्टमा सङ्गुण्य निकलारूपः कृतः, ५६ विक्रकासेपे (च) जात १६५६। सूयेन्द्रमती अपि मीलयिता पष्ट्या ६० तूणने तिरस्या कृताः, ५८ (पिमला) झेपे जात ४८४३८ । अनेन प्रास्तनाङ्गस्य ३६५६ भजने भागो न लभ्यत इस्रतो दिनस्याने शुन्यं । ततः दानि मान्य रिमावंते । मथाट्रि-तदानी राद्यादिरूषः स्कुटोऽघेः १-०-४१-१३ । अयनात (१५-१४) क्षेपे मायनोऽघेः १-१६-१५-१३ । रिट द्रारवारीदाहरण गया-मगत् १५१३ वर्षे होक्तिनेजामकुष्णाष्टम्यांट मीमे धनिष्ठाया व०१८ प० ५४ ममये त्रस्रयोगस्यान्यपाने क्षेते मित र्गवंशिष पत्र ३१ कान्मिमास्य प्रामतीतम् ॥

गि महुरा कः ५० रि० २० । तदा च स्कुटेन्दुः ९-२९-१०-५३ मायमे-(१५-३४) न्दुस्तु १०-१४-४४-५३ । चन्त्रगतिः स्कुरा क० ८५२

नुवस्तु विस्त्रुं निश्रह्मे "विषमदिग्धेन हतस्य पश्चिणा, मुगस्य मांसं सुखदं क्षताहते । यथा तथैव व्यतिपातयोगे, क्षणोऽत्र वज्यों न तिथिनं वारः ॥१॥" अस्यायः---गण्डोत्तराधांदारभ्य सार्धं योगपञ्चकं यावत् क्रान्तित्ताम्यग्नद्धा। एवं शुक्कयोगत्यादेरारभ्य साधेयोगपञ्चकावधि क्रानितसाम्यस्य गङ्जा, तद-ाच्छच कदाचिद्रप्रेतनदिने यातीखतः क्रान्तिसाम्यसम्भवस्थानाङ्कितमैकं दिनं तस्पुरः युष्ठे चैक्षेक्रमिति त्रिदिनी स्याज्या। अन्यथापि वा ज्यहं स्याज्यं। यदुक्तं− ि १ । सायनाकेंन्युमीलने जातं ०-१-०-६ । भत्रापि क्रान्तिसाम्यमतीतं, कियता कालेनेति ज्ञातुमत्रापि प्राग्यत् करणेण लज्धं षट्यःथ, थ घटी। नन्तरं तु न तच्छद्वापीति खण्डखाद्यभाष्यादौ। एतेन-स्थानद्वयेऽपि साधै योगपञ्चक्रमेन क्रान्तिसाम्यस्य परावर्तनास्थानं, साधैयोगपञ्चकं ब्यतीत्य तु न क्रदापि यातं यास्यति चेत्रयः। तत्रत्यद्दमिति, अस्यायं भावः-ज्ञह्यान्स्यपाद्ध्रुवाद्यपादरूपादुक्तस्यानतः पश्चाद्रच्छक्कान्तितसाम्यं कदाचिद्रतदिने याति, अमतो स्पुटीकरणगिथिरमे यहपते। हुदं च स्यूलमानेन कृष्टितसाम्यसम्मवस्यानमेव सुत्रकृतोक्तम् । भरमाभिरपि तद्मुवसैनया तदेव विद्यत । यस्तु सूष्मेक्षि-इसादि, तेन करणकुत्हळभास्करसिद्धान्ताद्यन्वेष्यम्। नतु यदुकं भवद्भिः क्रानितसाम्यस्य स्थानं प्रतिमासवर्षं परावतेते इति, तर्धोस्ति कापि तत्परा-भ्यः प्राप्त फ्रान्तिसाम्यमतीतम् । एवं किञ्चिन्न्यूनप्टुकह्राद्शके एष्यस्यापि कान्तिमाम्यस्य पूर्वोक्त्युनस्या एष्यद्विनघट्याधानेयम् । महाणां तद्रतीनां च काशी स्थात्, तथाहि-फ्रानित्माम्यं कदा भिष्ते प्रमुत्ते शिक्षतीं मेलां भूत्वा कदा च समाप्तं ? कानित्तिमम्पन्नव्य च कोऽन्वयाः १ कथं च पटुकद्वा-द्रग्रकोएत्तावपि क्रानितसाम्यं न स्यात् १ कथं च पट्कह्राद्शकाजुरप्तावपि क्रान्तिसाम्यं स्यादिति १ कथं च क्रान्तिसाम्यं सदपि दोपकारि न स्यात् १ " गत १ मेच्य २ द्वतेमानं ३ सुख १ छक्ष्म्या २ युषां ३ कमात् । क्रान्तिसाम्यं सुजेद्धानि ज्यहं तेनात्र वर्ष्येताम् ॥ १ ॥ " केचिक्कान्तिसाम्याक्रान्तमेक्ष्मेव दिनं स्याज्यमाहुः । अन्ये तिहिनेऽपि क्रान्तिसम्यमवनसमयमेव स्याज्यमाहुः । पठन्ति च— क्रान्तिसाम्यस्य वेकायास्त्रादाहिवकं यथावस्परिमाणं च करणकुत्दृहलाद्युक्तविधिना निद्धांयेमिति द्क्तमेव प्राक् । महादोषश्रेषः । यहाह्यः— " खड्गाहतोऽग्निना दग्घो नागद्घोऽपि जीवति । कान्तिसाम्यकृतोद्वाहो म्रियते नात्र संशयः ॥ १ ॥ " " गण्डोत्तराघांच्छुक्छादे: क्रान्तिसाम्यस्य सम्भवः । सार्धपञ्चस्र योगेषु तत्त्र्यहं परिवर्ज्जेयेत् ॥ १ ॥ " ग्तरंयानसीमा यहा नाहित ? उच्यते-अहित सीमा, तथाहि---अन्नाचक्योद्धरणीयाष्टाद्शद्षिसङ्ग्रहकान्य यथा---

112/21

12881

112861 " स्पाँदिये यथा तारा चिनइयन्ति समन्ततः । यथाऽत्रिरम्बुना लग्नं तथा बुद्धिस्ये तिथिः ॥ १ ॥ " येप गएं । प्तेऽष्टाद्म दोपा. ग्रुत्नक्षत्रयक्षेन च्छायाकप्रादौ यदा प्रतिष्ठादीक्षादिकायै क्रियते तदाप्ययक्षं साज्या एन, घटिकालप्रेषु तु कि निगतनस्रातीति, अत्र गोचरादिनिरुद्वोऽपीन्दु., कृष्णपक्षे चिरुद्वतारा चोद्धा । दुष्टयोगा विष्कम्भाद्याः । अर्गेक प्रकामोलः, स च निष्कम्भादि-"लग्ने गुरुः सीम्ययुतिक्षितो वा, लग्नाधियो लग्नगतस्तथा वा। कालारयहोरा च यदा ग्रुभा स्यान्नवेघदोयस्य तद्म हि भन्नः ॥१॥" क्तान्जिमाग्यत्र च । अवस्या दुष्टा इन्दो. प्रोपिताद्याः । कर्जोत्पातादीति आदिग्रन्दाद्ये योगास्त्रिथिनक्षत्रतम्भववारप्रातिकृत्यरूपा मृस्युक्ताणसंवर्तेकवन्नपा-कुवोगनान्तरीयक्तागत्तरमस्मिलित एव पेटे। गण्डान्त इति, अत्र तिष्यादिमन्षिद्रोपोऽपि विवाहचुन्दाचनासुक्तो ङक्ष्यः। प्रमुरोत्यनेन पक्षिन्त्रिक्सूराति-क्ष-नेंात्पातादिश्च घटोर्श्वमगतचळ्यशीर्ष् बुष्टयोगागेळाच्यार्ष्ट्, गण्डान्तोर्ष्ण्दग्घरिकाप्रमुखतिथिर्८रथो नामतोऽघाद्शेते ॥१॥" अस्य विषमपद्गमनिका-ग्रहेण मलिन "क्र्रेण मुक्तमाक्तान्तं" इतिस्थोकोक्तदोपदुष्टं चन्द्रभुक्त्याऽधाष्यसञ्जातग्रीद्धं च भं। कूर्यारा इति कृत्योरा मन कालपेलामण्डकोपकुलिका भाषि रह्मा., तेन यथार्वाक तेऽपि स्वाज्याः। उपप्रहेति दुष्टरवियोगा भष्यत्र लक्ष्याः। क्रान्तीति भक्षेसङ्क्षान्तिः अप्पत्र ढ६याः । प्रदाणां जन्मक् "भरचितुत्तरे" त्याषुकं "विशाखाझित्तिके" त्याहिस्रोकोकज्ञ । अर्धप्रहाकुछिनेति "यामाद्धेन भवेच्छोपः " स्युचियः १ पातर लत्ते३ प्रदमलिनमुद्ध४ क्र्यवारा५ प्रहाणां, जन्मक्षें६ विष्टि७ रधेप्रहरक८कुलिको९पप्रहर०क्रान्त्य११वस्थाः १२ । " लग्नं पञ्चनतुर्वेर्ग दूप्यते क्र्रहोरया । अपि पड्चर्गसंधुद्ध कुलिकेन विहन्यते ॥ १ ॥ " इति रत्तमालाभाष्ये । " यमघन्टे गते मृत्युः कुलोच्छेदः करमहे । कर्तुमृत्युः प्रतिप्रायां शिशुज्ञति न जीवति ॥ १ ॥ " तादयस्तेऽत्र सर्नेऽपि प्राष्टाः । वटो यमचंटः सत्यभामा भामेतिवत् । भस्र प्रयगणनमतिदोष्टयज्ञप्तर्थम् । यहाह्रहः— गारणं ! । यतु च केवीचित्रोगाणां भन्नविधिः प्रनांचार्थरेतमूचे । तथाहि---कुलिकेन तनुश्रयः" इति सार्कः । तथा— व्यामफल्मुतिर्थिष्ठः । यत्सारकः —

112891 ं त्रिटिक्रमोऽप्याह—" क्र्रस्य काळहोरां च क्र्रवारे दिवा त्यजेत्" इति । अस्यायः—यदि कूरो दिनवारो, दिवा च कार्यं, तदा क्रूरहोरां त्यजेत्, किं तु सीम्यया काळहोरया क्रूरवारदोपस्यापगमारता आधा, सीम्यवारे ् दिवा रात्री वा होरया नास्त्रविकार इत्यर्थः । इति सूर्येन्द्रप्रहणवर्जप्रहमलिनोडु १ ऋरवारहोरा २ दोपयोभेद्धः ७ । जन्मक्षेद्रीपभङ्गस्तु वर्ष्यमाण-क्रकांदिभद्गतम एव ८ । विष्टेस्तु नास्ति भद्गः, अस्ति वा "विष्टिपुच्छे घुवं जाय" इत्यादि ९ । अवस्थादोषभद्गस्तु वस्त्यमाणविगतबहेन्दुदोपभन्नव-इति चिन्निष्ठः । अत्र म-वेषेति नक्षत्रनेषस्येव भक्नो न तु तापाद्वेधस्येति भावः । न्यचद्वारप्रकाशे व्यनया रीत्या येषः प्रायुत शुभोऽप्युक्तः, "एकागैलोपप्रह्रपातलत्ताजामित्रकतेश्रुद्यादिदोषाः। लग्नेऽकैचन्द्रेज्यचले चिनश्यन्त्यकाँद्ये यद्वद्दो तमांसि ॥१॥" इति सप्तर्पयः। तथा— " लक्षां वंगालदेशे च पातं कोशलिके त्यजेत् । उपग्रहं गोडदेशे (च) वेधं सन्वैत्र चर्तयेत् ॥१॥" इति पातकत्तोपग्रहेकागंजानां भक्षा ५ । "पुनरस १ तेर २ ड्रारस ३ पगा ४ सग ५ सत्त ६ अड्ड ७ घडिआओ । जमघंटरस उ दुड़ा रिवमाइसु सत्तवारेसु ॥ १॥" ''अङ्गेषु बङ्गेषु बर्शन्त पातं, सौराष्ट्रयाम्ये खचरस्य कत्ताम् । उपप्रदं मालवसैन्घवेषु गण्डान्तयुक्ति सक्ते पृथिच्याम् ॥१॥" यत्र लग्नं विना कमें क्रियते ग्रुभसंबक्तम् । तत्रैतेषां हि योगानां प्रभावाज्ञायते फलम् ॥ २ ॥ " इति व्यवद्वारतारे । " अयोगास्तिधिवारक्षेजाता येश्मी प्रकीतिताः । लग्ने प्रह्वलोपेते प्रभवन्ति न ते क्वचित् ॥ १ ॥ पापारिष्टं निष्फलं शक्तिभाजां, स्यात् षड्वमें लग्नमे सद्ग्रहाणाम् ॥ १ ॥ " " होरा: क्र्राः सीम्यवर्गाधिके स्युर्लेने मोघाः सीम्यवारे च राष्याम्। त्याहि—"स्रोम्येश्वरणान्तरितः शुभः शुभैः केन्द्रगैर्वेघः" । इति वेषद्रोपभन्नः १ । इति ककोरपातादिदोपभन्नः ११ । बंट इति, अस्य दुष्टघटय एवं---न्छवचक्तवलेन कायैः १० । ककोरपातादीति---इति केचित् । वामदेवस्वाह—

'धिल्ण्यम्यादायन्ते त्यजेचतन्त्रो बदीः करम्रहणे। यदि शुद्धे छे घिल्ण्ये विवाहयोग्ये तदा श्रेष्ठे ॥ १ ॥" इति न्यवहारमकाशे। तथा— " गुरुभूगुर्वा केन्द्रे या त्रिक्तोणे वा यदा भन्नेत् । भसन्धिस्तिथिसन्धिश्च योगसन्धिने दोपदः ॥ १ ॥ येऽन्ये सन्धिकृता दोगास्ते सर्वे विलयं ययुः । इति प्रोक्तं तु गगेण विद्याष्ठात्रिपराशरेः ॥ २ ॥ " " तिथि१५रस६कद्रा११स्यरगुण३०सार्ञ्वह्या७॥भ्रते६०छगुण३०मितघटिकाः। त्याज्या घंटे रच्यादिचाद्या उत्तरास्तु शनिषुघयोः ॥१॥ " मि भिषियोणादिमन्थिरोपभन्नः १५। तिथिरोपत्ता "तिथिरोक्त्राणा प्रोक्ता" इति ग्यनासुभभ प्रम, यदा "दिने यत्यती तिथिः" इति, स्कृयाऽत्यनामे विमचक्रचलेन इन्यते चन्द्रादेः मातिकृत्यं दरतीखुक्तेः १३ । दुष्योगानां तु विष्कम्मादीनां दुष्टबळ्य प्यावश्य हेयाः, शेपाणां खागे सु मामचार इखुक्तः एकुट एन दोपभन्नः १८ । गण्डान्तस्य तु स्थातिस्युद्दनां त्रित्रिमागान्तरे जायमानस्य नास्ति भन्नः । यस्तु सर्पतिथिभयोगानां क्षेपकडार गतुष्टा एनेति यमबंददीयमद्रः १२ । विगतयळशक्षिद्रीषस्तु "लग्ने गुरीचेरस्येति" श्रीकोक्तपन्नद्शान्यतरस्यापि चन्द्रातुकूत्यमकारस्य " मर्येषां तु कुगोगानां वर्त्रयेद् घटिकाइयम् । उत्पातमृत्युकाणानां सप्त पद् पञ्च नाडिकाः ॥ १ ॥ " इति नारचन्द्रटित्पनके । " कृतिद्विक्वारकुत्रोगा विद्वी वि अ अम्मरिष्य दब्दतिही । मञ्ज्ञादिणाओ पर सन्धं पि सुमं भवेऽवस्सं ॥ १ ॥ " " यमगटे नवाषा च फालमुन्यां विवज्येत् । दुग्ये तियी कुवारे च नाडिफानां चतुष्यम् ॥ १ ॥ " इत्यपन्ये । तथा— " तिन्ययं तिचिषकं समादेश्यम् " इति या १६। अपि च-क्षी कम्युषोगे जार्य घटणस्यात्या ब्रह्मादुः । तथा--म्त्रमयंतः श्रीद्यरिभद्रफलप्रन्ये । अन्ये स्वाद्यः— इति स्पंप्रकारो । त्रहोरिष्पाह— सिध्यु मिध्यनामा दीप उक्तमन्त्र पर्न-

10%

湖

1.5%21

" विष्णामद्वारके चेत्र व्यतीपातेऽथ वैभृते । प्रत्यरे जन्मनक्षत्रे मध्याद्वात् परतः द्युभम् ॥ १ ॥ "

それのようなできるようできょうできょうできょう

आरम्भ सिद्धेः ।१२१८॥

पश्चम विमञ्जे मिश्रद्धारे दीक्षाल-1138811 नगारपा---प्रगत्या इति, एय मिथुन १ सिंहर कन्या३ बुश्चिक्ष घनुषमैकर६ कुम्म७ मीनाः८ प्तेऽष्टी गस्याः। इतार इति, मेष १ सुपर कर्भ३ अन सुगोरा्येति शुरुस्योद्नास्यात डाम्याव्यमित्यर्थः १ । तथा शुरुवारः २ । उन्ने शुरुननांगरः ३ ।शुरुभननयो्पतुक्योः ७ । यदि सफ्ड-द्ध्या शुक्ते मूर्ति मसमग्रुर या प्रयतीति ५ पञ्चके । तथा चन्त्रांशे । चन्त्रस्योद्यस्यांचे कोऽभैः ? कप्तस्याते । तथा चन्त्रतारेश । चन्त्रत्तीने वताय रावायो ह्रयङ्गाः स्थिराश्वापि वृषं विना । मक्त्य्य प्रवास्याः स्युलैयांचादिषु नेतरे ॥ २१ ॥ " भूगोठद्यर वारांरशः भवनेष्ठ क्षण५ पञ्चके । चन्द्रांशोर द्यर वारे च३ दर्शने च४ न दीक्षगेत् ॥ १ ॥ " " जीयमन्द्रमुमार्काणां पद्वमों वारद्शीने । शुभावद्दानि दीक्षायां न रोपाणां कद्दाचन ॥ १ ॥ " मीनांशे त्वरुपेते देवो वासवाधे. सुरासुरै. । मनुष्येश्च सदा पूल्यो विना कारापकेन तु१२ ॥ १० ॥ " घन्वाको धनवृद्धिः स्यात् सद्भोगं च सद्। सुरैः । प्रतिष्ठापककर्तारी नन्दतः सुचिरं भुविरु ॥ ७ ॥ मकरांको भवेन्मृत्यु. कर्तस्थापकिशिष्पिनाम् । बज्जान्छलाद्वा विनाशिसिरान्द्रेने संभयः१० ॥ ८ ॥ घटाको भिग्यते देवो जलपातेन बत्सरात् । जलोदरेण कर्ता च त्रिभिरन्द्रेधिनस्थति११ ॥ ९ ॥ ग्रुन्धिके च मद्दाकोपै राजपीडासमुद्भवम् । मप्रिदादं महाघोरं दिनजये विनिर्दिशेत्८ ॥ ६ ॥ भोगः सद्व कन्यांशे देवदेवस्य जायते । धनघान्ययुतः कतां मोदते सुचिरं भुविद् ॥ ४ ॥ उचाटनं भवेत्कतेर्वेन्यश्चेव सदा भवेत् । स्थापकस्य भवेन्मृत्युस्तुलांशे वत्सरद्वये७ ॥ ५ ॥ रत्नमालायां तु भीमवर्जसवैप्रहाणा पड्वगीः प्रतिष्ठायामनुज्ञाताः ॥ भथ दीक्षाया ङप्ताशानाह— पुलाध एते चरवारी नमेषु नवामेर्पादिशन्दाद् द्वाद्यासेर्पापे च हेगा.। उक्तज्ञ नारचन्द्रे— स्पेमकाशे ए रुपानः शुक्रमस्कोडपि बगोंतमायाव्युज्ञायः, तथाहि---नक । मीक्षानम न देवमिति पर्गमेश्रदिः । तथा-138811

त्वात् २ । यद्। तु धने मध्यगतिः कूरो व्यये च वक्षी तदाऽल्पदुष्टा, कर्तयी वभयतोऽपि विचटमान-त्वात्, तन्नापि धनस्थश्रेद्तिचारवांखदा तु विशिष्य स्वरपदुष्टा, शीप्रमेव विषयमानत्वात् । भावना •याख्या---त्रित्वपीति प्रतिष्ठादीक्षोद्वाहेषु । मध्यस्थात्रिति एतेनायमधै:-लग्नस्थ द्वयोरिष पार्श्वपीर्द्वतीयद्वादगगुहयोश्चेत् क्राग्नहौ चन्द्रस्थापि चैच-स्याख्या--नाग्रह इति, प्तानि लग्नानि ग्राह्माणि, प्तानि हैयानीति यो तियम: स भाग्रहः। स किल यथा प्रतिष्ठादीक्षयोरक्तत्त्वथा विवाहे कोऽपि नास्ति । केवलिमिहेति विवाहे यत्तश्चमम्तु, परमंशा एत एव मनुष्यत्वाद् माझा, नान्ये, "मनुष्यांशेभ्योऽन्यत्रासती दरिद्रा च स्वादिति" रत्नमालाभा-"धन्वंशो न बुधास्ते भौमास्ते नो तुळांशकः कार्यः । न तुळांशश्चरळग्ने देयस्तुलमकरसंस्थेन्दो ॥ १ ॥" अथ सर्वेलग्नसाभाणमाइ— मिति हेघाऽपि क्रूएकतेरी। इयं च प्रत्येकं त्रेथा-अतिदुष्टा १ दुष्टार अल्पदुष्टा १ च। तथाहि-यदा धनस्यः यदा तु स्ययस्यः कूरोऽतिचरितस्तिद् विशिष्यातिद्धा, शीष्ट्रमेन संघटमानत्वात् १ । यदा धनन्य-योक्तः। "धनुषि पराभवयुक्तां" इति केऽप्याहुः। ग्रन्थकुन्मते तु धनुरन्ताधेमेव विरुद्धं पूर्वाधंस्य मनुष्यत्वात् । रत्नामालायां तु कग्नान्यपि तियमितानि-ययोरिए मध्यगती क्रूरी, यद्वा द्वयोरिए तयोः वक्रगती क्र्रो तदा मध्यदुष्टा सा, एकत एव संघटमान-क्त्प्रहो वक्की व्ययस्थस्तु मध्यगतिः कूस्त्वदोभयतः संघटमानात्कूरक्तंथैतिद्धा । स्थापना यथा--त्रिष्विप क्रमध्यस्यौ शुक्तक्राधित्रवनुनै। नेष्टौ लग्नविष्ठ केन्द्रियतसौम्यौ तु तौ मतौ॥ २३॥ 'कन्या नृयुग्मं च वणिग्विलस्रे, स्थितो विवाहः ग्रुभमाव्धाति" । इति परं तेष्वप्यतीयमो यथोक्त एव । यन्नास्करः— ध्थापनायां कार्यो । एवं चन्द्रस्थापि पार्श्वेद्वयस्थमहैः ऋ्कतंर्यांकिविधता भाष्या । निर्शेषस्तु---"निन्छेऽपि लग्ने द्विपदांश इष्टः, कन्यादिलग्नेष्वपि नान्यभागः" इति । ब्यवहारप्रकाशे त्वेवमूचे —

'मैसविसाणं मुन्एण सैसरासीण पंचमे असे। नय दिष्डिबज्ज जमो सो विणसर तह तह पत्रोगाभो ॥१॥" भय विवाहे छप्नांवाषाह-विवाहे नाग्रहा कोऽपि लग्नानामिह केवलम् । नवांशा धनुरायाद्युगमकन्यातुलाः शुभाः ॥ २२ ॥

||220||

अपि चान्यक्रमाभाषेन यदि करहत्री सक्तु न शक्यते, तदा क्यनस्योभयपात्रेयो॰ प्रत्येक पञ्चद्रधाना त्रिशाशानां मध्ये यदि क्रुप्रही स्थानां क्र्रबहस्यान्तरमा तनुभेवेन्म्रतिप्रदा शीनकरश्च रोमः । शुभैधंनुस्थैरथवान्त्यमे गुरो, न कर्तरी स्यादिद्व भागेवा विदुः ॥ १ ॥ " पूज्यं पश्चात् पापात्तिध्यंशा १५ घाटमध्यगत्रचन्द्रः । वजीयितज्या योगे यसाबाद्यंशरितमयुति. ॥ १ ॥ " प्रिक्रोणकेन्द्रगो गुक्षिलाभगो रचियेदा । तदा न कर्तरी भयेज्ञगाद् वाद्रायणः ॥ २ ॥ " तसा मा क्रक्तियोश्य लाज्या । एतं चन्द्रस्थापि । यदुक्तं च्यबहारप्रकाशे-

सुग्नं १ गान्य २ मन्।ण ३ सत्तमे ससद्दे गहिअदिक्यो। पीडिज्ञप अवस्तं सत्य १ कुसीलत्त २ बादीहि ॥१॥" एति लग्नयुद्धो। नथा--' द्युक्तार्कद्यनिमोमानां सप्तमेन्द्रों चिवाहिता । ससापत्न्या १ च चिघवा २ निष्पुत्रा ३ स्वैरिणी ४ क्रमात् ॥ १ ॥ " इति देवह्रचक्रे । " उद्यात्मप्तमसंस्ये ग्रुके म्येंऽथवा शनी राही । वैषम्यं स्नितितनये सप्तममे कन्यका चियते ॥ १ ॥ " इति सार्तः । तथा— गुककूरिन, लग्नाचन्द्राच मसमे गुक्षः कृष्प्रहो या चेन्सात्तरा जामित्राख्यो द्रोप । उक्तच--

अथ गुफकूरेसम्मापगारमात्र-केन्युम्भितेसादि जग्नाचन्द्राचतुर्रापि केन्द्रेषु मीग्यप्रदाश्चेत् स्युसादा ग्रुककूराधिरतसुनागपि जग्नेन्द्र मनानिति ।

क्षेडगंः! मित्राम्रणीयागि । सारत्नम् चन्त्रामेन्त्रम्भक्षस्य त्रीपसेतमाह--

ानु कितिमा मामेन्त्रीम्म् ग्रेषयोः ममक्सतयाऽऽम्यान ? उच्यत्ने--

'' लग्नारम्यनमाश्न्योमधस्यो मबेत्क्र्रम्रहो चियो' । आपोडारैनेच सम्मोडा र भूग्वाग्राश्च वर्तिता ध क्रमात् ॥ १ ॥

" ह्रो यत्नां यदि जामित्र कूनी मीम्यो च संस्थिती । अन्द्ययेण दारिह्यं कन्या प्राप्नीति दारुणम् ॥ १ ॥" यति देवत्रयहासे ।

रादुस्तु गिशैपातुको मध्येत्र नानियत् । विशेषस्त-

" नग्राम्जान्छरीर चन्द्रयन्नामतमे ग्रहा. सर्वे । द्रमुभाँनाश्रयकं शुतमधुभे वा फल नियमात् ॥ १ ॥ " इति न्यनहारमकादो ॥ आत्मनोर्यस्युयर्गस्यरेजायायाः ३ फ्रीणः ४ फ्रमात् । यिनाशो जायते नूनं तहेलाकार्यकारिणः ॥ २ ॥ "

विवाह दी-क्षासाधारम 1222E मिश्रद्वारे क्षिमायां क्रमने चन्द्रः फमाद्रौमादिभियुत्तः। कलि १ भियं २ मुनिश्नैःस्ट्यं ४ विषदंदभूमिभुद्धयम् ।। २५॥ ब्याख्या—कलिमिति भीमादााभ्याकै यावाक्रमेणामूनि फलाति। विशेषस्तु नीचेऽस्त वाप्ने इस्रत्र ये प्रहाणामस्तमयविषये कालांबा उक्ताः सन्ति गुरुर्धेषश्च शीतांशुसेप्तमक्त्रांषह्त । पुष्टयेन्दुं दशा पर्यम् लग्न १ ला १० म्बु ४ जिकोण ९-५ मः ॥ २४ ॥ तेपामधंविभागे यत्रि प्रहाणा योगः स्यात्तरा सा युतिर्दुष्टा। यदि तु काळाक्षंविमागप्राप्ता अतीता वा स्युग्रेहासदा यथोक्तदोपा उत्पर्धन्ते, परं निवन्तेन्ते ब्यास्या-शीतांश्विति चन्द्रासप्तमस्यक्राग्रहस्य दोषं हाति । पुष्टयेति पूर्णया पादोनया वा ॥ अथ दीक्षायां चन्द्रस्य युवेः फलमाइ---अन्यक्षेंऽन्यगृहे वा कुजबुधगुरुशुक्रगौरिभिः सार्घम् । न भवति दोषाय शशी प्रदक्षिणं याति यदि चैषाम् ॥ १ ॥ " '' वेघन्यं१सापत्न्यं२वन्ध्यात्वंशनिष्यज्ञत्वंधदोभाग्यम्५ । वेक्यात्वं६गभैच्युति७रकाद्या लग्नतोऽस्तगाः कुर्युः ॥ १ ॥ '' विवाहदीक्षयोलेंग्र यूनेन्दू ग्रह्वजितौ । ग्रुभौ केचित्तु जीवज्ञयुक्तिमन्दुं ग्रुभं विदुः ॥ २६॥ यच्छोनकः—" योगा यथोक्तफळदाः काळाघेविभागसंश्रितानां तु । अप्राप्तातीतानामिच्छामात्रं फळं तेषाम् ॥ १ ॥ " दरिहाश्समणीरचेच मरपरसस्वात्त्रआंध । कवालिणी अ५दुस्सीळा६कमा नारी विवाहिआ ॥ २ ॥ ''रिवणाश्सिणिश्मोमेहिश्सुक्नधेकेऊहिं५राहुणा६ । पगरासिगप चंदे जुइदोस्रो पबुच्च ॥ १ ॥ चन्द्रश्रेकाकिस्थितः श्रुभः । केचिदिति ते हीन्दोर्धेषगुरुवर्जमद्युतेः फलमेवमाद्धः, तथाहि---शुक्रेन्द्रोधुतिर्विनाहे सर्वथा साज्येति •यवहारसारे । सत्यसूरिस्नाह---ब्याख्या- ग्रह्मिताविति सप्तमं गृहं ग्रह्मुन्यं भुमं, यदाहुः सप्तपंयः--अथ चन्द्रात्मसमक्रमचजामित्राख्यद्रोपत्य भक्षमाड--विवाउदीक्षयोः माधारणमाह---१ ससपत्नीका 12221

यगा-मेपस्याद्याक्षे लग्न चन्द्रो ना मुलायात्राद्यको क्रामहः ग्रुको बेति, मेपस्य द्वितीये चेत्रा नुलाया अपि द्वितीये, पूर्व द्वयोरपि तृतीये तुर्वे ध्यात्या—अंगादिति त्रभेन्द्री मन्भन्यिक्नतान्यात् प्रजायमेवायं । गहिंतप्रहद्षित मन्तं तत ए हेतो. प्रमणामित्रान्य त दोप परे उउन्नीयस्य । भाषना स्वेत-यसम्ब्र्यं नगंत्रो नप्नेऽधिक्रनसस्य समस्यानस्यमस्याः पत्रप्यातः स्यात्, इन्द्रापि सती यसम्बर्यंऽरोऽस्ति गग्रममाशेसारसज्ग्यांऽयशन्यानान्ताद्यात् पञ्चपञ्चात्र स्वात्, ततो न्याताचन्द्राशाद्वा पञ्चपञ्चातंऽसे चेत्काप्रदोऽस्ति श्रुको या तद्रा परमे जामिने। " लमेन्दुसंयुतादंशान् पञ्चपञ्चाशवंशके । यहोऽन्यो यद्यसी दोपो न गुणंरपि हन्यते ॥ १ ॥ " इति देवदाबहुसे । पञ्जगञ्जासमांसं जामिनं परमं परे। अंशाहुङम्नन्ति लग्नेन्द्रोगेहिंतग्रह्दपिनम्॥ २७॥ विशेगस्न-" द्यायः क्रेर्युते चन्द्रे च्यसुः प्रवितः शुभैः । " इनि द्यज्यस्त्रे ॥ अग जुक्रमूगश्रितयुनावित्यस्य मतान्तर्णापबादमाह— चेत्यादि । णनश्याज्यमेत्र । यद्भक्तम्-1133311

स्यापने स्युविमो युक्ते इष्टे बाडडरादिमिः कमात्। अग्निभी१ ऋष्ट्रिरिसद्धाचौरेत्री४पञ्चत्वापग्निभीतयः ।। २८॥

गीं सु पत्रायद्यासान्त्र्मोऽधिको या त्यानदा म जामिनाख्य एव त्रोदो न तु परमजामित्राल्यः । यथा मेगस्य कृतीयेऽशे कप्रमिन्त्र्यां

नुजायात्राहो द्वितीये ना क्षत्रक. शुक्री ना स्थितस्त्रता मेंडिशमिषन्नात्रश्रह्मिष्मात्रों वा स्थात् । यदा च मेषस्यांधेडक् लग्नमिन्द्रनी तुलायात्रा द्विनीये

गुनीये तुर्थे गक्षे कृष्यदः शुक्रो ग, नदा म तमात् पट्युजाय मसपज्ञाबोऽष्टापजातो ग स्थादेखादि । अर्थ च दोषो नातिरुष्ट यृति तन्मनं ।

यद्भमा भागत् ॥ ब्रतिष्ठाया प्रत्युतिरख्यो फलमान-

मास "गुरण मग्रीगा" श्री तु द्वज्ञव्ह्ने ३ । क्रुकेन श्री. ४ । त्रतिता मृष्यु ५ । रिजा राशिमी. ६ । अम रिष्ट मामान्त्रोक्तेऽपि

पुष्टा ग्रेया ॥ भग मर्गहायन्मानां माधारणानि त्याज्यानि व.शि खोन्राज-

स्माममा—स्थानने ननिष्ठामा भारेण युते रष्ट मा मन्द्रेशिमी १ । युपेन सिंद्ध २ । मृतमा मिद्धानां, त्रीडधंः ? प्रतिमा मारिशातिका

म्याक्या--जनमश्ति मूर्ते सजेत्, स च दीक्षायां विष्यस, प्रतिष्ठायां स्थापकिताक्षयोधिंचाहे वाकन्ययोश्रेष्युमं, एवमग्रेऽपि । जनेलेग्निति " द्रपत्योठपचयमं जन्मक्षोद्धद्यतश्च ग्रुभलग्नम् । निघनं न्ययं च दिष्ठुकं नेष्टं शेपाणि मध्यानि ॥१॥ " इति न्यचहारप्रकाशे । तथा— " तथा चतुरथं रिष्पं वा मित्रत्वेन थुमं स्मृतम् । गुरुणा भुगुणा केन्द्रतिकोणस्थेन चेक्षितम् ॥ १ ॥ " इति सारङ्गः । तथा— " चतुर्थद्वाद्शे कार्ये लग्ने बहुगुणे यदि । अष्टमं तु न कर्तेन्यं यदि सन्वैगुणान्वितम् ॥ १ ॥ " इति गर्भः । विशेषस्तु--जनमर्गिका जनेलेम् नाभ्यामन्त्यं नथाष्ट्रमम् । लग्नलग्रांशयोश्रयौ लग्नात् पष्टाष्टमौ खजेत् ॥ २९ ॥ " अष्टमक्षोंद्योद्भृतद्येषो नर्घति भावतः । ळग्नेशाष्ट्रमराशीशौ मिथो मित्रे यदा तदा ॥ १ ॥ " इति बृहस्पितिः " होराष्ट्रमं जन्मगृहाष्ट्रमं वा, ळमं थ्रुमं क्रेज्यसिते क्षितं चेत् . ......." । इति केशवः । तथा-ह्वं नारचन्द्रं वर्जितं नास्ति । तथाऽष्टममिति केचित्र्यमिष खाज्यमाहुः, तथाहि--

" जनमगृहजन्मभाभ्यामग्रमभवन मृतिप्रदं छग्ने । व्ययहिबुककेन्द्रसंस्थेः शुभन्रहेः शोभनं बलिभिः ॥ १ ॥ " इति व्यवहारप्रकाशे । यहाहाः—" लग्नस्येऽपि गुरी दुष्टः षष्ठस्थो लग्ननायकः… ……"। इति । लक्ष्मीघरोऽप्याद्य— " विलग्नाघिपतौ षष्ठे वैघन्यं स्यात्तयांशपे । देष्काणाधिपतौ मृत्युविलमे वलवत्यपि ॥ १ ॥ " लप्तकप्तांशयोश्रेति, चकाराद् द्रेष्काणस्यापि कप्तात् षष्ठाष्टमी त्यजेदिति ।

अष्टमस्तु लग्नेशस्तावद्शुभ एव। तत्रोऽपि यदि लग्नेशोऽष्टमभवने लग्नद्रेष्काणाद् द्वाविशे द्रेष्काणे स्यात्तदा भ्रुशमश्चभः। यदि च लग्नपति-

सृत्युपती एकद्रेष्काणस्यी स्यातां तदा श्रुशतरमञ्जभं । अथ षष्ठाष्टमात् करनांशद्रेष्काणेशानाश्रित्य रत्नामालाभाष्ये स्रोक्रीडयम्—

" वर्मासदिनैगंहद्रेष्काणनवमांशपाः । राशिमानेन दास्यन्ति फलमित्याह श्रोनकः ॥ १ ॥ "

112281 मुसमाणे तदीशे भीमे मेषस्थे सति, तथा बुषे कानेंऽशे वा मृझमाणे तदीशे शुक्षे तुकास्थे सति, तथा कुम्मे करेंनेऽशे वा मृझमाणे तदीशे शनी षष्ठाष्ट्रमावित्युपलक्षणासाद् द्वादशोऽपि लग्नेशो न ग्रुमः । विशेषस्तु " लग्नलग्नांशयोश्चेशो " इत्यस्यापवादोऽयं । बुश्रिके लग्नेऽशे वा

用郊流市 लग्रचन्द्र पत्रम विमर्थे नमाथक्रम् नायस्यास् । स्रोडनसापि सीया सेन प्रोह्माधियमान मनर्माह यदि रूपणीयता प्राप्नोति यराडर्नाहियसभि प्रह महोत् तर्माणाः द्रित देगजगत्तमे । लग्नोहितात्रभातिति सम्ने उतिमा. कम्मित्यो मे नगामास्तेऽपीन्युका तेमा., कोऽभै-१ मस्मिन् मनापिन्तुः "न मुक्षिकं दन्ति कुजोऽजवतीं, चुप न मुकोऽपि तुलाघरस्थः । तथेव कुंभ रविज्ञो न हन्ति, मुगस्थितो वा तमुगं ज्ययस्थः ॥१॥" तथा ५ ५ गामप्रामितिनमेडिमिहा उन्यम्नात्री गोडमडन्नमारिनिरामेतनैरामेषु नी महस्रिष्ठित स भागीसाद्रमेतनमुर एग स्थित उरम्ते, योगेष्वेषु कृतं काय मृत्युदारित्राशोकदम् । " तथाऽनंधन युग्या मेपे तुलाया वा जन्मखम्ने सित जन्मराशी वा सित ताभ्यामष्टमावि यिष्टापी लग्नत्येन मुग्रमाणी न दीपाय उन्दुक्त्युनं लग्नं तथा लग्नोदिनांशकात्। अधिकांश्यमं दूष्पगृहादविगिपि खजेत् ॥ ३०॥ यिनमम् राजां भवेत् क्रम्तमंशं परिनर्जयेत् । लग्ने मृत्युं विज्ञानीयात् पञ्चमेऽद्रे न संशय. ॥ ? ॥ " तथा—" जन्मराधिजनमलग्नाभ्यां छाद्शमधमं च लग्नेशं खजेदिखिपि" रत्नमालामाप्ये ॥ यिम्मिन् मार्गा भनेमन्यस्तमंत्री परिवर्त्तेयेत् । तस्माङ्गवैद्या नंदान्यमावयन्मिनयो जगुः ॥ ? ॥ " व्यसित्रुप जननश्रीविलग्नयोभीननमध्ममभ्यदित त्यजेत् " इति नामाने ना मान्यामा मानेशस नवात्रोऽपि साज्त.। यहाभार--मक्ताये मि न निश्वदीतः, प्रस्थामिक्तात् । उक्तज्ञ--मानगरि गर्मह द्रात इसम् । भार प मानह न्याममा-इन्द्रम्ति, यहहाः-तरुष निगद्यन्त्रामे

तर्नं भावः — केऽ्या कम्नसोदिनास्तेषु तिष्ठम् प्रहस्तदायफलपदः । यस्तु तानुक्तंय स्थित. सोऽप्रेतनभावफलपदः । प्वमन्यभावेष्विष "लमोदितांशाम्यधिको महोयो, भावेऽप्रिमे भावफलेन स स्यात् । महो यदा भावफलेन याति, स्याने निषिद्धे तमपीह जह्यात् ॥१॥"

" लग्नस्य येऽशा उदिता यहो यस्तेषु स्थितः स्थानफलं स दत्ते । यस्तानतीतः स भवेद्वितीयः, स्थानेषु रोपेप्वपि चिन्त्यमेतत् ॥ १ ॥ " देवद्यवछमेऽप्युक्तम्— भनमहुखादिषु निवाय । इस्तं च भास्करेणीय---

क्षत्र मर्ग्रशकिरिक्त सम्बन्धायः—यावतिथोऽयो लग्नसस्क. कार्थे वर्तमानतयाऽधिकृतस्तावतिय एवाक्रो द्वाद्यस्ति मावेषु वर्तमान-

लग्नस्य प्रोच्यते सोऽत्र प्रद्यो य उदितांशाः । द्वितीयोऽनुदितांशस्यः सर्वेराशिष्वयं क्रमः ॥ १ ॥ "

1225

तयोद्यते । एत च न्रांत यत्र तत्रापि भावे यो प्रहो वर्तमानमुख्डव्य स्थितः सोऽप्रेतनमावस्य एव झेयः । ततश्र हृष्यगृहाद्वांगपि सजेदिसस्यायं

भाषः । अनयाऽपि रीत्याऽप्रेतनमाबरथोऽसी महो यदि त्याज्यस्वेनोक्तः त्यात्तदा रूग्न न माधं । यथा प्रतिष्ठायां क्रम्याङग्ने पष्टे मिथुनांदो मृद्यमाणे सित कुंभरायों यादे सप्तमाचशेषु कुन्नः खात्तदा भावरीखा सीनस्थरवात् सप्तम एवेखतस्तत्वन्नमपि खाज्यमेव । तत्स्खापना यथा---

र्द विवाहमाथिस विवाहयुन्दावनाहो

एनमन्यत्रापि भाष्यं । नसु यद्यंत दूष्यगृहं खाउयमूचे तदाऽनयेत्र शिला यद्गृहं प्रहेण दूष्यमाणं सप्तमस्थो यदा चन्द्रो भचेद्वाचफलाएमः । न तदा दीयते छग्नं शुभेः सर्वेग्रहेरिषे ॥ १ ॥ " भावन्यकावद्यमत्वं गतोऽपि, त्याज्यो लग्नात्सप्तमः सप्तसिप्तः ॥ १ ॥ " तथा---स्यात्तस्याद्रग्णीयतयाऽपि भविष्यति, मेर्च, ईहम्गुणानामाहायैत्वेनानाद्रग्णीयत्वस्यैवाहेंत्वात् । उक्तं च---यसाद्शेदेहभावादिकः सन्न स्याद्भूत्ये भागवः पञ्चमोऽपि ॥ १ ॥ " तथा—" प्रत्याच्येयः पाक्षिकोऽपीह दोषः सम्यग्च्यापी यो गुणः सोऽसुगम्यः । " नाङ्गीकारो भावजानां गुणानां, तद्दोषाणां तत्त्वतस्त्याग पच ।

पञ्चम विमर्भे मिश्रद्वारे लग्नाद्गीरा-न्याक्या—सर्वेरायें टिनति दीक्षाप्रतिष्ठादिषु। केतुरतु जन्मसप्तमस्था. निमयुतश्च साउपः, त्रिपडेकाद्यो प्राह्यः, रोपस्थानेषु सध्यम इति नार-भय सर्वकार्येषु घटिकाळग्नेषु साघारणी भक्वदा प्रहसत्था तावदेव-वातिरवीन्दुभौमा लग्नस्थाः, चन्द्रभौमबुधगुरुग्रुका अष्टमस्थाः, चन्द्रग्रुक्न-अत्र मन्दादिति राहुरपि मन्द्वज्झेयः । समाविति सवेऽप्यस्तेऽश्चभाः, केषाज्ञिन्मते तु चन्द्रगुरू सप्तमे उदामीनावित्यर्थः सर्वकार्येषु श्चुम-ब्यारया—जन्मति जन्मकाले । जन्मक्षंविति ऋक्षमब्दस्योमयार्थत्वेन जन्मश्रांजन्मराशितो जन्मक्षाद्वा भ्रुभोऽपीति कूरस्य तु कि वाष्यं 🖰 । चन्द्रोक्तिः । अनया च राहुनैयमद्वादशोऽपि श्रेष्ठ इत्यागत । अन्यथा केतोखिषष्ठत्यसंपत्यसंभवात् । इत्युक्ताः सामान्येन घटिकाळग्नेपु साज्या दोषाः ॥ लग्नारैम्बुधस्मर्णगो राह्यः सर्वेकामें षु वर्जितः। जिष्डेकाद्याः शस्तो मध्यमः शेषराशिषु ॥ ३४॥ रिवः कुजोऽक्षेजो राहुः शुक्रो वा सप्तमस्थितः । हनिन स्थापककतारिौ स्थाप्यमप्यविल्धिकतम् ॥ ३३ । यानिष्यिकोणकेन्द्रस्यो बलीयाम् सृहदीक्षितः । कुजः केन्द्रान्त्यभम्षित्यां वा भद्रभञ्जनः ॥ ३२ ॥ भवेकान्मिन जन्मस्रोन्मत्युषामिन यो ग्रहः। ग्रुभोऽपि लग्नवन्येष सर्वकायेषु नो ग्रुभः॥ ३१॥ " लग्नान्द्रोमेऽघमगे दम्पत्योवेहिना मृतिः समकम् । जन्मनि यो चाऽघमगस्तिस्प्रिञ्जनं गते वाऽपि ॥ १ ॥ " मद्रमक्षन इति सस कुरोगस्य सान्त्रयेव सज्ञा ॥ " साज्या ळग्नेऽब्धयो ४ मन्दात् पष्टे शुक्रेन्दुलग्नपाः । रन्धे८चन्दात्य पञ्च सर्वेऽस्तेऽब्बगुरू समी ॥ १ ॥ " भास्करस्त्वाह—" जन्मक्षेत्रन्मलग्नाभ्यां यी रन्ध्रेशाच्याप्रमे । लग्ने तांश्च तद्रांश्च तद्राशीनिष च त्यमेत् ॥ १ ॥ " ब्याख्या---आतिशयेन बली बलीयान् । बलीयान् सुहदीक्षित इति कुंजेऽपि घोज्यं । अष्टस्थित इति यद्गागैः--न्यास्या-- फर्त प्रतिष्ठाया गुर्वादिः । सय स्त्रीक प्रतिष्ठामाध्रित्य श्रेयः ॥ लग्नेगारोगाः पष्टमाः, सर्वे सप्तममात्राञ्चमाः । यज्ञिविक्रम — =9%;c=

1996

प्रहसंस्था

i	र्रें पश्चम १	है। विमर्श	ते मिश्रद्वार	कियालक	The second second	36. 38.446.	A   TEST		**	<b>-</b>	·	ije- (	<u> </u>
									<b>X</b>				
	शेरपुदलाम ११मे ॥ १ ॥ २ ॥ " इति देवद्यवछमे	अधम	96	3-c-4	2-0-6	v	9	9	9-6	9-8-6	9-8-b		
	ाया । क्षाणापुत्रज्ञमुत्र च दुाश्चक्य ग सिध्यन्ति त्यक्तपद्सप्तमें सिते ।	। त्रिविधानामध्यामां स्थापना	मध्यम	28-2-2-4-8-2	8-5-8-2-8	26-06-8-4-8-2	રક	ما ا م	o	5-01-2-2-h-8-t	といー・とーシーフート	2-4-6-8-1-5	
2	लब्रादुपचयस्ये ३-५-१०-११ऽकंऽन्सा १२स्त७ममं १०य ११मं विघो । साणापुत्रऽकपुत्र च द्वाश्वक्यशरपुरुलाभ ११म ॥ १ ॥ स्यक्तरिरपा१२एमे८सोम्ये जीवेऽघा८रि६ब्ययो१२च्झिते । सर्वेकायाणि सिध्यन्ति त्यक्तपद्सप्तमें सिते ॥ २ ॥ " इति देवद्यवछमे	पुत्तसम्बारद्वयोतीणां तु मध्यमा महसंस्था ।	उत्तम	3-4-10-11	12-0-10-11	3-5-99	1-5-5-8-8-8-8-5-11	1-4-3-8-4-8-6-16	5-6-6-6-8-2-h-8-E-2-b	8-8-8-8	8-6-6	3-6-9-8	एन सत्यपि दीक्षालग्नेऽसाधारणीं ग्रुभग्रहसंख्यामाद
	" लब्रादुपचयस्ये ३-५ स्यक्तरिष्पारुरष्टमेटसो	•		45	व	मंगछ	व	सुर	<b>1</b>	日は		्राष्ट्र सुष्ट	एव सत्यपि दीक्षा
<b>5</b>	<del>X</del> X	7	<u> </u>	<b>.</b> ₹	た	<b>%</b>	¥	56	¥	- - -	<b>,</b> ~	و	A.
		**************************************	सदः	11/001	20/4	-	<del>- C</del> ingu						

गुरस्ति अन् लिन्

् - त्यांते- भूति न् तिति हैं।

ट्योम१०स्यःक्षितिभूष्त्रिषड्दश्मगो झेल्यौ टयया१२छो८िस्सतौ १-२-३-४-५-६-७-१९

दीक्षायां नरणिधेनरित्रहेननयार्श्रहस्थः राशी द्विश्तिरेषड्षे,

शुक्रोऽन्ला १ रिष्ट् सुत्पात्य जिश्यमे १ यन २ मान्ते धन १ आतृ ३ षट् ६,

पुत्रपांच्यद्ररगत्रश्च शोभनतमः सर्वे च लाभस्थिताः ॥ ३५ ॥

ब्याएया--- वृते यथोक्तस्थानस्था दीक्षालग्ने श्रेष्टाचाद्रेलाप्रदाः हर्षप्रकाशादिषु तु प्रहाणामुत्तमादिभंग्येवमूचे---

्रम् जिम्ह्ये जिम्ह्ये	मिश्रद्धार्		大	र्भ यक्ष्या	*	- <b>6</b> (	<u>~</u>	-94		<u></u>	C	· ···
मंदो दु पण छ अडमो, सुक्क विणा सिन्विगारसहा सुहया । चदाउ क्रुर सत्तम अइअसुदा दिख्खसमयम्मि ॥ २ ॥ असि ति ३. सिस सन दस्यो बहेग बर मन तव गरू ति छ दो । सक्षे द एंच सिण तिश्र मस्बिम सेसा असद सब्बे ॥ ३ ॥ ॥		अधम इदामेह तरव—	1-8-6-6-8-10-1२ । अहम वि मस्यम्बन कास्मा मणि गरं च बलवंत ।	# 6 "	१ - १ - १ - १ - १ - १ - १ - १ - १ - १ -	८-१२ इति श्रीहरिभद्रसूरिवचः। एते च फ्रमान्मध्यमोरकुष्टद्यीनचळा	८-१२ एवमेव स्य. तथाहि-मसिद्धवनाष्ट्रेकातमः पणफ्रस्थरवात्मध्यमबन्धः।	9-8-8-8-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9	1-8-0-6-10-15 प्रस्ति भाषाश्चिमस्थरवंडाप् विश्वकाद्यरवान्मध्यमवर्षः शुक्रति	a  - 8 - 8 - 8 किन्द्रशिकोणेषु बलिष्ठ इति स्फुटमेन । एकाद्या तु गुरोह्पेस्यान $ a  = 8$	वह्यते तेन तन्नापि बलिष्ठः । शुक्रस्तु न्नियद्गनद्गाद्गोष्कः-	मस्यराख्नीनमलः । उक्तच त्रेल्लोक्च्यप्रकाक्नो—" क्ष्पा २० र्ध १० पाद् ५ वीर्याः स्युः केन्द्रादिस्था नभञ्चरा "
ं विणा सिव्विगा बहेम नु स	36. 40. 4	मध्यम	m'	01-0	0	5-0-8-6	8 - W - W	5° 0°	en,	8-8-6   c6-06-8-2-5-2		यप्रकाशे—" रूप
मंदो दु पण छ अहमो, सुक्क निन निन ३, मिस सन दसमो	स्यापना—	उत्तम	राने १-५-६-११	चम्द्र २-३-६-११	मंगक ३-६-१०-११	सुध ३-२-६-५-१०-११	112 112	ग्रुक ३-६-९-१२	मानि २-५-६-८-११	गह-केत्र ३-१-११		मस्यराखीनवलः। उक्तच त्रेलोक्र

पश्चम

"हु पण छ रिच ति दु छ ससी, कुज ति छ दह, बुह ति दु छ पण दसमी । किंद तिकोणे य गुरू, सुक्को तिभ छ नव वारसमा ॥ १॥

1122911

11.31

12261 मक्ने । चन्द्रस्तु सप्तमः प्रस्तुतनाथानुसरणाथमेन मध्यमभङ्गेऽलेखि । एतस्रहृदयोतीर्णास्वधमभङ्गे । शुक्रस्वेकाद्गाः सुत्रे रेखाप्रद्रवेनोक्तोऽपि नारचन्द्र-तेनेते उत्तममङ्ग न्यसाः । शेषप्रद्यास्तु यत्रस्याः सर्वनम्मतत्वेन रिखाप्रदास्तेऽत्युत्तमभङ्गे । येषां तु रेखाप्रदृत्वे प्रन्थान्तर्विसंवादस्ते मध्यम-

लग्रगुद्ध्यादिषु निपिद्धाद्वममङ्गेऽलेखि ॥ विवाह्ङगन्सापदां प्रहसंस्थामाह—

निवाहे त्वक्ति जिश्रेषु ६ निषमा८ ११ वेषु ग्रुभवो, विषुः स्वरुज्या वेषेषु १ सितितनय आय ११ जिश् रिषुष्गः। समरा ७ छा ८ न्या १२ न्सुक्तवा वितन् १ सुख ४ कामे ७ प्वथ तमः ॥ ३६॥ चुथेज्यौ सप्ता ७ छ ८ न्यय १२ विरिह्तावास्क्रिनिद्रिह—

त्मायया-- स्वत्यायेप्निप, यहाहाः--

-

''यत्रेन्दुनांयगतो न हतीयो न हितीयगश्चापि । अनुकूलैरपि क्षेपैस्तछ्यनं वर्जयेन्मतिमान् ॥ १ ॥'' सप्ताष्टेति यच्छीनकः—

पष्टाष्टमद्वा-

दग्रस्थानेष्ठ व्यस्या--शुक्तशनी त्वष्टमाविष अधी, न शेषाः । षष्टी चेन्दुसिती तद्रदिति चन्द्रशुक्ती षष्टी न अधी, शेषाः पञ्च अधा एव । केचित्वाहु:-ड्ति स्रोगोक्तमद्वर्थानाति तुर्यं च विना शेषेषु पञ्चमसप्तमेषु नवमद्यमानामन्यतमे सौम्यक्षेत्रे ग्रुभदष्टश्च शशी रेखाप्रद एवेति जिविक्रमः। नितिम्यित यन्त्रीनकः—" लग्नस्थो बरमरणं राहुर्दिशति युने कनीमरणम् । " इति । " त्यज्या लग्नेऽच्घयो मन्दात् विवाहे नाष्ट्रमाः अष्ठाः पञ्च स्तर्यशानी विना । षठौ चेन्दुसितौ तद्रदन्त्येऽन्त्य इति केचन ॥ ३७॥

तहङ्गानुसुते गुरी निधनमे सीम्येऽप्टजामित्रमे, जायाम्मोनिधिलग्नभाजि तमसि प्राहुने पाणित्रहम् ॥ १ ॥

" भोमे लगनकत्रत्रनेधनगते शुक्तेऽरिसप्ताएमे, चन्द्र रन्ध्रविलग्नषष्ठनिरते लग्नास्तमे भाष्वति ।

अम्ये द्वान्होऽन्यः केतुने श्रष्टः । एषा फिन्नोत्तमभन्ने प्रहसंस्था । विशेषस्तु-

अथ प्रष्टिमद्वाद्यस्थानानामग्रुभत्वात्तत्र प्रदृष्टिथतिनिर्धारसङ्ग्रहमाद्य--

नाह— प्रश्नम ००००००००००००००००००००००००००००००००००००	व व		,यम् ॥ ३८ ॥ भेच चरे सति, तयोश्र	पहें: पूर्णहता दृष्टे चेति	₹.9
⊓ स्विथम्- म	ी-७ वन्द्रं च लग्नं च चर्डझनाग्रहें इं १-६-८ केन्द्रं बिलिभिः श्रिते चरैः १।		१-७-८   पापश्रहः ९ स्यान्ध्वताः पातद्वयम् ॥ २८ ॥ १-७   ब्याख्या—चन्द्रे चरराशिस्थे सति, लग्नेच चरे सति, तयोश्र १-४-७   चन्त्रञ्जयो. स्रोग्रहाणां दृष्टी मत्या । तथा केन्द्रे दिन प्रक्रिमजिपि	स्पेन्दुकुनगुक्ररूपैगधिष्टिते च सति कुत्येको योगः १ । मिथुनस्ये चन्द्रे पाषत्रहेः पूर्णहता दष्टे चेति	बिलिमियीयिमिः केन्द्रे भजेन्नारी पतिद्वयम् ॥ १ ॥ "
गेत्तीर्णास्तु मध्यमभङ्गे । स्था मध्यम्	9-6 -6-6-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-	219 26-0	-8-6 28-08-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-		्योः । बल्लिभियोचिभः क्षे
तेऽधमा यतिबह्धभोकाः । मङ्गद्वय	(	1-4-3-8-4-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6-6	1-4-4-8 4-4-10-11 3-6-6-11 3-4-4-8-6-6-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9-9	केन्द्रे कि पुनद्वितिषु बलविहस्नाग्रदेशंथिसंज्ञैः, द्वितीयः २ । उक्तच्च देवज्ञवछुमे	" चरराशो विलम्नेन्द्रोरङ्गनाग्रहदृष्यो. ।
	रावे चन्द्र मगल	ু ন ন ন	म स (ह म के के	केन्द्रे कि ए द्वितीयः २	3

112381

आरम्भ सिद्धेः

1123211 रविचन्द्रकुलैनींचे १ लेग्नेरो ठानुराशिगे २। निवींधे वापि जामिने ३ युवत्या निरपत्यता ॥ ३९॥ न्याएया—जामित्र सप्तम, स्वामिसौम्यप्रहयुतिदृष्ट्यभावकृतत्रावादिना निर्वायेत्व । अत्र त्रिमिः पादेखयो योगाः ॥ तथा—

" चन्द्रे युग्मस्थिते पापैहेप्टेऽन्यो योपितः पतिः । " इति तथा—

NY.
600
जामित्रेयाः पतिः स्त्रीणां श्वर्युरो स्तुभास्करौ । तेक्चादिस्यितैस्तेषां श्रेपः स्यादन्यदन्यथा ॥ ४० ॥
356

ब्याएग-अग्रुगविति सुगुः अधूः, रविः सञ्चरः, एकशेषे मञुरो । तैरति जामित्रेगायैः । उचादीति स्वोचे दीप्तः १ । स्वर्भे स्वस्यः २ । ||८

सुहद्गुदै सुदेतः ३ । स्वर्गंगः शाम्तः ४ । स्फुटिकिरणभूत् शक्तः ५ । स्यं नीचमतिकान्तः स्वीचाभिसुष्यः गभूद्वीयंः ६ । स्वांगस्यः नीम्येदेघी-ऽधियीसैः ७ । सूर्यहती विकलः ८ । सत्र्गृहे जलः ९ । प्रहाविजितः पीडितः १० । सीवक्षे दीनः १९ । इति छछ्रोक्तास्वेनाद्यसु प्रहावस्थासु

1123311

स्वेमयुत्रष्ट उच्यते। म मुणाभिति बरस्र ह्रष्ट इति सप्तर्श्यो यस्मङ्ख्योऽंश उद्यी तरसङ्ख्यः सप्तममृहस्यांगो यदि पूर्वेवत् स्वेमयुत्रष्टस्तरा स्त्रीणामिति कन्यायाः ग्रुभदः । विषयेय इति उद्यी कन्नांत्रश्चेत् स्वेत्रयुत्रह्षों न स्यात्तदा पत्युमेत्युः । सूनस्य तासङ्ख्य एवांशश्चेत् स्वेत्रयुत्हष्टों न स्यात्तदा वध्वा ज्याख्या-- लग्नेऽधिकृत बर्यी यो नवांशः स लग्नोदितांशः तक्षामा राशिषेत्र तत्र स्थितौऽपि चेस्वर्गामना युतो दघो वा स्थानदा लग्नोदिनांशः लग्नोदिनांशः स्वेशेन युतो दछोऽथवा स्पाम् । तद्रजामित्रमः स्त्रीणामिष्ठोऽनिष्टो विपर्यये ॥ ४१॥ गुभावरथे तेगं पत्यादीना । ४ न्यद्न्यथेति, आस्वेबावस्थास्बगुमावस्थैजांमित्रशज्ञकाकैः क्रमासेपां पत्यादीनामश्रेषः ॥ तथा---

इत्येकोऽयमुद्यास्तग्रुख्गोः प्रकारः । अन्त्रश्चान्ने वस्यते । उभावपि चोद्यास्तग्रीद्ध्यकारी विवाहरुग्नेष्ववन्यं प्राद्यी । भास्कर्रस्तु पञ्चमगुहे तावतियं अत्र तासप्तमांशे दिवति कोऽधैः ? लग्ने यावतिथोऽंश उदितः सप्तमभावस्य कलत्राख्यस्य तात्रतिथोऽंशो लग्नोदितांशाद्रणनया सप्तम प्रव स्यात् , "स्मिनि तत्प्रभुणा नवांरो, द्ये युते वोद्यशुद्धिरुक्ता । तत्तप्तमांरो तु कलत्रमाजि, स्वस्वामिनैवं कथिताऽस्तशुद्धिः ॥ १ ॥" मृष्युः । तत्यं भावः-एकः किलोद्यास्त्रग्रीद्धप्रकारोऽयं । यदुक्त यतिचल्लमे --

पुत्रनवांत्राक्तमपि स्वेत्रायुतद्दर्शिम्छति । भाह च-

=244 =244 =

लामेऽकारी द्युभा धमें अबिन्सो यदारी व्यानिः १। अधेन्द्रविक्रमे मन्दो रविलिमे रिपौ कुजः २॥ ४२॥ राङ्घः गुभग्रहेवेन्धुधर्मकर्मस्थिते भेवेत् ३। ध्वजः सौक्यैधिलग्नस्यैः क्र्रेश्च निधनाश्रितैः ।। ४३॥ क्रठारो भागेंचे षष्टे धर्मस्थेऽर्से हानौ व्यये ८॥ ४५॥ मुशालो (लं) बन्धुगे भौमे शानाबन्त्येऽष्टमे विषौ९ । न्याल्या---यद्यराविति ये ये ब्रहाः स्थानेषु नियमितास्ते ते तथा विलोक्यन्ते, शेपास्तु यथेन्छं । एवं सर्वेषोगेषु यथासम्भवं द्येयम् ॥ गुरुधंमें न्यये ग्रुक्तो लग्ने ज्ञंजनदा गजः५ । कन्यालग्नेऽलिगे चन्द्रे हर्षः ग्रुकेन्ययोर्मेगे६ ॥ ४४ ॥ " नायायुक्तक्षिता लग्नभायांपुत्रनवांशकाः । कमात् पुंत्रीस्त्रतान् घ्रन्ति मुत्रवीक्षिताः ॥ १ ॥ " घतुरष्टमगैः सौम्यैः पापैन्ययगतैभिनेत ७। च्यारया—कन्येति हर्पयोगे कन्याकन्नं नियमयन् ज्ञापयिते, अपरयोगेषु लग्ननियमः कोऽपि नास्तीति । हर्पयोगस्थापना— अय नवभिः स्रोक्षेः सर्वनार्यसाषाणान् प्रहसंस्थात्मकान् ग्रुभाग्रुभयोगानाह—

11233

मिश्रद्वारे हर्पयोगः

पश्चम विमर्धे

चक्रं च प्राचि चक्राधं चन्द्रात् पापशुभैः क्रमात्रि॰ ॥४६॥ ध्यक्या—माचि चक्राधे इति, उन्नास यावन्तोऽशा उदिताः द्यमस्य ताबद्धचोऽरोभ्योऽप्रे प्रदक्षिण गमने तुर्यस्य ताबद्धान् यावचकस्य प्राच्यमधै तत्र धुरि चन्द्रस्तसादेकान्तरं गृहेषु पापः शुभन्नति महसंस्थायां चन्नयोग । स्थापना--

12331

वापी पापैस्तु केन्द्रस्थै १योगाः स्युद्रविज्ञासमी ॥ ४७॥ क्रमीः पुजापर्थररन्ध्राटन्त्ये१ च्वारमन्देन्द्र भारकरें१११। ब्याख्या--कूमीयोगे स्थानानां प्रदाणां च यथासङ्क्यं सेयं १२सो श्रम् Eq W.

11842

'' तजुनवभवगैः क्रमेण योगो, बुघविबुघाचितपङ्गुभिगंजः स्यात् ।'' अत्र भवेत्येकाद्य रुद्रा इत्येकाद्यं गृहं लक्ष्यते । व्ययरिपुहिचुकेषु वक्षशुक्रसुमणिसुतैः क्रमशः कुठार पपः ॥ १ ॥ रत्नमालायां तु गजादिचतुष्फलक्षणमेवमूचे---

रविक्तिवरविनेन्द्रिमः क्रमेण, न्ययधनषड्निधनेषु कूमै पपः । न्ययनिधनतनूषु मन्दचन्द्रारुणिकरणेमुश्चलं जगुर्भुनीन्द्राः ॥ २॥ " एभ्यः श्रीबत्सपूर्वाः षट् पूर्वे स्वेषु कर्मस् । अयस्तमा घत्रमुरूयास्त्वन्यथा स्युः षडुत्तरे ॥ ४८ ॥

आनन्द्रुजीचर नन्दनर्जीमूत्र अजयपस्थरा हमृता७योगाः । ज्युक्सितैः प्रत्येकं द्विक्तित्रकेष्यापि लग्नगतैः ॥ ४९॥ "उद्यक्टमणे मम्मं १ नवपंचिमि क्रूरकंटयं भिषायं २। द्समचउत्थे सछं ३ कूरा उद्यत्थित छिदं ४॥ १॥ मम्मद्रेसिण मरणं कंटयद्रेसिण क्रळब्बओ हो । सहेण रायसन् छिदे पुर्न विणासे ॥ १॥ इति पूर्णभनः॥ न्याख्या—अविरसपुर्वा इति श्रीवरसाद्याः पट् पूर्वे प्रथमाः । अन्ययेति अत्यन्तमग्रुभाः । विशेषरतु—

ब्याख्या---काने स्थितेः प्रत्येक ज्ञाबैः क्रमेणानन्दादि त्रयं ३, ज्ञाुक्षम्यां जीमृतः ४, ज्ञाुक्काभ्यां जयः ५, गुरुशुक्राभ्यां स्थिरः ६, त्रिभिरपि

कप्तस्यैरमृतः ७ । हिकत्रिक्षेत्रोति हिका द्वयरूपाः, त्रिकाखयरूपाः ।

= 28 C

ब्याख्या—साम्राज्येति "सम्राट् तु शास्ति यो सुपान्"। भमी इति, कमात्त्रिद्वयेकमिता एककद्विकत्रिक्योगा. एवमेते सर्वयोगास्त्रयोषिशतिः॥ योगा यथार्थनामानः सर्वेषुत्तमक्तमस्त । ऐश्वर्यराज्यसाम्राज्यविधातारः कमादमी ॥५०॥

स्वधमहिये तत्र २-३-६-९-१०-११ क्षितिजर्षिजौ ज्यायिषुगौ ३-११-६। प्रतिष्ठायां अष्ठो रविकपचये २-६-१०-११ शीतिकरणाः,

1123611

बुधस्वग्योचायों डययनिधनवर्जों १-२~३-४-५-६-७-९-१०-११ भगुसुताः,

सुतं याब्छग्नान्नबमद्शामाबेदबपि तथा १-२-३-४-५-९-१०-११॥ ५१॥

अत्र पापा इति रम्यारशनिराहवी नान्ये, तत एकस्मिन्नपि मङ्गदृश्यानस्थे प्रहे सित रेखाधिकेऽपि लग्ने प्रतिष्ठा न कार्या, मङ्गद्रस्वं विना

लग्नमृत्युसुतास्तेषु पापा रन्ध्रे शुभाः स्थिताः । त्याज्या देवप्रतिष्ठायां लग्नषष्ठाष्टमः शशी ॥ १ ॥ "

ब्याख्या-सङ्गदास्वेवं त्रिविक्रमेणोकाः--

ध्युचिदिष्टेयु केपुचिद्निष्टेयु च सस्विप रेखाधिके डग्ने प्रतिष्ठा कार्यो । यसु कैश्चित् पष्टशन्ती प्रतिष्ठायां रेबाप्रद इखुक्तं तद्योगवतादेव नापरथेत्यू—

ग्रमिति त्रिविक्तमशतकटीकायां । नारचन्द्रे त्तम १ मध्यम २ विमध्यमा ३ घम ४ चतुभेद्री प्रहाणासूचे । तथाहि—

'त्रिरिपार वासुतखेर स्वजिनोणकेन्द्रेश विरैस्मरेऽत्राष्ठ नन्यर्थेष । लामे६ कूर१ बुधारिचतर भुगुष्ठ शत्रिष सर्वे६ क्रमेण शुभाः ॥१॥"

भासुतेति भाषात् पन्नम यावद्यानि स्थानानि तेषु । विरेसमरेऽत्रेति, स्वित्रकोणकेन्द्रैयांनि सप्त स्थानानि तन्मध्यात् रैस्मरेति द्वितीयसप्तमे

आरेन्द्रकाः सुतेऽस्तारिरिप्पे शुक्रास्त्रिगो गुरुः । विमध्यमा. शनिर्धीखे सबै शेपेषु निन्दिताः ॥ ३ ॥ "

'' खेऽकैः केन्द्रारिघमेंपु शशी बोऽरिनवास्तगः । पप्टेज्यः स्वनिंग. शुक्रो मध्यमा. स्थापनक्षणे ॥ २ ॥

लाज्ये, शेषपञ्चस्थानेष्निस्यर्थः । अनिनस्तृतीय, अर्थो द्वितीयं । अर्चितो गुरुः । अपि च—

रेखाषद्भ-

।२३५॥

	उत्तम	मध्यम	विमध्यम	भधम
संक	3-4-23	6	مو	1-3-8-0-8-6-6
the state of	2-3-11	01-2-9-3-8-6	5	21-2
मगङ	2-2-2	0	5°	26-08-8-2-8-2-6
झुध	9-2-3-8-4-9-99	8-9-5	0	6-95
गुर	16-01-0-5-h-8-2-6	ro.	m	26-2
20.45	1-01-2-2-8-1	W- C	4-0-6	v
यान	3-6-99	0	ەر 1-5-	4-4-8-0-6-6-6
<del>3</del> 5	4. 3. 3-5-99	き6-06-8-2-5-8-2	0	9-6

1183811

विमुष्टे विमुष्टे मिश्रद्वारे गतिष्ठायह संस्था

मासादभङ्ग१हानीरधनं३स्वजनध् पुत्रपोड्फांरपुद्याताः६। स्त्रीमृतिष्मृतिरधर्मगमाः९सुख्रशिद्धिशश्चोकाश्यस्तोः प्रमृति सूर्यात् ॥ १

पुणेमदस्तु महसंस्थाफलान्येनमाह—

रहनंर सुरगृहमङ्गोर भूलामोर रोगध पुत्रशस्त्रमृती५ । रिपुर नारी७ स्वजन८ गुणभंशा९ रोगा१० थे११ हानयो१२ मौमात् क्तेंबिनाश१ धनागम२ सौभाग्य३ द्रन्द्र४ देन्य५ रिपुचिजयाः६ । शशिनोऽमु**ख७ मृति८ वि**ष्ठा९ जुपकूजा१० चिषय११ वसुद्दानी१२

सिद्धिश्यनरमान३तेजःधस्त्रीमुख५दुष्कीतंयः६सुताप्तियुता । चैत्यादि सबैह्यानि७श्चामुख८ांमेतरेपु९-१०-११-१२ पूल्यता शुक्रात् ॥ ६

चिरमहिम? घन२ रिपुक्षय३ सुलध सुत५ परिपन्थिमरण६ वरकन्या.७ । शशिजोन सुरिमृत्यु८ वैसु९ कमो१० भरण११ रेनाशाः१२ ॥ ४ कीर्ति१ वृद्धिः२ सोख्ये३ रिपुनाशः४ सुतस्रुखं५ स्वजनशोकः६ । स्त्रीसुक्ष७ गुरुमृति८ धन९लाभ१० ऋद्धयो११ द्वानि१२रमरगुरोः ॥ ५

विमर्थे मिश्रद्वारे प्रतिष्ठा-लंभे वि-112361 नोत्रप्राणिविषक्ति ८ पातकपरिष्वङ्गो च ९ कायेश्रति: १०, कान्ताकाञ्चनरत्नजीवितधनं ११ मन्देन मान्द्योद्यः १२ ॥ ७ ॥ " तजुरवाधुरसुन५ चून७घमें बुर तिमिरान्तकः। सकमेसुर० कुजाकी च संहरनित सुरास्त्यम्॥ ५३॥ बलहीनाः प्रतिष्ठायां स्वीन्दुगुरुभाग्गेवाः । गृहेश्यशिष्णीरसौष्ध्यरस्वानिष्ठहन्युर्घथाक्रमम् ॥ ५२ ॥ ह्यहास्वाह—" बह्यनित सूर्यस्य सुते बह्यीनेऽद्वारके बुधे चैव । मैपच्यस्थे सूर्य क्षपाकरेऽचिहिती स्थाप्या ॥ १ ॥ " अध्युङ निसा रनिणो पण सिसिणो तिन्नि हुति तह गुरुणो । दो दो बृहसुक्ताणं सद्दा सिणिमोमराह्रणं ॥ १ ॥ ब्यास्या-चरुद्दीना इति, भष्टादश्यथा नवथा वाऽबलता प्रागुक्ता, यद्वा नीच ऋषुतोऽस्तमितो वा प्रहो विवल एव ॥ तथा— यूजा १ कहेंचियात २ भूरिविभव ३ प्रासाद्बन्धुक्षया. ४, पुत्राक्षेम५ विषक्षरोगविक्ठय ६ ज्ञातिप्रियान्यापद्ः ७ । वरुद्दीने त्वसुरगुरो वरुवति चन्द्रात्मजे विरुप्ने वा । त्रिव्द्यगुरावायस्थे स्थाप्या त्राह्मी तथा प्रतिमा ॥ ३ ॥ " वलहीने निद्रागुरौ वलवति भौमे निकोणसंस्थे वा । असुरगुरौ चायस्थे महेश्वराचा प्रतिष्ठाप्या ॥ २ ॥ वुघळग्ने जीवे वा चतुप्रयस्थे भूगौ हिबुकसंस्थे । वासवकुमारयक्षेन्दुभास्कराणां प्रतिष्ठा स्यात् ॥ ५ ॥ अस्मात्काळाद् अप्रास्ते कारकसूत्रधारकतेृणाम् । क्षयमरणवन्धनामयविवाद्गोकादिकतारः ॥ ७ ॥ " शुक्रोदये नवम्यां वलवति चन्द्रे कुजे गगनसंस्थे । त्रिद्शमुरौ बलयुक्ते देवीनां स्थापयेद्वांम् ॥ ४ ॥ यस्य प्रहस्य यो वर्गस्तेन युक्ते निशाकरे । प्रतिष्ठा तस्य करीन्या स्वस्ववर्गोद्येऽपि वा ॥ ६ ॥ " सकळकुण्डलिकासु विधुन्तुद्ः, शनिसमानफलो हि विचार्यताम् । " विशेषस्तु सवंग्रहे रेखाग्रदेः सर्वेकार्येषु विगतिविगोषकं लग्न स्थात् । तथाहि---"मेपम्गस्ये सूर्ये .........." इति केचित् पठनित । गुवं मीलने विश्वतिविद्योपा. ॥ प्रतिष्ठाळग्ने विशेषानाह---3330

च्याएया — तिमिरान्तकोऽर्कः । सकमेरिवति कुजार्की तन्वादिवह्वमस्थानपि । सुरालयं मालादम् ॥ भथ सर्वेशायं ग्रुभग्रहाणां निक्तिकमाह-"स्वर मित्रर स्रों३ चप्र मार्गस्थप स्वह मित्रवर्गगो७ दितः८ । जयी९ चोत्तरवारी चर् सुहत्र११ सोम्यावलोकितः१२ ॥ १॥ सौम्यवाक्तपतिशुकाणां य एकोऽपि बलोत्करः । क्रुरेरयुक्तः केन्द्रस्थः सचो रिष्टं पिनष्टि सः ॥ ५४ ॥ जिक्तोणाश्व यगतो लग्नात्र्रिध हमीरि७ वर्गोत्तमांशमः१८ । मुध्यिशिलं१९ मूश्रिपंतंर० यदि सौम्पैग्रेहेः सद ॥ २ ॥ सवैयोगे भवेदेवं वलानां विश्वतिष्रेहे । यावद्रलयुताः खेटास्तावद्विशोपकाः पत्लम् ॥ ३ ॥ " च्याएया--- चलोरम्ट बृति, ब्रहे किन बन् विश्वतिषा, तथाहि--हपीति कोऽधः! प्रहाणां तावधतुर्धां हर्षस्थानं, तथाहि--

गड्या । सची रिष्टमिति नारमालिकं रिष्ट्योगं । कोऽथ्धंः ! तरकाले यानि लग्नतिथिवाराद्गीनि स्युस्तेषां योगेनोत्पन्नो रिष्टपोगो मधुसर्षिषोः समसमा-प्पूचं प्रागुक्तमान्न गणितमिति त्रिधा हर्षित्वं । पूर्वोक्तेत्रावस्थासु शुभावस्थः पङ्बिधादिवङ्युक्तो वा बङी । प्वमन्यत्रापि सयसता निशि सार्य १ दिने २ योपित् १ पुत्रहैश्च २ परं क्रमात् ३ । तुर्थं न्योक्तस्तनुं यावनुर्य्याचाच्च सप्तमम् ॥ २ " गो९ ज्य ३ है ६का १ य १ ? थी ५ १ २ ६ था ना नि भास्करा दिष्ठ । हर्षे स्थान मित्रं पूर्वं १ सवेषु स्वोचा में परम् ॥ १ ॥ पुंगहेपु तनोर्यावनुर्थं सप्तमतो नभः । स्त्रीयहेषु मुद्रः स्थानं ४ फलं तद्तुमानतः ॥ ३ ॥ "

क्षिण्त्या तत्र क्रमशः तिथिरिपरिवरिय्द्यरिञ्चनीन्७ भजेन्नवभिः । शेषाङ्कः शरसङ्ख्यो यदि भवति तदा वदेन्निपुणः ॥२॥ कल्डरिक्यानुभीतिरभूपभयंश्वौरिवद्रवीधमृत्युः५ । क्रमशो भवेत् प्रतिष्ठा परिणयनाद्रै तदा रिष्टम् ॥शः इति उ्योतिषसाराद्रै । यदा—

12 % C

" उद्याहतलग्नीमिति(ति)सङ्कान्तेभुक्तिद्वसमितियुक्ताम् । सैकां च विघाय बुघः पृथक् पृथक पञ्चघा न्यसेत् ॥ १ ॥

योगेन विषयोगवत् तं। स चैतं--

" तिथिवारभऌप्राद्वान् सम्मील्य न्यस्य पञ्चराः । रसा६रामा३मही१नागा८वेदाधस्तेषु क्रमाद् धुवाः ॥ १ ॥

पञ्चम विमर्जे मिश्रद्वा**रे** 12361 पिनष्टीति जातकचूत्तावप्येवसुक् यदुत बुवगुरुग्रुक्षाणां बलौकिक्षेत योगक्तृप्रहोपि तेयां पुष्टर्ष्य्या च सर्वेषां ऐष्योगानां निर्वेकत्वसितीहापि ब्याल्या—अतिशयेन बलवान् बल्छिः रविविम्यायुत्तत्वादिना, इत्-स्वोच्चग इति च, गुरुग्ठुक्रयोर्गप योज्य । दोषातिति पाद्गतवेषक्रानित-साम्यायमाध्यदोपवित्रज्ञांनिति स्वयमुखं । अद्यीतिशतसहस्रश्वः बहुबहुतरबहुतमस्वमात्रकक्षकाः, न तु ययोक्तसह्ख्यानिधाः । ऐप्वीद्येषु सस्सु प्रतिष्ठादि ब्याख्या—विनाञ्चेणेति जिप्यप् योज्यम् । विमनोभवेषिवति सप्तमबर्जकेन्द्रेषु । सर्वेत्रेति चतुर्वंपि केन्द्रेषु । रत्नमालाभाष्ये तु विमनोभवेषिवति '' वक्तारिनीचराशिस्थः शुभक्रत्प्रोच्यते गुरु. । स्वोचांशस्थः स्ववर्गस्थो भुगुणा क्षेन वा युतः ॥ १॥ इति व्यवद्वारप्रकाहो । किंव्विष योजिनम् । तच विवाहदीक्षे अधिक्रसात्रापि सम्पग्योज्य, " विवाहदीक्ष्योठेग्ने यूनेन्दुयहर्वाजितो " इत्युक्तः । कक्षमिति, उक्तझ— जिकोणकेन्द्रगा वाऽपि भईं दोपस्य कुवेते । वक्रनीचारिगा वाऽपि इजीवभुगवः शुभाः ॥ २ ॥ ग्रुभाः इससायं भाव — बिछिष्ठः स्वोचगो दोषानद्यीति द्यीतरिहमजः । बाक्यतिस्तु यातं हन्नि सहस्रं चासुराचितः ॥ ५५॥ विशेपस्तु-रोपा. किल द्विषा-एमाकिनोऽप्येके रममुगन्ननित, केचिनु द्वित्रा मिलिलैय न्नानित, न त्येकाकिन,। ते चैव---क्षेप्यास्ततो ग्रहे ९ ममि पञ्चरोपे फलं कमात् । हजारिष्यरक्षितिमुरचौरभगंधमृत्युभगं ५तथा ॥ २ ॥ राशिपञ्चकरोषाणां योगे तु नवभिहेते । पञ्चरोपे भवेन्नागमीतिर्ङंग्ने निशासते ॥ ३ ॥ शुक्तः सहसं विमनोभवेषु, सर्वत्र गीटवरैणगुक्तु लक्षम् ॥ ५६ ॥ चुयो चिनांभेण चतुष्टचेषु, स्थिनः शतं हिन्त चिलप्रदोषात्। " तिथिवासरनक्षत्रयोगलग्नक्षणादिजान् । सवलान् हरतो दोषान् गुरुगुको विलग्नगो ॥ १ ॥ ॥ इति बुधपञ्चकदोष. ॥ श्रेष्ठमित्याद्ययः । एवमप्रेऽपि ॥ एवामेत्र केन्द्रस्थत्वे द्याक्तिमाह्---तथेंत्रोचे ॥ एपामेत तुहाने शक्तिकलमाह-

शेषाणां पोडिश पोडश घटयः ६० । अर्धयाम ६१ कुलिकी ६२ । महणम ६३ । महणदूषितहिनाः ६४ । लग्नाहा ६५ चन्द्राद्वा ६६ उमाभ्यां वा परम-ध्यापकचरकम्यानां जम्मगसिङ्ग्रामि १०, जन्मलग्नस्थामि १४, ताभ्यामेवाष्टमानि २२, द्वाद्यानि च लन्नानि ३०। तेषामेव शिष्याद्गीनां जन्मग्राधितो १४ जन्मलग्नाद्वाऽष्टमस्थत्रद्वाणां तास्काल्डिक्लम्ने मूर्तावनस्थानं १८। तेषामेन अन्मभानि ४२। प्रतिष्ठादिसम्बेकारपैलम्नेषु च मूर्रेमुक्त ४३ भोग्या ४४ जामित्रस्यः मृाप्रहः ६७, शुक्रो वा ७• । अशुभे वारहोरे युगपत् ७१ । अग्रुभस्थानेषु प्रहा. ७२ । मावशीसापि निपिद्धस्थानेष्वापतन्तो प्रहाः ७३ । लग्नस्य ७४ चन्द्रस्य ७५ उमयोरिप वा प्रत्येकमुमयतः पञ्चर्यात्रियांशमभ्ये क्राप्रहाविति क्राक्तंयैः ७६ । स्मनेगाः ७७ अंहोगाः ७८ उमा-दीभायां पूर्णिमा तिथिः १ । प्रतिष्ठायां मेगळवारः २ । प्रतिष्ठादी गुरोखन्द्रवर्लं न ३ । शिष्पस्थापक्षयोस्त जीवेन्द्रकेवळानि सम्रदितानि विलोक्यन्ते तानि न सन्ति ४ । विवाहे वरस चन्द्रबळं न ५ । यन्यायास्तु जीवेन्द्रकैयळानि समुद्रितानि विलोक्यन्ते तानि न स्युः ६ । शिष्य-ऽऽफ्रान्तमानि ४५ । महनिद्धं वा ४६, महमिन्नं वा ४७, महैस्त्या ४८ साम्गोन दूषितं वा ४०, वक्षमहामानं वा ५०, उत्कायुत्पातदूषितं वा भं ५१ । कप्त ५२ तिथि ५३ नक्षत्रगण्डान्ताः ५४ । एकागैक ५५ विष्टि ५६ व्यतिपात ५७ वैध्त ५८ फ्रान्तिसाम्यानि ५९ | सह्कान्तेरुभयपार्श्वयोः विष भावाष्छी ७९, तथैन भावाष्टमी वा ८२ । अनुक्ती नवांद्यः ८३ । चन्द्रेण ८४ कूरेण चाऽऽश्रितत्वेनाशुद्धं रूगंनं ८५, नवांद्यी वा ८७ । द्विःययगाश्चेत् कूराः १ सीम्यानां केन्द्रसस्थितिनं भवेत् २ । लग्नपतिदुष्युनो ३ भवेत्तदा लग्नमधुभाय ॥ ४ ॥ चन्द्रस्य मृतावस्था १ यमाहिरक्षोऽनिषाः क्षणो यत्र २ । अवम त्रिद्निस्गुग्वा ३ भवेत्तद्रा लग्नमश्रुभाय ॥ २ पापप्रहळता १ चेदुपग्रहः २ स्याद्वरायुषः पातः ३ । जात्वैवं त्रिभिरेतैभेवेत्तदा रुग्नमशुभाय ॥ ३ ॥ " पवां मध्यादेकेनापि हि दोषेण दूष्यते लग्नम् । द्विजेदाँपैमिलितेयँनै शुभ तानयो बक्ष्ये ॥ १ ॥ उद्या ८८ स्तयोरश्चिद्ध ८९ श्रंति ॥ 1158011

1380H

शुभदग्दीनं लग्नं १ प्रस्तिमं नो शुभेर्युतं दघम् २ । केःद्रस्थाश्चेत्र शुभा ३ भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ५ ॥ "

अत्र प्रसूतिभमिति, शिष्यस्थापककन्याद्यन्यतरस्य जन्मराशिः भुभैयुंतद्द्यो न स्यादिसर्थः

साध्य-दोषाणां अय ये एकाकिनो द्रोपास्ते द्विषा-साध्या अताध्याश्च । तत्र गण्डान्तविष्टिपरमजामित्रवेधाद्यो साध्याः, तेषु सत्मु सवैप्रहयकादिनानागुण-पश्यति, भन्तरे कृते द्वाद्या, एवमोकाद्याद्योऽपि वज्या द्वाद्याभ्योऽद्योभ्य उपरिस्थस्य तु कृत्य रष्टिनं दुष्टति भावः । कृतानपीत्यपिशन्दात् कृत्-असारीः--लग्न चन्द्रोऽन्येऽपि च प्रहाः म्बास्त्रांत्रांत्राह्मास्त्रास्त्रास्त्राह्माः स्पष्टीकादर्शः । ततो येप्रहेलेग्नेन्द्र दश्येते तेषां लग्नेन्द्रीश्र भुक्त-त्रितांताना विश्वेपे कृते चेत् द्वाद्य याबदुदरित ताबत् क्र्यिहो न ग्रुमः, सीम्यमृहस्तु ग्रुमः। यथा शतिविंशांशर्थो लग्न चन्द्र बाऽष्टमांतास्थं ब्याक्या—तनाविति मूर्निस्थोऽतिबलिष्ठो गुरुरेताम् दोषाम् हित । लग्नजातामिति "जनमरार्शि जनेलैंनं................ नवाशीत्थानिति अनिवक्तननवांत्रात्वादिना जातान् । क्रा्टिकृतानिति, उक्तं हि "स्थापने स्युविधी द्रष्टे युक्तं च " इत्यादि । तया सति---लग्नजातान्ननांशोत्थाम् क्राइष्टिकुतानिष । हन्याजीवस्तनौ दोषाम् न्याधीम् धन्वन्तरिर्धेथा ॥ ५७ ॥ व्ययगः सीरो १ नवमे पापलगः सद्ग्रहैनियुक्तः स्यात् २ । भृगुसुतयुक्तश्चन्द्रो ३ भवेत्तदा ळग्नग्रगुभाय ॥ ७ ॥ <sup>११</sup> " हन्ति यत दीपाणां याश्चिजः समुदायिनां हि केन्द्रस्यः । युक्तो हन्ति सहस्रं बली गुरुलक्षमेकं हि ॥ १ ॥ " " रविजीवो समरेखो शुद्धयां १ छप्रेशिप मध्यभावफ्छो २ । केन्द्रगती नो सौम्यो ३ भवेतदा ळग्नमशुभाय ॥ ६ " द्रोने यदि स्याद्शकाद्शक्तसध्यमः कृरः । इन्द्रोळेग्नस्य तथा न शुभः सम्बेषु कार्यपु ॥ १ ॥ " " एकोऽपि दूपयेहोप. प्रमुद्धं मुणसञ्चयम् । सम्पूर्णं पञ्चान्येन मद्यविन्दुर्घटं यथा ॥ १ ॥ " इत्येते समुरायिनो दोषा बुधगुरुशुक्षेः केन्द्रादिर्थेहैन्यन्ते, यदुक्तं व्यवद्वारप्रकाशे--ग्रतिष्ठाया श्रुक्रेन्द्रयुतिः श्रेष्ठा । तेन विनाहादानमं योगो योज्यः । ये तु साध्यदीपारतेषा प्रतीकार श्लोकद्वयेनाह-मझावेऽपि लग्न न ग्राद्यम् । यदुक्त---

13861

मिअद्यारे स्थापक्चरक्न्याना अन्मराशिल्ग्नानि १०, जन्मलप्तलप्तानि १४, ताम्यामेनाष्टमानि २२, द्वाद्वानि च लन्नानि ३० । तेषामेच शिष्यादीनां जन्मराधितो ऽऽज्ञान्तामानि ४५ । ग्रहनिद्धं या ४६, ग्रहमिश्च या ४७, ग्रहेस्ट्या ४८ स्तमाणेन दूषितं वा ४०, वक्षप्रहाज्ञान्तं वा ५०, उत्माणुसातदूषितं वा भं ५१ | छम्न ५२ तिथि ५३ नक्षत्रगण्डान्ताः ५४ । एकार्गेल ५५ विष्टि ५६ व्यतिपात ५७ वैधन ५८ क्रान्तिसाम्यानि ५९ | सङ्कान्तेरुभयपाश्चेयोः १४ जनमस्राद्धाऽष्टमस्ययदाणां तास्कालिकलम्ने मूर्ताववस्यानं १८। तेषामेन सन्मभानि ४२। प्रतिष्ठादिसम्बैकारपैकम्नेषु च क्रोमुक्त ४३ मोग्या ४४ विलोगयन्ते तानि न सन्ति ४। निवाहे वरस चन्द्रवलं न ५। कन्यायास्तु जीचेन्द्रकंबलानि समुद्रितानि विलोनयन्ते तानि न स्युः ६। गिष्प-दीक्षायां पूर्णिमा तिथिः १ । प्रतिष्ठायां मंगळवारः २ । प्रतिष्ठाद्रो गुरोखन्द्रवर्लं न ३ । शिष्पस्थापक्योस्त जीवेन्द्रकंबकानि सस्दितानि

||580||

पोडिश पोडश घट्यः ६० । अर्धयाम ६१ कुल्किनै ६२ । प्रहणमं ६३ । प्रहणदूपितदिनाः ६४ । कानाद्वा ६५ चम्द्राद्वा ६६ उमाभ्यां वा परम-

जामित्रस्यः कृष्यहः ६७, श्रुको वा ७• । अश्रुमे वारहोरे युगपत् ७१ । अग्रुभस्यानेषु प्रहाः ७२ । भावरीस्रापि निपित्रस्थानेष्वापतन्तो प्रहाः ७३ । लग्नस ७४ चन्द्रस ७५ उभयोर्रि वा प्रत्येकमुभयतः पञ्चद्राञ्जितांशमध्ये क्रुग्यहाविति क्राक्तंयैः ७६ । लग्नेगाः ७७ भेरोगाः ७८ उभा-विष भावाषष्ठी ७९, तथैन भागष्टमी वा ८२ । भन्नुस्तो नवांशः ८३ । चम्द्रेण ८४ ऋ्षेण बाऽऽश्रितस्वेनाश्चर्दं लग्नं ८५, नवांन्नो वा ८७ । उद्या ८८ स्तयोरश्रुद्धि ८९ श्रिति ॥

चन्द्रस्य मृतावस्था १ यमाहिरक्षोऽनित्यः क्षणो यत्र २ । अवम त्रिद्निस्गुग्वा ३ भवेत्तद् ळग्नमश्रुभाय ॥ २ ॥

" पपां मध्याहेकेनापि हि दोपेण दुष्यते लग्नम् । द्विनेदांपैमिलितैयंने शुभ तानथो वश्ये ॥ १ ॥

पापश्रहळता १ चेदुपश्रहः २ स्याद्ररायुधः पातः ३ । जात्वैवं त्रिभिरेतैभेवेत्तदा रूग्नमशुभाय ॥ ३ ॥

12%oH शुमदग्हीनं लग्नं १ प्रस्तिमं नो शुभेर्युतं दएम् २ । केन्द्रस्थाश्चेत्र शुभा ३ भवेत्तद्रा लग्नमशुभाय ॥ ५ ॥ " द्विःययगाश्चेत् कूराः १ सौम्यानां केन्द्रसिस्थितिनं भवेत् २ । लग्नपतिदुष्युतो ३ भवेत्तद् लग्नमश्चमाय ॥ ४ भन्न प्रमुतिभमिति, शिष्यस्थापक्षक्रन्याद्यन्यतस्य जनमराशिः भुभैयुंतद्द्यो न स्यादित्यथैः

पञ्चम विमर्जे मिश्रदारे साध्य-दोपाणां भव ये वृज्ञातिनो द्रोपास्ते द्विषा-साध्या भवाष्याश्च । तत्र गण्डान्तविष्टिषरमज्ञामित्रवेषाद्यो साष्याः, तेषु सर्वप्रद्यव्यादिनानागुण-व्ययगः सारो १ नवमे पापलगः सद्ग्रहेनियुक्तः स्यात् २ । भृगुसुतयुक्तश्चन्द्रो ३ भवेत्तदा ळग्नमग्रुभाय ॥ ७ ॥ " " हिन्त रात दीपाणां राशिजः समुदायिनां हि केन्द्रस्य । गुक्रो हिन्ति सहसं यही गुरुछक्षमेकं हि ॥ १ ॥ " " रचिज्ञीयो समरेखो शुद्धयां १ छन्नेऽपि मध्यभावफ्लो २ । केन्द्रगती नो सौम्यौ २ भवेत्तदा ळग्नमशुभाय ॥ ६ ॥ ' अन्स्यचत्रे लग्ने जन्मतिथिश्मांस प्य जन्माख्यः ३ । फाल्गुनमीनाक्युतिभेवेचदा लग्नमशुभाय ॥ ८ ॥ इस्पेते ममुरापिनो दोषा बुधगुरुशुक्रः केन्द्रादिस्पैहैन्यन्ते, यदुक्तं व्यवद्वारप्रकाशे--प्रतिष्टाया श्रुक्रेन्द्रयुतिः श्रेष्ठा । तेन विवाहादावयं योगो योज्यः । 1138611

ड्याक्या—तनाविति मूर्सिस्योऽतिबन्छिषे गुरुरेतान् दोषान् हित । लग्नजातानिति ''जन्मरार्शि जनेळेंनं............... नशाशीरयातिति अनिधिक्तननवाद्यासवादिना जातान् । क्रांदिक्कतातिति, उक्तं हि "स्थापने स्युचिधी द्ये युक्तं च " इत्यादि । तथा सति--लग्नजातात्रवांशोत्थाम् क्राइष्टिक्रतानिष । हन्याजीवस्तनौ दोपाम् व्याधीम् घन्वनतिरिधैया ॥ ५७ ॥ " द्रोने यदि स्यादंशद्वाद्यक्तयध्यमः कूरः । इन्द्रोळेग्नस्य तथा न ग्रुमः सम्बेषु कार्येषु ॥ १ ॥ " " एकोऽपि दुपयेहोपः प्रमुद्धं मुणसञ्चयम् । सम्दुणं पञ्चान्येन मद्यचिन्दुर्घेटं यथा ॥ १ ॥ " ये तु साध्यदोपारतेगा ग्रतीकार श्लोकद्वयेनाह---मन्नावेऽपि लग्न न ग्राह्मम् । यहक्त-

अस्यायी.-- लग्न चन्त्रीऽन्येऽपि च प्रता म्बन्विनांश्वाहर्यास्तास्मालिकाः स्पृष्टीकारक्षीः । तती प्रमहेल्येनेन्द्र दश्येते तेषां लग्नेन्द्रीक्ष भुक्त-न्नितावाना बिछेपे कृते चेत् द्वान्य याबदुद्रानित ताबत् कूर्याहो न छाभः, सौम्यप्रहस्तु ग्रुभः। यथा श्रमिविंगांबास्थो लग्न चन्द्र वाऽष्टमांबास्थ

पश्यति, भनतरे क्रते द्वाद्म, एनमेकाद्मात्योऽपि चउ्यो द्वाद्माभ्योऽद्योभ्य उपरिस्थसा तु कृत्स दष्टिनं दुष्टेति भावः । क्रतानपीत्वपिमाट्यात् कृत-

1138E11

115821 क्षेत्राणि च शुभग्रहेरेवाधिष्ठितानि श्रेयांसि, न तु शून्यानीति भावः । सिब्रहिताश्रेति, देवता प्रतिमायामवतिष्ठते इत्यत एवंरूपे कम्ने प्रतिष्ठा कार्येति ब्याएया — सप्तमवर्षेक्षेन्देषु त्रिकोणे वा स्थित: शुक्तः । क्राचन्द्रेरिति क्राक्षनद्रश्रेति स, क्रामहाः प्रतिष्ठिवादिकाने त्रिपदायगता एव शुभा, सस्यार्थः.—कतुः प्रतिष्ठाकागियतुः श्रावकस्य दीक्षणीयस्य दीक्षादातुर्धुरोवां जन्मनि नामिन वा यो राशिस्तरस्वामी पापोऽपि केन्द्रस्योऽपि शस्यते, (ष्टिः पुष्टाऽम्यूझा । यदि च तस्य क्रास्य सीम्यजीवासितैः सह मेत्री नैसरिंगकी तात्कालिकी वा स्थानदा दृष्टेरिकतारो विशेषः । केन्द्रत्रिकीणस्थिरिति ब्यास्या—िनन्धेति, उक्तं दि-" ज़िष्वपि क्रुरमध्यस्थो " इलादि । "भवेज्ञानानि जनमक्षति " इलादि । "शनिस्त्रिकोणकेन्द्रस्थ " हस्यादे । "रविः कुजोऽक्रेजो राहुः" इत्यादि । "तनुवन्धुसुतद्यून" इत्यादि च, तेषां तेषां दोषाणामपवादोऽथं। दृष्ट इति च, सामान्योक्तेऽप्यत्र लग्नात् भूरो न दोषाय निन्यस्थानस्थितोऽपि सत्। दृष्टा केन्द्रत्रिकोणस्थैः सौम्यजीवसिनैयदि ॥ ५८ ॥ युतिक्रता भिष दोगा इह लक्ष्याः। उन्हे हि-" दीक्षायां कुरुते चन्द्रः" इत्यादि । ब्याधीनिति यथा तनौ नारीरे धन्वनतिरमाषीन् इनित " क्र्रा इवन्ति सोमा सोमा हुगुणं फलं पयच्छन्ति । जइ पासइ किंद्ठिओ तिकोणपरिसंठिओ वि गुरू ॥ १ ॥ " इत्यत्रापनात्रोऽयं—'' पापोऽपि कतुनन्मेशः केन्द्रस्थः शस्यते श्रहः । अश्र्त्यानि च केन्द्राणि मूतों जीवक्षमार्गेवाः ॥ १ ॥ '' पर्यकंशाधिपो लग्नं भवेदुद्यशुद्धये। अंशास्तेणशस्तु लग्नास्तमसाशुद्धयै विलोकयत् ॥ ६० ॥ स्युः कूरचन्द्रे रिपु६चिक्रमा३य११गैः, कतुः श्रियः स्निहिताश्च देवताः ॥ ५९ ॥ भावः । इह प्रतिष्ठोहेरोनोक्तं परमीदशी प्रहसंख्या सन्वैकार्येषु सिद्धिदेति चैयम् ॥ अयोद्याखशुद्धी प्राह— जिनोणकेन्द्रायगतैः शुभग्रहेविसप्तमेनासुरप्रजितेन च। उपलक्षणत्वात् स्त्रोच्नगत्वादिना बिष्ठिनेरोरिति भावः । जीवेति, वक्तञ्च--मुभमहाणां दष्टेः वास्तिमाह— गुमग्रह्मेंखां सङ्ग्लयनाह—

व्याख्या--भंशाधिप इति, अशशब्दैनात्र समैत्र नवांश एव प्राद्यः, तत्रैव झुद्यासञ्जुद्धी भन्वेष्ये, ''प्रभूरिह नवांश '' इत्युक्तेः, न तु आन तदीशश्रे छप्तापेशयाऽस्तं सप्तमं गृहं पश्येतदाऽस्तश्रदिः । इयमत्र भावना-किल कक्ष्यास्य तृनीये कन्यानवांशे गृद्यमाणे चेन्नवांशाशिकन्या-उद्यास्तस्य च यदि ह्येः श्रुद्धिभेने द्विलग्नेऽत्र । कान्ताया मङ्गत्यान्यतमूनि तनौ प्रजायन्ते ॥२॥" '' उद्यास्तांशत्र्यारन्यराश्योरपि विलोकने । योगेऽथवा परे प्राहुकद्यास्तविशुद्धताम् ॥ १ ॥ " श्रीहरिभद्दरयोऽप्गाहः—'' उद्यत्थसुद्धिमिर्णिह भणामि उद्यो नत्रसाो इत्थ । तिमे अ लगाविहण्णे सनाहृदिहे उद्यसुद्धी ॥१॥ " द्वाद्यांशत्रियांगेषु । उद्यग्जद्वे, इत्यत्र ताद्ध्ये चतुर्थां, एवमप्रेऽपि, तत उद्यिनवाशेताः स्वस्थानस्थो कम्ने पश्येतदोद्यग्जद्धिः स्थात्, कप्तदीक्षणे ग्लुन्यं तद्। ळग्नं यद्। स्वामी न पर्यति " इत्युक्ते. । अंशास्तेश इति, अस्तं सप्तम ततो ळग्ने यद्राधिनामा नवांशस्त्रसाद्राधितो यद्स्तं सप्तमं थानात्सप्तमस्थानस्थस्य मीनराशे. स्पामी गुरुमेंपबृश्चिक्रच्यातुङ्मिधुनकक्षांणामन्यतमस्थः कक्षेक्रनात्सप्तममकरराशि पर्येत्तदा कक्केक्ष्मे कन्यानवां-ास्यस नवांग्रस्थापि तद्पृयम्भूतत्वेन वीक्षणभवनादित्यर्थः । अंग्राधिप इत्युपलक्षणं, तेन पुच्छादिलम्बेषु रुम्नेश एव रुभ्नं पश्यम् विछोक्यते, "शिरः "अंशाधिपतेहिष्टिर्यदांशकेऽशास्तपस्य भागास्ते? । भागपतेळेग्ने चाऽप्यास्तपतेविळग्नास्ते२ ॥१॥ विलोकने इति, स्वस्वामिभ्यामिति शेष । योगे इति, उद्यासाशाख्यराश्योः स्वस्वाम्यथिष्ठितयोः ोऽस्तछ्रद्धिः । एवमन्यत्रापि भाष्या (ब्य) । अन्ये त्वाहुः—'' ळग्ननवांशसममामा राशियेत्र तत्रस्थः स्वेशद्दछः स्यात्तदोद्यग्रुद्धिः स्यात् ''ा सतोरित्ययः । इह चोद्यासज्जुद्ध्यधिकारे दृष्टिमात्रेणैव कार्यं, तेन पुष्टाऽपुष्टा वा दृष्टिरिति बिशेषो नान्वेष्यः॥ सस्रोदाहरणं यथा—मिधुनरुग्ने मीननवाशे गृद्धमाणे तदीशक्षीवेन मीनरात्री दष्टे सस्युद्यशुद्धिः, एवं सब्बेन्न । स्थापना यथा— विवाहेषु द्वयोग्रौह्या विश्वद्विरद्यास्तयोः। प्रतिष्ठादीक्षयोस्तावानस्तश्चद्वौ तु नाऽऽग्रहः ॥ ६१॥ व्यवहारप्रकारी खेतस्प्रकारद्वयमपि बहु मेने । तथाहि---यतिबद्धमे खेबमप्यसि—

उदयोऽस-

18831

ग्रशीनामुद्-मिश्रदारे भथ प्राग्ने तस्त्रयांवादी च गुणदीवचिन्तां कृत्वा, तिर्गतिऽपि तस्तमयः कदा समेतीति लग्नात्मायमं वस्यते, तम्रादी लग्नामां मानमाह-ग्यास्या--मध्य इति ''हिमचह्निन्ध्ययोमीध्य'' मित्याहिनिवण्हक्ते मध्यदेशे एते एते रालय उद्यन्ति आनित, इयितिपिन्नः पक्षेर्वत्याः कामकी डाच्छन्दः । ईदगस्य पलप्रमाणमृत्तस्य पष्टिवारान् पठने बटी स्वात् । ननु द्वतं द्वतवरं मन्थरं मन्थरतरं वा पलप्रमाणमृत्तस्य पठन-सम्भवात् कथमिद् पत्नमानं न विसंवद्ते ! मेवं, भद्रतमन्थरं मध्यमगत्था पठनस्यैवात्रेष्टत्वात्, सर्वंब्यवहाराणां मध्यममानेनेव छोके प्रवृत्ते । प्रमिक्षि-क्षार्थनां खेवं वा वाच्यं–सङ्गीतशास्त्रशसिद्स्य पद्यमाठ्कतालस्याविच्छेदेन चतुविंशतिवारान् हस्तमुसाभ्यां सम्यगुद्घष्टने सन्वंथाऽप्यविसंवादि जलपक्षमेकं स्याख्या--प्राह्मेत्याचर्यके च्यण्, भवर्षमाश्रेत्यथैः। नामह इति, उद्यमुद्धिस्तु सर्वकार्येल् विलोग्यत ज्वेत्यायायः। भ्रीहरिभद्रत्मर्यस्पाडुः---मध्ये मेषझपौ पलैभंनयनै २२७मितङ्गनच्बै२५८र्धेषः, कुम्भो वा मिथुनः पुनर्मकरवत्ताक्षोभ्रधूमध्वजैः ३०६। चन्द्रश्वेतऋोकः स्याद्वाद्मामाब्दो लोकाच्या, चीतापायः शान्तो लोकेभ्योऽसङ्ख्यं सीख्यं देयात् ॥ १ ॥ " " वयगहणपश्कास उन्यत्यिमिस्बिनिस्विनिसं पि सुहं। मजंति केह लग्गं तं च मयं बहुमयं नेयं ॥ १ ॥ " " देवः श्रोसर्वज्ञो चिश्वश्रीशः सिद्धिस्त्रीकान्तः, कामद्वद्रोह्याग्निमायादोषाभास्वान्नीरागः । अस्यार्थः---लद्भाया उद्या लग्नाति विनाड्यः पलाति, ततो लङ्कालग्नपलमानानां क्रमोत्क्रमेण स्थापनेयम्---मेषादिषण्णामुद्याः स्वदेशे, तुलादितोऽमी च पहुत्क्रमस्थाः....... '' लद्भोद्या नागतुरङ्गदस्ता२७८, गोऽङ्गाभ्यिनार्९९ रामरद्ग ३२३ विनाड्यः सादिति । ताकस्य स्वरूषं तदुद्घटनिधिश्च संगीतशास्त्रवेदिनां मुखाञ्झेयः । भनयनैरिति, भन्नायं सम्प्रदायः— कमोत्कमस्याश्चरखण्डकैः स्वैः, कमोत्कमस्यश्च विद्यीनयुक्ताः ॥ १ ॥ पष्टिमागरूपेः, परुमानं च पष्टिगुन्नेश्नरेः, तथाहि---

पञ्चम विम्यूँ सिश्रहारे स्वस्वदे- च्याय च्या	ા રક્ષ્ય,	
\$C\$	C 4 4 7 4	7
प्रस्य एवं "अयनत्वेवे " सादिक्रणाञ्जराह्नस्वाह्म विस्तान क्ष्मानाम्यायाति । सा गीतिक्षेयं—  "अयनत्वेवे " सादिक्रणाञ्जराह्म ति विस्तमध्ये या प्रभाव्यक्षिणाम्यायाति । सा गीतिक्षेयं—  "अयनत्व्यक्षिण न्द्र क्षम स्वर्ण क्षम स्वर्ण प्रमाविक्षेत्र स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्	तत एतः सम्भूतान त्रह्वालग्रानि पत्तनाथानि न्यान म्युरसाह्म अभिनद्गौर्जरपत्तने त्वज्ञझषौ तत्त्वाक्षिणि ६२५ गोघटौ, स्पर्भः श्रीत्मश्चः ते । स्थिति ॥२४९ वर्ष्मान्ते । स्थिति ।	
कङ्कालक्षपलमानम् ।  मेप २७८ मीन  स्प २०९ झुरम्  किंके ३२३ धन  सिंक २९९ सुश्चिक  पा-४१-१९८ सुश्चिक  पा-४१-१९८ सुश्चिक  पा-४१-१९८ सुश्चिक  पा-४१-१९८ सुर्विक  पा-४१-१९८ सुर्विक  सुर्वेशक्षप्रपलस्थापना ।  मेप २२७ मीन  सुर्वेशक्षप्रपलस्थापना ।  सिंहन २२६ सुरम्	तिर १४० य्वित कम्या १२९ तुला	
100-100 400 400 400 400 400 A	ON WOLW	7-5
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	マーショー	<u>∵</u> ≃
आरम्भ सिद्धाः ॥२८५॥		

स्तिती क्ष्मतिक्ष्मी हमातिक्षामीतिक्षामीतिक्षमित्वा । विश्व ।	\$\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2}\frac{1}{2	次分次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次次	Sec   Sec
स्ति क्ष्मातिश्वाचेश्विद्धिवद्धिवद्धिवद्धिवद्धिवद्धिवद्धिवद्		क्षांतामां मानं कि—- अक्षां ६ ३२ १९ ३२ १९-२२ १९-२२ १९-२२ १९-२२ १९-२२ १९-२२ १९-२२	0 19
ह्याक्या—उद्यं याह तां उद्यपक् मानं होत स्थापना । मानं होत २२५ मीन लिख्यते, २५६ कुम्भ १४१ धन १४१ घन		द्वाद्यांयानां मानं जिं पळसक्षर २१-२० २५-२५ २६-३० २६-३५ २६-३५ २६-३५	58-26
ह्याक्या—उद्यं वाह स्थापना । मानं होत स्थापना । मानं होत २२५ मीन स्थिक १४६ कुम्भ १४१ धन १४१ धन	नेक्तैः ३४२, दयः ॥ ६३॥	मनांशामां मान् नदि-भक्षार्क्ष्यम् २५ - २६ - २६ - १६ - १६ - १६ - १६ - १६ - १६	* *
ह्याक्या—उद्यं याः तां उद्यपक् मानं होः स्थापना । मानं होः २२५ मीन लिख्यते, २५६ कुम्भ १४१ धन १४१ धन	सहो द्विचेद्दि ग्निति मेषा <sub>यन्ते । स्थापना</sub>	दिक्ताणानां मानं पक - अक्षर ८५-२० ११०-२० ११०-२० ११०-२० ११९-२० ११०-२०	5° 9
ह्याक्या—उद्यं वाह स्थापना । मानं होत स्थापना । मानं होत २२५ मीन स्थिक १४६ कुम्भ १४१ धन १४१ धन	ज़िदलिमिति बिदुदर्भ य मिल्हास्युद्धी	सेराणां मानं पक्ष-अक्षा १५२-३० १६२-३० १६५-३० १६५-३० १६५-३०	
ह्याक्या—उद्यं याः तां उद्यपक् मानं होः स्थापना । मानं होः २२५ मीन लिख्यते, २५६ कुम्भ १४१ धन १४१ धन	कायै३४१ धेन  कौ३३१ स्तुला के: फैरेतान्येता		
11 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 1	याः	मानं सिन्ह	
10° CC 10° 1	•नाक्ष्मा—	कप्तानां उद्यपक- स्थापना । मेप २२५ मीन सुप २५६ कुम्म मिधुन ३०५ मकर कर्क ३४१ धन सिह ३४२ सुभिक कन्या ३३१ तुटा	

आरम्भ सिद्धेः ॥२४७॥	\$ 9.00 B. G.	र्    विशेषस्1—"रेबस्युद्याद्श्व्यादीन्युद्रच्छन्ति ज्ञञ्चपलै: क्रमशः । चित्रान्तान्यृतुनन्दे९६द्विखकपै१०२रप्प्रखांचनिभिः १०८ ॥ १ ॥   श्रम्ककुभिः११५खद्विकुभि१९०र्थुेगगुणकपै१३४थैस्द्विम्गाङ्कैः १४८ ।   श्रीशपञ्चकुभि१५१खिश्वरक्ष्माभिः१५३कर्त्विषयवसुधाभिः१५२ ॥ २ ॥   श्रीप्रक्रिमि१५३रप्रयाकिभिः४८रगचनरेक्रैः१४९पत्रचित्रक्रिश्वर्थि	रप्टखांचनिभिः १०८ ॥ १ ॥	**************************************	पञ्चमः विसर्धे मिश्रद्वारे
	>54-45-45-45-45-45-45-45-45-45-45-45-45-4	वं तं स्म हैत स्माप्त है से से अस्थायामें नवक्स्यावमा ।	पटिति महस्राणामुद्यपळसंखा	<u> </u>	मङ्गान्यो. रन्तरालेखेः स्तिष्ये- सानम् ॥ सानम् ॥
	بي و يودون و المودود	भू सा १९० इ.स. सङ्काना मान । मयाकं स्पष्टिमत हादमामह्मान्तीनामन्तराळघटीराह— १४६ कि.स. स्ट्रिस ।	<sup>डोराह</sup> — डम्बेबुभि५ ७— २भै१७स्तथा ।	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	।!୧୪७ <b>।</b> ।

11282H मिथुनमान पर्ल ३०५, कक्स्यादानवांबाद्वयपलानि ७५ अन्तर ४६, अर्घाधिकत्वादूपप्रहणे पर्ल ७६ मीकने पर्क सज्बलनेति त्रिशता गुण्यन्ते, स्वान्तरभुक्तिः सङ्फ्रान्त्यन्तरानाहिकाश्चेत्येकोऽर्थः।ततः स्वकीययाऽन्तरभुक्ता भागं भत्रोत्राहरणं यथा-विक्रमसंवत् १५१२ वर्षे वैकालग्रुक्कपप्तम्यां ७ सोमे पुष्ये, मेपेऽकीगमनाद् सप्तद्ये दिनेसाबद्वादरसुरयाऽभेण मेषस्य १६ त्रिशांशा भुक्ताः, शेषाः १४, तरपळसङ्ख्या १०५, सुषमान पळ २५६, दिने कक्रमम् कन्यानगंतो गुद्धमाणोऽस्ति, तरानी मेपमहक्षान्तेगंतघट्यः ९९४ | कथ ! किञ्चिर्धिक १६---इति, मैपगुषमङ्कानयोगन्तराले धति। ८१मेषुभिः ५ समिनिता, कोऽथैः १ अष्टाद्य नताति सप्तपञ्चामयुनाति घटीनां म्युरिलथैः । एनमग्रेऽपि । अथ द्स्वारंत्रकलाविकलारूपं त्रिस्यं फलं प्राह्मम् । गनगतीति यात्रनतो गात्रयोऽर्रेण भुक्ताः स्युत्तदद्व उपरी देयः, ध्यारया--सद्मान्तयोऽकंस्प हाद्माराशिषु तासामन्तरे नाड्य एतावत्य एतावत्यः ग्युः । ध्यत्यधि। अष्टाद्मसप्तरम्यी छन्दोनाती । मेपादित व्याख्या-- गतनाडि गाभ्य हानि, इष्टकाले वर्तमानार्केनङ्घान्तेयांवस्यो घट्यो गताः स्युः ताः सर्वाः सम्मील्य, भागादिभिः खान्तरभ्रिक्त उब्धे, राह्यादिकं स्याद्गतराशियुक्तैः॥ ६६॥ स्फुटोड्य भानुगंतनाडिकाभ्यः, सङ्कानिततः खड्बलना ३० हताभ्यः। सप्ताङ्गे६७मिषिकुझरे८९रथ धृति१८अन्द्रेक्षणैअ२१कमात् ॥ ६५ ॥ अस्वष्टिश्च '७समन्विता ज्ञिनवितः १३ खेटतुभि.६९ वर्तुभिः ६º, एच राद्याद्रिकं इति राद्यंगकलाविकलारूपोऽकः स्फुटः स्यात् -अथ भानुयोग्यं स्रधीक्तुंमाभिभानीः स्पष्टीक्राणमाह---सर्कान्धनमञ्जूकीमां स्थापना --तुन्। वृश्चिक

पञ्चम विमर्जे मिश्रद्वारे सायनां-शाक्रे-भोग्यम् ॥ ७४२, पष्ट्या भागे ळन्ध १२, एता छप्रदिनस्य घट्यः, (शेष षळ) २२ । मेषसङ्कान्तिदिनशेषघट्यः २२ । सङ्क्रान्तिदिनकप्रदिनयोरन्तराले दिन १८५७ घटीहरपया भागे सन्धं १६ भागा अंद्या इत्यच्युच्यन्ते (ते) । शेपं १०८, तत्। ६० गुणने २२ झेपे च जातं ६५०२, पुनः १८५७ भागे १६ तद्घट्याः ९६०, समैमीलने जातं गरंघट्य. ९९४, पलानि १२, "गतघट्यः"३० गुणिताः, जात २९८२०, भासां मेषघृषसङ्फ्रान्यनताभुनत्या

लाभिरंशादिकोऽकं. म्फुटोऽभूत् । गतरात्रियुक्तेस्युक्तेम्ब्याद्मिङ्कान्तियु गतराशयः प्वै किष्यन्ते तदा राज्यादिकोऽपि सात्, इह तु भुक्तरातिरि-कोऽपि नास्ति, तेन राशिस्थाने शून्य देय, जात. कार्यवेकायां स्फुटोऽकैः–राशिः•, अंशाः १६, कछाः १, विकछाः ३० ॥

लज्य ३ कलाः, शेपं ९३१, तद्पि ६० गुणने जात ५५८६०, तस्थापि १८५७ मागे लज्य ३० विजलाः, शेषं १५० त्यक्तं, इति भागकलाविक-

कथ स्फुटाकांस्तायनांशाक स्पायमानयति--

गणितविद्रपदेशातत्र दन्वाऽयमांशात्, पुनरिप भगणार्धं ६ रात्रिलभ्रे तु दद्यात्।

व्याक्या--तत्रेति स्फुटाकेंऽयनाशान् युनापि भगणाखद्वपीयाः क्षिप्यन्ते, अयनांशानित्येवोक्तेऽपि ककाद्यपि लभ्यते, तासां तदंशरूपावात्, पुनं अथ हत उदयक्तिभैरतशेषे हेवाचै-कपरि च खगुणा ३०प्तः स्यात्पत्तातमा कैभोग्यम् ॥ ६७॥

सन्जैत्र । युनरपीति, अथ चेद्रान्निटभ्नं स्थातदा युनभंगणार्थं पट्करूपं राशिमध्ये क्षेप्यं । अथ हत इति, पुनं कृते उपिर यो राशिरागत: स भुक्तः, वस्तु तद्ग्रेतनो साक्षिः स उद्य उच्यते, तन्मानं परुरूप त्रिः स्थाप्यते, अधक्ष या अंशककाविकका सन्ति ता भुक्ताः, ताभ्यः शेषा या अंशकका-

विकला: सिन तामिसछ्यमान त्रि-येस्तं च क्रमार् गुण्यते, अधोऽद्वयोः षष्ट्या भाग द्वां द्वां द्वां उपयुंपिर क्षेपे योऽङ्क अर्धं स्वानस्र सगुणेति त्रियाता

मागै यह्नभ्यते तस्तकासकमकंभोग्य स्यात्, उद्धत्तिङ्गस्य पष्ट्या सङ्गुण्य त्रिज्ञता मागेऽघोऽक्षराण्यप्यायान्ति ।

अभोदाहरणमन्नित्तयते-अयनाशानयने ताबद्गणिनविन्मुपदेगोऽयं—वैक्रमाद्गोस्रवाणा५७९व्दात् गाकात् अब्ध्वब्धिधधध वर्षादारभ्य अडिधरासम्बर्ध १४ १४ इस्ति यावत् प्रतिवर्षमेका कक्षेका विक्ला विश्वतिः पर्माविकलाश्च वर्षन्ते, पष्ट्या कलाभिरयनांश.। एवं १४०४ वर्षे

15861

तद्भुक्तेन लवादिना तदुदयः श्चुपणो हृतिस्त्रियाता, भास्बद्धोग्यवदान्नरोदययुतः कालः पलात्मा भवेत् ॥ ६८॥ २८, कला: २२, विकला: ३० । एते: क्रमास्त्रयोऽपि रागयो गुण्यन्ते, जांतं ७१६८-५६३२-७६८० । क्रमात् ६० भनता द्रध्वेमुच्वे सेपे जातमु-अथात्रोदयो युपस्तापळमान २५६ त्रिः स्थाप्यते, यथा-२५६, २५६, तप, ततः सूर्यः भुक्तादंशादेरपेक्षया शैषमंत्राधुत्पाधते, तमेद-अधाः बहुज्योतिविंदां सम्मतं, ततोऽस्मामिरिष तदेवात्राहतम्। तथा च १५१२ वर्षे १५ अंताः ३४ कळाश्रायान्ति, इदं स्फुराके शिस जातं भागा पुकर्तिगत् कलाः ५३, विकलाः ४४ । इद् १५१२ वर्षेऽयनांत्रपरिमाणं सूक्ष्मेक्षिकयाऽऽयाति, परं प्रत्यन्द्रमेकैव कला किञ्चिद्धिका वर्धते इति स्यूलमानमेव ११ कला: ३७ विकला: ३० । ततो राशिस्थितादंशमानस्याद्यमांशापेश्रयाऽकेणालिलोऽपि मेपराशिभेत्तः युपस्य चैकोऽ'शः ३७ कला: ३० विकलाश्र रूपः, ससात् ५७९ कर्षेणे जातं ९३३, इदं त्रिन्येस्य फ्रमात् १-१-२० अङ्गेरीण्यते, पष्ट्या पष्ट्या भक्त्वा अक्ता उपशुपिर चटापने जातं औताः १५, ५५ कला: १२ विकलाश्र वर्धन्ते ब्रायनांगगृष्टिरिष्टा, पुनस्तेनेव क्रमेण दीयमानास्ते तावन्निरेवा १४०४ व्हेनिलंपीभविष्यन्ति, प्वं पुन पुनस्तद्गुषि-ब्याख्या--चेत्राष्ट्रिः किल बाकाव्दः स पञ्चत्रिजीत्तरशत ११५ क्षेपे वैक्रमान्दः स्यात्, स चापाढाष्टिः सविक्रमान्दः स्थाप्यते, स चाप्र १५१२ "भाषाडे विक्रमं नन्दसतेषु ५७९ नं त्रिघा कु १ मूं १। नखे २० निंन्नं भजेत् पष्ट्या कन्धे स्युरयनांशकाः ॥ १॥" इष्टाद्भुक्तनवांशकैद्शागुगैस्त्याप्तैलेवांच फलं, लग्नं सायनसूर्धंराशिसहितं सैकपष्टन्यंशकम्। परि ७२६४, अस्य ३० मागे लब्धं पकानि २४२, इदमकंमोग्यमम्रे उपयोध्यते हत्यतः स्थाप्यम् ॥ ६७ ॥ " अयनांशाः सदा देया लग्ने फान्तो चरागमे । " इष्टकाले चायनांशानयनाय करणिदस्— हाती भाग्ये, एपां च छम्रे फ्रान्तिमाम्ये चरानयने चीपयोगः । उत्तच--भुक्ता इत्यागत, स्थापना १-१-१-३७-३०, भयं सायनोऽकैः। भषेष्टळप्रभुक्तानयनेनेष्टसमय स्फुटीक्तुंमाष्ट— । कुभूनखिशिति समस्त श्रेयम्

Paroll

मिति तदेव रुप्ने श्रेयम् । तच्च सायनमूर्ष्वमतीतराशियुत च झत्वा एकः प्रमुत्पशीऽधिकृतनवांशसस्मित्रमागरूपो मध्ये देय.।धतुरशे तु प्रतिष्ठाविवा-न्याख्या — छन्ने यो नवात इष्टोऽस्ति तम्माद्वांग येऽबास्ते द्वागुणीकृत्व त्रिमिभैज्यन्ते यह्यन्धमंशकळाविकलारूप त्रिस्थं फलं स्वात् । जन्न-मकैमोग्य भिष्यते । तथाऽकांक्रान्तराशिर्षष्टलग्नस चान्तराले यावनित लग्नानि स्युस्तेपां मानानि पलङ्पाणि तन्मध्ये क्षिप्यन्ते । एव कृते योऽझः हयोगुँधमाणे नवाद्यत्रिभागस्यार्थं क्षिपेत्, तत्र भनुरत्यपूर्वाधस्त्रेवेष्टस्यात् | ततः एव कृते यस्यात्तेन भुक्तेन ङवकङाविकङाक्ष्रपेणेष्टरुप्तमानं परुरूपं त्रिन्यंस फमाद्गुण्यते । प्राप्त्त पृष्ट्या ऊर्ध्व स्नेपे उपरि योऽङ्कः स्थातस जिंशता भागे यहाज्य पृष्ठांमारक्प तिहष्टलप्तभुक्मुच्यते।तम्मध्ये पृर्यानीत-सात्तानिह, पलैर मेहियाद्तु इष्टलप्नस इष्टोऽ म समेनीति ॥

1134811

यथाऽत्र कर्नेलग्नस्य तृतीये कन्यानवारो गृद्यामाणे हृष्टात्रवांगाद्वींग्मुक्तनवात्तौ द्वौ द्वागुणौ २० कृत्वा त्रिभिभैक्तौ लड्यास्त्रिशांना' पट्, ग्रेषं

त्रिभागाभ्या स्थिताभ्या चत्वारित्रास्कला. स्युरिति भावः । एतच्च लग्न सायन क्रियते, भयनात्राः १५ कलाश्च ३४ मील्यन्ते । तथाऽतीता गागयो २/३। कोऽथैः १ यादमैस्त्रिमिस्तिगाम. स्यात्तादकौ द्रावकौ। एतायताकाः पर् ककाश्च चत्वारिकदिति स्यात् , एकैकस्य त्रिकांकस्य पष्टिकठानिष्पन्तात्त् , द्वाभ्यां

ये स्युस्तेपामङ्गो राशिस्याने शेयते, स चात्र त्रिक एव, कर्केद्धप्रस्य गृद्धमाणस्वात्। तथाशाङ्गमध्ये एक: प्रकृत्यशो दीयते कलासप्तकै च, यत एकै-कस्मित्रवारो त्रयिष्वार्गाः कहाविद्यातिश्र स्यु., तिम्रभागे कृते वयोक्तमेवायातीति, ततो जात त्रयो राशयोऽतीताः, वर्तमानककैलग्नस्य चांशाः २३ ककाः २१ एतावद् भुक्तं, गतराविभिश्च नास्त्यत्रोपयोग , ततस्त्वत्भुक्तेन वतैमानकजेलग्रभुक्तेन २१ माग २१ कलारूपेण तदुरयोऽत्र प्रस्तावात् कर्जाद्यः ३४। पळरूपो द्विन्यंस्य गुणितः, यदि विकला स्युसादा त्रिन्यंस्य तृतीयस्थाने विकलामिरपि गुण्यते, इह तु ता न मन्तीति द्विरेव न्यास जचे, जात फमाच् ७८४१-७१६१, अधः ६० भागे रुठ्यं ११९, अस्योप्ति सेपे जातमुप्ति ७९६२, अस्य ३० मागे कडध पठानि २६५ शेप १२, तस्य

=> >> ==

च क्रियते, यथाऽत्र रविभोग्य पत्नाति २४२, आन्तरोत्रयस्तु मिथुनमेव, तन्मान ३०५, त्रयाणा भील्मे जातं ८१२ सूर्योद्यादियरपेलैः, कोऽथै: १

1३ घटीभि ३२ पलैश्र गतेः कर्कस सम्यात्रः तमेनीति । विद्येपसु---

६• गुणने ३० भागे च ळव्लं अक्षरागि २४, इदं २६५ पन् २४ अक्षररूप फर्झेलानभुक्तं । रिनमोभ्ययुक्तमन्तराले कानपळप्रमाणरूपान्तरोद्रययुत

स्त्रह्म ॥ ।।२५२॥ मुक्तेऽथ लग्नस्य तदंशकाच,दचात्रिभागाबुद्यप्रधुन्योश तस्त्रग्नमुक्तम्न तथाकैभोग्यं,कालोऽन्तरालोदययुक्षपलात्मा॥ सेत्यम् । यथाऽत्र मेपमानस्य २२५ त्रिमिमांने स्टधं पह्याति ७५। इद् प्राणानीत १२० मध्ये क्षितं, जातं १९५, इद् सूर्यभुक्तम् । सूर्याकान्तराभे कितं जातं २२३६५० । अस्य स्वान्तरभुक्त्या १८५७ रूपया भागे कब्धं पळाचि १२० । ततश्चाक्षित्रान्तराशेमीनस्य त्रिभिभीगे यद्धभ्यते तनमध्ये यथाऽत्रेच दिनलग्ने सङ्क्रानिताशेस्तदानीं सूर्याक्रान्तराशेमेंषस्य मानं २२५, तासङ्क्रान्तिसमयाद्तु लग्नतोऽवींग् या गता घट्यः ९९४, तासि-क्याएया-विनङग्ने सूर्याक्रान्तराशेमांने सङ्फ्रान्तिमययात् प्रमृति ङग्नसमयाद्वांग् या घळ्यो गतास्तामिगुण्यते। रात्रिकम्ने तु सति सूर्यां-क्रास्ताणः सप्तमो राशिखनमानं तामिर्गुण्यते । ततः स्वान्तरभुक्या भक्यते । यहाञ्चं तनमध्ये प्रस्तुताशिक्षमागः प्यक्कृत्य क्षित्यते । ततस्त्रथा कृते व्यक्ति कन्यादयो नयांताः पञ्च सन्ति, आतः कक्ष्मानं १४१ पज्ञामिगुणयेत्, जातं १७०५, अस्य नवभिमांगे कञ्घ १८९, इत्ज्ञ तृतीयफ्रन्यानवो-अत्र कृष्वितसुराहरणमात्रं, यथा-अत्रेय कर्नेल्डने प्रतिष्ठायां तृतीयः कन्यानवांचोऽष्टमः क्रम्मनवांशक्ष गुद्धमाणी स्तः। ततस्र द्धम्मनवांबाद-" द्योनेवांशयोः शुद्धिः प्रतिष्ठायां विलोक्यते । आदेऽधिवासना विवे द्वितीये च शलाकिका ॥ १ ॥ रात्रिकाने त्वकांक्रान्तराथितः सप्तमस्य राद्येः सूर्यभुक्तघटीगुणनतद्नतरभुक्तिमजनाधं सर्वमप्यकांक्रान्तराक्षिवत् कार्यम् ॥ श्रमहणाय स्पर्धाफ़ते १३ घटी ३२ पळक्षे काले क्षिप्यते, जातं घट्याः १६ पकानि ४१, इयति काले गते क्रम्मनवांशवेला ॥ संस्थाच्य लग्नमानं गुणयेनमध्यनत्रांशकैः । नविभस्तु हते भागे लब्धेऽन्तरपत्नागमः ॥ २ ॥ " सङ्कानिमोगेन हते तरीयञ्चंशान्विते शेषमिहाकंभोग्यम् ॥ ६९॥ सङ्कान्तिराशेर्गतनाडिकाटने, माने दिवा निरुपथ सप्तमस्य मेपस मानात् २२५ रूपात् पात्यते, जात ३० पलानि, इन्मकंभोग्यं, एवे दिनकाने कार्यम् । सति यस्यातदकेभुक्तं स्वांफान्तगाशिमध्यात् पाखते, यच्छेप तदकैभोग्यम् । भय कानांत्रसमयस्पष्टनायाऽयनांशतिरपेशं प्रकारमाह, यदां---

विमर्भे मिश्रद्वारे ब्माएया --- अयेति तद्नन्तरं। तद्शकाद्दिति इष्टनवाशाद्विक्तिने कप्तस्य भुक्ते उद्यप्रवृत्योसिमागौ द्वादित्यन्वयः | अयमर्थः--अधिक्रतनवाशाद्वांग् यावन्मात्र कप्तस्य भुक्त तत् स्पष्टीकृत्य तन्मध्ये तह्यप्रस्य त्रिमाग तत्रवांत्रस्य च त्रिमाग प्रमुष्यंत्रापराह्नं क्षिपेत, ततत्त्वह्यप्रभुक्तं पूर्वानीतमकंमोग्यम-न्तराळकप्रपलमान च मील्यते, यास्यात्तावद्भिः पले. सूर्योद्यारनुइष्टलप्रस्पेष्टोऽंशः स्यात् ॥

यथाऽत्र कर्जम मानं ३४), नविमिभींगे छब्य प्रजाति ३८, इदमेकनवारामानं, इष्टस्य तृतीयस्य नवांशस्यायांक् च द्वी नवांशी साः, तेन ३८ मध्ये क्षिप्यते जांबे १९० । तद्मु यो नवाशो द्मोऽस्ति तस्य यन्मान ३८ पकरूप, तस्य त्रिमागः पछ १२ रूपः, सोऽपि तन्मध्ये सिष्तः, जातं द्वेगुणा, जात पछाति ७६, इद तछन्न भुक्तं, ततोऽत्र कर्कमानस्य ३४१ त्रिभिभांगे त्रड्य पछाति ११४, भयमुद्यज्यभी व्यभुक्तस्य ७६ पछरूपस्य

**||343||** 

क्तालाह्यमा-स्यूलतया

> खक्त्वाऽक्रभोग्यं च पलात्मकालाङ्गागादिभोग्यं तरणौ निदध्यात्। एच कग्नास्मालानयनमुक्, अथ प्रत्ययाथं बुत्द्रयेन कालाह्यमानयति-

!०२-३०-२५६-३०५ मीळने पळाति ५९३, एपां ६० भागे छब्ध बट्यः १३ पळाति १३ । प्तामकालेनाकोंद्याद्तु कम्याबागमः । सरणान्त-

(रत्रात् पलेषु वेसद्दर्गं न दोषाय । एवमन्यत्रापि भावनीयस् ॥ ७० ॥

राजामि २०२। रविभोग्य च पळाति ३०। तथार्शक्रान्तराशेरिष्टळप्रस्य चान्तराले वृषमिथुनै साः, तयोर्मान २५६-३०५। सर्वेषां स्थापना---

व्याल्या---कश्चिद्विवश्निकालं घटीपलमानमुक्त्वा तट्नानी कतमछ्ग्नांशाध्ततीति पुच्छेत्तद्मा तहुक्त घट्यादि सबै पलीकापै । ततस्त्रत्र यावरपकमा-क्रमेण शेषासुद्यान् विशोध्य, राशीन्न्यसेत्तत्प्रमिताँश्च भानौ॥ ७१॥

नमक्भोग्य सात्तसापकीकृतकालात् गोष्य, भागाद्रीति सायनम्पुटार्जेण यौ राशिराक्षान्तसास शेपकवकलाविकलारूप सूर्यभोग्यं तर्गाविति सायन-

तानित मन्नोष्य तात्रद्राशीनामङ्गेडर्ड देयः ॥

= 200 सुरार्ह एव न्यरंग, स गशिः पूर्णीकृत्य हेस्य इत्यर्थ. । तनत्त्रसात् प्लीकृतंकाङाद्कांऽऽकान्तरात्र्यप्रेतनानि पकरूपाणि कानानि यावनित शुष्पनित

||368|| ब्याएया--अष्टांशो यामस्तं प्रति ४५ पळाति ध्रुवकः । तत आधे यामे पूर्णे ४५, द्वितीये ९०, एव ध्रुवकोरपत्तिः । यदा च यावदिनमानं नाब्जु सप्रदसेऽज्ञि त्रिभागीनाष्टवटीक्यामेषु घर्टी घटी घटी प्रति किञ्जिद्नषट्पकानि धुचकत्त्रैराशिक्षेन समिति । कथं ? तद्विनसत्कं ७ घट्यः ४२ पकानि तदा तदेव चतुर्भक्तमेकैकयाममानं । ततो याममानघटीविभक्त ४५ ध्रुवकाष्ट्राञ्चने तदेव घटी घटी प्रति ध्रुवको लेख्यः । यथाऽत्र मेपेऽकैमवनदि-चेत्येतधाममान पङीक्रतं जातं ४६२ । ततो यदि ४६२ पङैः ४५ पङानि ध्रुवकः स्थातदा १ घटीसत्क ६० पङैः किं स्थादिति राशित्रयस्थापना---छम् ३-७-४४-४९ । अत्र कर्कस सप्त ७ भागाः ४४ कलाः ४९ विकलाश्च भुक्ता इस्सागतं । एकैकस्पिश्च नवांशे त्रिशांशत्रयं तुर्यशिशांशस्य विंश-रीपस १६५ रूपस मध्यात् ककेस्य मानं ३४१ रूपं न ग्रुप्यतीसतः शैपं ३० गुणने जातं ७९५० । अग्रुद्धस्य ककेस्य मानेन ३४१ मागे कन्धं त्रिस्यं फलं मागाः २१ कलाः ,१८ विकलाः ४९। इदमके योजितं जात ३-२३-१८-४९ असाद्यमांशाः भाग १५ कला३४रूपाः बोष्यन्ते, जातं तिकलाश्र स्युरिति पद्मिभौगैः ४० कलाभिश्र नवांगद्वयगतं, उपरि चैको भागः कलासप्तकं च प्रमुत्यर्थ दने अभूतां ते सा इति झेयं । द्वित्रकला-इत्माद्यप्रकारे भाष्यते-यथा घट्यः १३ पळाति ३२, गणो ध्रत्या पळीकृतो जातं ८१२ पळाति, एभ्योऽकैभोग्यपकाङ्कस्य २४२ रूपस्य शोभने स्थितं ५७०। अय सायमस्प्रटाकं १-१-३७-३० ह्वे बुषराशेः शेवं २८ भागाः २२ कलाः ३० विकलारूपं भागादिमोग्यं क्षितं, जातोऽकंः २-•-शेपाद्य खगुण३०गुणाद्विशुद्धोद्यह्ताद्वात्रन । भागाहिना सनाथो दिननाथो निर्यनांशको लग्नम् ॥ ७२ ॥ ब्याएया—यत्र शेषे सति कम्रं त्रोधियतुं न पायंते तत्साच्छेषात्, खागुणेति त्रिंगद्गुणीकृताद्शुब्रकरनमानेन भागे यहाभ्यतेऽशक्काविककारूपं ०-० । तद्मु पलीकृतकालात् ५५७ रूपात् अकांक्रान्तवृपराऱ्यमेतनस्र मिधुनस्य मानं१०५ रूपं भ्रुद्धमिष्येकराशिक्षेपे जातोऽकेः १-०-•-० । " अष्टांशं प्रति धीवेदा. ४५ सङ्क्रान्तेगेतवासराः । तदैक्याद्अरामा३०मं लग्नमाक्रान्तराभितः ॥ १ ॥ शेपे परिद्वते मके द्विशत्या ळ॰ धमंशकः । होराध्यकाङ्गमकेऽत्र द्वोराधमपि लभ्यते ॥ २ ॥ " विशेषे च न दोषः, कन्नफलानामतिसुक्ष्मत्वात् । विशेषस्तु स्थूरबुस्याऽह्नि कालाछ्यनांशानयनमेवं— त्तरमुगे द्रा ततोऽयनांगाः कर्त्यन्ते, शेपं स्फुरमिष्टकाले लग्नं नवांशक्ष ॥

যাঙ্গু হতা যা-विषया ४६२–४५–६० मध्यरातिरन्ध्येन गुणितः, जात २७०० । आधरातिना मागे ळब्धं पळ ५ अभ्रर ५०, यद्यपि चैचमस्ति तथापि किञ्चिदूनत्वात् पट् िलने ९७, सस्त १० मागे कड्य ३ दोप ७, एमन्नम गत, तुर्यस्य ककैलग्नस्य त्रिंगाशसप्तक चेत्ययः । नवान्नानिनीपाया तु ७ पष्ट्या हता जातं 8२•, द्विगला २०० भागे कडपं द्वी शेप २०, नवाशद्वयं गर्तं तृतीयस्य २० ककाश्च गता इत्यर्थ. । होरादीति पष्टिहताद्वस होराद्यद्वेः ९००— .००–१५०-६० मागे फ्रमात् होराद्वेष्काणद्वाद्यामचियाया अपि लभ्यन्ते । नवासस्य तु प्रभुतया मुख्यस्यात् पृथगुक्तिः । अनेन विधिमा कलाव-भय प्रदः स्वागंस्योऽन्यवगंस्यो वा इस्यादिचिन्तायामपि । नसु भवति तर्हि कञादिन्यक्तीकृतिः ववोपयोक्ष्यते १ उच्यते–यदा कळाराशि. पद्द्यपेक्ष-तथा रेवस्युद्याटम्पश्चिद्यं यांचद्श्विम्या एव चत्वार. पादा उद्रच्छिन्ति, एवमश्विन्युद्यादनु भरण्युद्य यावद्यरण्या एव चरवारः पादा उद्ग-पन्नानि पूर्णोन्येच विवस्यन्ते, ततोऽत्र १३ वव्यः पद्गुणाः, जात ७८ । उपरिस्य ३२ पर्कापेक्षया परूत्रये सिप्ते जात ८१, सह्कान्तेर्गतदिनाः १६ •यक्तीक्रियन्ते १ उच्यते-' त्रिष्वपि क्रूरमध्यस्थी" इसत्र क्षेन्द्रो. पञ्चद्यत्रिशासमध्यक्षक्र्यत्रहर्मशेषिचारः।तथा सित "द्र्यने यदि स्याद्र्यद्वा-[शकमध्यगः क्र्रः" इत्यत्र कमेन्द्रोः क्रुप्रतृद्धिविचार इत्यायुक्त एव त्रिंशांनामुषयोगः । तथा करने पद्वनी. क्र्प्यहमक्कः सीम्यग्रहसको वा, याऽघांधिक: स्यातदा रूप गृद्दीस्वा प्रिंशाजेषु टीयते । एव विज्ञलानामधांधिके कळासु रूप देयमित्याहि, जातकाद्री चाशासु.–पिण्डायुदेशान्तदेशाद्या-ष्पेय व्यक्तीसान्न तु विक्रकाः, अत एव स्यूरोऽय विधिरिस्यूचे । ननु च समैत्र नवाशस्यैच चेत् प्रभुता तदा क्रिमथै लग्नानां म्रहाणा च त्रिशांशा 'दुत्ताषनांशा रविभुक्तमागाः, फलेन गुण्या दिनद्यद्धिद्दान्यो.। पप्रशामिलब्ध घटिकाद्यमेतत्, स्यादाख्य(द्य)नूनं प्रथमशुमानात् ॥१॥\*\* ब्याख्या—क्रुष्टेऽहन्यर्केण स्पान्नास्तराज्ञेयात्रा भुक्ताः स्युस्तन्मध्ये तद्वपीयायनाताम् क्षिप्या उपयोगतराज्ञिसस्केन दिनधृद्विहानिफलेन भथ दिया कान्नज्ञानं प्रायः शङ्कुच्ठायाऽऽयत्तमित्यतः काकत<sup>2</sup>छाया, छायातः कान्यानीय द्र्यंते । तत्राद्रे तावत्सुक्षमदिनमानानयनमेवम्— " रात्रों तु मूर्धि यिष्टण्यं तसानक्षत्रमप्तम् । उदेति पूर्वेस्यां तेन लग्नोद्यवितिणेयः ॥ १ ॥ ग स्जन्तीरयेत्र शिर स्यभस्य पाद्मत्व्यनयोद्यो नवाद्योऽपि निर्धारयं. । इस्युक्ता कप्तस्फ्टीकृति. । नयने फ्ठादिःयक्तेवितित्योपयोग इसछं प्रसङ्गे । एव दिवा छप्नाद्यानयनमुक्तं ।

" ज्येष्ठदिनाद्दिनं शोध्यं शेपाद्दशगुणात् स्वतः । त्यजेत्सप्तश्ये ५७ केव्यः स्ये १२ मध्यांद्वयः स्मृताः ॥ १ ॥ " ब्याक्या—इष्टाहमानं ज्येष्टाहमानाच्छोध्यते, शेष दशिसिगुण्यते, तंतश्च स्वत इति तदेवाघो न्यस्य ५७ भागे यद्धभ्यते ६न्मुक्याङ्कात् कत्येते, ट्रस्थे खहे तस्माद्द्रं कार्यं, प्रं स्पष्टं दिनमानमात्राति, तस्मिन् बष्टिबटीरूपाहोरात्रमध्याच्छोधिते शेपं स्पष्ट रात्रिमानं । अनयोश्र कुलिकस्पष्टीकर-णादायुषयोगः । यथाऽत्र मेपेऽकांगमनाद् ससर्वेऽहि प्रातस्त्रवटी १३ पक ३२ समये 'स्फ्रटोऽथ भानुः'' इत्यादिकरणेन सञ्जाताः स्प्रयाक्तेभु-स्प्रमाताः १६ कळाः ३ विकलाः ३० | एननमध्येऽयनांम १५ कळा ३४ क्षेपे जातं सातिः १ मापाः १ कलाः ३७ विकलाः ३० । अत्र मायनार्केण मेपग्रांत्रा. पूर्णोऽपि भुत्तो पुपस्य चैकोऽताः १ कठाः ३७ विकलाश्र ३० भुत्ता इत्यागत, ततोऽत्र घुपग्रांतिसत्का दिनग्रद्धिः पर्ल २ भभ्रर ५२ रहपा तह समपडिक्तस्यत्वात् मीलित, जात २०१०। अस्य ६० भागे ळव्य ३३ उपरि क्षिमं जात पकानि ८५। एतन्मध्ये आद्यराशिततकः ७४ रूपेऽक्तः समपिह्नास्थरवात् क्षिप्तो जातं १५९। अस्य ६० भागे शेप अक्षराणि ३९, लब्धं पले २ डपिर क्षिप्तं जात पळानि ४। अस्य ६० भागे लब्धं घटीस्थाने शून्य । स्थापना | घटी० पलानि ४ भश्रराणि ३९, इदं त्रवाद्याहर्माने घटी ३१ पळ ४६ रूपे क्षिप्तं, जातं घट्यः ३१ पळानि ५० ्कर्भेत्यादिना पूर्वोक्तेन सङ्गुण्य पष्ट्या भागे यह्यभ्यते तद्घट्यादिक रसदिनाड्य इत्याणुक्तस्य मुख्याहर्मानस्य मध्ये झेष्यं मुगादिपट्करथेऽन्ने, कर्कोदिप-गता, ततोऽंबाधक्का गोमूधिकारीत्या स्थानद्वये न्यस्य एकत्र द्विकेन अपस्त्र द्वापञ्चाश्चता च गुण्यन्ते । स्थापना । २-५२ गुणिते च जातं क्रमात् २-७४-६० । ५२-१९२४-१५६८ । सर्वाध.स्थस्य ६० भागे लब्धं २६, इत्मुपरिस्थे क्षिप्त, जातं, १९५०, झुदं चाद्यराश्याक्याक्याक्रेन ६० रूपेण अक्षराणि ३९ इदं स्पष्टं तिष्ट्निमानं । तद्राक्षिमान तु घत्यः २८ पकानि ९ अभ्रराणि २१ । अथेतो मध्यच्छायानयन यथा— 12461

12691 पादाः रोषाण्यङ्गुलानि । यथाऽत्र तद्दिनमान ज्येष्ठाह्वमीनात् वटी ३३ पल ४८ रूपाच्छोधितं जातं घटी १ पलानि ५७ अक्षराणि २१, इदं रोषत्वा-ह्माभि छङ्गुण्या षष्ठ्या भक्त्वा भक्त्वा उपि क्षेपे जातमधः ३३ ऊर्ध्वं च १९ । अस्य च ५७ मानो नाप्यते, नापि ५७ अपेक्षयाऽस्याधीधिक्यं, ततस्तासिक्रयामक्रत्वेचेकोनविशतेः १२ मागे ट्ट्य पदं १, शेपमङ्गुलानि ७ व्यह्गुलानि ३३, ह्यं तिह्ने मध्याह्यन्छाया । अथेत हृष्टकाकच्छाया-

भागाप्राप्ती यदि ५७ भपेक्षयोध्केरियांधिकः स्यातदा रूपं मृद्यीत्वा सुष्याङ्कात् कर्ष्यते, तद्नु तस्य सुर्वे १२ भांगे यञ्चभ्यते ते मध्याद्वच्छायायां

" खमहीकर २१० हतदिवसे विह्नते वाञ्छितपलैधुंगतशेपैः । लब्धं मध्यपदेधुंग् नग ७ रहितं स्यात् पद्च्छाया ॥ १ ॥

ग्नेपमक्ते १२ गुणं कृत्वा वाञ्छितेस्तु पलेहैतम् । लञ्घमङ्गुलसंजं स्पादेवं छायाङ्गुलागम ॥ २ ॥ "

स्पष्टी । उदाहरण यथा—तिहम घत्यः ३१ पलानि ५० सक्षराणि ३९, इदं २१० हतं जात ६५१०–१०५००–८१९० । पष्ट्या भक्त्वा

। ३ मदी ३२ पन्नमानै ८१२ भांगे करुभ पदानि ८, शेषं १९१, तत् १२ गुणनेऽभ स्था १६ सेषे च जात २३०८, अस्य ८१२ भागे करुषं अहुगु-कद्वय २, शैप ६८४, ह्दर न्यद्रगुकानयनाय ६० गुणं, अधस्य १० झेपे जातं ४१०७०, तस्यापि ८१२ भागे लड्ध न्यद्रगुकानि ५०, शेप ४७० सक्त । अस पद ८ भड्गुरू २ ग्यड्गुरू ५० [ ५१ ] रूपस्य मध्ये मध्यच्छायापदाङ्गुरूक्ष्येषे पदाङ्कात् ७ कर्पेणे च जातं पद २ भङ्गुरू

|| 3 / 2 ||

यथाऽत्र साद्रि ७ सङ्कुपदा ९ क्षी १२ गुणाः १०८ अध स्थ १० अङ्गुङसेपे जातं ११८। इतो मध्यच्छायायाः १ पद् ७ अह्गुझरूपत्वाद-

" साद्रि ७ शङ्कुपर्हरर्फ १२ गुणैमीं माङ्गुलोनितैः । द्विनेद् ४२ घ्रे दिने भक्ते द्यगतं शेपमाप्यते ॥ १ ॥ "

गलानि ३० शेष ५८ । तत् ६० गुणनेऽय.स्य ४२ क्षेषे च जात ३५२२ । भस्यापि ९९ मागे लज्यमभ्राणि ३५ शेषं ५७, तच्च ९९ भषेक्षया-ऽथांधिकमित्यतो रूपग्रत्योऽसराणि ३६ । अयञ्च ३६ भङ्क ६० अपेक्षयाऽधांधिकोऽस्तीत्यतोऽस्मात् १ पङ्गद्रणे जातं पङ्गानि ३१, तत भागतं पदे र अह्गुमामि १० व्यङ्गुळानि २४, छायाया घटी १३ परु ३१ रूपं चित्तित्ते । अपराङ्गे त्वेतात्रत्या छायाया शेपदिनमेतावत् स्यात्। एकद्विपळ-

विमगदे च न रोष , परणान्तररगत् । इति ममद्राच्छायाकास्त्रयोरानयनमुचे । अथ प्रसावाद् ग्रहाणां च तद्रनीना च स्पुटीकृतिरूच्यते—

" गतेप्रनाज्यो गुणिता: खखेंभे. ८०:-६००-४००-२००, सर्वेक्षेनाडीचिंहता: कलाद्यम् ।

तस्वाच्युपिर १३३७ । अस्य ९९ मामे नडध घटी १३ शेष ५० । तत् ६० गुणनेऽधास्य २८ क्षेपे च जात ३०२८ । अस्य ९९ मागे लब्धं

ट्राुकरूपत्वकरणे १९ अह्गुलकर्पणे जात ९९ । अथ तिह्नमानाङ्गन्नय ४२ गुणीकृत्य पष्ट्या भगत्ना भन्त्नोपिर क्षेपे जात अधः ४२ उपि २८,

मिश्रद्धारे मक्ता अपि सेपे जातमधः ३० तदुपरि १६, तस्याप्यूष्वै ६६८७ । ततोऽस्य धुगतिति पूर्वाह्ने गतपहैर्भागः, अपराह्ने तु शेषपछैः । अत्र पूर्वानीत

छायाकाला

三のうと

**=>>>** पादस्य भोग्य शेयं, तस्य च भोग्यऋक्षाष्ट्रशत्यादियोग एव कार्यः, राशयोऽपि तत्र भोग्या एवोपरि देयाः, एवं सूर्यादीनां क्वचित् पादापेक्षया क्व-यदि च राहुरास्यञ्जमध्ये पर्क क्षिप्यते तदा केतुरिं भोग्यापेक्षयेव स्फुटीकात् । षत्या हतेत्वष्टरातेषु अक्तिरिति सर्वेक्षेनाङीविह्नतेष्विति शेषः । सयं चित् पादह्यत्रत्रापेक्षया च स्वधिया वर्तेना कार्यो । केवकमनया रीखाऽकाँबााः सप्त महा भुक्तापेक्षया स्फुटीस्युः, गहुस्तु भोग्यापेक्षया स्फुटीस्यात्। पादान्तरसङ्क्रमणान्तराङसर्वघटीभिभेष्यन्ते, करुधं कलाधं भुक्तं खात् । राहोस्तु वामगतित्वेन यक्कम्यते तत् २०० मध्यात् पाखते, श्रेषं राहुणा तस्य च्याख्या---भष्ट्याखेति चन्द्रचारस्य सन्बेत्र नक्षत्रापेक्षयैव टिप्पनकेपु किल्बनात्। भष्टशतादिभिरिति भौमादीनां चारस्य नक्षत्रापेक्षया राज्यपेक्षयाsिक च लिखनास्, द्विग्रसित शन्याशीनां चारस तु भैक्ष्पादापेक्षयैव किखनात् तद्पेक्षयैव वर्तनीयं, तत्र भपाद्सरकगतेष्टनाब्यः २०० गुणिता भपादात् क्षेपोऽभ्यूद्धः । ऋक्षक्षबद्देन च राक्षयोऽप्युच्यन्ते, तेन यदि कत्यपि राक्षयरतेन प्रहेण भुक्ताः स्युक्तदा तेऽप्युपरि छेष्याः। अयमेवार्थो ध्यक्त्योच्यते— स्पष्टाः । नचरं अष्टराताधिरिति समग्रमक्षत्रसत्कगतनाडीगुणने तद्गोगस्य ८०० कलारूपत्वात् ८०० गुणकारः । आध्यशब्दात् यत्र नक्षत्रपाद्ग्र-यस्य द्वयस्य नक्षत्रेक्न्यादस्य वा गतनाड्य इष्टाः, तत्र ६००-४००-२०० रूपाः क्रमाद् गुणकारा इति स्वयमूर्धं।सर्वेश्रेति, अत्रापि समग्रनक्षत्रतत्पाद-त्रयद्वयादिसस्काभिरेच सर्चनादीभिस्तत्र तत्र भजनमूद्यम् । एवं भुक्तक्त्यादमत्वादीत्वत्राप्येकद्वित्रिपादभुक्तत्वसम्भवे १००-४००-६०० कळानां कडषककासु राहोवांमगतित्वेन लब्घा या विक्तलाः कलाः । शोध्यास्ता द्विशतीमध्याच्छेषं भोग्यकला इह ॥ ३॥ " शनिवाक्पतिराह्मणां द्विशत्या पाद्गत्वतः । गता घटयो हताभ्यांन्हिघट्यापं स्पात्कलादिकम् ॥ २ ॥ सवेश्विपटिकाभक्ते छब्वं स्याद्रिकछादिकम् । पंवं स्पष्टा प्रद्याः सर्वे कर्नेच्या गणकोत्तमैः ॥ ३ ॥ " भुक्तश्रेयुक्तं सकला प्रदाः स्युः, पष्ट्या हतेष्वष्ट्यतेषु भुक्तिः ॥ १ ॥ " अस्य भाष्यं— इएात् प्राग्गतनाङ्योऽष्टताद्येशुणितास्ततः । सर्वेश्लेघटिका भक्ताः कलाद्याः स्युरिति स्फुटम् ॥ १ " इन्दोर्मेण्या गता घटयोऽएशत्या प्रतिभं सदा। मौमसूर्येज्ञ्यकाणां गुण्या अप्रशतादिभिः ॥ १ ॥ भुक्तक्रसाप्रशस्यादिप्रमाणसहितास्ततः । पप्टिमक्तेऽंशकादि स्याच्छेपे पप्पिगुणे ततः ॥ २ ॥

|| 34C||

हन्द्रादीनां स्पष्टत्वम् मिश्रद्वारे 12461 भय त्यस्तिहिनेषु घुपे कृत्तिमास्त्रस्ति | तदानीं गतचट्यः १७० | मय १ वृषे बुध २३, तिह्निशेषघट्यः ३७ | कार्योद्वेनघट्य. १३ । अन्तरा-प्रथात्र तारकाङिकानां नचप्रहाणां स्फुटीकरणेनोदाहरणं दक्षैते-तत्राकैस्तावत् प्रागेव स्फुटीकृतोऽस्ति, तस्य च द्वाद्गसङ्क्रान्तिषु कमात् कला-मावः-अष्टज्ञाला यथासम्भव पर्चतुर्द्विततीना वा पष्ट्या सङ्गुण्य सर्बक्षेनाढीभियंथायोगं त्रिद्दोकपादनाङीभिवां भागे हते यक्तभ्यते द्विस्थं फर्ज इन्दुरनु तिहने पुष्पेऽस्ति तस्य गतघट्याः कार्यसमये १७ ता. ८०० गुणाः, जात १३६०० । पुष्यसबंघट्याः ६६, तामिभीने कडषककाः २०१ विकलाः ३ श्रेप ४२, तस्त १६ अपेश्रयाऽधीभ्यधिकत्वाद्विकला. ४ । पुनर्वस्वीएन्सपाद्स्य २०० कला. कलामध्ये क्षिप्ताः, जाताः कला. ४०६, सासां ६० मागे लज्यं ६ सशा. कलाः ४६ विकलाः ४ । भुक्शित्रयमुपिर दन् जातस्तदानीं स्पष्टेन्दु. ३-६-४६-४ । तद्गतिस्तु कलाः ०२० विमलाः १६ ॥ अथ भौमस्निह्नमूत्त्तरमद्रग्दास्त्रस्ति । तदा गतघट्याः १४९ । कथं ? उ० भ० मङ्ग० ४४ । तहिनशेषघट्याः १६ । कार्य-कलाः ११६ विकलाः १८ । पूर्वमद्रपदान्सपादमस्क २०० कलाक्षेपे जाताः ३१६ कलाः । तासा ६० भागे ळच्य पञ्च ५ अग्राः उपि ११ राग्नि-देनघट्यः १३ । अन्तरास्तिद्वेनद्वयस्य घट्य १२० मीक्ति १४९ । ताः ८०० गुणा जात ११९२०० । सर्व्वक्षेनाद्य १०२२ । आभिभिगि लिदिनद्वयवट्य. १२० मीलने १७० । ताः क्रिनिकापादत्रयस्यैत मुपस्थरतात् ६०० गुणा जात १०२००० । भधेरु भुषे बु० इत्यत भारभ्य क्वङ्गं सन्निधि ६१-९ षष्टिकाम् युगयुगं १२ खेटेषु धृत्या युतम् ५९-१८ ॥ १ ॥ " पिष्टिविंश्वयुता ६०-१३ क्वपट् च सगुणा ६१-३ क्वक् ब्रियुग्विशतिः ६१.-२२, षप्टिद्ददिश ५७-१२ कुझरेषुगगनं ५८-० चैकोनषप्टिहेया. ५९-७ । बस्वर्था निघयो ५८-९ नवेपुसधृतिः ५९-१८ द्विः षट्रारं ५६-५६ ज्यूनिका, दाने जातः स्पष्टो भीमः ११-५-१६-३८ । तद्गतिस्तु कला. ४६ विघलाः ५८ । विकलास्य देवसिकगतिमान प्राय एवंविध स्वात, तथाहि-तस्कलाविक्तकारूप ग्रहाणा देवसिक्गतिमान ज्ञेयम् ॥ 1134611

द्विमकाः १२ । कनानां ६० भागे लज्य १ अंत्राः उपि भुक्ताित १ दाने जातः स्पष्टो ब्रयः १-१-४१-१२ । तद्गतिपि पट्मत्या एम ६० सु० इत्यतोऽवांक पाद्रप्रयस्य यास्ताः सर्वभ्रेनान्द्यः ४५७ । तामिमांने लन्धं कलाः २२३ विकलाः ११ होपं ३१३, तस्य ४५७ अपेश्रयाऽघोषिक्या-अन्तरास्टिष्णतुष्कवट्य. २४० मीन ने २७६ । ता गुरोः पाद्गतत्वात् २०० गुणाः जातं ५५२००। भाक्षंष्यपद्भोगसत्रेनाड्यः ११९२। तामिभोगे लड्धं क्सा: ४६ विकला: १८ सृगार्धतत्का: ४०० कलप्र कलासु क्षिता: जातं ४४६ । तासां ६० भागे लब्ध ७ भैगा: उपरि भुक्तगत्रिद्धयदाने भथ गुरुस्ति हिने बाह्री जपादेऽस्ति । तदार्नी गतघट्यः २७६ । कथं ? रीद्रे प्र० गु० ३७ । तिह्नि हेन । कार्य दिन चट्याः १३ । जातः स्पष्टो गुरुः २-७-२६-१८ । तद्गतिरिप द्विरात्या एच ६० गुणने आदेंकपादसमैनादीभिभैजने च जाताः कलाः १० विकलाः ४ ॥ णिने पाय्त्रम नादीभि ४५७ भेजने च जाताः कलाः ७८ विकनाः ४६ ॥ 1125011

भग ज्युक्तस्ति ध्विमद्रपद्रास्वस्ति । तदानी गतघट्यः ५४९ । कथै १ पू० भ० सि० १२ ति ह्मिगेपघट्यः ४८ । इष्टित्निघट्यः १३ ।

अन्तरास्त्रदिन ८ घट्यः ४८० मीस्ने ५४१ । ताः पूर्वभद्रपद्रयाद्वयस्त्रेच कुम्भसन्तन्तात् ६०० गुणाः जात ३२४६०० । भथ मीने सिठ इसातो-ऽबींम् यास्ता एव सबैनाड्यः ५८२ । आमिभौने रुब्ध करुाः ५५७ विकलाः ४४ भुक्तनवांशानां षण्णां करुाः १२०० करुासु क्षिपा जाताः १७५७ ककाः विकलाः ४४ । आतां ६० माने लब्धाः २९ अशाः उपरि १० राशिमाने जातः स्पष्टः शुक्तः १०-२९-१७-४४ । तद्रतिस्तु कलाः

६१ विकला: ५१ ॥ अथ ज्ञानिवैक्षी तहिनेष्वनुगाधातुर्यपादेऽस्ति । तदानीँ गतबव्यः १४७७ । कथं पुनर्जु० च का॰ १६ । तिष्निरोपघव्यः २४ ।

ड्युट्टिनघट्य. १३ । अन्तराळद्विन २४ घट्यः १४४॰ मीकने १४७७ ताः यने: पादगतत्वात् २०० गुणाः जातं २९५४०० तुरर्यपादभोगसर्वघट्याः

१० । कार्यदिनघट्यः १३ । अन्तराकदिनाति २१, तद्घट्यः १२६० मीलने १२८३ । ता राहोः पाद्गत्तत्वात् २०० गुणाः जात २५६६०० । अत्र

8१८२ । आसिमीगे टुर्ज कला: ७० विकला: ३८ । इदं शनेविक्तिवात् २०० मध्यात् कर्षणे जातं १२९ कला: २२ विकलाश्च । उपरितननवांश-चतुष्कसस्क ८०० क्षेपे जाताः ९३९ कलाः । आसा ६० मागे कब्धं १५ मंगाः उपरि ७ राग्निदाने जात. स्पष्टः मानिः ७-१५-२९-२२ । तद्गु-

तिस्तु क्रके र विकलाः ५२ ॥ अथ राह्यस्तदा चित्रान्त्र्यपादेऽस्ति । तदानीं गतनाद्याः १२८३ । कथ १ चित्रा० च० रा० ५० । तहिनशेषथद्याः

1200

स्वपाद्मोगसर्वनाड्यः ३७ विद्यास्तीयपाद्सस्क २०० पादुः ६-५-३२-१। व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र क्रिक क्रिक क्रिक क्र क्रिक क्र क्रिक क्रिक क्र क्रिक क्रिक क्र	્યાય આત્મચંદ - ાતરા ડાર ્રી ઃ (ી જત ઉપા ત <u>≔</u> ાડાક-પૂર્વ <sup>8</sup> , (સુબઇ <b>ીને</b> સ્કેલ્સ્ટ્રેસ્ક્સ્કેલ્સ્ક્સ્ક્સેક્સ્કેલ્સેક્સ્કેલ્સેક્સ્કેલ્સેક્સેક્સેક્સેક્સેક્સેક્સેક્સેક્સેક્સેક
सभी निज्ञान्द्रमाग्रस्ति स्वात्तिक स्वात्तिक स्वात्तिक स्वात्त्विक स्वात्तिक स्वात्ति	V7 [	
निज्ञान्त्रपाद्रमीगसर्वनाड्यः ३७७४। आसिभांगे कड्यं कलाः मध्ये निज्ञाद्रतीयपाद्रसक्त २०० कच्छाः विस्ताः, जाताः कछाः सप्टो राद्धः ६-५-३२-१। गतिस्तु क्छाः ३ विक्छाः १९ १९ वर्षः १० वरषः १० वर्षः १० वरषः १० वर	६७ विकछा: ५९। आसो २०० मध्यात् पातने नातं कछाः १३२ विकछा १। कम्या- ३३२। कछानां ६० भागे लब्धं ५ अंशाः । उपिर ६ गिशत्वाने जातो भोग्यापेक्षया ॥ राहो राक्ष्यक्के ६ क्षेपे जातः स्पष्टः केतुः ०-५-३२-१। तद्गितिस्तु राहुवर्देव । नतु महाणां गते: स्पष्टीकृतो कि फर्छं १ उच्यते-कछाविकछारूपया प्रतिदिन- गत्या पूर्वकायेवेछायां स्पष्टीकृतमहकाछादनन्तरं द्वितीयकार्यकाण्यविक् यावत्यो घट्यो गताः स्युस्ताः स्थानद्वये संस्थाप्य क्रमाद्वण्यन्ते । ततः पच्ट्या भागे छब्धं कछादिकं प्रवेकायेवेछायां स्पष्टीकृतमह्मस्ये हिन्यते । विक्षयहमध्यात् भोग्यापेक्षास्पष्टीकृतराहुम-	ध्याच्च कर्यंते । ततो द्वितीयकार्यंवेजायां प्रहाः स्पष्टाः स्युः । यथा प्रागुक्त प्व वर्षे- मासपक्षे १३ दिने हस्ताकेंद्रघयटीचटने केनचित् कार्यमिष्ट तद्वेञायाः प्रागुदाहृतवेकाया- श्वान्तरं घट्यः ३५५ । कथं ? वैत्राख्युकुसप्तम्याः १३ घट्यः प्रागुदाहृताः । तदिनशे- पघट्यः ४७ । हस्ताकेदिनस्य ८ घट्यः । अन्तराळिदिनानि ५ तद्घट्यः ३०० मीकिने ३५५ । मेपस्थाकेस्य गतिश्व ५८-९ ह्प्या । अन्या ३५५ स्थानद्वये ग्रुप्यते, स्थापना ३५५ । मेपस्थाकेस्य गतिश्व ५८-९ ह्प्या । अन्या ३५५ स्थानद्वये ग्रुप्यते, स्थापना ३५५ । मेपस्थाकेस्य गतिश्व १६० स्थ । अन्या ३५५ स्थ । । विक्ताः ३१४ ४३०२ २७७ ४६६ ५९ १६ । । स्थ १८ । । सार्गीभूता मार्गोभिमुखा वा स्युस्तेयां स्फुटीकृतिरुच्यते—
चित्रान्त्रपाद्मोगसर्वनाड्यः उ७७४। आमिमांगे द्वव्यं मध्ये चित्राहृतीयपाद्मक २०० ककाः क्षिसाः, जाताः स्पष्टो साहुः ६-५-३२-१। गतिस्तु कलाः ३ विक्ला अत्र तात्काल्किकस्पष्टीकृतनद्रप्रद्राणां सतातिकानां स्थापना र । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ ।	कला: कला: शिंग - १९ किंग -	म वा वा
विज्ञान्स्रपाद्दमोगसर्वनाड्यः उ७७४। आभिर्मांगे ः मध्ये विज्ञान्न्त्रपाद्दमोगसर्वनाड्यः उ७७४। आभिर्मांगे ः स्पष्टो सर्द्धिः ६-५-३२-१। गतिस्तु कलाः ३ स्पष्टो यद्द्वि वन्द्र मगळ द्युध सुरु १७ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९	ढरुं माताः विकल्	# # # = = = = = = = = = = = = = = = = =
विद्यान्स्रपाद्मोगसर्वनाड्यः ३७७४। आभि सस्ये विद्याग्रतीयपाद्सस्क २०० ककाः वि सप्ये सद्धः ६-५-३२-१। गतिस्तु कर्षः भन्न सास्मान्ध्रिकस्पष्टीकृतनद्मद्वाणां सगातिः  प्रवि चन्द्र मगळ बुध गुरु भुरु १९ ३४ । १६ ६ ५ ३८ १२ १८ १४ । १८ ७२७ ४६ १६ १६ १६ १७ १८ । १८ ७२७ ४६ १६ १६ १८ । १८ ७२७ ४६ १६ १८ । १६ ५८ १६ १८ १६ ११ । १६ ५८ १६ १६ १६ । १६ ५८ १६ १६ ११ । १६ १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ । १६ १६ १६ ।	समामे स्साः, जासाः,	्र १५ १५ १५ ११५ ११५ १५२ विकला.
विद्यान्स्यपाद्भीगसर्वनाच्यः ३७७४ मध्ये चित्रातृतीयपाद्सस्क २०० क भन्न तास्कास्ट्रिकस्पष्टीकृतनच्यद्वाणां १ २ ३ १ १ ५ ५ १६ ६ ५ ३८ १२ १८ ५८ ७२७ ४६ ७८ १२ १८ ५८ ७२७ ४६ ७८ ११ १८ ५८ ४६ ४३ ३६	ा आप्ति स्तु कर्ष स्तातिः	ी १९८ १९८ स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स
विद्यान्स्रपाद्दमोगसर्वनाह्यः ः सप्टो सिद्राहृतीयपाद्दसत्क २ सप्टो सहुः ६-५-३२-१। सप्टो सहः ६-५-३२-१। स्व वन्द्र मगल बुध १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६	े उड़ हुए १०० हुण	उर् १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १९० - १
विज्ञान्स्रपाद्मोगसर्वन  सच्चे चित्राहतीयपाद्स  सप्द्ये सद्भाद्धः ६-५-३२  अत्र तात्मास्टिकस्पद्दीः  रावे चन्द्र मगळ ।  १६ ६ ५ ५ ३८   ३० ४६ १६ १६ ३८   १८ ७२७   ४६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६   १८ १६ १६   १८ १६ १६ १६   १८ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६	हिका १   -	क्ष क क क क क क क क क क क क क क क क क क
विज्ञान्स्यपाद्दभीः सम्द्रे चित्राहती सम्द्रे चित्राहती व	गसर्वना यपादस् '५-३२ कस्पष्टीह	सहस्य मान्यून
विधान्स संस्थे नि भूष १०० वि भूष १०० वि संस्थ ६०	गदमोग ब्राह्मोग डुः ६-	ति स्टब्स् भ्यामे भ्यामे
	विश्वान्त्य मध्ये दि सम्बोद्ध सम्बोद्ध सम्बोद्ध सम्बोद्ध सम्बाद्ध सम्बोद्ध सम्य सम्बोद्ध सम्	अस्य कु हु है । । । । । । । । । । । । । । । । । ।

1128811

पञ्चम विमञ्जे मिश्रद्वारे विश्रीमागी-	भवन विचारः ॥	E & & & & & & & & & & & & & & & & & & &
G+6G+6G+	y competition	F8C-15-06-1-F36-15-36-15-36-15-36-
अन्तरांशकला याह्यास्तासां सीमा च सवैभम् ॥ १ ॥ अन्तरांशकला याह्यास्तासां सीमा च सवैभम् ॥ १ ॥ वक्तादूर्धं फलं लब्ध भुक्तभागोधतस्त्यजेत् । सभोग्यभुक्तभागोधात्याल्यं मार्गादितः फलम् ॥२॥ " अन्योभीष्यम्—	वक्तात् पूर्वगता नाज्यी हताः स्वक्षेकलादिभिः । सीमान्तसवंभवदीविभक्ताः स्युः स्फुटं कलाः ॥ ३ ॥ क्षेपे पण्टिगुणे सर्वक्षेलक्ष्ये विकलागमः । भुक्तक्षेयुक्त तत्राक्के पण्टिभक्तेश्वकादिकम् ॥ ४ ॥ वक्रपश्चाद्पीत्य स्वात्सीमाधिष्क्येऽत्रतः स्थिते । त्रक्यं फलं पुनस्त्याज्यं भुक्तभागीवतस्तदा ॥ ५ ॥ मार्गात् पूर्वगता घट्यो गुण्या भोग्यकलादिभिः । शेषं प्राग्वद्भोग्ययुक्तभुक्तांशेभ्यः फलं त्यजेत् ॥ ६ ॥ ॥	प्पां ब्याख्या—वक्नाप्रविमे हति, वक्नीमवनादनन्तरमवाक् चेल्यथः। मागीप्रपिश्चमे इति, मागीभवनादनन्तरमवाक् चेल्यः। अन्तरावक्का प्पां ब्याख्या—वक्नाप्रविमे हति, वक्नीमवनादनन्तरमवाक् चेल्यः। माग्रा हति, यथा स्वमावगतेप्रेहस्य स्फुटीकर्तु गतेष्टनादीनां ८०० कलाभिगुणनमुक्तं, तथाऽत्र विमान्ति स्वमेनमिति तासां प्रसावात्सर्वनादीनां। कार्यम् । केव्लं वक्नीभवनस्योभयतो भुक्तकलामिमोग्रीमवनस्योभयतस्य माग्रीभवनाद्वात्मां। अथ्वा विमानाद्वारम्य विमानामित तासां प्रसावत्त्र । अथवा विमानामित्र वाच्ता। अथवा विमानामित्र वाच्या। माग्रीभवनाद्वारम्य वाच्याः सर्वेष्वव्यत्तिमाग्रीभवनाद्वारम्य विमानामित्र वाच्या। सर्वेष्वव्यत्तिमाग्रीभवनाद्वात् कर्षेणीयं। वक्रात्र प्रथमं तु गतेष्टनाद्वीनां स्पष्टीक्रियमाणोऽस्ति तद्वा यद्धव्येभिभवनस्यविष्य कर्ष्ये भुक्तस्य वाच्याः सर्वेष्वयुक्तं कार्थिति सुगममेव। माग्रीदित इति, यदि माग्रीभवनाद्वां प्रदः यथोक्तरीत्रा भुक्तकलामिग्रीणनं सर्वेष्यिभिभवनस्यविष्य सस्येष्ठे तस्येव मोग्यं भागकलादिकं सम्मील्य तिष्वप्रवाद्वां क्रास्मित्रं वाच्यात्रक्षेत्रके सामक्लादिकं सम्मील्य तिष्वप्रान्वात्रके स्पष्टीके व्याख्ये।
केत्र १५ ४ ० १	वक्तात् पूर्वगता नाज्यी इताः स्वक्षेकलादिभिः । सीम क्षेपे पष्टिगुणे सर्वक्षेत्रज्ये विकलागमः । भुकक्षेयुक्ते द वक्रपश्चाद्पीरथ स्वात्सीमाधिष्णयेऽत्रतः स्थिते । रूज्यं मार्गात् पूर्वगता घट्यो गुण्या भोग्यकलादिभिः । क्षेर्	प्पां ब्याख्या—वक्राप्रपक्षिमे हृति, वक्रीभवनाद्गन्तरमविक् माग्रा हृति, यथा स्वभावगतेर्ग्वेहस्य स्फुटीकर्तुं गतेष्टनाडीनां ८०० कञ कार्यम् । केवळं वक्रीभवनस्योभयतो भुक्तक्ञाभिमांगींभवनस्योमयतस् भयमथैः—यथाऽन्यत्र सर्वक्षेनाडीभिभौग उक्तस्त्या दृष्टतमये तद्ग्रहाऽ मार्गोभवनादारभ्य नक्षत्रान्तरे तत्पादान्तरे वा सङ्क्षभणं यावधाः स्पष्टीक्षियमाणोऽस्ति तद्ग यञ्जञ्चं कञादिकं फळं तद्दक्षीभवनसमयि यथोक्तरीत्या भुक्तक्ञामिग्रैणनं सर्वघटीमिभैजनं च विधाय कञ्चं भुग स्पष्टीक्षियमाणोऽस्ति तद्ग मार्गीभवनसमयिष्टिप्पनक्रिलितभुक्तभागक्रिकाम
<u> </u>	कर्तादि मः । भ तः स्थि कर्ताह	भवनाद्वीमां मांगींभः इष्टतम सङ्क्षम तद्दक्षीः विधा
語 から 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5	ः स्वक्षे कलाग ज्येऽत्र । मोक	ते, बक्री हिंदी गती हिंद्यासि सिंद्या वा के फल्डे
日本 ア 東 の	हता ध्ये वि मिर्मिधि गुण्य	क्षमे ह्य स्फुटीः माँग स्पान्त प्रान्तिः क्लादि
E	नाख्यी वैश्लेख स्यात्स घट्योत	काप्रपश्चित्रं स्व योभयत् गड़ीमि रे तत्त् हिड्डें नं सबै
(a) (a) (b) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c	गिता प्रुपे स गीत्य गैगता	ु % र मान्याः भवनस् सर्वक्षेत्र सत्रायः तद्रायः स्रिम्रीणः
स्ति स्टब्स् स्टब्स् स्टब्स् स्टब्स्	पियं प्रधाद पश्चाद्	equer run ea si assi Si assi Si assi tru a tru a tsi ea Busan
is a so an	म् वस्य वस्य	प्पां प्पां । केवा १-वया विनादा हियमाणे हियमाणे
- C 2 W		म्नाद्या कार्यम् भयमध् मार्गी इ स्पष्टी डि

नुध्युक्रम्या पश्चम निम्जे मिश्रद्वारे 12631 मार्गीमवनानन्तरं तु रुख्येति, कोऽथं. १ यथास्त्रमावगतीनां प्रहाणां कळा आनीय भुक्तक्षेयोगः क्रियते तथा सोऽन्नापि कार्यः, प्वं विक्रणो मार्गिगण-भिभक्तः, लञ्षं कलाः २१ विक्तलाः ५९ । इय वकादुध्यं कप्रदिने बुधगतिः । गतिरपष्टीकृतेः फर्कं प्राग्वत् । नवरमनया गत्या गतेष्टघटीनां प्रागु-मीकने २७६ । एतत् प्रथमकृत्या स्थाप्यते । ततो बुधस्य यक्तीमवनदिने घृषगक्षिमुक्तं टिप्पनक्षितितं यथा भागा. २५ कळाः ४४, इन् तध्ये कछी-अथ वज्ञात् पूर्वं वर्तनैवम्-पुनवैसुश्चज्ञः घट्यः ५९ इति दिनानन्तर द्वितीये दिने १० घट्यनन्तरं छग्नं गृदामाणमस्ति, अतो लग्नदिनघट्यः तत्र यक्तादुष्त्रं वर्ततेत्र कारमां-घुन्राको वक्तितस्य बुधस्य वर्तन यथा-वक्तदिनशेषघव्यः १६, छप्तदिनघव्यः १०, भन्तराछदिन ४ घट्यः २४० नक्रितान्।सम्य पुना रोहिण्यां ब्रधः घट्यः ७ इत्यन्त यावद् घट्यः सर्वा एकत्र मील्यन्ते, तथाहि-बक्रदिनशेषघट्य २६, पुना रोहिण्यां ब्रधः घट्यः , अन्तरालिदिन ६ घटयः १६०, सन्बांसा मीळने जात १९३ । अनेन सम्भेनाडीरूपेण पूर्वोक्ताञ्कस्य १९७४४ भागे छन्ध कछाः १०१ विक्रलाः ८ । इदं पूर्वोक्तान्सगर्यापंभुक्तात् १४४ रूपात् ग्रोप्यते । एतेन वकादुष्वं फङ कब्धं भुक्तभागीचतस्ताजेदिति ब्याख्यातं । कृष्टशेप कका: ४२ विम्हाः ५२, इदं क्रतिकापादत्रयरोहिणीसस्क १४०० कलायुक्तं कृतं, जात क्ष्याः १४४२ विक्ता. ५२ | क्लानां ६० भागे लब्धं २४ अंशाः, उपरि भुक्त १ राग्निदाने जात. स्पष्टो ब्रुषः १-२४-१-५२। भथ गति:-भष्टशतीस्थानीयोऽङ्ग. १४४ रूपः ६० सङ्गुण्य सर्वक्षंनादीभिः ३९३ रूपा-१० पुनमैसुशुक्षागमनदिनशेषघटी १ मीलने ११ । तत्तिष्टिष्यनक निरीक्ष्यते कदा शुक्रो वक्षीमविष्यतीति, ततो लग्नदिनाद् नक्षी सितः घत्यः ४९ भुक्ता प्राद्या झुति व्याक्यातं । ततोऽनेन १४४ सृगशिरोभुक्तेन पूर्वमीलिता गतेष्टघट्यो २७६ गुण्यन्ते, जातं ३९७४४ । ततिष्टिप्पनकं निरीक्ष्यते । भागाः २१ कळाः १० इति दिप्पनके लिखितं दृष्ट। पुतच् भागादि सन्त्रं कलीकृत जात १२७०, एतन्मध्यान्मृगाध्योऽऽद्रोसका १२०० कलाः कृष्यन्ते, कृत जात १५४४ । असात् कृतिकापादत्रयरोहिणीतस्काः १४०० कलाः कृष्यन्ते, रोप १४४, इदं सगशीर्षस भुक्ते। एतेन बक्ताप्रपश्चिमेऽन्तरांग्रकला क्रीला गुणने यःमठादिक फळं कभ्यते, तद् द्वितीयकार्यवेग्जाया पूर्वकार्यक्रमहोभ्य. शोष्यते, ततस्त्रहेन्जाप्रहाः स्पष्टीस्युः ॥ स्तयात्वाभिमुचाश्र प्रहाः स्पष्टीस्युः । इत् बुघग्रुफ्ताभ्यामुटाहियते तयोः प्रायो विक्रमागित्वस्य बहुगो भवनात् ।

दोप ७० । इद धुनमैसुभुक्त । एतेन यन्नाद्रभ्रे पूर्व चान्तराद्यक्ता भुक्ता प्राधा इति न्याख्यातं । ततोऽनेन ७० पुनमैसुभुक्तेन गतेष्टयच्यो ११

भाभिः सर्वेक्षेनाद्वीभिः पुर्वोक्ताद्वस्य ७७० भागे ळब्धं कले २ विम्हताः १२ । इद लम्रवेलायां ग्रुकेण पुनर्वस्वोभुक्तं इदं मृगास्वाऽऽद्दांसाक १२०० कलामध्ये क्षिसं जात कलाः १२०२ विमताः १२ । कलानां ६० भागे करुषं २० भागाः । उपरि शिवहयदाने जातो कम्रवेलायां स्पष्टः श्रुक्तः २-२०-२-१२ । सथ गतिः-अष्टगतीस्थानीयः ७० ह्वपेऽङ्वः ६० सङ्गुण्य सर्वेक्षेनादोभिः ३५० ह्पाभिमेत्तः, कर्व्यं ककाः १२ विकला ०। द्ययं मुण्यन्ते, जातं ७७० । ततः पुनष्टिप्पनकं विकोक्यते श्रुक्षपुनवैस्वागमनदिनशेषवटी १ वक्षदिनघटी ४९ अन्तराक्तदिन ५ घटी ३०० मीक्षने ३५० । वकात्प्वें कप्रदिने शुक्रगतिः । अनया गला गुणने च यत् कलादिकं फलं कभ्यते तत्पूर्वकास्तीनप्रहेषु योज्यम् ॥ 1138811

अथ मागीरपूर्वं वसीवे-पुना रोहिण्यां बुधः घट्यः ७ इतिलिखितौपकक्षितादनन्तरमधमे दिने पञ्चघट्यन्तरं कम् गृद्धमाणमस्ति, अतो कमादे-

जातं ७९३ विकलाः ८, प्तच टिप्पनके किखितं बुधेन बुषस्य भुक्तं सेयं, भोग्यं तु कलाः १००६ विकलाः ५२, भनेन भोग्येन गतेष्टनादयः ४७८ नवटयः ५ पुना रोहिण्यां बुध हन्येतहिनस्य शेषघट्यः ५३ अन्तराकदिन ७ घट्यः ४२० मीळने ४७८, एता गतेष्टनाख्यः। ततष्टिप्पनकं निरीक्ष्यत्रे, तत्र लप्तदिनाद्नम्तरं सप्तमे दिने मारगीं बुधः घट्यः ४५ मागाः १३ कलाः १३ विकलाः ८ इति लिखितं दएं। तत इदं मागादिनं कलीकृतं मुणने च कमाचातं ४८८५६ अथो ६० भागे ळब्धं ४१४ आधे क्षिप्तं जातं ४८१२८२ ततः पुना रोहिण्यां ब्रुध इत्येतहिनस्य शेषबव्यः ५३ मार्गी स्थानद्वये न्यस्य क्रमाद्गुण्यन्ते, स्थापना यथा-१००६ । पुतेन भोग्या मार्गाप्रपश्चिमे इतिवचनाद्वत्र भोग्या एव कका गतेष्टनाङीगणनाय गृहीता: ।

विकलाः ६, एतच करुषं फलं कप्रदिनाद्यमे दिने टिप्पनकलिखितात् मार्गी बुधः भाग १३ कळा १२ विक्रका ८ रूपात् धुषराक्षिभुक्ताम्रोग्यकता १•०९ विकला ८ सहितात् मीलने १८०० क्लारूपीभूतात् शोष्यते समोग्यभुक्तमागौघास्याज्य मार्गादितः फलमितिवचनात् जात १२८६ कलाः ५४ विकलाश्रा। कलानां ६० भागे लब्ध २१ मागाः कलाः २६ विकलाः ५४ । इदं मार्गात् पूर्वं लग्नदिने बुषेन खुषराशेभुक्तं । उपरि १ राशिदाने जान: स्पष्टो हुप: १-२१-२६-५४ । गतिस्तु १००६-५२ इत्याचाङ्गस्य ६० स<sup>ड्</sup>ग्रिग्य ९३८ सवैभैनाडीभिभैजने कर्व्यं कळा: ६४ विक्रका: १३ । भनया लब्धं कळायं पूर्वप्रहेभ्यः बोध्यम् ॥

खुध हति दिनस्य घट्यः ४५ अन्तराळदेम १४ घट्यः ८४∙ मीळने ९३८। आभिः सर्वेक्षेनाडीसिः पूर्नाकाद्रस्य ४८१२८२ मागे ळव्यं कळा: ५१३

।।उड्डा

मागिद्ध्यै खेव बर्तनीय-मार्गी ब्रधः ४५ इति भवनाद्तु सप्तमे दिने सप्तघट्यनन्तरं कमं गृह्यमाणमन्ति । ततो मार्गी ब्रधः ४५ दिनस शेषघटी १५ छप्रदिनवटी ७ अन्तरारुदिन ६ घटी ३६० मीक्रने ३८२। एता गतेष्टनाड्यः स्थानद्वये न्यस्य मार्गी सुधः घट्यः ४५-मागाः १३-कलाः

६० भागे छड्य ७ भागा. शेप कका. ३६ विकला. ४८, इद मार्गीभवनदिनलिखितभाग १३ कछा १३ विफला ८ मध्ये क्षिप्रं मार्ग पश्चातु रूट्ये-

ततः पुनष्टिप्पनक निरीक्ष्यते -मार्गामवनाद् , १४ दिने सूगे बुधः ४७ इति लिखितं दर्छ। ततो बुधमार्गीमवनदिनशेषवरी १५ सुगे बुधाणमनदिनघरी ४७ अन्तराङाद्देन १३ घटी ७८० मीलने ८४२ । आगिः सर्वक्षेनाडीसिः पूर्वोक्ताङ्कल ३८४६२३ भागे कर्घं कला. ४५६ विक्ताः ४८ । कलानां

128411

१३-विकळा. ८, एव टिप्पनकलिखितशेपाभिभोष्यकलाविकलाभिः १००६-५२ कमास्गुण्यन्ते भोग्यमार्गाप्रपश्चिमे इति षचनात् जात ३८४६२३-४ ।

तियचनात् पात भागाः २० कलाः ४९ विक्का. ५५, इदं कन्नयेलायां बुधेन वृषरात्रोभुँक्तं । उपरि १ राशिदाने जातः स्पष्टो बुधः १-२०-४९-५५ । गतिस्तु १००६-५२ इत्याद्याद्वस्य ६० गुणने २८२ सर्वक्षेनाद्वीमिभागि लब्ध कलाः ७१ विकलाः ३३। अनया लब्ध कलायं फल पूर्वानीत-

प्रहेषु गोज्य । एवमम्येपामि प्रशुणा वर्तनीक्तानुसारेण स्वधिया कार्यो । इद सबै ज्योतिबिंदा सबैदेष्टत्वात् प्रस्तावाच्च द्रितिस् ॥

भथ विवाहे गोधूलिकलग्नमाइ--

णांगामिति सामान्येनोर्कं, यद्गदाधरः-"घटिकालग्नामाचेऽङ्गीकार्यं गोरजोऽपि चिप्रेञ्च"। इति॥ अथ गोध्किके प्रतानत्येव झिद्धिरपेक्ष्यत इत्पाह-यीतचुतिं षष्ठमथाष्टमं च, भद्राधेयामौ कुलिकं च हित्वा। विनापि लग्नांशाखगानुक्तरंग, गोधूलिकं प्राग्रहरं बदनित॥

नारा नेस्यन्ते तापदिति भाव । अअच्छन्ने त्यके प्रपुनानाटपत्रमीलनशकुनिकुलकोछाइलकुलायौत्सुक्यादिलिङ्गैनिणेयं । श्रेय इति छोकरूत्यो<sup>क्ति</sup>म् । हीनव-

ब्याख्या—सूर्यसारतसमयेऽद्वीनम्यमनादनु गोखुरोत्सातधूक्ष्यो यावक्न शाम्यन्ति तावद्गोधूलिक्कम्नसम्यः, अत प्रव धूलिभिरित्युष्तं याव-

सन्ध्यालग्नमापै अयो गोखुरोत्बातधूलिभिः। गोपानां हीनवणीनां प्राचां च स्यात्करग्रहे ॥ ७३॥

ब्याक्या--पष्टमिति लग्नात् पष्टाष्टमेन्दुः कन्मामृत्युद्रः, भौमोऽपि सूर्यष्टमग पत्युमृत्युद्रत्वात्याज्य प्वेति सार्द्धः । भर्धयामौ कुलिक चेति,

भनेन गोपूष्टिके गुरुशनिवारी लाज्गै तिह्नगोस्तदानी फ्रमेगार्धयामकुङिकोत्पत्तिसिस्निच । केश्चार्कस्ताह---

12561 यथा-गोडिदेशीयाः सुर्यं गोचरेण अष्ठमपेक्षन्ते, गुरु त्वष्टकवर्भेण । दाक्षिणात्या गुरु गोचरेण अष्ठमिच्छन्ति, सुर्यं त्वष्टकवर्भेण । त्यारदेशीया एव यथोत्तकुलदेशेषु गोध्नलिकस्यैव प्राधान्यं, न तु लग्नादिपलानामिति न कश्चिहोषः। भपि च न केवल गोघूलिकविषया एव प्रहगोचरादि-विषया अपि कुलदेशधर्माः सन्ति। तथाहि-विवाहे नागराणां षदष्टमकाष्टागणन। भारगंवेषु भाद्रपद्सितदशस्यामेव विवाहः । एते कुलधर्माः। देशधर्मा दिनगुञ्जयश्रावश्यं गवेष्यन्त प्वेति । अत्राह परः-यदि दोषान्तराजयत्वाद्गोध्किक्स प्राधान्यं तदा पूर्वोक्तकानादिफकानाममाधान्यापातः, सत्यं, असु-' न शास्त्रदृष्या विदुषं कदाचिदुस्रह्वनीयाः कुलदेशधम्मीः । देशे गतोऽप्येकविलोचनानां निमील्य नेत्रं निवर्तेन्मनीपी ॥ १ ॥ " अत्र यद्यपि पष्टाष्टमेन्द्रत्याग एनापेक्ष्यते, न त्वन्यत् किमपीत्युक्त, तथापीत् सेयं-गोधूकिकत्वनोऽपि वेवाहिकमेव मं, तब्छुद्धिपंपितपक्ष-भग्न सार्कमिति ग्रनी सूर्ये सित गोधूनिकं कार्य, पश्चात् कुलिकमबनात् । गुरी तु सूर्यास्तावनु कार्य, प्रथममधैयामसद्भाषादिति । स्ताा रिवगुवारिष्टकवरी गोवरं चेच्छिनित । मालबीयानां गोचरो न प्रमाणं, किन्त्वष्टकवर्ग एन प्रमाणं । घोषेषु देशेषु गोचरोऽष्टकवर्गन्न प्रमाणम् ॥ नो होरां न नगंशकं न च खगान्मूत्यांदिभावस्थितान्, हित्वा चन्द्रमसं षद्यप्रमगतं गोधूछिकं शस्यते ॥ १ ॥ " क्र्रेयुतं नक्षत्रं व्यतिपातं वैध्यति च सङ्कान्तिम् । क्षीण चन्द्रं श्रहणभशनिगुरुदिनकान्तिसाम्यानि ॥ १ ॥ " जामित्रं न विचिन्तयेद्गह्युत लग्नाच्छ्याद्वात्या, नो वेधं न कुवासरं न च गतं नागामि भं पाप्निभिः । द्ग्पत्योरघ्मभं लग्नात् पष्टाष्टमं च शीतांग्रुम् । रविजीवयोरश्चिद्धि विवर्ज्यं गोधूलिकं शुभद्म् ॥ २ ॥ " सांक शनौ चिरविचित्रशिकिवसूनौ, तत्केवलं फुलिकयामदलोपलम्भात् । " इति । प्रहाः । विनाऽपीखुक्तेऽपि च किल फ्रान्तिसाम्याद्यो गुहह्रोषास्याज्या एव । यदुक्तं व्यवद्वारप्रकाशे— छह्म्य(धित क्रुकेदेशधमीनुसारात्तेषा कचिद्रप्राथान्यापातोऽपि नातिष्टः। यहुक्तं---गोधूलिकपरिषायने येषां केन्द्रोपगः शुभो न मृतौ ॥ ३ ॥ माग्रहामिति द्रोपानतरंरज्ञय्यस्वात् प्रधानं । यत्सारङ्गः---

1128811

पञ्चम विमर्जे मिश्रद्वारे प्रतिश्चा– दीश्वा– यात्रादिषु || 286|| ब्याम्या—स्थापना ग्रतिष्ठा, आदिशब्दाद्ग्यद्पि स्थिरक्षे । तिर इति तिर्यंक् । जध्वे इति जध्वेस्थिते ध्रुवस्य परितः स्थित श्रृद्धानक ह्या-परमुद्यमानस्य मस्य तथा स्पष्ट दर्गोचरीकर्तुं न पार्थते, तेन शिर स्थनक्षत्रापेक्षया ध्रुनरुरनस्वरूपं कथ्यते, तथाहि--अश्रेपायां ध्रवणे च तद्वेला च तादाशियकोद्यकमनवारामात्रीत्येके। तस्यापि मध्यमन्निमागमात्रीति त्वन्ये। राजिजमेव तिर्थेगूर्ष्वंत्वं घ्रुयकगनसुत्यते, न 'जह पुण तुरिशं मजं दिविज्ञ लग्ग न लम्प सुद्धं। ता छायाघुचलगंग गहिभन्नं सयलमजेसु ॥ १ ॥'' भन्न राजायभिषेममाह— स्युद्धिसम्यापनादीनि ध्रुवचक्र तिरःस्थिते । कध्वे खातध्वजोच्छ्।यप्रायाणि प्रायद्याः श्रिये ॥ ७५ ॥ अभिषिक्तो महीपात्सः श्रुतिच्येष्ठालघुधुचैः। मृगानुराधापौन्लैश्र चिरं ज्ञास्ति बसुन्धराम् ॥ ७६ ॥ " स्यादुरुजों मुगकक तु समस्तिर्यक् तुलाजयोः । यथा तथा तु शेपेपु लग्नेपु स्याध्यर्वं ध्रुवः ॥ १ ॥ " " पृष्ठतो वा रवि क्रत्वा गच्छेद्दक्षिणगं तथा । उत्तानपादपुत्रस्य शेखरे चोप्वेसंस्थिते ॥ १ ॥ " " तिर्थेगुर्ध्वं स्थिते चक्रे तत्प्रान्तगततारके । समसूत्रे यदा स्यातां ध्रुचलग्नं भवेत्तदा ॥ १ ॥ " त्तरसमयक्षातिसूक्षमत्राहिण्या स्वद्या ध्रुवभ्रमयन्त्रेण वा निजेयः । स्थूरबुस्या खेव पूर्वाचायेनिजिनिडिस्ति । तथाहि---मस्तकादुत्तरति सति ध्रुवस्तिरश्रीनः स्यात् । भाण्यां विशाखायाञ्च मस्तकादुत्तरन्त्यां ध्रुव जर्ष्वं. स्यादिति, तथा— " उद्र महाघणिष्ठाण उड्ड अणुराहिकित्ति धुस्र तिरिस्रो " नि । दिनज, रविकालुप्तावात् । प्रायाणीति, प्रायशब्दाद्यात्रादिग्रहणम् । यदुक्तम्--भत्रोत्तानपाद्युत्री धुन. । हर्षप्रकाशेऽपि धुनरुग्नमूचे, तथाहि--डक्षिणकं आम्यदृष्टीरात्रे द्विस्तिर्यक् स्वात् द्विष्टोध्नै । ततश्र---अथ प्रोक्तच्छायालग्नममानयले ध्रुवलग्नमाह-ग्याग्या-- प्यममिपेकमानि त्रवोद्दश् ॥ ।रह्छ।

12921 नाराबले द्याद्याव सुद्धौ तिथिवारधिष्णययोगानाम् । जिषडायस्यैः पापैः सौम्यैस्त्यायञ्जिनोणकेन्द्रगतैः ॥ ७९ ॥ जनमक्षांदुपचयभे स्थिरेडय शीषोदियेडथवा भवने। सौम्यैविलोकितयुते न तु पापैभूपमभिषिभेत्।। ८०॥ "सुहात्रिकोणस्वगृद्योचसंस्थाः, थ्रियं च कीत्तिं च दिशन्ति खेटा.।अस्तद्वताः गृञुभनीचगा वा, भयाय भोकाय भवन्ति राजाम् ॥१॥ " महेरिति सामान्योक्तेऽपि विशिष्य गुर्वन्दुशुक्रेजनमद्गाङग्नेगदिनगरेश्व । यहाह्यः— न्याख्या---तारेन्द्रोहंग्रोर्षि बर्ङ राज्याभिषेकेऽचक्यं प्रार्धे, तेन शुक्कुरूणपक्षापेक्षयोभयोबैलभिति न ज्याख्येयं । तिथेः शुद्धिदंग्धिरकादित्या-गात् । वार्ग्ग्रीहः सीम्यवारः। घिष्ण्यमुद्धिः कूराऽऽक्रान्तादिलागात्। योगमुद्धिषयोगोपयोगवर्जनात्। ग्यायेति, जपकक्षणत्वाद्धनभवनेऽपि सौम्यप्रदैरेव ब्याएया---जन्मनि यन्नेन्दुस्तद्राशीशो जन्मेता: । अभिषेकसमये यस्य प्रहस्य द्याऽस्ति स दशेशः । जनमळग्नपतिळैग्नेयाः । वैपुल्पं यहुदि-भूत्यै खलजिक्षोणो १ च २ गृह ३ मित्रक्षे ४ नैमेहैः । अभिषेको न नीचारिक्षेत्रगास्तिमितैः पुनः ॥ ७८ ॥ स्वल्दे जन्मद्या लग्नेशानां क्रजाक्योरिप च। राज्ञां ग्रुभोऽभिषेकः सितगुष्याशिनां च वैपुल्ये ॥ ७७॥ ब्याख्या-अभिपिच्यमानस्य पुंतो जन्मराशित उपचयमे लग्नस्थे सति, यद्वा स्थिरे लग्ने, भथवा शीपौद्यिनि। न तु पापैरिति, ऋरमहैरद्धेऽयुते वैस्रथैः॥ यमाक्षेयोस्त्र्या ३ ऽऽय ११ गयोग्जेरौ तु, खुला ४ म्बर १० स्थे न्यपतिः स्थिरश्रीः । यद्वा त्रिकोणो ९-५ द्यमे १ सुरेन्ये, शुक्रे नभः १० स्थे क्षितिजे रिपुस्थे ६ ॥ ८१ ॥ " विशेपाज्ञानमळग्नेशद्शेशदिनभतेषु । यसात्तसात् प्रयत्नेन सौस्थ्यमेषां प्रकल्पयेत् ॥ १ ॥ " सहिते। सामध्योंचेदमपि छभ्यते। अष्टमद्वाद्यागुहे शुन्ये एव मन्ये, तत्रख्यानां श्रुभानामग्रुभानां च महाणामनिष्टद्ग्वात्॥ क्यालया--रार्गेति पर् त्रिहोणादिनतुष्केऽपि योज्यं । प्तैरीद्दारिनाभिषेकः श्रष्ठः । यतः---नोहिताचेन विद्यालविम्यत्वं सिक्श्णत्व च ॥

क्र केर केर केर केर केर केर केर केर केर के	25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-25-2
ब्याख्या—यमः बतिः ॥ अभिपिप्को चलीयोभिप्रेहै: केन्द्रिकोणिगैः । क्रुरः पापैः शुभैः सौम्यो मिश्रैः साधारणो भवेत् ॥ ८२ ॥ ध्याख्या—यद्व केन्द्रिकोण्या बिको महाः सर्व क्राख्यः हुपः क्षाः । सर्वे श्वाक्ष्यः । यद्विभ्यः । यद्विभ्यः । यद्विभ्यः । विव्व । क्षाः केविच सीम्या इति, तरा साथात्यो गातिको गतिसौक्या। अपि च 'वृष्युप्रश्युक्षेः साक्षेः' इति, यः स्त्रिक वप्ताधिकारे प्रोक्षापि विव्व । स्त्रिक्षे । वन्द्रे सौम्येऽपि वाऽन्यस्मिन् दिषु ६ रन्प्र ८ स्थिते ग्रहैः । क्र्रैविलोकिते सृत्युर्भिषिक्तस्य निश्चितः ॥ ८३ ॥ वन्द्रे सौम्येऽपि वाऽन्यस्मिन् दिषु ६ रन्प्र ८ स्थिते ग्रहेः । क्र्रैविलोकिते सृत्युर्भिषिक्तस्य निश्चितः ॥ ८३ ॥ रोगी तन्तु १ स्पैरधनो धना १ न्स्य १२ गैदैःखी च पापैन्यपितिस्त्रिकोण ५–९ गैरः । पदच्युतोऽस्ता ७ म्बु ४ गतैस्थिते -रत्यायुराकाद्य १० गतैस्वक्षित भक्षिखको सिख्या स्थयंः ॥ व्याख्या—अक्षिक्षिति भक्षिखको सिख्या स्थयंः ॥ वत्तम	आचार्यस्याभिषेकेऽपि सा सर्वाप्यनुवतीता८५॥ ब्याख्या—अपिशब्दादन्यज्ञापि पदस्यापने। तदेव राज्यामि- पेकस्रिपदादो कुण्दक्षिकं सिद्धा। तथाहि— विशेषस्तु— ( राजयोगाः खयोगाश्च चन्द्रयोगास्तथायुपः। सर्वेऽप्यत्र विकल्प्याः स्युवस्तितन्त्रग्रुणाश्च ये ॥१॥ ?
ब्याख्या—यमः शतिः ॥  निप्त्तो चलीयोभिभेहै: केन्द्रिकोणगैः । क्रुरः पापैः शुभैः सौम् व्याख्या—यह केन्द्रिकोणगा बिकाने प्रहाः सर्वे क्र्गस्तदा नृषः क्रुगः स्वाद् । सर्वे शु भाषेके हृत्रद्वेषमाह————————————————————————————————————	\$\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\
ब्याख्या—यमः शतिः॥ अभिपित्तो चलीयोभिप्रेहै: केन्द्रिकोणगे।। ब्याख्या—यद्दे केन्द्रिकोणगा बिल्नो प्रद्याः सर्वे क्र्याः केन्निच सीम्या इति, नदा साधाएणो नातिकारो नातिसीम्यः योज्यः॥ अभिपेके वृहद्येषमाह—— चन्द्रे सौम्येऽपि चाऽन्यास्मन् रिपु ६ रन्ध्र ८ स्थिन्दा वन्द्रे सौम्येके तन्त्र । अभिपेके तन्त्र । अभिपेके तन्त्र रोगी तन्तु १ स्थेरधनो धना २ न्त्य १२ पदच्युतोऽस्ता ७ मन्तु ४ गतिस्ति ८ सि	मन्त्र १-२-३-४-५-७-९-१०-१९ मगळ ३-६-११ सुष १-२-३-४-५-७-९-१०-११ सुर १-२-३-४-५-७-९-१०-११ सान १-१-१
### ##################################	\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

```
समग्रग्रन्थ-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     हिस्यम् ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     ज्याख्या— खेऽटन्तीस्यचि तत्पुरुपे कृतीति, सप्तम्यछपि खेटा प्रहाः तेषां बरु, भनेन तिष्याहिबरूमपि रुध्यते। दोषमुक्ते इति, बुहब्रोपरहिते
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              इति भावः । सर्वेथा निरोपस रुग्नसास्वरुपद्दिनैरप्यनामात्, अतः स्वरुपद्रोप महागुण च रुग्नमादाय कार्याणि कार्याणि, न तु सर्वेथा निर्देषिकग्ना-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          अत्र पञ्चभिरीस्युक्तेऽप्ययं विशेषो सेषः-गुर्वेह्नेन्दुमध्यादेक्स्यापि बलामावेऽन्यः पञ्चभिः सबलैरपि लग्न नाऽऽद्रियते, इति रत्नमालामाप्ये । केऽप्याद्धः-
                                                                                            येऽरीष्टयोगा उक्तास्तेपां मक्षका ये द्योगास्ते आयुपी हितस्वात्रायुपी योगा इस्युच्यन्ते । पपां सर्वेषां स्वरूपं जातकाण्येयं । अन्नेति अभिषेककप्रे
इति देवदाय छुमे । अस्यायः-राजयोगा प्रापुक्ताः। खयोगा नाममंत्रोगाः। चन्द्रसान्यप्रदेः संयोगाः चन्द्रयोगाः । आयुपो योगा इति, कोऽधैः ?
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      कार्याणि भूमिज्ञळतत्त्वगतौ क्रुतानि, निर्देग्भभाऽभ्युद्धिकों प्रथयन्ति छक्ष्मीम् ॥ ८६ ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                  " पञ्चिभिः शस्यते लग्नं यहेर्वेलसमिन्तेः । चतुभिरिष चेत्केन्द्रे विकोणे वा गुरुभुंगुः ॥ १ ॥ "
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     " त्रयः सीम्यप्रदा यत्र लग्ने स्युवंलवत्ताः । वलवत्तद्पि क्षेयं शेपेहीनवहेरपि ॥ १ ॥ "
                                                                                                                                                                                        विक्त्त्या विचायोः । बास्तुलग्नमुणाः प्रामुक्ताः । अपि च सवैत्रह्वकालङ्कृतनग्नाऽकामे सर्वेष्त्रपि कार्येष्वेनं मेयं---
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            इत्युक्तालेटबल्यालिनि दोषमुक्ते, लग्ने शुभैश्र याकुनैः राशिनः प्रवाहे ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         अथ सक्तयन्थांथे समध्येयति—
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  ॥ इत्येकाद्यं मिश्रद्वारम् ॥ ११ ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          पेक्षया बहुतारविलम्बः कार्यः, धनयौचनजीवितानां स्थेयभावादित्यागयः । उक्तज्ञ--
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          1900
```

|| || ||

तसादनस्पगुणसंयुतमस्पदोपं, छग्नं नियोज्यमखिलेष्यपि मङ्गलेषु ॥ १ ॥

" यसाद्शेषगुणसम्पद्होभिर्ष्पेहौराविद्राशिप गणक्षेन न लभ्यतेऽत्र

भू भ	à 9 è
そいともとももとももとんとと	<del>**</del> ***
", स्थात् । छाड्डोप्याह— ॥ ", तथा— तथा— साविति । उक्तं हि— पां प्रवाहा प्रवं—	. ऊप्च वातरथस्ताय तिरश्चोनः सामीरणः । पृथ्वी मन्यपुटे व्योम सवैगं वहते पुन. ॥ १ ॥ '' प्रमणं तु— '' पृथ्व्याः पत्नानि पञ्चार्य ५० चत्वारिंग ४० तथाऽम्मनः । अग्नेस्त्रिंग ३० तथा वायोविंशति २० नेभसो द्या १० ॥ १ ॥ ''  प्य सार्थततं १५० पत्नान्येकेकगदीप्रमाण । एत च वामनाद्यामिष यदा पृथ्वीजल्लाचे स्वाता तदा ग्रुभकार्यं कार्यं, न तु बिह्नगथुन्योमताचेषु । यतः—
THE REPORT OF THE PROPERTY OF	- ~~
आरम्म सिद्धेः ॥२७१॥	

पृष्टच्यादि-सत्स फल्म् 13051 यते, तथाहि-- दोषमुक्ते छाने भूमिजळतत्त्वगताविति सम्बन्धनीयं । भावश्चायं-ग्रुब्छन्नेऽपि यद्ा भूजलतत्त्वे स्थातां तदा शुभं कार्यं कार्यं, न त्विप्नि-क्षप्र पोद्रशााद्गुङिकेति, यदा बायुर्वेहन् पोडशाङ्गुलमाकाशं ज्याप्नोति तदा पृथ्वीतत्त्वमित्यादि भ्रेयं । यद्वा वाक्यमित्रमन्यथा ज्याख्या-अनयो।थै:-ङम्नानां पळळ्पाणां त्रिगांशं त्रिशो भागः । यथा मेषळ्मस्य पञ्चविंशत्यिषिकद्विगती २२५ पळमानस्य त्रिगांशः पळसप्तकत्रिगद-"पृथ्वी राज्यं १ जलं विसं २ विह्नहार्सि ३ समीरणः । उद्वेगं ४ गगनं द्ते पञ्चतां ५ सर्वेलग्रतः ॥ १ ॥ " तदुत्पादमकारक्षायं— "मिंशांशं पञ्चषा हुन्याह्या१० षट षड् ६ युगा ४ भिः २ भिः। भू १ जला २ गन्य ३ निल ४ व्योम्नां ५ समक्षे जायते मितिः ॥१॥ द्वयुर ब्स्य ४ ङ्ग ६ वसु८ दशिम १० स्तद्वित्रांशकाहतिः । खा १ निला २ ग्रि३ जले ४ लाना५ मोजराशी मितिः स्मृता ॥२॥" पृष्क्यप्तत्वे ग्रुमे स्यातां वित्वातो च नो शुभौ । अर्थनिद्धिः स्थिरोन्यां तु ग्रीघ्रमम्मसि निर्दिशेत् ॥ ५ ॥ अपि च--न्यस्यान्तस्तु पृथिन्यादितस्वज्ञानं भवेत् क्रमात् । पीत १ भ्वेता २ रुण ३ रुयामे ४ विन्दुभिनिरुपाधि खम् ५ ॥ २ " तत्त्वाभ्यां भूजलाभ्यां स्याच्छान्ते कायें फलांबतिः । दीप्तास्थिरादिके कृत्ये तेजोवाय्वम्बरै: शुभम् ॥ १ ॥ " पोडशाङ्गुलिका पृथ्वी १ जलं तु द्वाद्शाङ्गुलम् २ । तेजश्चाघाङ्गुलं ३ वायुश्चतुरङ्गुलको मतः ४ ॥ १ शुत्योरङ्गुप्टकौ मध्याङ्गुल्यौ नासापुटद्वये । स्काणोः प्राग्त्यकोपान्त्याङ्गुली शेषे दगन्तयोः ॥ १ ॥ पीतः कार्यस्य संसिद्धि विन्दुः श्वेतः सुखं पुनः । भयं सन्ध्यारुणो ब्रुते हानि भूङ्गसमद्यतिः ॥ ३ ॥ तृतीये कोपसन्तापो तुर्ये चञ्चळता पुनः । पञ्चमे शुन्यतेव स्याद्यवा धर्मवासना ॥ ३ ॥ " तथा— जीवितन्ये जये लामे सस्योत्पत्तौ च कर्षेणे । पुत्राधं युद्धप्रश्ने च गमनागमने तथा ॥ ४ ॥ पृष्ठयप्रेजोमरुद्वयोमतत्वानां चिह्नमुन्यते । आधे स्थैयं स्वचित्तस्य शैत्यकामक्षयो परे ॥ २ ॥ नंकमत्यङ्गुलं न्योम ५ वहतीति विनिर्णयः । 11 वायुक्योमतत्त्वेषु । यहक्तं--

धूनलादा-द्वितेष्वपि पलेषु पद्-पञ्चवंग-युद्धः ॥ .पियोगसिधिययोगादियुता पूर्व दिनक्रधियस्ततो ठग्नशुधियनैवांतशुधियश्र विलोक्ये। सर्वथाऽपि क्रुष्यलग्नालाभे कार्यस्वाऽवक्ष्यकतैब्यत्वे च शुभदिनशुष्षौ आसेप्बष्टाद्रश(१८) पत्तेषु पड्चमीत्राध्यः पृथ्वीतत्वं च । तथा मीनलग्ने तृतीये कन्यांशे सम्पूर्णे पञ्चविंशाति (२५) पलरूपे षड्चर्गशुध्यः पृथ्वीतत्वं चेति १२। कृतानीति अत्र चुष्याः प्राहुः-दीक्षाप्रतिष्ठातीर्थयात्रापदारोपादिकायेषु यत्र कार्ये यत्रक्षत्रं यो वारो या तिथिक्षाधिकृतानि तानि क्ष्धानि सम्यगिवकोक्य तया कर्कतमे तृतीये कम्पांशे सम्पूर्णे पड्चर्गश्चितः पृथ्वीतरम च ४। सिह्नुकाने प्छे कम्यांशे द्यपलेभ्योऽन्वष्टाविद्यति (२८) पलेषु कम्माश्चद्धेः पन्न-च १०। कुरभकाने पष्टस चुपांगस्यान्त्येषु निंगति २० पलेषु कानागुष्पेः पञ्चनांशुष्धिमंकलतत्व च। तथा कुम्भकानेऽष्टमस्य चुपांगस्यानि चतुर्देश ॥ शुक्रें छत्ता च । तथा धनुकैंग्ने सप्तमे तुकां शेऽन्त्येषु नव (९) पलेषु द्वाद्वां माशुद्धेः पञ्चवां पृथ्वीतत्वं च । तथा धनुकेंग्ने नवमे धनुरंशे आधेषु नव (९) पलेषु हाद्यांशाशुद्धेः पज्ञानंशुद्धिः पृथ्वीतत्त्र च ९। मक्त्रळन्ने पञ्चमे बृपांशे आधेषु पोडश (१६) पलेषु लग्नाशुद्धेः पञ्चयनीशुद्धिजेलतत्त्वं १४) पलाति, नयमस्य च मिथुनांशस्याद्याति सप्ते (७) त्येक्विंशति (२१) पत्तेषु ढग्नाह्युष्धेः पञ्चनांशुष्धः पृथ्वीतत्तं च ११। मीनलग्ने आधे कर्भाशे मुश्चिक्तलम् सुर्वे सुरुांको आधेष्त्रष्टाधिकाति (२८) पलेषु लग्नाशुद्धे. पञ्चनांशुद्धिजंकतत्तं च ८। धनुरुंग्ने पष्टे क्षम्यांशे सम्पूणेंऽपि पञ्चनांशुद्धिद्रैप्ता-छायालाने धुनलाने विजयमुहुते ग्रुमचतुर्वटिके वा कार्य कार्यमिति सक्तयन्यरहस्यं। यथयन्तीति, एव कृतानि कार्याणि सर्वाक्रीणमभ्युद्यं प्रथयन्ति॥ यर्गश्रिद्धिजलतत्त्रं च ५ । द्मन्यालाने तृतीये मीनांशे नवपलेभ्योऽनु सप्तविंशति (२७) पलेषु पड्वार्गेश्रिद्धः पृथ्वीतरां च ६ । तुलालानेऽष्टमे घृपांशे आवेप्त्रष्टाद्यस् (१८) पलेषु पङ्चमैग्रुद्धिः पृथ्वीतस्तं च। तथा तुळाळग्ने नवमे मिथुनांशेऽन्त्येषु सप्तविंगति (२७) पलेषु पङ्चमैग्रुब्धिः पृथ्वीतस्तं च ७ । धमुरंगेऽस्पेप्पशद्म (१८) पत्नेषु पञ्चमांग्रुद्धिः पृथ्गीतरम च १। चुपन्मने तृतीचे मीनांगे आधेषु सस (७) पत्रेषु पङ्चमंग्रुद्धिः पृथ्वीतर्त्वं च। तथा सुवकाने पन्नमस्य सुपांगलायेषु चतुरंग (१४) पतेषु पड्चांशुद्धिजंकतरत च २। मिधुनकाने पष्टस मीनांगलायोव्यष्ट (८) पलेषु पड्चांशुद्धिजंकतरतं ।। पत्रमर्गश्रिस्तु सम्पूर्णेऽपि नवांक्रेऽस्ति द्वाद्यायाश्चदेः ३। द्यक्तैल्ग्ने आधे क्षांके आधेष्वधाविद्याति (२८) पलेषु पड्चगंश्रद्धिः पृथ्नीतर्षं च । इति श्रीमति आरम्मसिद्धिनार्तिके विलग्न १ मिश्र २ द्वारपरीक्षात्मकः पञ्चमी विमर्शेः सम्पूर्णेः ॥ ५ ॥

मिश्रद्वारे | | | | | तिंडिछ पात्रवहैमहंसरिचतस्यारम्भसिद्धेः सुधी—शृङ्गाराभिषवाचिकस्य बुघभाः ५ सङ्ख्यो विमश्रोऽभवत् ॥ १ ॥ एतानाचायेंहर्येक्षान् प्रत्यक्षानिव गौतमान् । वीतमायं स्तुवे स्फीतश्रीतपागच्छनायक्षान् ॥ ८ ॥ अपि च---गैढः श्रीवरदेवसुन्दरग्ररुसत्पट्टपूर्वागिरेः, श्रङ्गे श्रीप्रभुसीमसुन्दरगुरुमोनुनेवीनोऽभवत् ॥ ४ ॥ यतः— मानोभांनुशतानि पोडश कसन्त्येक्तत्र मास्याश्विने, यन्छिष्यास्तु ततोऽधिका अपि महीमुद्द्योतयन्ते सद्। । यस स्यामसरस्वतीति विरुदं विख्यातधुनीतले, गुन्नी श्रीजयचन्द्रस्रिरिष्ठरप्याथात् प्रसर्ति स मे ॥ ६ ॥ तस्राऽइं चरणाद्यपासिषि चिरं श्रीमचपागच्छप-श्रोणीविश्यतसोमसुन्दरग्रुरोश्रारित्रचूडामणेः ॥ ५ ॥ ह्यीयङ्गारोऽयं न्यराचि क्चिरः सैष स्रिध्यां, करे कण्डे क्लें इदि च सुषमां प्रहायतु ॥ ३ ॥ गारियेन निवारिवाऽसुरक्रवा संस्ट्य शान्विसावं, स्रिरः श्रीमुनिसुन्दराभिष्वगुरुद्रीक्षागुरुः सैष मे विमर्शेः पञ्चभिः प्रेष्ठविषयेरिव संवतम् । न कसाह्वाददायीदं म्रधीप्रङ्गारवार्तिकम् ॥ २ ॥ श्रीमचन्द्रकुले पुराऽजनि जगचन्द्रो गुरुर्यस्तपा-चार्यस्यातिमवाप तीत्रतपसा तस्यान्वयेऽजायत साम्प्रतं तु जयनित श्रीरत्नशेखरस्रत्यः । नानाग्रन्थक्रतस्तेऽपि पूर्वाचायांनुऽकारिणः ॥ ७ ॥ भीस्रीयरतीमसुन्दरग्रोनिःशैपशिष्याग्रणी-गंच्छेन्द्रः प्रभुरत्नशैखरगुर्देदीप्यते साम्प्रतम् । महुज्योतिःशास्त्रात्मममणिसुनणोपणगणा—न्मया सारं सारं झुतिमयमुपादाय किमपि । अथ प्रशास्तः।

||Y@Y||

| 30E | सन्नौरम्मविषेश्र सिद्धिसरणादारम्मसिद्धचाह्वयो, ग्रन्थोऽयं तत एव चाप्रकटनायोग्यो विश्कात्ममु ॥ १ ॥ ततश्र--इति *औ*षपागच्छपुरन्दरश्रीसोमसुन्दरसूरिश्रीमुनिसुन्दरसूरिश्रीजयचन्द्रसूरिप्रमुखश्रीगुरुसाम्प्रतविजयमानश्रीगच्छनायकश्रीरत्नशेखरसूरिचरणकमछपेविना केचित् केचिद्पि क्वचित् कचिद्पि ग्रन्थे विशेषा मया। दृष्टा ज्योतिषगोच्राः किल समुचेतुं च ते चिन्तिताः एतज्ङयोतिषवार्तिकप्रणयनं नो युज्यते सर्वथा, प्रन्थोऽयं तदपीह येन विधिना जातस्तदाऽऽक्रण्येताम् ॥ २ ॥ श्रीमद्विक्रमवत्सरे मनुतिथौ १५१४ शुक्कद्वितीयातिथौ, नक्षत्रे गुरुदैवते ग्रुरुदिने मासे शुचौ सुन्दरे । आज्ञापछिषुरे पुरः प्रतिनिघेः श्रीमद्युगादिप्रमौ-प्रैन्थः सैप समर्थितः प्रथयतादांचं पुमर्थ्यः सताम् ॥ ११ ॥ महोपाध्यायश्रीचारित्ररत्नगणिप्रसादप्राप्तविद्याळवेन वाचनाचायंश्रीहेमहंसगणिना स्वपरोपकाराय सुधीश्रद्धाराख्यं श्रीआरम्भसिद्धि-प्रज्ञान्तश्र समुचयो रचियतुं संबर्धमानः पुनः, सोऽथैरेव शनैः शनैः समभवद्ग्रन्थानुरूपाकृतिः ॥ ३ ॥ एकोऽप्यनेकशिष्याणां यश्चिताडजान्यबीधयत् । तं श्रीचारित्ररत्नं भो नभोरत्नसमं स्तुमः ॥ ९ ॥ विद्यारम्भतपः क्रियाप्रभृतिकप्रारम्भवञ्जे समे-ऽप्यारम्मा अग्रुमाः ग्रुमाश्र नियतं साबद्यताद्षिताः । येन श्रीप्रभुत्तीमसुन्दरगुरीः काले कलौ जङ्गम-श्रीमत्तीर्धकरस्य चारु सुचिरं सेवा कृता तस्य मे चिन्मयानां मयाऽमीषाम्पीषां सुप्रसादतः । हेमहंसाभिषानेन बाचनाचायेतायुजा ॥ १० ॥ वारिक सवैथा सावबवचनविरतैः सुविहिताचायैवयैविषयमानं चिरं नन्दतात् ॥ अथ ग्रन्थकुत्स्वाभिप्रायं प्रकाशयाति, तथाहि---

13061

निरच-स्पष्ट न क्तर्यता। ग्रन्थकृतः तत्युण्योपचयः कथं सु भविता गाहेस्थ्यभाजां नृणां. नानाग्रामनिनात्रिनामथ यतेः स्यात्युण्यलाभः कथम् ? ॥ ९ ॥ अत्रोच्यतें— सत्याच्योऽथ तथा कथञ्चन यथाऽऽरम्भप्रथाकारणं, धम्योणामपि कम्मेणां प्रणयने जात्वेष नी जायते ॥ ६ ॥ यथा हि । ग्राप्तः सोऽयमचिन्तितामपि यदा ग्रन्थस्य रीति तदा, चितेऽचिन्ति मया थिया निप्रणया सम्यपिनचार्याऽडयतिम् । नेतालोऽपि विघेयतामपि गतो यत्रापि तत्रापि चेत्, संयोज्येत यथा तथा ननु तदा स्व साधक बाधते ॥ ७ ॥ तत्कतुं तु न शक्यते सा विविधग्रन्थोञ्छष्टन्या हुता, गच्छेऽत्र स्थितिमावहन्तु कथमच्येते विशेषा इति ॥ ५ ॥ चैत्याद्येऽपि मुहूर्तेमद्भुततरं संवादमेषां पुन-ज्योतिज्ञा यतयो दिशनत्याखिलमप्यंबं सुयुक्तं भवेत् ॥ १० ॥ तत्तेषामनबद्यमाषणमयं याति व्रतं सबेथा, लिप्यन्तेऽपि च पातकेन महता ते बालकत्री समम् ॥ ८ ॥ निःशुक्नैयंतिभित्तथा गृहिभिरप्यादाखतेऽसौ यदा, साबद्यप्रथितेषंताधिकाण सम्पत्स्यतेऽलं तदा ॥ ४ खड़ा: खण्डनहेतवे खल्जनसाऽऽदीयते धीयते, नो सम्यग्यदि सोऽपि सौबधनिकोच्छेदाय तज्जायते एतसाद्मिसन्थितः परिह्ताम्मोमज्जनः सज्जनाः, सोऽयं प्रन्थ उपागम्त् करतले युष्माक्तमायुष्मताम् तेनैतस्य जलायमञ्जनविधिग्रेन्थस्य निर्माप्यते, नोत्सप्पैत्यधिकाधिकाधिकरणस्फातिर्येथाऽसादिति । एनं ज्योतिपशास्त्रमेतदस्तिलं सानद्यसङ्जात्मनां, चैत्यादेरापि चेन्मुहूर्नेकथने ज्यापायेते साधुभिः। पुण्य सादनुमोदनैय यतिनां चैत्यादिनिम्मिषणे, मौह्रताः पुनरप्यन्ति गृहिणामुद्राह्नादाचित्र नन्देनं यदि जैनचैत्यरचनाश्रीतीर्थयात्रादिनः, पुण्यस्यापि मुहुनंमात्रमृपिभिनरियमित्युन्यते । 

निरद्य-स्पष्ट वक्तव्यता। विमय्भित ||Y@Y|| ग्रन्थकृतः पयोंयान् परिवद्गन्तु च बुघाः समेंऽपि बोषस ते, यसारकेवलमेतदेव हि फलं मेंऽभीष्टमेतरकुतेः ॥ १२ ॥ ततश्र— । इत्येतानि प्रन्थकतुरिभिप्रायसूचकानि काञ्यानि वाचिष्टत्वा यथोपदिष्टमागनिष्ठानाय यत्तनीयं तत्त्वज्ञीः । दिएया तेन भने भने भमत् में सज्ज्ञानलाभोदयो, यसाद्द्भुतधाम ज्ञाश्वतिचिदानन्दं पदं प्राप्यते ॥ १३ ॥ तस्येवंतदधं पतिष्यति शिरस्याग्ममसम्मारंजं, नैतद्ग्रन्थविधायिनस्तु मम तत्सम्बन्धरेग्रोऽपि हि ॥ ११ ॥ एनं सत्यपि कर्मगौरवव्याद्यः पातकाभीछ्कः, यास्त्रसास्य बलेन बस्यति जने मृदो मृह्तनीदिकम् तसात्तरमिरं वदामि तदिदं ग्राखं रहो भण्यतां, शिष्याणामिष् भाष्यतामनगतास्ते चेदषाद्भीरवः ज्ञानांशोपचयैकपेशलफलप्रस्कतंये वार्तिकं, छवांषान मया शुभाश्यवशादासुण्यक्षमाँजितम् । डत्यारम्भाषादः मरोका ॥ इति प्रशस्तिः

一くなく

र्ट्ड परिधिष्टे स्रोकानाम	PERECEPTION = 1 F	-25-55-55-56 17-88 11-88
	L'S	९६ एळाशिकापग्रस्य १८० पेन्यादिहिस्र मातद्वर १५५ कदकेद्यक्षिममीनातार ११६ कर्णवेथोऽहि सीम्बस्यर २१ कण्टकोऽपि दिनाष्टांहेर
॥ स्य क्षोकसूची ॥ अ ::—	क्षायो देध्यांन्ययोधांतः० इध्युक्तखेटबक्शालिति० इति वक्तन्यता येय० इति सप्तरूपकांधः सक्त्व० इन्दुक्त्युतं लग्नं० इप्रायुक्त नग्नाने	डचरोडय नवासे बा॰ उद्घेडय नवासे बा॰ उद्घेषवतीगद्र॰ उद्घाहे सुगपैत्रक्षे प्रतिष्ठा० उद्घां योन्योऽश्वद्विण
॥ ॐ॥ श्रीआरम्भसिद्धियन्थस्य श्लोकसूची॥ —ःः परिशिष्ट अ ःः—	<ol> <li>स्ट्रोकाः</li> <li>अमिपिको महीपाङः</li> <li>अदमन्य माननीयान्तिः</li> <li>अदम स्वेन्द्रकानाभ्यां</li> <li>अंगास्तु मिथुनः कन्याः</li> <li>आकन्द विपुकं चैवः</li> <li>आमिश्यादि विदिक्ः</li> <li>आधादन प्राथमकहिनः</li> </ol>	मादिखपुरवाहिनुंझ० १ भानन्द्र, काळद्ण्डश्र० भानन्द्रजीवनन्द्रनजीमूत० २ भावन्ययाष्ट्रगोऽक्र्कां० १
	प्रधाद्भाः स्टेनिकाः व्यक्षाद्भासिद्धिः १६७ १६० अक्. स्वमन्द्रभोमेभ्योः १५२ १६८ अर्कास्वाद्मिन्यास्थिः १५२ १६८ अर्कास्वान्यज्ञयः ११८ ११८ ११८ अर्कास्वान्यज्ञयः ११८ ११८ अर्कास्वान्यज्ञयः ११८ ११८ अर्मास्वान्यज्ञयः ११६ अर्मान्यान्यज्ञयः ११६ ११६ ११६ ११६ अर्यान्यज्ञयः ११६ ११६ ११६ ११६ ११६ ११६ ११६	अनुराधा ननीमूने० अभ्यक्तस्नाताझिता० अभ्यन्नमक्तृज्ञज्ञीवसितु० २ अभिषिको बङीयोभि०
*********	£6646645645645646	<u> </u>
अार्क्स सिद्धेः	\   \   \   \   \   \   \   \   \   \	

	GC.								<b>9Ç</b> 34	
	क्रि प्रधाद्धाः	द्धाः स्त्रोकाः	प्रवाङ्काः	स्काः स्रोकाः	(पृष्ठाङ्काः	ङ्काः स्रोकाः	प्रधाङ्काः	्काः स्रोक्ताः	èĈ.	पनिसिष्टे
आरम्भ	ہ کے	करणान्यय शक्ति॰	0°	कृत्णतिलाक्षनलाजै:०	5	गुरुः केन्द्रस्वरन्ध्राये०	%	चम्द्रादुपचयस्यो०	٥٥	श्रीकानाम
म् इंद्र	ر - -هر		13.9	क्रपिरूचे सूरगंक्षां	9 0	गुरुजीयाय लग्नस्यः०	w V	चम्द्रायस्या प्रोपितः	Ç	Figure 3
113Coll	8		320	क्रमाद्येषु स्टर्गदेः	ent ent er	गुरुधंम्में ब्यये शुक्रो॰	323	चन्द्रेडमें या त्रिवायु०	ين	म् माराज्य
	ر ا	क्रजग्रामितो ध्यन्त्यारिषु०	3,90	फ्रमाह्रि <b>या</b> दिवण्णीनां	232	गुरुबुधश्र शीतांशु०	er er'	चम्द्रे च हामे च चरे	<u>ب</u> الح.	i F
- •		कुजस्य जो रियुमें यो०	400	क्रयविक्रयो न हि गवां०	22	मुरोरधो कधुं न्यस्येत्०	الم الم الم	चम्द्रे सीम्येऽपि वाडन्य०	٥	
	\$ \$	कुम्मोन्स-धनिष्ठाध्यै०	ه د د	क्रुराः कुर्युधने निःस्व०	ent ent	गुरी पुष्याधिनाः	ه د د	चन्द्रे पष्टाष्टमे सायुमु०	<b>₹</b> -,	
	38	कुर्यास्त्रयाण कघुभि०	800	क्रोण सुक्तमाक्रान्तं	806	गुन्वे क्रीक्रीन्द्वः कुत्याः	w,	चन्द्रो जनम त्रिपट्सप्त०	<u>ુ</u>	
	308	कुरुभान्यश्विनी पुष्यो०	300	क्षिते दग्धेऽय लिप्ते०	o,	गोचरेण प्रहाणां चेद्	2	चरमाहुश्रक स्वाति०	×	
	ي. م	कुलिको द्विप्तकन्यन्त०	25	क्षतगृह मलहज्यमलनी ०	2	गोसासीसुः शतमि०	300	चराद्रन्यत्र लग्नेन्द्रोः०	ું.	
	806	कुलोपकुलभान्याद्गै ०	9.90	क्षीरं ग्रुभस्याहिन तारका०	365	गृहप्रवेशं सुविनीतवेषः	∞ ~	चुचेचोकाऽक्षिनी जैया०	<i>X</i> -0	
	438	कृमीः पुत्रार्थित्यान्त्ये०	5	खडजूरकस्य शीर्ष०	64 9	महाः स्युरेन्द्राचिषा०	٧ ٣	चीराणां शकुनेयांत्रा०	<u> </u>	
	10°	केन्द्रचतुष्ट्रयक्षण्टक	30	गजनाजिक्समें नेष्ट्र	9 2 3	चक्रे त्रिनाहिके धिष्णय०	<i>5</i> °	छत्रं मित्रं मनोज्ञञ्च	٥	
	181	केन्द्रतिकोणतैः सीम्यैः	80 80 80	गणितविदुपदेशात्तत्र०	123	चतुष्टयेऽक्कीदिषु राजसेवी०	8	छिद्र त्रिकाभारमज्ञ	<u> </u>	
	× 30	केन्द्रेषु प्रहश्रुन्येषु०	us,	नण्डान्तं च त्यलेश्रधाः	er' er	चत्वारोऽक्रचटा बग्गीः०	22 2	जनिमान्नवकेषु त्रिपु०	<u>ه</u>	
	323	केन्द्रोपचयधीधरमे०	20	गण्डो जुध्धिधुंब॰	30	चन्द्रश्चरति प्रविदिरे	e-	जनमकाले विधोयद्वा०	×	113,5011
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	123	क्रतनवभागे वासिंस०	8	गवां स्थानं च यानञ्ज ।	80	चन्द्रश्रोपचये कामा०	2,000	जन्मकाले श्रुमेथुका०	<b>%</b>	
5	2								XX.	

श्लोकानाम् सम्मन्न-	म्मार्थक स्तिमः॥			-					1132\$11	
79672967	65-3	محبه	7-7-6	<b>₹</b>	%	95,	12-0C	¥ 60	**	3
पृष्ठाङ्काः स्रोकाः ११३ हयेषु गुरुशित्यादे ०	२४७ द्दाद्याराशिभंगणोठ १५७ द्वेष्काणः फक्तरताख्यःठ		१८७ धामारभन्नात्तराञ्चणाठ २१० घित्वयं कार्याय पर्याप्तठ		१८१ ध्वन धन्य नमं नन्दं	३३ न गुरी बाहणाग्नेय0	३३ न चन्द्र यामनायादाठ ३२ न चाव्के वार्षण याम्यठ	१३८ न दिगणे धुगमिये		
पृष्ठाङ्का स्थोकाः २४२ त्रिकोणकेन्द्राऽऽयगतै:०			त्रीम् वाराम्स्युकाती स्पाष्ट्या० स्थाऽक्रणं धनुमीने०	द्ग्यामकेण सहक्रान्ती०	द्शामूल विवधात <i>े</i> दारुणे तीक्ष्णमञ्जपा	दिन्जुलध्वंसि वन्देत०	दिगाश. फन्द्रगः अयान्० दिग्यो गण. किछ पुन०	दीक्षाया कुरुने चन्द्रः० मध्यामां सम्मिध्यवि	•	
मुखा २४२	m U.	٠ ٢ ٢	w D	w	۵ گ د د	3	w 0	4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	o en	
पृष्ठाङ्काः स्रोकाः ९६ जीवे सजातिकुसुमेःo		ज्ञोऽस्तिले फबदो <b>०</b> डीह्नुडेडोभिरास्त्रेपा <b>०</b>	तनु. कीशो भरो यानं मन्त्रो तनुबन्धुसुतधून०		ातयक् अयादशाष्ट्र तियेङ्मुखानि चादित्यंo		ताली चित्रान्साध <b>्</b> सन् गाऽक्कैमोग्यञ्च <b>्</b>	स्यजेहा पञ्च		
मुस्	2 0 A	& & & &	2 W 2 W	286	° °	9	2 2 2 4	30	* V	
स्का स्रोकाः जन्मभौद्रुपचयमे स्परेऽयo	जन्मन्यनिष्ट सीम्यो <b>०</b> जन्मराति जनेलेग्न <b>े</b>	जन्मग्राशिषिक ग्राभ्या <b>०</b> जन्मस्कानेशयोस्तान. <b>०</b>	जन्मलग्ने शुभा यात्राठ जन्माथानानित्रहाठ	जयमूर्ष्वेमुत्ती होगाठ	नवाय मृता मात्तेष्ट.o जलाशय न स्वीतo	जातरोगम्य प्रगंद्री	जामंत्रतः पतः स्वीपाठ जित्तरमित्तेनी ३०	जीवर्ण शुक्रोऽहाति पञ्च	सी माहिमान्यायासितु •	
पुष्टाङ्का २६८ ज	0 m	0, m,	2 5 5 V	55.	2 E	200	87 F	0 1	\$ 5	
₹ <u>₹</u>	ية وحري	-96-X	96-√ <u>L</u>	رئ	90	<u>ښو</u>	47-96	4-64	<u> </u>	ريز. اعرب
आरम्भ	सिद्धः ॥२८१॥									

	į	श्लोकानाम	काराबनु-	<b>添</b> 用:II										w.usut-w		1142411		
764°	×	96	<del>ار</del>	<b>-</b>	ع	<b>€</b>	<u>-</u>	₹	<b>%</b>	%€.	<b>%</b>	وج	<b>€</b> ₹-	<u>بر</u>	<b>,€</b> ¥	9	<b>-</b>	-96-
	ાં જાયાં	भद्रेन्द्राष्टाश्वतिषय	भरणी वाहणश्रीत्र•	भवेजनमि जनमक्षि	भादाहित्रिष्टिमासेषु०	भानी भूखे करादिख0	भानो भैनयनतेव:०	भुक्तेऽय लग्नस्य तद्य0	मुक्षीतानं नवं द्वा०	भूत्ये स्वस्य त्रिकोणोच०	मेमोजाञ्युत्तरापादाठ	मेषास्विधियमां०	मेषु क्षणान् पञ्चर्ये०	भैष्टयमिष्टं मृगठ	मीमे बलाहिङ्गुल०	भीमेऽश्विपौष्णाहि०	मध्या तु धुत्रपुरवां०	
	14.05K	20	१२६	956	97%	a, u,	() ()	er 5	૧	296	5°	u,	8	926	<b>o</b> ,	ent ent	१३८	
	गः र्वाकाः	प्रतिशुक्त त्यजन्त्येके०	प्रतिष्ठायां श्रेष्ठो सवि०	प्रविशेहेरपवारेषु०	प्रस्थानमन्तरिहकामुक्	प्राख्य सम्मुखे चन्द्रे०	फले व्ययेन वेश्माख्या०	बलद्दीनाः प्रतिष्ठायां	बलिनोऽिह गुरुसिताक्षी	बलिष्ठः स्त्रोचागे दोषाठ	बाण-द्विदित्-जलिधि०	वीजोसी प्रतिषिध्यामिठ	बुधे मेने श्रुतिस्येष्ठा	बुधोऽक्कतोऽन्त्याय०	बुधो बपु: सुलद्वेपिठ	बुधो विनाऽक्केण चतुष्टयेषु०	भद्राऽर्धयामगण्डान्त <b>्</b>	
•	पृष्ठाकाः	286	w,	6°	ص رور	8	163	84 84	5 9	6. 6.	er er	0 67	m,	%	60	₩ ₩	er 60	
	रकाः स्थाकाः	१२० पराजितेऽरिवेश्मस्ये ३	पश्यनित पादती बुष्पया०	पश्यसंशाधियो कप्त0	पश्येरपूरणी शनिभ्रात्	पातः स्टर्गक्षेतोऽस्रेपा०	पातं शुकस्य गण्डस्य	पात्रभोगोऽश्विनीचित्राठ	पापैरस्ताम्बु १६ष्ट ०	पापोऽप्यमीष्ट्रो जन्म०	पाशो मासस्येष्ट०	प्न्यादितो गृतद्वाराहि०	प्टर्निदिक्ष मेपायाः०	प्न्येषु जाना दातारः0	पुषादितीयात्र च पद्मरागठ	पौरा ज्ञानमन्दाः स्युठ	पुच्छादिष्त्रपरे केतु०	
	पृष्ठाट्काः	9	w 9	30	9	5	5	9 9	۾ ي	ج 8	م ج س	825	6	80	60	9	m' 9	
	पुष्टाङ्काः स्टाकाः	११ न बुधे वामवास्त्रपाठ	३३ म भीमें चीतराषादाठ	१२२ नववामसः प्रधानं वास्ठ	६८ नसांबाः स्युरजादीनाठ	131 न मुक्षारीवणं कुरुयांत्	३४ न शनी रेवनी सिष्ध्येठ	३४ न शुक्र भूतये बाह्य	1रप नष्टं चतुर्भिग्न्यासैठ	२०७ नान्ये प्रतिष्ठां सन्मक्षेठ	113 नामादिवगोक्षमथैकवर्गे०	११९ नियमाङोचनायोगतपोo	४३ नोपग्रहास्तु भूत्यै०	121 नुसं मेत्रे स्याब्रिमिष्ठा०	३८ पञ्चकं ध्रवणादीनिठ	३७ पञ्चके वासवान्याठ	२११ पञ्चपञ्चाशमेवांशं	
, <del>7</del> -60	$\rightarrow$	-9¢	¥.	56.	¥ <u>}-</u> 6	<b>7</b>	-6	ر <i>ا</i> حي	-56	₹- 	56.	¥ .	. <u>6 (</u> .	~~~ ~~~	<u></u>	0-9/	<u></u>	-&G
		-k+)	H K	1136311													. L	

 स्रोकानाम	काराद्यनु-	क्रमः॥					·								115/311	= <b>x</b>	-	
GA-96	×	<u> </u>	%€°	<b>%</b>	بوج	<u> </u>	-6(	¥	۶¢.	<u>پېر</u>	9	29	ربجي	-60	پر	90	× (	Ď
पुष्टाङ्काः स्त्रोकाः	२४९ लग्नजातान्त्रवात्रात्यान्	२४२ कप्तात् क्रों न दोपाय०	२०६ लप्ताद्वमीम कुन्त्रीत	६४ लग्नानास्तनुदृष्य०	७४ कन्नाद्यासमकेन्द्राठ	२२७ लग्नाम्बुस्मत्मो राहु ०	२०१ लग्ने गुरोबंग्साय०	। १९ स्त्रे गुरी त्रिकोणे	२,३२ लग्नोदिनाश. स्वेशेन०	१९५ कान विवाहे दीसायाठ	२१८ लग्न श्रेष्टं प्रतिष्ठायां०	५५ कत्तयनित भमन्।वाः०	५४ कता वर्षेष्टभाद्रकी	२३३ लामेऽक्कांरी ग्रुभा धर्मे	१६१ यकी केन्द्रेड्य तद्रगोि	४० चज्रमात स्यजेद् द्विति		
ربط	a	N	ď			n'	W.	~	'n,	~	<b>M</b>			'n	ىي	•		
पुष्टाङ्काः स्त्रेकाः	रक्षोगणः पितृभराक्षस०	रवि. कुजोऽक्कंजो राहुः०	र्मि चन्द्रकुजन्ति च	रविचन्द्रमङ्गलबुधा०	रिचन्द्राबुद्गयने०	रविहों हो तु प्रविदिो	रवे शुक्रशानी शत्रु०	राजयोगो भरण्याद्ये०	राजावलोकन कुरयी०	रात्री चतुष्रीं काद्वयोठ	राक्षिरथ तत्र मेपोऽश्विनी०	गशेरोजान्म्त पष्टे०	राहुरमम्मुचनामोऽष्ट	रिक्ता पष्टगष्टमीद्वाद्वय०	रेत्रसादिचतुरकेषुठ	रोगी तनुस्थरधनो०		
आङ्	308	2 % 6	239	e e	5°	486	9	w	१२९	ہے	3	906	886	5	22	48		
<b>F</b> 3	ئ	N	0	••	-	ئے		•	ئے			ىت	می		می	18		
द्वाः स्थोकाः	मेगरीया कुन. ग्रुको०		मुते साधी पञ्चद्या	मृदु मेत्र मृगक्षित्राऽनु०	यच्च वश्य स्वत्यानेन्द्रीठ	यस्यातिकृत्य वासर्गिठ	यमकाख्यो द्विपादस्रे		यातन्य दिगमुखे लग्ने०			ये गृहेऽलिन्द्नियून्	योग कुमारनामा शुभः	योगा यथार्थनामान.०	योगो खेभांत्०	योग्सिजेन कापन्न ६०	1	
ឬខាន្លា	10°	930	ب ج	8	2°	<b>&gt;</b>	9	2000	35	es.	9 m	80	es.	5. 2.	32	م س		
के । अनेकः भ्रमा	२४४ मध्ये मेगझदी पङ्गेठ	े ०		म् देस	माघफाल्युनयो राघ०	<u> </u>	१२६ मामान्सगोत्तरावाहे०	७८ मिन्नमध्याखो येऽत्र० २	पट मिथुनो मृगार्द्धमाद्यां० ।		२३३ सुनलो (छं) यन्धुने भोमे	8५ सुमलो गनमातद्दी०	१०१ मूद्रांस्य सम्प्याद्याकर	१०५ मूदांस्यांमभुनामग्रेगठ ।	ी १०० मृत्रम्याहि चतुष्के पितृ	🍴 ५९ मेपारत्रोणाउजुन इपिठ 📗 १		
مريخ ه	جَن	-54	*	ې.	× 6	<u>برح</u>	5	ç <b>⊋</b> û	<u> </u>	¥5-	50-	٣	67	5	<u> </u>	50	7)-	Ç
	आरम्	मा इं	1136311		_					- <b></b>								

	-\$C-	474						<u>√</u> • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	- 8-CX-
	<del>च</del> જે <del>ટ</del> જ	प्रप्रामाः स्थाकाः	प्रधाद्धाः	तः स्त्रोकाः	प्रवाद्धाः.	.र. स्टोकाः	पुछाद्धाः	: स्त्रोक्ताः	श्रीकानाम
आरम	3 °	1007.83	0 EV	विवाहे नाष्टमाः श्रेष्ठाः०	5.	यान्यक्रेन्द्रकुत्रां0	10°	भेषं हरीममहिवभुठ	क्राग्यन-
(大) (大)	, °		2°	विवाहे पूर्ववस्यञ्च	° ~	शाखाधिपे बलोपेते०	998	पट्कतिनो उष्ट वेरबा भ	####
110761	چ م		38.5	विचाहेषु द्वयोघिद्याञ	بى م	शीतद्युति पष्टमथाष्टमं च०	சு மீ	पड् निकायलिनोऽनोश्र	.e.C.
	ء ج		300	विपक्रीमारजन्म स्याद्	\$ \$ \$	गुक्रज्ञाक्षीय लग्नस्त	9 9	पद्यमेष्टाद्या नयपद्	<b>≥</b>
	2 2		<b>v</b>	विष्करभः ग्रीतिरायुष्मान्	980	शुक्तस्तु यत्रोदयति०	ر و	व्याहित वर्गापुर	<u> </u>
	, -24-	•-	3	वेध अधितिर: सप्त०	w, S	शुक्र को प्णाश्विनापादा०	9 2 5	सक्तेत्वपि कार्यपुठ	(_ <b>&gt;</b>
	ر مور		8° 9	वेधिष्यद्गानकाम०	o,	ग्रुक्तो लग्नादासुत०	288	सह्कान्तिराशेर्गतनाष्टिकांत्रे	.s <u>C</u> .
	₹-k		292	वेधेनेकार्गलीत्पात	695	शुक्ते डयायारबुगं पश्यम्	88 Y	सङ्गान्यनत्तरनादिका अय०	<del>-                                    </del>
	ٽ پوت		38	वेबोकाकी सुगशिर०	80	शूर सोमे शनी च०	ر ا ا	सन्ध्याल्यनमपि अयो०	Ý.
	488	-	92	वैशाखे आवणे मार्गे	ج ج ج	शेपाद्य खगुणगुणाद्र०	64 64	सप्त सप्त गमने बसुठ	<u> </u>
	* ************************************	•-	8	<b>डयतिपात</b> चैधता ख्यौ <b>०</b>	448	इमश्रुक्तमी नरेन्द्राणां ०	& & &	सर्देहः सुपण्णेन०	<u>(A)</u>
	15.		238	जनाय राशयो हयक्राः	\$ \$ \$	श्रिये विधुः सुवेडस्ते तु०	9 W K	सचलत्वे जन्मद्याo	-6/
	78 78	•	C,	शहाः शुभग्रहेर्नम्ध	3 3 4	श्रीमद्गीर्जारपत्तने	5	सम्मुलोडयं हरेनायुः	<b>.</b>
	* **	_	226	श्र मिखि रोणकेन्द्रस्थेर	ص س	श्रुनी तटहान्येसुधंठ	828	समाधि ३ व्यय कतुः,०	<u> </u>
	330		8	श्रातः स्वात्त्र्यायपुत्रारि	0 %	श्रयान् गी चरतोऽश्रमा०	& &	सन्वेत्रनदुः कुजः सङ्ख्ये०	1182811
	25 26		30 mr	शनी यास श्रुति इन्द्राठ	308	क्षयो मेज्यात् परे त्वाहुः	o* m*	समिदिग्द्वास्की पुष्य०	ij.
	- St.							-	AF.

•

परिशिष्टे उपयुक्त-	ग्रन्थानां स्रोचे ॥		॥२८५॥
\$-9C-76-74	مي مي م	₹\$C+26.4~	७००-७००-७००-७००-
पुष्ठाद्धा स्ट्रोकाः ६२ स्वोचतः सप्तम नीच० १५९ हन्ति योघाऽऽय कम्मी०	१२९ हलच्केऽक्षृक्ता० १२९ हलस्य बाहनारम्भे० २४ हस्तः पुराणदेवीयो० ३८ हामित्रुध्यादिक सर्वै०	८४ होनमध्योद्यवन्ताः १७ होरा. पुनरवर्तमन्द्रः ६७ होरा गश्यद्वमोजञ्जेः १४६ हसेन्तरा विद्यतिः	आस्तायस्य पर्-१। ६२- १०-२८ । ३४५-४ । मत्पाः
p., ~	<i>-</i>	<i>-</i>	- i
हाः त्रहोका सानमुङ्खायनस्पेष्ट० स्फुटोऽथ भानुगंतनाङि०	स्याद्गोचरेणात्र श्चमोऽपि० स्याज्ञातकम्मै चरल्ड्यु० स्याता तृतीये दुश्चिक्य० स्याद्योगिनी शक्तकृत्रेर०	सान्मद्रकस्य सदज्ञ स्युद्दीसास्थापनाद्दीनि॰ स्युद्दीदशाशाः स्वगुहा० स्वाऽऽद्दिगाऽऽय सुन्धी० मग्रम्—४९३ ॥	—ःः परिग्रिष्ट व ःः— गुक्त-ग्रन्थानां ग्रन्थकुतां वा सूचि । ताकारानुसारेण पृष्ठ पङ्किञ्च ) ०૯-२४ । आवस्यकचृहद्चुत्ति-टिप्पनकस्य० ३०-૯ । आम्नायस्य० ५६-६ । ६२- ध्यात्मिकग्रन्थस्य० १४६-२३ । करणकुत्इलस्य०२१४-१०-२૯ । २४५-४ । कत्पा-
पृष्ठाद्धाः १२८ १ २४८ १	6, 2, m, u,	0 0 0 0 <u>-</u>	म प्रमास्त्र प्रमास्त्र स्थापन
	<i></i>	ا ۾	ति । स्या
,ा' श्रोकाः सुरुमं स्व भवेन्न्यस्तं॰ सुहद्द्यापतेः सद्यः॰	सुहन्मन्दिरपाताकः सूत्रस्य सिद्धिनुनायः सोमे सिष्ध्ये सुगबाहाः सौम्यवाक्ष्पतिशुक्ताणाः	सीम्बेहम्बालिनो द्वाः ७९ स्वान्मन्नलस्य । स्थिप प्रियत्वसुद्वाहेः १६७ स्युद्रीसास्थापन् स्थापने स्युविधी युक्तः ६९ स्युद्राद्याताः स्थिपयोग. ग्रुभो रोगोः ९१ स्वाऽद्यिपाऽइ । १०५ द्वाराद्यितः । समग्रम्—४१३ ॥	—:: परिशिष्ट व ::— यास्तिके उपयुक्त-ग्रन्थानां ग्रन्थकृतां वा सिचि । ( द्यकाकाराद्यसारेण पुष्ट पङ्क्तिश्च ) । आगमस्य० २०६-२४ । आवश्यकगृहद्गुति-टिप्पनकस्य । । शाध्यात्मिकग्रन्थस्य० १४६-२३ । करणकुत्हल
पुष्टाद्धाः १२४ च् १६० ह	2 0 W W	ໝ ໝ ສາ ສາ ໑ ວ ດຳ ສາ ດຳ ດຳ	व
पुष्टाद्भाः स्टोकाः १०३ माहिम ग्रहणसाह ० ११ १६७ मितेज्याविन्द्रगांक्क० १	सिष्यच्छाया क्रमाद्रः विद्यः साध्यः ग्रुभः सिद्योग. कुयोगञ्ज० सिष्यं सीधम्मेरेन्द्रेपु०	१५५ मिरस्तु मोग्येतलद्वानि० ५८ मितस्तु माग्र पुत्र्वां० १०० मीमन्त. स्यान्तुवारेषु० १३४ सुग्नरहनुज-पलाद्वाः०	——:: परिशिष्ट व ::— वास्तिके उपयुक्त-ग्रन्थानां ग्रन्थकुतां वा सृचि । ( बुक्तकाराबुसारेण पृष्ठ पङ्क्तिञ्च ) शि । ४५-२४ । १३६-१४ । शामस्यठ २०४-२४ । आवश्यकबृहद्बुत्ति-टिप्पनकस्यठ ३०-६ । आम्नायस्यठ ५६-१ । ६२-
* Service	-602:50	<i>جلاوحة</i>	56-26-45-46-56-5
आरम्भ सिद्धेः	।।३८५॥		

```
। ४८व॥
                                                           तिकिं
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            लिनियमकाशस्यठ ६७-४ । ७४-१६ । २२६-२४ । दिनश्रुन्धिमन्यस्य० १८-१०। १६-२२ । २६-१४ । ४१-१३ । ८६-२६। १२५-१५-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           २४ । १२७-१४ । १३८-१२-१६ । १३८-८ । १४३-६-३०-३२ । १४५-४ । १४७-१० । दुर्गसिहस्य० ११८-१६ । देवदाबह्यभस्य० २०-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          -31-3-3-1 32-58-14 1 32-58-1 31-58-43 1 368-31 1 503-17 1 508-50 1 514-69-17 1 513-51-17-16-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          الله ا الملاع ا الملاحو ا الملاحو ا الملاحو ا الملاعود و الماهم ا عاد المعلقات المعلق الماعد الماعد
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     -676 | 61-076 | h-006 | 62-36 | 64-36 | 648-60-30 | 648-68 | 64-74 | 64-74 | 6-76-61 | 6-76-61 | 6-76-61
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            ११२-२०। २१०-१४। नक्षत्रसमुच्ययस्य० ८४-८। १४५-२८। नार्चन्द्रस्य० २२-१६-१८। २३-२२। ३७-२६। ३८-१०। ४३-१७।
                                                                                            र १५-३२ । सण्डलाद्यमाण्यस्य० २१४-१७ । मागेस्य० १०७-१३ । ११४-१५ । १८८-२० । २०२-१६ । २२४-१० । २२७-१० । मणिसि-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    ८४-४। रेडेट-१। लघुजाठ १२-१२। १८१-११। बृहजा० ५८-२०। ६२-१२। ६८-६। ७१-१९। १५७-१६। १६३-३। १७२-१६।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          २१४-५ । २२७-२० । २२८-२६ । २३५-२१ । नार्य टिप्पनकस्य० ११-५-२३ । ४०-२२ । ४८-६ । ८३-१८ । ८६-२६ । ११०-६ ।
                                                                                                                                                                                 द्यायाः ११९-१२। मदाधरस्य०११०-३०। २००-१। २२५-१८। २१५-२५। मरुद्वपुराणस्य० ३८-६। मीतमस्य०१३६-२२। चन्द्र-
                                                                                                                                                                                                                                                           रहासिच्चतः १३८-२१ । च्यवनस्य०१३१-२१ । जातकस्य० १२-२३ । १६०-१० । १६्र-४ । १८०-१ । २७०-४। जा॰चुत्तेः० ६०-२५।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   ११०-१२ । १२०-६। १८२-६-२८। १८६-७ । (जिचि यानकटीकायाध्य) २१२-७। २१६-१५। २२७-२५। २३०-१७ । २३५-१४-२०।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  34 | 36-24 | 60-6 | 61-84 | 62-26 | 01-16 | 03-4-2-19 | 913-94 | 920-23 | 980-91 | 982-27 | 986-2-6 |
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    २८ । २२५-१७ । ३२१-१। २३८-४ । ३३०-१२ । २३१-२०। २७०-१ । सर्पतिजयचय्यिषाः० २४-१ । ४४-१६ । ५७-१२ । ६४-१६।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     1 42-312 | 4-Roz | 22-201 | 42-21 | 48-21 | 48-4-10-10-10-10-10-21 | 50-25 | 50-8 | 5-25 | 62-25 | 62-25 | 63-25 |
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | ४१ | ताजिकस्य० ६२-१३ | ६३-२ | ७७-१४ | त्रिविक्रमस्य० ११-१५ | ३६-४ | ४०-११ | ५६-२ | १००-३ | १०৫-१५ |
ऱ्यच्छेद्यन्थस्यठ १२४−११ । काठगुह्यस्यठ १६८-२१ । कालनिर्णेयत्रन्थस्यठ १६८−१०−१४ । केश्चाच्यठ३६-२२ । प६-७ । э.२४−१६ ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     १९५-१६ । ड्योतिपसारस्य> ७७-१२ । ८२-५-२४ । ८६-२३ । १४४-१५ । १४६-२७ । १६३-६ । १६३ -२६ । १६८-२८ । २३८-३० ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                         || 3<6 ||
```

```
श्रीयन्यस्य० ३२-१ । ३५-७ । ३७-५ । ४२-६ । ६२--२३ । ६४-१४ । ७५-२६ । १८६-१२ । पुराणस्य० ११८-१३ । पूर्णभद्रस्य०
                                                                                                                                                                                                                                                             | प्रिर्] अवनदीपक्तस्यठ ७३-२१ । ७८-१६-२६ । भु० मुत्ते.० १६५-१४ । मोजस्य० ११६-११ । महादेवस्य० ११४-२७ । मुह्रत्नेसा-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        ८७–८। १२७-७। १३८–५। १४१–७। १४७–७–११। २३१–१ । २३२–१८ । २४३–२२। यवनाचायेंस्यठ ६५–१२ । ६७–८। ७८–२६।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              योगनिघानप्रन्थस्य० ११४-१० । योगयात्राग्रन्थस्य० १६७-३० । रत्नमालाया:० ५--५ । ३०-१३ । ६१-६ । १४८-२० । १५३-१७ । |
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 1 02-82-1 | 76-15 | 163-3-0-30 | 166-0 | 110-15 | 18-30 | 114-10 | 116-15 | 117-16 | 118-10 |
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   | 1 b2-66-K7 | 62-K7 | 26-6-87 | 82-02-86-10 | 62-6K | K-78 | K6-81-72 | K-62 | 76-66 | 76-86 | K-3
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          | 1 3-076 | EE-01-2-031 | 11-h36 | hE-72-231 | E2-hl-E31 | 72-031 | 7-2h1 | EE-2h6 | 22-2h6 | 31-726
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                रस्य० णिप-१४ । २४५-३२ । यतिव्छमस्य० ८-११। १७-२३। २१-१ । २४-२। ४२-२४ । ५१-६ । ५५-२०। ७८-६-१७ । ८६-१८।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 २२०-१२ । २३४-१ । र० भाष्यस्य० ५-१७ । ३०-१४। ३४-१६ । ७૯-१३। ८१-१-२८। ८३-१६। ८६-७-२४ । ६८-१३ । १०६-७ ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       २१२-१३ । २१५-११ । २२०-१० । २२४-२७ । २२५-८ । २३६-१६ । २७०-६ । कद्रयामलस्यठ ८७-१४ । लक्ष्मीघरस्यठ २२४-२१ ।
                                                                                                                                                      ब्रह्मशम्मटीकाया.० १९०-—२६ । ब्रह्मसिद्धान्तस्य० १८८—१० । ब्रह्मपतेः० २२४−१२ । भास्करस्य० ८६–२६ । १६८-२५ । १८४–५ ।
                                              | 02-hl-021 | 31-721 | 31-12 | 41-hl | 41-42 | 52-43-43 | 53-44 | 41-55 | 41-45 | 41-36 | 41-58 | 41-58 | 41-5
                                                                                              १४१-५ । १४२-१२ । १७८-२२ । २३४-१६ । २३६-२० । पश्चमकाशस्य० १६६-२ । १६८-२२ । पश्चशतकचुनेः० ६४-१४ । ७६-६ ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                लस्थुएसे ० ३१–१३ । १८-३ । २०३–२१ । २१०-३ । २१९-१० । २१८-१० । २४३-११ । २४४-१ । लह्यस्य० ४-२४ ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            | 1-3&1 | h2-h21 | b2-h2-31-2-781 | 62-351 | 61-221 | 7-8-261 | 7-8-261 | 32-76-811 | 81-011 | 81-011 | 8-37
                                                                                                                                                                                                  २२०-१४ । ३२५-२८ । २२६-३ । २२७-५ । २३२-२४ । भीमप्रान्नमग्रन्थस्य० २०४-३० ।
```

```
परिशिष्टे
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       १४०-२६ । १४२-२८ । १८३-११-१२ । १६०-४ । १६१-२७। १६२-१६ । १६६-११ । २०२-११ । २०३-५ । २१६-२ । २१७-१३ । २२०---
                                                                                            ८१-१ । ८२-२१ । १००-१८ । ११४-१ । ११४-१८ । २१०--१७ । वश्चिष्टस्य ८६-१८-२२ । २१६-१ । वामनेवस्य०
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                १९ । रस्१-११ । ररर-३ । २२४-८ १८ । रउ८-२७ । र४१---६। र४३-१७। र६६-५ । २७०-२७ । ब्यवहारसारस्य० ३२-४ । ३७-२५ ।
:१५-११ । २३०-५ । २३८-१ । २६८-४ । २७१-४ । लोकश्रीग्रन्थस्य० ३४-२० । ३५-१०-११ । ६२-११ । वराद्यसंदितायाः० ७६-४ ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     दर-१० । ३१-१० । ८३-१६ । ८४-४१ । ६३-४८ । १००-८-१४ । १०५-२२ । १०६-२३ । १०६-१३ । ११-२६ । १२३-६ । १३७-३२ ।
                                                                                                                                                                                                                                                                               हिर्] चिचाह्य गुन्त नस्य० ४०-६ । प४-१२ । ८४-१२ । ६८-६७ । १०८-१५ । २०३-३० । २११-८ । २१२--२५ । २१५-१३
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        २२५-५ । २२६-२૯ । चित्रेक्तचिलासस्य० ६८-४१ । १०२-२५ । १२६-८ । १४६-२७ । १४७-१६ । १८२-५ । न्यमहाराकाश्चार १८-१
                                                                                                                                                                              री१-८ । वास्तुराह्यस्य० १८-४६ । १८६-१४ । १८६-१२ । विद्याधरीविलासप्रन्थस्य० १८७-२२ । विद्याद्यपद्रलस्य० १८६-२३ ।
```

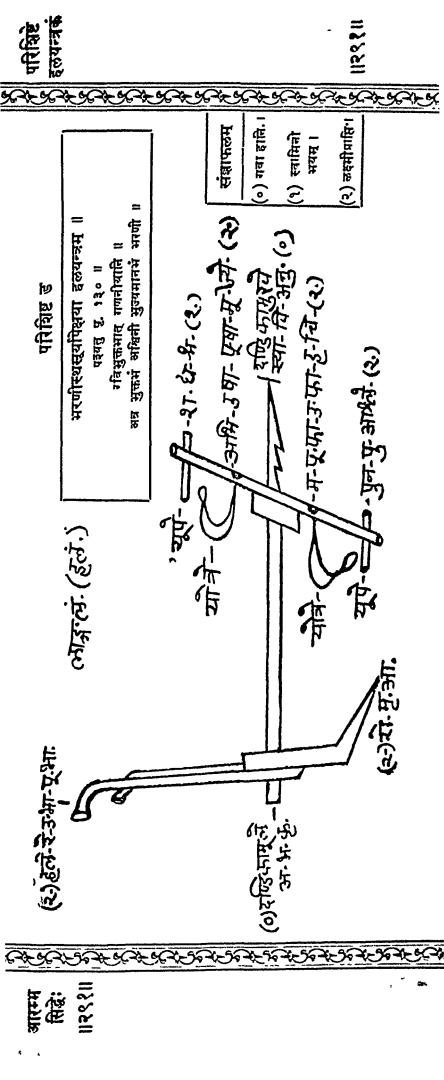
१९६-२१ । १९७.१० । २०२-२२ । २०६--१० । २११-६ । २१६-७६ । २२२-२० । सारङ्गस्य० ३६-२१। ५६-२३ । ७६-१४ । ६४--२०। कास्त्रस्य० (बसन्तराज्ञक्त) १५३-१८ | शौनकस्य० १०५-२४ । १६४-३३ । १८६-२७ । २२२-१५ । २३०-७ । श्रीपत्तिग्रुम्फ्तियन्थस्य० ४-१८ । ६-६ । ३૯-२० । ५३-१३ । ५५-१८ । ७१-२३ । १८७-२८ । २०४-१६ । थ्रतः ८८-१७ । सत्यसूरे ० २१२-२८ । सप्तपंतः ०५-२४ । १०८-१८ । १०६-१८ । १५४-१ । १८३-१० । १८६-१८ । १८६-१८ । १९५-१० । ११५-६-१४ । १११-१०-१८ । ११४-१४ । १६५- ३० । ११६-११ । सारावन्या.० ११४ २५ । स्थानाङ्गस्त्रजस्य० १३८-२१ । स्वरचक्रस्य० २५-१७ । स्व० विवरणस्य० २६-२ । ह्रदे:० ११६-१२ । ह्यपंग्रकाशस्यठ ६-१० । ७---२२ । २३-२१ । ३३-२२ । ३४-१८ । ३५-२३ । ४०-२१ । ४२-२१ । ६८-२४ । ७५-२७ । ८३--२० । ८७-८ । ११३-२१। ११५-१६। ११६-२६। ११७-११ ते ३। १२८.१७। १३७-२८—३३। १४४-२५। १५६-२५। २०२.२१। ११७—१६। ५२०-१।

ﺳﻠﺮ-٩٠ | ٩٠૯-३७ | ११६-५ | ११૯-२८ | १२३-७ | १३७-६-३२ | १३८-७-२० | २०२-१४ | २०३-१ | २१६-२७ | २२२-२८ | ज्यक्तन-

||300||

२२८-३२ । २६७-२३ । होरामकरन्दस्य० ६८ --८ । इत्यादि ॥ ७७ ॥ जैनं जयति शासनम् ॥ कत्याणमस्तु ॥

विशिक्ष											1128.01			
9C-X-	967	يق	¥€6	€X	مک	١	3	A T	-0C-	<del></del>	ج			
	नक्षत्रपादाक्षराणि ॥	करे से ता स्वाति।	ति तु ते [मुश्चि०-मंगलक तो वि०	न मिन्नु ने अनु०।	नो म थि छ स्ये०।	्टिन-गुरु-य या भाभ-मृद्ध ।	में मिक्सरःश्रामि-मो-जनाविन्द, पाठा	ब ने ने न अभिनित् ।	वि खु से सो प्रचण ।	न गि क्रिम्म शनि-गु-गे-घनिष्ठा०।	गोसमिसुशतः।	से सो द मिन-गुरु-दि-पू-भा०।	म स्ता मा	द दा च चिन्द्यता । ६५ ॥
	सम्वामिकराशियुतानि नक्षत्रपादाक्षराणि ॥	मिष-मंगल स्यामि-च चेचो का अधिवनी	िल ख के को भरणी।	भ ब्रिप-शुक्त-इ उ ए कृत्तिका।		वे वो [मिथु० बुध-न-कि मुग् ।	क्षियङ ७ भादा । कि को व नि प्ता ।		हि इ हे हो-अस्ट ।	सिंह-सूर्य-म-मि सु मे मघा ।		हे किन्या-बुध-रोप पि उपा०।	धुपण ठ-हास्ता ।	पर्वा तिला-शुक्र-गर-ाचत्रा ।
í	=	तिथयः	3-4-19	4-10-14	÷ 6−0−2	÷ १ −०− <b>२</b>	3-6-93	4-90-94	866-8-8	9-8-11	3-6-93	8-6-8	2-6-93	4-90-94
	राशिसम्बद्धानि–घरुभै–घान-स्थानानि	चन्द्रः	प्रथम:	गञ्चम:	नवमः	द्रितीयः	:85	दशमः	तृतीय.	ससम:	तुर्यः	अष्टमः	एकाद्यः	द्वादशः
	ङ्गे−घान	चार.	गति	नाम	भर भ	सुर	श्राम	शनि	गुरु	যুক্ত	গ্রহ	मगल	મુંદ	য্যুক্ত
	<b>खानि</b> -च	नथ्रयं	मधा	हस्त	स्वार्त	अनु-	मूल	श्रचण	शत	रेनती	भर्गी	गेहिणी	भाद्री	आश्रेर-
:	राशिसक	मासः	कार्निक	मानंशिष	भापाद	क्रेव	उचेष्ठ	भाद्रपद्	माघ	आक्षिन	ध्राचण	वैशाख	नुष	फालगुन
1	r	. राशयः	मेय०	सुर	मिधु०	कर्न	भिन्न	क्रम्या०	तुस्रा०	ভূষি	धन०	<b>和寄</b> 70	कुरभ०	मीन०
- GCX	و کوک	ځ۶	€ € €	56	1-94	` <b>}</b> _5	भ् <del>र</del> िक	_ 	ا ا	پري پان	<u>ک</u>	¥€.	≽ે	-9G-
आर्म	ir E	1139011			A CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR					<b>%</b>				-ta and migal



	**					£	11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1			
			_ /L	शिष्टा	परि	ि	माप्त		`	
-	,	, ; -,	-							*
स्याति	11	प्रयाण	गेहिणी	প্রখ–গ্লন-	हर्स	8	6	4-66-4	81-5-8	मनिवार
म् का	90		रेवना	रोहि-अनु	सेहियो	v	4	२-०-२	9-4-66	श्रुक्तवार
प्रनवंस्	8	नियाह:	पुरस	अधि-उ पा-	कृत्तिका	w	u.	8-6-8	71-01-7	मुख्यार
क्रसिका	0		अनुराधा	पुन-रवनी	मूल	67	B	さしーシーを	3-0-15	बुधवार
ल मा.	9	प्रामादिश्येश.	अध्यिनी	भर्-क्रनि हा	भाद्रां	3	3.	9-4-99	32-13	मगलवार
श्रवण			मृगविर	मूल-विशा	विशाखा	9.8	8	<b>₹</b> -०-₹		चन्त्रनार
<b>H</b> es	5	-	इस्त	धानि-मधा	मधा	વૈસ	9	9-6-99		स्विचार
सिद्योगः	अ-   सि- मृत्युदाः	भ- सिन्दी वरुप्रकाय	अ- सि·	यमद्धः	यमघद:	द्यधयोगः	 फांकडु	मृत्युदाति०	सिद्धियोमः	योगाः

परिधिष्टे ग्रन्थान्तर्-गतउपयो-गियोगय-न्त्रम् ॥